घरोहर

संयुक्तांक : ४

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डोईवाला (देहरादून), उत्तराखण्ड

College Fraternity

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें)

डॉ. राखी पंचोला, डॉ. अफरोज इकबाल, डॉ. गिरीश सेठी, श्री नवीन कुमार नैथानी, श्री डी.एन. तिवारी, डॉ. दिनेश चन्द्र नैनवाल (प्राचार्य), डॉ. संतोष वर्मा, डॉ. नर्वदेश्वर शुक्ल, डॉ. डी.पी. सिंह, श्री प्रमोद पन्त, डॉ. कंचन सिंह।

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें)

डॉ. अनिल भट्ट, डॉ. एस.एस. बलूड़ी, डॉ. कुंवर सिंह, डॉ. सतीश चन्द्र पन्त, डॉ. नूरहसन, डॉ. स्नेहलता, डॉ. अंजली वर्मा, डॉ. नीलू कुमारी, डॉ. पल्लवी मिश्रा, डॉ. रेखा नौटियाल, डॉ. वन्दना गौड़, डॉ. किरन जोशी, डॉ. संगीता रावत, डॉ. पल्लवी उप्रेती, डॉ. मनीषा सारस्वत।

धरोहर

संयुक्तांक : ४

सत्र : २०१६-१७ से २०२०-२१

सम्पादक मण्डल

धीरेन्द्र नाथ तिवारी (मुख्य सम्पादक)
नवीन कुमार नैथानी (सह सम्पादक)
डॉ. पल्लवी मिश्रा (सह सम्पादक)
डॉ. रेखा नौटियाल (सह सम्पादक)

विद्यार्थी सम्पादक

सृष्टि रावत
संदीप कुमार

संरक्षक / प्राचार्य

डॉ. डी. सी. नैनवाल

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
डोईवाला (देहरादून), उत्तराखण्ड

इस अंक में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता का उत्तरदायित्व रचनाकारों का है।

रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

छायाचित्र : नवीन कुमार नैथानी

VISION

Aspire to develop as an institution achieving national higher education goals through intellectual development of students hailing from rural areas by providing quality education through basic and modern teaching –learning methods at par with global standards.

MISSION

Shaheed Durga Mall Government Post Graduate College consists of science, commerce and arts faculties who strive to accomplish the mission of the college with great zeal.

The mission of the college is as follows:

- Providing adequate opportunities for higher education to the students of rural and economically weaker sections irrespective of their religion, race, cast and gender.
- Encouraging interdisciplinary educational activities.
- Developing teaching, learning and research aptitude in the students.
- Developing the infrastructure in accordance to meet the educational requirements of the students.
- Ensuring the availability of opportunities for holistic personality development of the students.
- Encouraging students to develop leadership qualities and efficient management skills by engaging students in various decision making processes.
- Stimulating awareness regarding sensitivity towards environment & gender benefits of energy saving, linkage between man-environment and women empowerment.

सम्पादक मण्डल

रेखांकन : प्रमोद सहाय

ले ज गुरमीत सिंह
पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम
वीएसएम (से नि)
राज्यपाल उत्तराखण्ड

सत्यमेव जयते

राजभवन उत्तराखण्ड
देहरादून 248003
फोन: 0135-2757400
2757403

सन्देश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून द्वारा पत्रिका "धरोहर" का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय उच्च शिक्षा का केन्द्र होने के साथ ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास हेतु भी उत्तरदायी हैं। शिक्षा के साथ ही महाविद्यालय को भी पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

आशा है कि उक्त पत्रिका पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

गुरमीत

(ले ज गुरमीत सिंह (से नि))

त्रिवेन्द्र सिंह रावत
पूर्व मुख्यमंत्री
विधायक - डोईवाला
उत्तराखण्ड

सदस्य विधान सभा

आवास सी./130
सैक्टर 03, डिफेंस कॉलोनी
देहरादून, उत्तराखण्ड - 248001
दूरभाष: 0135-2666600
मो.: 9412053515
ई-मेल: tsrawatbjp@gmail.com

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता है कि शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला जनपद देहरादून की वार्षिक पत्रिका "धरोहर" का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है कि पत्रिका में छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत आलेख रूचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक होंगे।

महाविद्यालय के प्राचार्य एवं सम्पादक मण्डल द्वारा पत्रिका "धरोहर" के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(त्रिवेन्द्र सिंह रावत)

धन सिंह रावत
मंत्री
उच्च शिक्षा, सहकारिता, प्रोटोकाल,
चिकित्सा स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा,
आपदा प्रबन्धन एवं पुनर्वास

उत्तराखण्ड शासन

विधान सभा भवन
देहरादून
फोन: (0135) 2666410
फैक्स: (0135) 2666411

सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि शहीद दुर्गामल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला की संयुक्तांक पत्रिका 'धरोहर' का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल होगी एवं पत्रिका में ज्ञानवर्धक तथा सारगर्भित पाठ्य सामग्री का समावेश होगा। यह पत्रिका छात्र-छात्राओं एवं समाज के बौद्धिक, आर्थिक , सांस्कृतिक तथा राष्ट्र के निर्माण की प्रगति में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी एवं आम जनमानस के लिए मार्ग-दर्शक का कार्य भी करेगी। पत्रिका जहां एक ओर रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर बौद्धिक उन्नयन, चहुंमुखी विकास एवं पाठ्येतर क्रियाकलापों का भी प्रतिबिंब होती है।

मैं अपेक्षा करता हूँ कि यह पत्रिका समाज के सभी वर्गों के लोगों को कोरोना काल में आत्मनिर्भर बनाने हेतु पठनीय एवं विचारणीय सामग्री प्रस्तुत करने में सहायक होगी।

शहीद दुर्गामल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला की संयुक्तांक पत्रिका 'धराहर' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी ओर से महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों और छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ० धन सिंह रावत)

डॉ. पी.के. पाठक
निदेशक (उच्च शिक्षा)

उत्तराखण्ड शासन

सन्देश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला (देहरादून) उत्तराखण्ड द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका "धरोहर" के संयुक्तांक का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय की पत्रिका शैक्षणिक, अकादमी एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों का दर्पण मात्र ही नहीं होती, अपितु महाविद्यालय के विद्यार्थियों की बौद्धिक, वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी है।

मैं आशा करता हूँ पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्द्धक एवं सारगर्भित होंगी और विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करने एवं उनके विचारों में रचनात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम होगी।

मैं उक्त पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों व छात्र/छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

(डॉ. पी.के. पाठक)

श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय

बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड - 249199

डॉ. पी.पी. ध्यानी
कुलपति

फोन : 01376-254110 (का.)
फैक्स : 01376-254110
वेबसाईट : www.sdsuv.ac.in
ई-मेल : vcsdsu2018@gmail.com

सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला (देहरादून) द्वारा महाविद्यालय की पत्रिका "धरोहर" का संयुक्तांक प्रकाशित किया जा रहा है। जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थियों की रचनात्मक और विचाराभिव्यक्ति को एक सार्थक दिशा देने का भी प्रयास किया जा रहा है। साथ ही साथ, पत्रिका में महाविद्यालय की शैक्षिक तथा सह-शैक्षणिक गतिविधियों एवं सरंचनात्मक ढांचे में की गई उपलब्धियों का समावेश कर पत्रिका माध्यम से उजागर किया जा रहा है। मुझे आशा है कि प्रकाशित पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं तथा उच्च शिक्षा जगत के क्षेत्र में बेहतर संवाद कायम करने में सिद्ध होगी।

मैं शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला (देहरादून) द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका **"धरोहर"** की भव्यता एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनायें ज्ञापित करता हूँ।

(डॉ. पी.पी. ध्यानी)
कुलपति

डॉ. डी.सी. नैनवाल
प्राचार्य

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

डोईवाला (जनपद देहरादून)

सन्देश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महाविद्यलाय की पत्रिका "धरोहर" का संयुक्तांक छात्रों की रचनात्मक अभिरुचि तथा शिक्षकों की सृजनशीलता के फलस्वरूप प्रकाशित हो रहा है।

वर्ष 2001 में स्थापित इस महाविद्यालय के छात्रों द्वारा गत वर्षों में रोचक पाठ्य सामग्री **"धरोहर"** में प्रकाशित हुई है।

पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्राओं को अपनी लेखन प्रतिभा एवं सृजनात्मक विचारों की अभिव्यक्ति का सुअवसर प्राप्त हुआ है। पत्रिका में प्रकाशित लेख पत्रिका के लिए उपयोगी होंगे। ऐसी आशा करता हूं।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए **सम्पादक मण्डल** को हार्दिक बधाई।

(डॉ. डी.सी. नैनवाल)

अनुक्रम

सम्पादकीय	4
चढ़ाई	9
उत्तराखण्ड हिमालयः परिस्थितिकीय समृद्धि एवं भविष्य की चुनौतियां	14
महिला नेतृत्व एवं राष्ट्र का सशक्तीकरण	16
विज्ञान, टेक्नोलॉजी और समाज	18
विभिन्न लोकसभा चुनावों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व	21
लॉकडाउन के समय में मानसिक स्वास्थ्य, समस्या व समाधान	26
आधुनिकयुगे संस्कृतस्योपयोगिता	27
भगवान का भेजा गया मानव के लिए एक तोहफा "माँ"	28
राष्ट्रीय सेमिनार : इतिहास विभाग	30
क्विज प्रतियोगिताओं द्वारा करियर गाइडेंस्	31
डॉ. राकेश जोशी की ग़ज़लें	32
सामाजिक अनुभूति	34
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	34
गणित के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान	35
वैदिक गणित की प्रासंगिकता	37
गैर कानूनी गतिविधियों रोकथाम संशोधन विधेयक – 2019	38
अम्फान चक्रवात : एक भौगोलिक विश्लेषण	40
मौलिक कर्तव्य का अर्थ परिभाषा एवं महत्व	41
आत्महत्या	42
संविधान दिवस	44
भारत का संविधान	47
स्वामी विवेकानंद के विचारों की उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	47
उत्तराखण्ड के विकास में युवाओं की भूमिका	51
कश्मीर 370 से आजाद	54
हिन्दी : वर्तमान स्थिति चिंताजनक	54
उत्तराखण्ड के विकास में युवाओं की भूमिका	55
रविन्द्रनाथ टैगोर– एक परिचय	57
सफलता और संघर्ष	58
तेल की बढ़ती कीमत का अर्थ–व्यवस्था पर प्रभाव	59
अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	60
संस्कृतभाषाया महत्वम्	62
संस्कृत निबंध : परोपकार	62
उपमा कालिदासस्य	63
अभिनवं संस्कृत साहित्यम्	64

मेरी मंजिल तो आसमान है 65
स्कूल के दोस्त 65
गुरु का महत्व गुरु महिमा 65
मेरी पहचान–मेरे पिता 65
परेशानियां 66
गणित के रोचक तथ्य 66
किसने सोचा था 67
गणित के रोचक तथ्य 67
यादें 68
वक्त 68
मैं लिखना चाहती हूँ 68
मँहगाई 68
थोड़ा समय निकाला करो 69
प्रकृति 69
नये जमाने के बच्चे 69
मैं और मेरी माँ 70
ससुर, दामाद और दहेज 70
अनुभव ज्ञान से बेहतर होता है 70
सफलता हमारी 71
विज्ञापन @ LOAN 71
एक वर्ष के बारह मास 72
शहीद का पत्र माँ के नाम 72
Acquire Skill and Knowledge through MOOCs 73
Folk-Consciousness and its mystical engagement with Landscape, Myths and the element of ... 77
Corona Viruses 82
Junk Food: Detrimental to Mental Health 85
English Language and its role in Society- An Introduction 88
Understanding Sociology 92
Studying Economics: Ways Ahead 94
Remote Sensing and GIS: An Emerging ITC Tool for Disaster and Emergency Management 98
Home Science: Curriculum and Career Opportunities 106
Nutrition and Immunity 109
Humanism in Rohinton Mistry's Fiction 111
Gender Equity and Gender Equality 115
Youth Culture 116
Religion And Politics in India 117
Learning from Corona Virus 2020 118
Mathematics in Various walks of Life 119
Save the Girl Child 121
An Argument against Child Labour 122

Our National Flag 123
The Power of Positive Thinking 123
The Crime of Rape 134
The Impact of rise in oil price on Indian Economy 125
Application of Science and Technology for Rural Development 126
Mathematics in Everyday Life 127
Essay on Swami Vivekananda 128
An Essay Swamy Vivekanand 129
Literature reflects the spirit of the Age 131
The issue of Triple Talaq 131
Great uses for an old android devices 132
Effect of Cybersport on Today's Generation 132
Unity in Diversity : a salient feature of Indian Society 133
Thoughts to remember 133
Have You Ever Imagined ? 134
Importance of Time 134
Moral Thoughts 134
Lives of Greatmen 135
Life is a struggle at every step 136
Numbers 136
Aryabhatta 136
Strength 137
Never Quit 137

Departments'Report 138
Department of English 139
गृह विज्ञान विभाग 142
संस्कृत विभाग 143
रोर्वस एवं रेंजर्स 144
चित्रकला विभाग 145
Department of Psychology 146
खेलकूद विभाग 147
गणित विभाग 151
राजनीति विज्ञान 153
अनुसूचित जाति अनुशिक्षण इकाई 155
भौतिक विज्ञान विभाग 156
राष्ट्रीय सेवा योजना की मुख्य गतिविधियाँ 157
छात्रसंघ निर्वाचन परिणाम 2019–20 163
छात्रसंघ निर्वाचन परिणाम 2017–18 164
छात्रसंघ निर्वाचन परिणाम 2018–19 165
मातृभाषा दिवस 166
'विलोल वीचि वल्लरी' कविता पुस्तक का लाकार्पण 167

सम्पादकीय

यह विश्व हर घड़ी किसी वसंत के इंतज़ार में रहता है...

हिमालय पर वसंत देर से उतरता है । देर से चंचल होती है हवा, उमगता है मौसम, सरसती हैं टहनियाँ । आहिस्ते चढ़ता है रुत का रोमान ! अपने नैसर्गिक और अकृत्रिम रंगों, ध्वनियों, खुशबुओं और स्पर्श की आंतरिक सिहरन से इसे भर देने के लिए ।

किसी ने कहा है वसंत आता नहीं, ले आया जाता है । शायद यही वज़ह हो इसके देर से आने की । जैसे कोई माँ, अपने बच्चों को शीत के दिनों में नहला–धुला, कपड़े बदलकर, उन्हें धूप और हवा में उछलते देख विभोर हो रहती है । अपनी सुध–बुध खोए...! हिमालय पर मधुऋतु कुछ ठहर कर आती है, इसकी श्रृंखलाओं का श्रृंगार कुछ विलंब से होता है, यह गिरि–जननी कुछ रुक कर, अचकचा कर सँवरती है । आखिर यह ऋतुओं की जननी है ।जीवधारियों के ज़रूरियात का कारखाना । इसकी हिमानियाँ, सदानीरा नदियाँ, मरकत उड़ेलती घाटियाँ और नानावर्णी–नानागंधी औषधियों, लता–पुष्पों, तरुओं से भरी वनावलियाँ इस महादेश में जीवन भरती हैं ।

यदि मैं कहूँ कि हिमालय पर वसंत का कुछ ज़ल्दी आना एक डरावनी बात होगी, तो शायद आप वैसे ही चौंक उठें, जैसे मैं गोपेश्वर की एक सभा में चंडीप्रसाद भट्ट को सुन कर चौंका था । वह गहरी व्यथा से कह रहे थे कि बुरांश, अब कुछ पहले खिलने लगे हैं । हिमालय धीरे–धीरे गर्म हो रहा है । प्रकृति अपना संकेत दे रही है । कहीं हम विकास की हड़बड़ी में ऋतु–चक्र की मर्यादा को क्षति न पहुँचा दें । डर है ।

एक डर तो मुझे यह भी है कि इस महा–गिरि को 'जननी' कह देने से कहीं आप बिदक न गए हों ! यह जानिए कि सद्गुणों में जो श्रेष्ठतम है, वह जननियों में अकूत है । कबीर की सुनें –– 'हरिजननी मैं बालक तेरा..!' अब उस परवरदिगार–परमेश्वर को कबीर ने खट से 'जननी' कह दिया । इससे तो ईश्वर की महिमा कुछ बढ़ ही गई होगी ।

कबीर 'हरि' को 'हरिजननी' कह दिए तो अब आप इस फ़िक्र में न गलिए कि इस हरि की भी कोई जननी होनी चाहिए कि नहीं । 'वस्तुओं के अनुक्रम' की इस खोज–बीन में मैं नहीं पड़ता । यह ऊँचे दर्ज़े के बुद्धिजीवियों का शगल है । बुद्ध इसी क्रोनोलॉजी के चक्कर में दर–दर भटके और 'प्रतीत्य–समुत्पाद' खोज लाए । कार्य–कारण की कड़ियाँ उठा लाए ; और ईश्वर की संभावना से ही हाथ धो बैठे थे । बहरहाल !

कृष्ण ने महाभारत के शुरुआत में ही, अपने को 'ऋतूनां कुसुमाकरः' और श्स्थावराणां हिमालयरूश बता दिया था । कि जिसमें वसंत का रोमान न हुआ, उसमें हिमालय सा स्थैर्य कहाँ ? और यह वासंती हवा जिसे विह्वल न कर दे, उसे अपना चोला वासंती–रंग में रंगाने की ज़रूरत क्यों होगी ? कवियों ने बार–बार इसे काम–क्रोध का चोलना पहिराया; और बारह माह वसंत में रमने वालों ने इसे उतार–उतार फेंका । कि यह अपरिभाषेय बना रहे । इसी में इसकी अर्थवत्ता है । वह सृजन ही क्या जिसका ओर–छोर पहले से ही अनावृत्त हो । कहा न, वसंत एक गतिशील क्रिया–कलाप है । कभी न ठहरने वाला कारोबार । पुरातन का ध्वंस और नवोन्मेष है । प्रतिरोध और अनुरोध है । उदास पलकों पर उतरा

ख़्वाब है । यह विश्व हर घड़ी, किसी वसंत के इंतज़ार में होता है । यह मुश्किल घड़ियों में आता है । ठूँठ पर आता है । संताप के कंधे पर चढ़ा आता है । विपदा से, विरह से, आह से खिंचा चला आता है । सुभद्रा कुमारी चौहान ने कभी इस गुलाम देश के युवकों से यह जानना चाहा था : 'वीरों का कैसा हो वसंत ?' और निराला ने सुझाया कि "अभी–अभी ही तो आया है मेरे वन में मृदुल वसंत , अभी न होगा मेरा अंत।" तब उन्होंने वसंत को अनंत(कारी) बताया ।

यही है वसंत ! आशा का अमर संदेश !! अनंत का उद् घोष !!! यह वसंत हमारे हर ओर बिखरा हुआ होता है । वैसे ही जैसे अनंत । लेकिन हमें इसका भान नहीं होता । हम इसी अनंत के वाशिंदे हैं । हमारी साँसें ही हमारा जीवनाधार–कार्ड हैं । कोई सूरदास को बताए कि कबीर का 'निर्गुन' भी कहीं इसी देश का वासी होगा । जो यहाँ न हुआ तो कहीं का न होगा । जो है, बस यहीं तो है, इसके परे कुछ नहीं । और यह अनंत–देश, यानी समूचा पदार्थ–जगत क्षण–क्षण रूपांतरित होता चलता है । पक्की बात है कि जो है, वह बदलता हैं । वसंत की आहट कहीं देर से आए तो क्या ? किसी बाग में, किसी ललाट पर, किसी मन में वह उतरा होगा । उसकी दस्तक देर–सवेर हर ओर सुनाई देने लगेगी । आप सदाहरित देवदारु और कैल को देख वसंतागमन का कोई अनुमान नहीं लगा सकते । वनस्पतियों के अनन्य–सखा कल्याण सिंह रावत बताते हैं कि इनके शंकुकाय पत्ते एक–एक कर कब गिरते और आते हैं, यह जाना नहीं जा सकता । यानी यह रूपांतरण सूक्ष्म और विराट–जगत में अनवरत होता रहता है । निर्बाध । वसंत, सृष्टि के इसी रूपांतरण की बेला है । लाल–लाल बुरांश जब बुलावा देते हैं, हिमालय की ढलानों पर, सृष्टि सरक आती है एक नई ओर, अगले चरण की ओर । वसंत की यह सृजन–चर्या ही, संसार की बमयतमाम, उसके जीवों और वनस्पतियों की उत्तरजीविता है ।

यहाँ मैं हिमालय की तलहटी में एक सख्त तने वाले दरख्त को छू कर देखता हूँ । जैसे कोई बहार की नाइंसाफी से खिन्न, मुँह फ़ेरे ऐंठा हो । इसके कोटरों से चींटियों की पंक्तियाँ आँसुओं की तरह निकल आईं हैं । सहसा मुझे हिमवंत के कवि चंद्रकुंवर याद आते हैं । "जिनसे नव वसंत फूलों के हास छिपाता, ... धन विषाद में निशिदिन डूबी रहने वाली, विक्षिप्तों सी पृथ्वी भर में फ़िरने वाली ! ये मेरी आँखे हैं, जिनको कुछ न सुहाता । जिनसे नव वसंत अपना मृदु हास छुपाता।" यह हाहाकार, मधुमास की आँख से खून की तरह टपक पड़ता है । हमें कभी उन वंचितों के वसंत के बाबत भी सोचना चाहिए । कवि के हिसाब से 'नव वसंत में, जिनके यौवन को मरना है ।' चंद्रकुवँर सा हिमालय का दूसरा कौन कवि हुआ जो कहे 'मेरा घर है वहाँ, जहाँ बच्चियों जैसी, नाच नाच बहती हैं, छोटी–छोटी नदियाँ ।' उन नदियों के बारे में आप सुंदरलाल बहुगुणा से संवाद–रत होते तो शोक की नदी में डूब जाते । चंद्रकुंवर फ़िर कहते हैं ' मैं सूने शिखरों से आया । दावानल ने सुलग जिन्हें तरु की छाँहों से रहित बनाया । कभी न जिन पर पड़ी जल–भरित सावन के मेघों की छाया ।' क्या हिमालय में कोई ऐसा भी शिखर होगा जिन पर जल–भरित मेघों की छाया न पड़ती हो ? फ़िर क्या कहते हैं चंद्रकुवँर, कोई जानना चाहेगा ? लेकिन वसंत में 'धन–विषाद' से विक्षिप्त हो फ़िरने वाली आँखों से आँखें कौन मिलाए। और कौन जयशंकर प्रसाद की कामायनी–श्रद्धा के उस विचित्र प्रश्न से जूझे जो वह वसंतागार हिमालय को देख पूछ बैठी है कि "दृष्टि जाती जब हिमगिरि ओर, प्रश्न करता मन अधिक अधीर । धरा की यह सिकुड़न गंभीर, आह कैसी है क्या है पीर..." निस्संदेह, इस प्रश्न का रिश्ता सिर्फ़ हिमालय की पीर से नहीं: जीवन के संकटों और प्रकृति के तज्जनित संकेतों के अंतर्संवाद से है ।

कहना चाहता हूँ कि वसंत, पीले सरसों की क्यारियों से उतना नहीं , जितना ज़र्द पड़ गई ख़्वाहिशों से बाबस्ता है । वसंत कुछ और नहीं, वसंत की अधीर अभिलाषा है । मुक्तिबोध की भाषा में प्रजननशील–प्यास है । मेरे पास वसंत को व्याख्यायित करने के लिए एक शब्द हुआ करता था –– पुनर्नवता । लेकिन अब मुझे यह एक क्रिया–रहित, अपाहिज़ पद लगने लगा है । इस दुनिया के असंख्य मनुष्यों की धूल–धूसरित कामनाएँ हमारी छाती पर चढ़ कर पूछती हैं कि वसंत कोई पत्रा की तिथि है क्या ? हमारे जीवन में वसंत का आना किसी मौसम का मोहताज है क्या ? क्या बहारों से उठने वाली हूक वसंत नहीं ? क्या नाउम्मीदी की कचोट वसंत नहीं ? क्या बदलाव की आतुरता वसंत नही ? सुना नहीं, वसंत आता नहीं, ले आया जाता है... ।

✧✧✧

हमारी दुनिया आज मुश्किल में है । और कहा जा रहा है कि हमें इन मुश्किलों के साथ जीने की आदत डालनी होगी । हमें कोरोना वायरस के साथ जीने की आदत डालनी होगी । हमनें बार बार साबुन से हाथ धोते रहने की आदत डाल ली है । फ़िर भी

हमें किसी अन्य संभावित अनहोनी के साथ जीने की आदत डालनी होगी । हमें युद्धों के साथ जीने की आदत डालनी होगी । हमें प्रदूषण और दुर्गंध और शोर शराबे के साथ जीने की आदत डालनी होगी । हमें क्रूरता और मनुष्यता के क्षरण के साथ जीने की आदत डालनी होगी । हमें असीमित संपन्नता और असहज करने वाली विपन्नता के साथ जीने की आदत डालनी होगी । क्या आज हमारे पास कोई ऐसा साहसपूर्ण विचार नहीं है ; जो हमें इन मुश्किलों से आँख मिलाने का हौसला दे सके.. !

हाल ही में हमने महात्मा गाँधी की डेढ़ सौंवीं सालगिरह मनाई । क्या उनसे कुछ बात की जाए...

हम देखते हैं कि हमारे युग के संकट का एक बड़ा हिस्सा विकास की हमारी अवधारणा से जुड़ा हुआ है । विकास के बारे में हमारी समझ प्रायः नृकेंद्रीय (एंथ्रोपोसेंट्रिक) प्रत्यय से घिरी रही है ; बावजूद इसके मनुष्य प्रजाति के लिए भी ––– यह गंभीर संकट उत्पन्न करने वाली शै साबित हुई है । इसने लोभ लालच, हिंसक उपभोक्तावाद, असमानता और दारुण –दारिद्र्य के चित्र हमारे सामने रखे । निरंतर चलने वाले युद्धों और हिंसा का बोलबाला, विकास के पहलू के रूप में चिन्हित हुआ ; वहीं इसने पर्यावरणीय संतुलन को भी तहस–नहस करने में कोई कसर नहीं उठा रखा । हमने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आशय वाले जिस आधुनिक सभ्यता को खुशी–खुशी अपनाया ; कहना होगा, अनालोचनात्मक ढंग से अपनाया उस में छिपे हुए संकट के बीज हमारी दृष्टि से ओझल रहे । हालांकि न सिर्फ़ गाँधी बल्कि रूसो, रस्किन, टॉलस्टॉय, बौदलेयर, मिल और थोरो आदि ने भी इस आधुनिक सभ्यता के टेक्नो–साइंटिफिक रूप में अंतर्निहित मनुष्य की यंत्राधीनता की तीव्र भर्त्सना की थी । वर्ष 1909 में महात्मा गांधी ने 'हिंद स्वराज' में इसे 'शैतानी सभ्यता' के विशेषण से नवाजा । लेकिन दुनिया ने इन स्वरों को नजरअंदाज किया । जॉन स्टूअर्ट मिल ने कहा की जनसंख्या और संपत्ति की अमर्यादित वृद्धि के कारण यदि पृथ्वी का सौंदर्य नष्ट हो रहा हो तो हमें यह वृद्धि और विकास छोड़ देना चाहिए । क्या हमें यह छोड़ने को तैयार हैं ? बौदलेयर ने कहा कि जिससे हम जीने की इच्छा रखते हैं, उसी चीज से हमारा विनाश होगा । यंत्रों का यह राक्षस यंत्रासुर और हमारा अमेरिकीकरण कर देगा । तथाकथित प्रगति हमारी आध्यात्मिकता को नष्ट कर देगी। यह सर्वनाश सबसे मुख्य तो हृदय की नीचता में दिखाई देगा । हमारी बच्ची खुशी सामाजिकता इस पाशवीपन का शायद ही मुकाबला कर सकेगी ।

थोरो तो इस सर्वस्व बाजारवादी मनोवृत्ति को कविता विरुद्ध, दर्शन विरुद्ध और जीवन के विरुद्ध बड़ा से बड़ा अपराध मानते हैं । रूसो जो कि मनुष्य को स्वभाव से स्वार्थी नहीं मानते परंतु उसके ऊपर औद्योगिक सभ्यता के पाशविक आक्रमण से विचलित होकर कहते हैं कि इसने नैतिक मनुष्य और अनैतिक सभ्यता के बीच विसंगति पैदा कर दी है । रस्किन आधुनिक समय में मनुष्य को अनीति की ओर जाते देखते हैं तो गांधी 'हिंद स्वराज' में चेतावनी देते हैं कि यंत्रों ने यूरोप को उजाड़ना शुरु किया है तथा उसकी हवा हिंदुस्तान में भी है । यंत्रों को आधुनिक सभ्यता की निशानी, मुख्य निशानी रेखांकित करते हुए वह उसे 'महापाप' और 'सर्प के बिल' की संज्ञा देते हैं । जिसमें एक ही सर्प नहीं होता, सैकड़ों होते हैं । हम देखते हैं कि एक ज्ञानात्मक प्राणी के रूप में इस पृथ्वी पर रहने के लिए मनुष्य को जिन वस्तुओं विचारों और न्यूनतम सुविधाओं की अपरिहार्यता है उनका तीव्र गति से ह्रास हो रहा है । 'प्राण वायु' कहीं कहीं प्राणघातक–वायु के रूप में बह रही है । जल, जो लंबे समय तक पीने योग्य नहीं रह जाने वाला है । उसके अभाव के संकेत भी मिलने लगे हैं । अन्न, अपने नैसर्गिक उत्पादन की क्षमता खो कर जेनिटिकली मोडीफाइड और टर्मिनेटर सीड के रूप में हमारे जीवन और स्वास्थ्य के लिए एक चुनौती पेश कर रहा है । हमारी सामाजिकता और मिलजुल कर रहने व श्रम करने की प्रवृत्ति खतरे में पड़ गई है । हमारा अध्ययन, हममें दैहिक श्रम के प्रति हीन दृष्टि उत्पन्न कर रहा है । ज्ञान की जिज्ञासा ; समृद्धि और विलास की खोज में बदलती जा रही है । आधुनिकता के बहुत से पाठ प्रचलित हैं । इसी भांति विकास के भी । किंतु आज भी इसके कोर में वही नृ–केंद्रीय प्रत्यय मौजूद है । हालांकि प्रकृति से मनुष्य की अंतर्संबद्धता की अपरिहार्यता के विचार से दुनिया आज अनभिज्ञ नहीं है । प्रश्न उठता है कि क्या यह पृथ्वी सिर्फ मनुष्य की शरण स्थली है ? हम प्रकृति के शेष प्राणियों के प्राणाधिकारों के रक्षा की बात किससे करें ? अभी तो यह प्राणियों में सिरमौर, मनुष्य ही बहुत से मनुष्यों को भी जीने का समान अवसर देने के विचार से कन्नी काटता आया है । साथ ही शौकिया तौर पर प्राणियों की रक्षा के आंदोलन भी चलते रहे हैं । निसंदेह 'मनुष्य की उत्तरजीविता' पर विकास के इस प्रचलित रूप ने गहरा संकट पैदा किया है । आश्चर्य की बात यह है कि जिन राष्ट्रों और और समाजों ने विकास के आसमान में जितनी ऊंची छलांग लगाई है ; उनके मनुष्यों की उत्तरजीविता के सम्मुख उतने ही बड़े ख़तरे उपस्थित हैं ।

वस्तुतः मनुष्य की उत्तरजीविता का संबंध प्रकृति के जैव–अजैव रूपों से अंतर्संबद्ध है । हम देखते हैं कि विकास के मनुष्य–केंद्रीय प्रत्यय ने हमारे सामाजिक और पर्यावरणीय–संतुलन के लिए विक्षोभकारी परिणाम उत्पन्न किए हैं । एक चेतना संपन्न प्राणी के रूप में हमारा शेष प्राणियों और वनस्पतियों के प्रति एक उदात्त और संवेदनशील संबंध होना, स्वयं हमारे अस्तित्व के लिए भी अनिवार्य होता जा रहा है । हमें धरती की जैव व वानस्पतिक विविधता को बचाने का ज़िम्मा लेना होगा । हमें शिक्षा और विकास की एक नई अवधारणा पर विचार करना होगा । इसका पुनर्प्रत्ययन करना होगा । विडंबना ही है कि इस सभ्यता ने ––––– जहाँ तक इसका प्रसार हो सका ; नाना संस्कृतियों के मनुष्यों की जीवन शैली को यंत्रों के अधीन करने का लक्ष्य, जो उनके जीवन को और अधिक सुखद बनाने के दावे के चलते पाया था ।इस सभ्यता के मूल में उपभोक्ता वस्तुओं की अति–उत्पादकता और कृत्रिम आवश्यकताएँ सृजित कर के ढेरों मुनाफा कमाना रहा । कुछ कंपनियों के लिए यह अकूत संपदा

बटोरने वाला खेल साबित हुआ और इसने मानव जाति को शारीरिक और मानसिक रूप से अधिकाधिक अक्षम बनाया । मानव शरीर को टालस्टॉय की ही भांति गांधी भी एक नायाब यंत्र मानते हुए उस पर पड़ते मशीनों के प्रभाव का जमकर विरोध करते हैं । इसका अर्थ यह नहीं कि गांधी जी ने मशीनों को त्याग देने का प्रस्ताव दुनिया के सामने रखा । रोमाँ रोला ने इस बारे में उनके विचार को और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा था कि आज के गांधी, मशीनों और औद्योगिक तकनीकों की मुख़ालफत नहीं करते । बल्कि वह औद्योगिक सभ्यता से उत्पन्न एक उपभोक्ता समाज की श्रमहीन संस्कृति को विकृति मानते हैं । इस सभ्यता में खुशहाली कुछ के लिए ही थी । शेष के लिए 'दरिद्रता, अंधकार और कलह–कोलाहल' ही था । और इसके मूल में हर तरह की हिंसा अनुस्यूत थी । ग्रेग ने मशीनों के कारण पनपी परजीविता को रेखांकित किया और बताया कि युद्धों से भी अधिक लोग मशीनों के कारण मरते और अपाहिज होते हैं।

आज गाँधीजी को याद करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हम दुनिया के मौजूदा संकटों को ले कर उनसे संवादरत हों । अहिंसा और अपरिग्रह के विचारों में वह हमें मर्यादित विकास की कुंजी सौंप गए हैं । सुनिए वह कह रहे हैं.. 'अपने उपयोग से अधिक वस्तुओं का संग्रह भी हिंसा है'।

✧✧✧

'धरोहर' का यह अंक देर से आया है । पाँच सत्रों ––– 2016–17 से 2020–21 ––– के इस अंक की अनिरंतरता की ज़िम्मेदारी, बेहतर होगा कि मैं ही ले डालूँ । इन तमाम वर्षों में यह काम मेरे ही ज़िम्मे रहा होता ; तब भी इससे बेहतर नतीज़े की उम्मीद न थी । लेकिन यह क्या है...! मिशेल फूको किसी हिस्टॉरिकल कन्टीन्युटी को नहीं मानते । (हम उनसे असहमत हो सकते हैं कि वह तो सत्य को भी एक पदानुक्रम का विमर्श ही मानते हैं ।) वह इनिगमेटिक डिस् कंटीन्यूटी और रप्चर ––– रहस्यमय अनिरंतरता और टूट–फूट, दरार... की बात करते हैं । हालाँकि भाषा की ओर लौटने के उद् घोष के साथ वह फ़ार्मुलेशन / विवेचन में फाँक को रेखांकित करते हैं । यह विवेचन या निरूपण तो एक टूल है, जिसका इस्तेमाल हम किसी वस्तु या समस्या को खोलने के लिए करते हैं । इसलिए क्या यह उचित नहीं होगा कि विवेचन या निरूपण (में) की अनिरंतरता और टूट फूट / दरार... के स्रोत का पीछा करें । कि इसका उत्स क्या है । फ़िर कहीं वह स्रोत वह उत्स खुद उस निरुपेय समस्या के भीतर ही न पा लिया जाए ... ।

क्या हमारी यह समस्या सचमुच 'कार्य करने की निरंतरता' का भंग होना है । यदि हाँ तो इससे बचने का यही एक रास्ता है कि कार्य की निरंतरता को बनाए रखा जाए । ... क्या बग़ैर यह जाने कि –– कार्य क्या है.. ––हम उस कार्य की निरंतरता बनाए रख सकते हैं ? सृजन–कर्म ! क्या इस कर्म के लिए 'कार्य के प्रति निष्ठा' और 'कर्मठता' एक निणार्यक तत्व हैं ? क्या रचनात्मकता की खानापूर्ति मुमकिन है ?

एक संपादक के लिए सबसे अधिक तक़लीफ़देह पहलू यह होता है कि उसके पास प्रकाशनार्थ जो सामग्री आती है ; उसके लिखने वाले प्रायः 'रचना' के अर्थ से ही बिल्कुल अपरिचित होते हैं । और ऐसे ग़ैररचनात्मक लेखन को एक पिटारे में समो लेने से खुद उस संपादक (जो कि संभव है सूक्ष्म संवेदनाओं से युक्त लेखक भी हो) पर क्या गुज़रती होगी, इसका कोई अनुमान है । इस तरह तो वह एक लेखक या संपादक के रूप में फ़िनिश हो जा सकता है । रचनात्मक लेखन को इतनी शिद्दत से समझने समझाने के माने ये कतई नहीं कि बाकी लेखन निस्सार हैं । बल्कि दुनिया का काम तो उन्हीं से चलता है । ज्ञान, विज्ञान, समाजिक–आर्थिक–चिंतन, बाज़ार–वाणिज्य आदि से.. । बेशक, पत्रिका में अकादमिक लेखन / ज्ञानात्मक लेखन वग़ैरह की सम्मानजनक जगह होती है । तमाम ज्ञानानुशासनों के प्रति जिज्ञासा की पूर्ति भी किसी शैक्षणिक परिसर की पत्रिका की एक ज़रूरी विशेषता है । इस अंक में हमारे विद्वान अध्यापकों / अध्यापिकाओं और मेधावान विद्यार्थियों के ऐसे कई लेख हैं ।

बावजूद इसके, रचनात्मक लेखन के बग़ैर किसी पत्रिका के बारे में नहीं सोचा जा सकता.. । आप यह जानिए कि एक पत्रिका खोलते ही कोई पढ़ना चाहेगा ––– मौलिक कविताएँ, कहानियाँ, आलोचना, निबंध, एकांकी, संस्मरण, यात्रावृत्तांत, भविष्य के सपने, जीवन की कल्पनाएँ वगैरह वगैरह...। इस अंक में हमारे सम्माननीय साथी श्री नवीन नैथानी की कहानी 'चढ़ाई' और उनकी कहानियों पर डॉ. पल्लवी मिश्रा का वैदुष्यपूर्ण आलोचनात्मक लेखन पढ़िए ।

जब हम किसी रचना की मौलिकता पर विचार करते हैं तो उसके माने सिर्फ़ यह नहीं है कि वह किसी दूसरे की लिखी हुई न हो कर ; मेरे द्वारा लिखी हुई हो । बल्कि रचना को उसके मूल से, लेखक ने अपनी सूक्ष्म संवेदनाओं और जीवन जगत के अपने निजी अनुभवों के भीतर से ग्रहण किया हो । उसे लिखनेवाला अपने चारों ओर, और अपने भीतर बन और बिखर रही दुनिया का अवलोकन करता रहा हो । अनुभूति की सूक्ष्मातिसूक्ष्मताएँ उसे संवेदित और गतिशील करती रहीं हों । और तब वह उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए बाध्य हो जाए...। यह रचनात्मक बेचैनी ही मौलिकता है । इसमें लेखक के विशद अध्ययन और लोगों से मिलने जुलने, व्यक्ति चरित्रों के अनुशीलन का भी अपना रोल होता है । तो इस राह से वह (लेखक) एक मौलिक रचना की ओर कदम बढ़ाता है । इन सब बातों के बग़ैर तो रचना–कर्म मुमकिन नहीं । अगर है तो वह 'रचनाभास' है...।

हालांकि लेखन–कर्म मनुष्य के लिए कोई अनिवार्य वस्तु नहीं । वह अपने को अभिव्यक्त करने के दूसरे उपाय भी रखता है । मसलन, अभी कोरोना की पहली और दूसरी लहर के दौरान हमने देखा कि बाकी लोगों की तरह हमारे तमाम विद्यार्थियों ने भी अपनी सामर्थ्य से आगे बढ़ कर लोगों की मदद की, उन्हें रक्त दिया और प्रायः किसी कराह को अनसुना नहीं होने दिया । महाविद्यालय के एन० सी० सी० कैडेट्स ने कोरोना–संकट के दौरान प्रशासन को उल्लेखनीय सहयोग दिया और सम्मान अर्जित किया । बेशक, जब लोग संकट में हों, तो अपने को संकट में डालकर उनका साथ दो । क्यों कि तुम कष्ट उठा रहे लोगों की अवहेलना कर के तो ख़त्म ही हो जाओगे... । एक मनुष्य के रूप में बचे नहीं रह पाओगे । यही है उच्चतर श्रेणी की रचनात्मकता । अपने जीवन को औरों के जीवन की रक्षा के लिए खपा देने से अधिक सृजनात्मक कार्य कोई दूसरा भी है क्या !

एक पत्रिका को परिसर की सृजनात्मक उथल–पुथल का दस्तावेज होना चाहिए । वह किसी समाज के रचनात्मक कर्म का कारखाना होती है । उसमें तरह तरह की गूँजें अनुगूँजें सुनाई देनी चाहिए । बहुत से लेखकों की पहली रचना ऐसी ही किसी पत्रिका में छपी है । मैं अपने प्रिय विद्यार्थियों से कहना चाहता हूँ कि वे अपने लेखन को गंभीरता से लें । पत्रिका हेतु अपनी रचना भेजने के लिए अगर आप इंटरनेट / गूगल और व्हाट्सएप की ओर रुख़ करते हैं तो आप अपनी सृजनात्मकता को वह अवसर नहीं देना चाहते ; जिसके लिए यह पत्रिका निकल रही है । आप कोई सृजनात्मक कार्य करने जा रहे हैं तो बराए–मेहरबानी उस कलाकर्म से कुछ परिचित ज़रूर होइए । चाहे वह लेखन हो, पेंटिंग हो, गायन हो या अभिनय। उस कलाकर्म के अंतर्गत पहले के और अपनी समकालीन दुनिया में हुए कार्यों को देखिए सुनिए... । फ़िर हो सकता है कि आप उससे कुछ अलग और कुछ बेहतर भी कर दिखाएँ । एक बार पानी में उतरिए, हो सकता है आप तैर लें...

कहते हैं कि लय टूट जाती है तो उसे उठाना मुश्किल होता है । अब मुझे बेझिझक यह कहना होगा कि एक लंबे अंतराल के बाद यह पत्रिका 'धरोहर' सिर्फ़ इसलिए प्रकाशित हो सकी कि हमारे आदरणीय प्राचार्य महोदय डॉ. डी. सी. नैनवाल साहेब ने सुदीर्घ और स्नेहयुक्त संबंधों को एक ओर रखते हुए, बेहद कठोरता से, जितनी जल्दी हो सके पत्रिका प्रकाशित करने के लिए मुझे बाध्य कर दिया । बस ग़नीमत ये रही (और मेरी खुशकिस्मती भी) कि जिस टीम के साथ मुझे काम करने का अवसर मिला, उनमें से प्रत्येक, अकादमिक और सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में मुझसे बेहतर था । लिहाजा इस पत्रिका की परिकल्पना, अंतर्वस्तु की रूप रेखा, सामग्री–चयन और मुद्रित–शोधन (प्रूफ़रीडिंग) में मुझे अपने साथियों की क्षमता का अवर्णनीय लाभ मिला । फ़िर भी जो ख़ामियाँ इसमें रह गईं ; बिलाशुबहा वे मेरी ही हैं : लेकिन वे उनकी तुलना में बहुत कम हैं, जो मुझमें पहले से ही प्रचुर हैं ।

पत्रिका के प्रति महाविद्यालय के प्राध्यापकों की गहरी जिज्ञासा, उत्सुकता और भाँति–भाँति के सहयोग ने मुझे उत्साहित किया और पत्रिका के संपादन के दुष्कर कार्य को आसान बनाया । यह ज़रूर है कि अपने साथियों के इस यकीन के चलते कि हमारी टीम पत्रिका निकाल कर ही दम लेगी ———— मैने अपनी लापरवाहियों पर कड़ी नज़र रखी । इनमें हम उन प्राध्यापक साथियों को भी याद करते हैं, जो हमें छोड़ कर खामखा विश्वविद्यालय चले गए । महाविद्यालय के कर्मठ और निष्ठावान कर्मचारियों की जब जहाँ ज़रूरत महसूस हुई, उन्होंने अपना सहर्ष सहयोग दिया । छात्रसंघ अध्यक्ष अभिषेक पुरी ने अपने सामर्थ्य और संपर्क का इस्तेमाल कर छात्रसंघ–पदाधिकारियों की तीन वर्षों की सूची के अनुसार अधिकतर तस्वीरें मुहैय्या कराईं । बाकी रह गईं कुछ तस्वीरें मेरे विद्यार्थी आसिफ़ हसन ने तलाश कर भेजीं । मुझे याद आ रहा है कोरोना की दूसरी लहर में आसिफ़ , मनीष यादव और उनकी टीम ने जहाँ कहीं खून और प्लाज़्मा की ज़रूरत हुई, मदद पहुँचाई । धरोहर का फ्रन्ट कवर और लगभग सभी तस्वीरें महाविद्यालय के पूर्व छात्र और श्रेष्ठ फोटोग्राफर श्री पवन कुमार तिवारी का छाया चित्र है। बैक कवर भी पूर्व छात्र श्री उत्तम कुमार की पेंटिंग है। संपादक–मंडल के साथियों ने शब्दों और चित्रों को जिस कौशल से अपने हाथों में उठा कर 'धरोहर' को संजोया है ; वह कहते नहीं बन पड़ रहा है ।

अंत में मैं अपने विद्यार्थियों से कहना चाहूँगा कि महाविद्यालय की अकादमिक और ज्ञानात्मक गतिविधियों की दलहीज़ के बाहर चलने वाले रचनात्मक क्रिया–कलापों की ओर भी रुख़ किया कीजिए । और नए स्वप्नों, कल्पनाओं और विचारों को अपने मन–मस्तिष्क में आकार ग्रहण करने दीजिए...

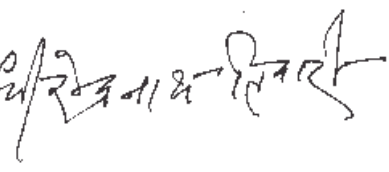

चढ़ाई

–डा0 नवीन कुमार नैथानी
भौतिक विज्ञान विभाग

वह बूढ़ा बंसखेड़ियों के झुंड के पास पहुंचकर रुक गया। उसने ऊपर नजर दौड़ाई – साल के नंगे पेड़ों के बीच गायों के अधछिपे शरीर हरकत कर रहे थे। उसने अपनी लाठी आहिस्ता से आम के पेड़ के सहारे टिकायी, अपने बदन को पेड़ का सहारा दिया और थकान मिटाने के लिए बैठ गया। उसने अपनी आँखें मूँद लीं।

उस स्थिति में चौकीदार नहीं लग रहा था। हालाँकि लोग उसे चौकीदार कहा करते क्योंकि तीस साल पहले तक वह चौकीदार हुआ करता था। तीस साल पहले जब वह बूढ़ा हुआ, उसके मालिकों ने उसकी छुट्टी कर दी। तीस साल बाद भी वह बूढ़ा था ...।

उसने आँखें खोलीं जैसे नींद से जागा हो। उसके सामने बच्चों का झुंड था। उसे आश्चर्य हुआ – बच्चे जेसे बिना आहट किये आकाश से टपक पड़े।

"तुमको मार पड़ी थी ना?" उनमें से एक बोला।

"दाद्दाजी तुम चोर थे?" दूसरे ने कहा।

फिर सब बच्चे खिलखिलाये। वह मुस्कराया, उसकी बेतरतीबी से छितरी मूँछें थोड़ा हिलीं। उसने लाठी उठायी और उन्हें दिखायी। वे सब दूर भागे। हँसे। फिर नजदीक सरक आये।

"पता है, कै बरस पहले की बात है?" वह गम्भीर हो गया। उसने लाठी फिर पेड़ के सहारे टिका दी।

"बहोत पेले की।" उनमें से कोई बोला।

"हाँ।" उसने पीठ पेड़ के तने से जमीन की तरफ खींच ली और पेड़ को तकिये की तरह इस्तेमाल करने की कोशिश करता लेट–सा गया। "तब यहाँ एक साधु रहता था। समझे? उसकी मुर्गियाँ थीं, मुर्गियाँ ....बहोत सारी। आठ, दस, पन्द्रह, पच्चीस, पचासों मुर्गियाँ। मैं पत्थर मारूँ, वो भाग जाएँ। एक मर्तबा उस साधु ने मुझे पकड़ लिया।"

बच्चे हँसे। बूढ़ा उनकी हँसी की बरसात रुकने का इन्तजार करता रहा। वे थमे। बूढ़े ने करवट ली, "फिर उसने मुझे लाठी मारी। समझे। लाठी से पीटा।"

बच्चे चुप थे। वे उसके चेहरे पर देख रहे थे। उसका लम्बा–सा मुँह। छितरे हुए दाँत, छितरी हुई मूँछें। सर पर छितरे हुए बाल .....

"मैं चोर था।" साल के मरे हुए पत्ते चरमराये। वह आहिस्ता–आहिस्ता उठते हुए बैठ गया। उसने लाठी उठायी और उसे बच्चों की तरफ हिलाते हुए कहा, "गायें, उजाड़ पे गयी हें। जल्दी भागो।"

बच्चे हड़बड़ाकर उठे। पहाड़ी की तरफ दौड़े। उनके दौड़ते कदमों के नीचे साल के पत्ते चरमराये। वह लाठी टिकाये धीरे–धीरे उठ खड़ा हुआ। पीछे से लुढ़कते पत्थरों की आवाज के बीच गायों की घंटियाँ टनटनायी। बच्चे गायों को हाँकते दूर चले गये।

उसने एक कदम आगे बढ़ाया और फिर रुक गया। वह सड़क बंसखेड़ियों के आगे सँकरी हो गयी थी। उसने नीचे की तरफ देखा – एक लम्बी ढलान। झाड़ियाँ – बेतरतीबी से छितरी हुई। यहाँ–वहाँ पेड़ों की छाँह तले वे घनी हो आयी थीं। उसने हवा खींची, अपना बायाँ हाथ कमर पर रखा और आगे बढ़ गया।

चार कदम चलने के बाद उसे लगा जैसे कोई उसके पीछे–पीछे तेजी से आ रहा है। वह रुक गया और धीरे–धीरे एक लय के साथ पीछे मुड़ा। सामने से कोई चालीस बरस का आदमी चला आ रहा था। उसे वह अजीब–सा चेहरा लगा। ऐसे चेहरे उसने पहले कभी नहीं देखे थे, चौकीदारी के उन बरसों में भी नहीं। एकदम गोरा चेहरा, जिस पर हरी आँखे चोकोर लम्बे चौखटे के ऊपर किसी माणिक–सी चमक रही थीं।

वह उससे कोई पाँच कदम दूर रुक गया। उसके शरीर से पसीने की गन्ध आ रही थी। बूढ़ा पसीने की गन्ध से परेशान था– शायद नहीं भी था। अजनबी आदमियों से परेशान नहीं होना चाहिए। उन पर नजर रखनी चाहिए, चौकीदारी का यह गुर उसने ईजाद किया था और अब भी उस पर अमल करता था। हालाँकि अब वह चौकीदार नहीं था।

"जी, सुनिए ....जरा एक मिनट।" अजनबी की आवाज बड़ी बारीक थी और उसकी एक उँगली हथेली से अलग निकल आयी थी।

बूढ़ा मुस्कराया। उसकी मूँछें थरथरायीं। वह सड़क के बीच में बैठ गया।

"बैठो।"

"जी.... लम्बा रास्ता है।" अजनबी ने कहा और सड़क के किनारे आसपास कुछ तलाश करने लगा। एक उभरा पत्थर देखकर वह वहाँ तक चला गया और उस पर बैठ गया। "मैं बड़ी दूर से आया हूँ। क्या सौरी का रास्ता यही है?"

बूढ़े ने सिर उस अन्दाज में हिलाया जिसका मतलब सिर्फ हाँ होता है।

"खुदा का शुक्र है। मैं मना रहा था कि यही रास्ता हो।" बूढ़ा चुप रहा। अजनबी भी चुप हो गया।

दूर जंगल में कहीं मुर्गा कुड़कुड़ाया।

अजनबी जेब से रूमाल निकालकर पसीना पोंछने लगा।

बूढ़ा चुपचाप बैठा रहा। कई पल इसी तरह गुजर गये। इस बीच सिर्फ झाड़ियों में पीछे से बटेर निकलकर नीचे ढलान की तरफ उतरे... एक तोता नजदीक किसी पेड़ पर उतरा और दूर से बन्दर नीचे उतरे।

"मैंने लोगों से पूछा था। उन्होंने बताया था कि सौरी के लिए बहुत चढ़ाई है। अब तीन किलोमीटर चल आया हूँ। कोई खास चढ़ाई नहीं है।"

बूढ़े ने सुना और सिर्फ सिर हिलाया। उसने लाठी अपने हाथ में ले ली।

"रास्ता यही है ना?"

"हाँ।" इस बार बूढ़ा बोला।

"मैंने सोचा कहीं गलत रास्ता न बता दिया हो।"

"हमारे यहाँ लोग ऐसा करते नहीं।" बूढ़े ने फिर लाठी जमीन पर रख दी।

"सौरी में कोई रामप्रसाद जी हैं। छियानब्बे साल की उमर है उनकी।"

बूढ़े ने आँखें मूँदी और सिर हिलाया।

"उनमें काफी आब है। मैं उनसे मिलने जा रहा हूँ। आप सौरी में ही रहते हैं?"

बूढ़े ने सिर हिलाया। फिर धीरे–से कहा, "हाँ।"

"आप रामप्रसाद जी को जानते होंगे।"

"हाँ।"

"वे मिल जाएँगे?"

"शायद।"

"मैंने सुना है वो बुढ़ापे से नहीं डरते।"

"हो जाता है। अब बुड्ढों का क्या भरोसा।"

फिर कुछ पल चुप्पी छाई रही। वह अजनबी उठ खड़ा हुआ, "कितनी दूर और है?"

"जितना चल आये हो उतना और चलना पड़ेगा।"

"जी लगता है पहले यहाँ घना जंगल रहा होगा।"

"था। बहोत घना था।"

"आप रोज इस रास्ते से जाते हैं?"

"तकरीबन रोज।"

"आगे चढ़ाई तो नहीं है?"

"है। बहोत लम्बी।"

"कितना आगे से शुरु होगी?"

"सामने। मोड़ दिखता है। उसके बाद एक मोड़ कोई पचास कदम बाद। फिर बस। चढ़ाई–ही–चढ़ाई, पूरे सौरी तक। "

"जी धन्यवाद।" उसने कहा और आगे बढ़ गया। साल के मरे हुए पत्ते उसके जूते तले चरमराये।

बूढ़ा उठा और लय के साथ पीछे की तरफ मुड़ा। अजनबी दूर जा रहा था। उसकी नीली कमीज धीरे–धीरे मोड़ के पीछे गुम हो गयी। अब वह फिर अकेला था। सौर में शायद एक दिन आएगा जब अकेला वही रह जाएगा। तीस बरस पहले, जब बुढ़ापा उस पर असर दिखाने लगा और नौकरी से छुट्टी हो चुकी थी, सौरी में तीस घर थे। अब तीस बरस बाद सौरी में छह घर रहे गये। उसने कदम आगे बढ़ाये– कुछ अपने दम पर, कुछ लाठी के सहारे।

साल का कोई पत्ता लाठी के नीचे आता या उसके पैरों के नीचे, अजीब चरमराहट होती। फिर सब चुप हो जाता। पहले ऐसा नहीं होता था। तब पूरी सड़क साल के पत्तों से भरी होती। पूरा जंगल एकाएक नंगा लगने लगता और पतझड़ एक बेशर्म मौसम लगा करता। नीचे जलधार से ही जंगल ऊबा हुआ लगता था। अब तो जलधार से जंगल दीखता ही नहीं। बरसों में आहिस्ता–आहिस्ता सब खत्म हो जाता है और पहचानना बहुत मुश्किल कि यहाँ पहले क्या था। अपने तरीके से बूढ़ा इस बात को सोचता रहा और सोचते–चलते मोड़ के पास पहुँच गया।

ठीक सामने मोड़ के साथ–साथ सौरी की वह प्रसिद्ध चढ़ाई शुरू होती थी। जब वह जवान था तो घंटे भर में बिना थके यह चढ़ाई चढ़ जाया करता था। तब वह चौकीदार था। अब वह चौकीदार नहीं। अब वह जवान भी नहीं है। उसे लगा चढ़ाई तो उतनी ही छोटी है, बस तनिक आराम करने की जरूरत है। उसने एक पेड़ के सहारे अपनी लाठी और पीठ टिकायी और आँखें बन्द कर लीं।

कुछ पल बाद नजदीक की कदमों की आहट हुई और एक आवाज उभरी, "नमस्ते चौकीदार जी..."

"कौन? फरती..." उसने आँखें बन्द रखीं।

"ना, सिताब सिंह।" जवाब आया।

"नहीं, सिताब सिंह।"

उसने आँखें खोलीं। सामने खिचड़ी बालों वाला फरती था। उसकी कमीज के बटन टूटे थे और पाजामें पर जगह–जगह पसरे पैबन्द यहाँ–वहाँ से उधड़ रहे थे।

"तू। मेरे सामने पैदा हुआ था। समझे।" बूढ़ा बोला।

"जी... हाँ जी। चौकीदार जी।"

"चौकीदार के बच्चे। तू बच्चा है।"

"हाँ जी...हाँ जी...बच्चा हूँ।"

"तू बच्चा है। समझे। तेरी मूँछ कहाँ है? जब मैं तेरी उमर का था...समझे। कै साल पहले?"

"जी बहोत पहले।"

"कै साल?"

"पचास साल..."

"हूँ... पचास साल। समझे... मेरी मूँछ जरा हिलती तो तहलका मच जाता। बाबू हनुमन्त कहते कि रामप्रसाद! तेरी मूँछ सलामत रहे। मेरी इज्जत सलामत रहेगी।" बूढ़ा बोलते

हुए फरती के चेहरे को पढ़ता रहा। यह बेहद कमजोर चेहरा था। फरती के खिचड़ी बाल उस चेहरे पर बेशर्मी झुके थे।

"डागदर ने कुछ बताया?" अब बूढ़े को चिन्ता हो आयी।

"आज बुलाया है?"

"सरकारी डागदर। सरकारी, कुछ कहा, क्या रोग है?" बूढ़े ने लाठी हाथ पर ले ली और अपने को पेड़ से अलग किया।

"डागदर ने कुछ नहीं बताया चौकीदार जी। मैंने बहोत कहा कि डागदर साहब बता दो। हम डरपोक नहीं हैं। डागदर ने कहा शायद टी.बी. है, अभी जाँच होगी।"

"हूँ... चिन्ता मत कर। मामूली चीज है। समझे, जा जल्दी जा।" बूढ़े की आँखें नम हो गयीं। फरती नीचे की तरफ धीरे–धीरे चलते हुए गुम हो गया। नीचे – जहाँ जलधार है। सरकारी अस्पताल है। बूढ़े ने चढ़ाई पर चढ़ना शुरू कर दिया। दूर कहीं तीतर बोलने लगा– टिड... टिड... टिटिटिड...

पहले इस हिस्से में भी साल थे, अब नहीं रहे। इधर आम और जामुन के पेड़ फासलों को ढकते हुए खड़े हें। ढलान पर आम के दो पेड़ मरे पड़े थे–टूटे हुए। अब जंगल को भी क्षय रोग हो गया है। नहीं बचेगा।

"बाबा! सौरी कितना और है..." पीछे से एक तीखी आवाज आयी।

यह बड़ी बेसब्री आवाज थी। वह रुक गया और इन्तजार करने लगा। पीछे से जो भी आ रहा होगा, उसके सामने पहुँच जाएगा। उसे कदमों की आवाज से लगा कि एक से ज्यादा लोग हैं।

वे दो थे। लड़का और लड़की। लड़का पतला था और लम्बा... उसकी उँगलियाँ पतली थीं। और हाँफ रहा था। लड़की इस बात से अनजान थी कि उसे देखा जा रहा है। वह पसीने से नहायी हुई थी, उसके माथे पर गोल बिन्दी आधी घुल गयी थी। वह लड़के के कन्धे का सहारा लेकर खड़ी रही और साँस खींचती रही।

"सौरी क्या बहुत दूर है?" लड़के की आवाज में सब्र नहीं था।

"नहीं। तीन मील है। बस।" बूढ़े ने धीरे से कहा।

"हम जलधार से चले थे..."

"हूँ..."

"बीच में कोई बस्ती होगी?" लड़की ने लड़के के कन्धे का सहारा छोड़ते हुए थकी आवाज में पूछा।

"नहीं।" बूढ़े का स्वर रूखा था।

"देखा? मैंने कहा था ना..." लड़के ने लड़की की तरफ देखा।

"आगे चढ़ाई इसी तरह है?" लड़की बूढ़े को देख रही थी।

"हाँ..." बूढ़ा मुस्कराया। उसकी बेतरतीबी से छितरी मूँछें थोड़ा हिलीं। उनके बीच बातचीत के लिए शायद अब कुछ नहीं बचा। वहाँ मौन हो गया। नीचे ढलान अपना विस्तार खो रही थी। पतझड़ एकाएक घना हो गया। आदमियों के बीच जब बातों के पत्ते छूटकर गिर जाते हैं तो पतझड़ घना हो जाता है। तभी जंगल में दूर कहीं मुर्गा कुड़कुड़ाया।

बूढ़ा चौंक गया। लड़की धीरे से हँस दी। बूढ़े को यह हँसी अच्छी लगी। वह भी मुस्करा दिया–उसकी मूँछें थरथरायीं।

"बाबा तुम्हारी उम्र कितने साल है?" लड़का एकाएक बोला।

"क्या करोगे?" बूढ़े ने कहा।

"यह कहती है, अस्सी है। मैं कहता हूँ बयासी है।"

"...," बूढ़ा सिर्फ मुस्कराया।

"हाँ बाबा, बताओ।" लड़की बोली।

बूढ़ा फिर मुस्कराया, "बहोत है"

"फिर भी। कितनी?"

"कौन जाने।"

"बाबा पुराने लोग गिनती भूल जाते हैं।" लड़की हँस दी। "मेरी कसम... बाबा बोल दो नब्बे साल, तब हम दोनों की बात गलत हो जाएगी।"

"छियानब्बे साल," बूढ़ा मुस्कराकर बोला।

वे दोनों चौंके। फिर चौंके ही रह गये। जैसे–जैसे चौंकते रहे वहाँ मौन भरता रहा। आखिरकार लड़की ने मौन तोड़ा, "तुम्हारी बुढ़िया भी बूढ़ी होगी।"

"हूँ..." बूढ़े ने सिर्फ एक आवाज निकाली।

"तुम्हारी लड़ाई होती है?"

"ना।"

"ना।"

"फिर दोनों प्यार से रहते हो?" लड़की खिलखिलायी।

"ना।"

"वह खाना पकाती है?"

"ना।"

"तुम्हारे साथ रहती है?"

"ना।"

"तुम भी अजीब हो।"

"हूँ..." बूढ़ा इस बार मुस्कराया नहीं। वह ढलान को देख रहा था। अगर कोई फिसला तो फिसलता ही चला जाएगा। पार साल किशन सिंह के नाती की गऊ फिसल गयी थीं

"चलो..." लड़के की बेसब्र आवाज से वह चौंका। एक–दूसरे से सटे–सटे वे चढ़ाई पर दूर होते गयें लड़की की साड़ी का पीला धब्बा दूर से उनके होने की पहचान बना रहां अब कई रंग बूढ़े की नजर से परे हो गये हैं आगे कहीं मोड़ के बाद वे गुम हो गये।

अब उस लम्बी चढ़ाई पर बूढ़ा अकेला था। वह धीरे–धीरे चढ़ाई चढ़ने लगा– लाठी पर अपने बदन का बोझ डाले। सड़क चौड़ी थी और ऊबड़–खाबड़ थी। पहले जब पगडंडी थी, तब ऊबड–खाबड़ नहीं थी। तब एक ही आदमी एक जगह चल पाता था। तब अकसर वह परमेसुरी के साथ आता। तब उसकी चाल में तेजी हुआ करती थी और परमेसुरी पीछे छूट जाती थी। तब लोग पगडंडी पर से चलते थे। अब यह सड़क है और अब लोग उस पर नहीं चलते। अब लोग नहीं हैं। वे पता नहीं कहाँ खो गये? साल के पत्तों की तरह...

उसकी लाठी साल के पत्ते पर पड़ी। एक पहचानी चर्राहट सुनकर उसे सुकून मिला। साल के पत्तों से उठती यह आवाज हर पतझड़ उसके लिए संगीत–सी उठती। यह चर्राहट कहीं घनी होती, कहीं विरल और कहीं बिल्कुल चुप। उसका घनापन बूढ़े को सुख देता, इस आवाज का छितरा होना उसे अवसाद का धुँधला आभास देता और इसका बिल्कुल न होना रेगिस्तान–सा दुःख देता। सड़क के उस हिस्से में पेड़ नहीं होते, वह कठोर हो जाती क्रूर और निर्दय ...

सड़क संकरी हो गयी तो वह रुक गया। आगे मोड़ था और वहाँ से सौरी ढाई मील था। परमेसुरी पूछती थी, "कितना और है?" वह कहता, "बस तनिक और, ढाई मील..." वे दोनों एक बड़े पेड़ की छाँह तले बैठ जाते थे। दसेक बरस हुए होंगे वह पेड़ आँधी से उखड़ गया। बूढ़ा वहाँ उभर आयी खाई को देखने लगा–हर बरसात खाई चौड़ी होती गयी और हर पतझड़ साल के पत्ते उसे भरने की कोशिश करते रहे।

एक छोटे पेड़े के सहारे बूढ़ा बैठ गया और आँख बन्द कर थकान मिटाने लगा।

ऊपर से आती पदचाप सुनकर उसने आँखें खोलीं। रघु और बचना आ रहे थे। रघु ने बचना का सहारा ले रखा था।

"नमस्ते चौकीदार जी!" बचना बोला।

"आओ बैठो।" बूढ़े ने तने पर पीठ टिकाये–टिकाये एक तरफ सरककर उनके लिए जगह की गोया वे किसी बस में सफर कर रहे हों। रघु बैठते हुए धीरे–से कराहा।

"ठीक हो जाएगा।" बूढ़े ने मुलायम आवाज में कहा।

"तीन दिन से अस्पताल जा रहे।" बचना बोला।

बूढ़े ने रघु की तरफ देखा। इसका पाँव मोटा हो आया था।

"फरती मिला... ?" रघु बड़ी मुश्किल से बोल सका।

"हूँ..."

"उसे टी.बी. है।" बचना ने कहा।

"हूँ..."

"बड़ा खराब रोग है।"

"नहीं।" बूढ़े ने ढलान की तरफ देखते हुए कहा।

"सच, चौकीदार जी, खराब है।"

अचानक बूढ़े की आँखें गीली हो गयीं। वहाँ आँसू निकल आये–पता नहीं कहाँ से। कोई अगर देख पाता तो वहाँ परमेसरी डबडबाती दीख जाती–टी.बी. से दम तोड़ती हुई।

"चलो..." बचना की आवाज उभर आयी। कराहता हुआ रघु उठा और वे देनों ढलान में उतर गये। बूढ़े के आँसू सूखने लगे थे। उसे गालों पर अजीब चिपचिपाहट महसूस हुई। वह उठा और बढ़ गया।

यह सबसे कठिन चढ़ाई थी। इस चढ़ाई के बाद एक मोड़ है फिर चढ़ाई कम है और सड़क के किनारे आम के पेड़ हैं, बड़ी–बड़ी चट्टानें हें, जिन पर आराम से लेटा जा सकता है। जब वह चौकीदार था तो बिना कहीं रुके सीधा सौरी पहुँचकर ही दम लेता था। सामने से कोई उसे घूरते हुए आ रहा था। बूढ़ा उसे पहचान नहीं पाया।

"नहीं पहचाने?" वह आदमी मुस्कराया।

बूढ़े ने सिर हिलाया।

"मैं रामफल हूँ..."

"ओ... मुमिरत लाल के लड़के। हूँ... कब आये?"

"परसों। आपके घर गया था। कुंडी लगी थी। पता चला चार दिन से आये ही नहीं।"

"हाँ... जरा जलधार रुका रहा। कै दिन हो?"

"अब कहाँ जाना चाचा। जिन्दगी गुजर गयी।"

"होश में है?"

"चाचा अब रिटायर हो गया।"

"ठीक है। अच्छा है। आराम करो।"

"कैसे कटेगी?"

"जैसी मेरी कटी..." अब वह बूढ़ा नहीं लग रहा था।

"पर चाचा तुम्हारी बात और थी।"

"क्या थी? तीस साल काट लिये। परमेसुरी गयी। फिर चौकीदारी गयी।" वह फिर से बूढ़ा हो गया।

"अच्छा चाचा एक बात पूछूँ! बुरा मत मानना।"

"पूछ।"

"आपकी उम्र कितनी होगी?"

"छियानबबे साल।"

"चाचा पिछले साल भी आप यही बता रहे थे।"

"सतानब्बे होगी।"

"उससे पिछले साल भी छियानब्बे बतायी थी।"

"तो अठानब्बे होगी।"

"चाचा क्या बात है? आप पिछले कई सालों से छियानब्बे से आगे नहीं बढ़े।" रामफल ने हँसते हुए कहा।

"तो निन्यानबे होगी।" बूढ़े ने धीरे–से कहा और आगे बढ़ गया।

चढ़ाई चढ़ते हुए उसकी साँस फूलने लगी। वह आगे चलता चला गया। अब हाँफने लगा था। उसने आगे मोड़ के

बाद किसी चट्टान में बैठकर सुस्ताने का फैसला किया।

मोड़ आया और चढ़ाई कम हो गयी। दूर किसी चट्टान पर पीला धब्बा इधर–उधर सरक रहा था। बूढ़ा रुक गया। हवा में लड़की की हँसी दूर से उभर आयी। बूढ़ा आगे बढ़ गया। अब वे दिखायी दे रहे थे। लड़का चट्टान पर सुस्ता रहा था। लड़की की साड़ी का पीला रंग एक धब्बे की तरह चट्टान और लड़के के बदन पर छिटका हुआ था बूढ़ा उनके नजदीक पहुँचा तो खाँसा। वह जब भी घर जाता तो खाँसता था और औरतें ओट कर लेतीं।

चट्टान पर कुछ बदलाव नहीं था। पीला धब्बा उसी तरह पसरा रहा–निष्कम्प। बूढ़े ने अपना मुँह बायीं तरफ कर लिया। चट्टान के नजदीक चूड़ी खनखनायी। वह तेजी से आगे निकल गया। पीछे से उसे खिलखिलाहट सुनाई दी। वह लड़की की हँसी थी जो उसके कानों से टकरायी और हवा में चूर–चूर होकर बिखर गयी।

बूढ़ा बहुत थक गया था। वह सड़क पर बैठ गया। बैठने के लिये वह हमेशा पेड़ के तने का सहारा लेता। वह इस तरह बैठता कि सड़क दूर तक नजर आती थी ऊपर भी और नीचे भी। वह आँख बन्द कर सुस्ताने लगा।

"अच्छा बाबाजी..." इस आवाज से बूढ़ा चौंक गया। उसने आँखें खोलीं। ऊपर से वही अजनबी नीचे उतर रहा था। वह बूढ़े के सामने पहुँचकर रुक गया।

"चल दिये?" बूढ़े ने कहा।

"हाँ जी। रामप्रसाद जी तो मिले नहीं।"

"हूँ..."

"उनके घर कुंडी चढ़ी थी। लोग उन्हें चौकीदार कहते हैं। बड़ी दिक्कत हुई। लोग तो नाम नहीं जानते।"

बूढ़ा चुपचाप अजनबी को घूरता रहा।

"चार दिन से गायब है। उनके लड़के भी सालों पहले चले गये थे। सारी मेहनत बेकार गयी।" अजनबी ने फिर हाथ जोड़े। वह नीचे की तरफ तेजी से उतरर गया।

बूढ़ा खड़ा हुआ। उसे दूर जाते अजनबी की चाल में कोई गहरी निराशा दिखाई दी।

"सुनो।" उसने जोर से कहा। उसकी आवाज थोड़ा आगे पहुँचकर खत्म हो गयी। वह अजनबी को नीचे जाते देखता रहा। मोड़ के पार वह भी गुम हो गया।

बूढ़े ने लाठी उठायी और सामने देखा। सौरी मील भर दूर था। सामने की चढ़ाई पाँच फर्लांग तक जाती थी और इस पूरे फासले में कोई मोड़ नहीं था। उसने चढ़ाई में फिर चलना शुरू किया–कुछ अपने दम पर, कुछ लाठी के सहारे।

उत्तराखण्ड हिमालयः
परिस्थितिकीय समृद्धि एवं भविष्य की चुनौतियां

–डा0 सूरत सिंह बलूड़ी
एसो0 प्रो0, (भूगोल विभाग)

आज से सात करोड़ वर्ष पूर्व हिमालय पर्वत के स्थान पर एक लम्बा संकरा जलमग्न 'टेथिज सागर' था, जिसके उत्तर व दक्षिण में क्रमशः अंगारालैण्ड एवं गौंडवानालैण्ड नामक कठोर स्थल पिण्ड स्थित थे। अंगारालैण्ड एवं गौंडवानालैण्ड की नदियां अपरदित होने वाले पदार्थ को सागर में जमा करती थी। महान हिमालय श्रेणियों के दोनों ओर दो सामानान्तर मूसन्नतियां थीं। तृतीय महाकल्प (07 करोड़ वर्ष पूर्व) के अन्त में सम्पूर्ण भू–खण्ड में बड़े पैमाने पर भूसंचलन एवं पटल पिवणन की क्रियायें हुई, टेथिज सागर के दोनो पार्श्वों के कठोर भू–भागों में संचलन की क्रिया के फलस्वरूप सागर से निक्षेपित पदार्थ पर तीव्र दबाव पड़ा जो कालान्तर में बलित होकर (मुड़कर) पर्वत श्रेणियों के रूप में प्रकट हुआ। हिमालय के उत्थान की प्रक्रिया कई चरणों (क्रिटेशियस, इओसीन, मायासीन, प्लयोसीन, प्लीस्टोसीन युगों) में सम्पन्न हुई जिससे कमिालय की तीन श्रेणियों में पुनरुत्थान हुआ और एक अग्रगर्त का निर्माण हुआ। जब निर्माण सामग्री समाप्त हुई हो चुकी थी, यही गर्त कालान्तर में सिन्धु–गंगा–ब्रह्मपुत्र का मैदान बनी।

प्लीस्टोसीन युग के बाद भी वर्तमान समय तक हिमालय का उत्थान मन्द गति से जारी है। भारत के कश्मीर से अरुणाचल तक 2400 कि.मी. की लम्बाई में विस्तृत पूर्व में नमचा बखा से पश्चिमी में नंगा पर्वत के मध्य उन्नतामदर चाप की आकृति के समान है।

हिमालय की चौड़ाई पश्चिमी भाग में अधिक जबकि पूर्वी भाग में कम है जबकि ऊँचाई की दृष्टि पूर्वी हिमालय अधिक ऊँचा है। विश्व के कई सर्वोच्य शिखर माऊण्ट एवरेस्ट (8,848 मी.), कंचनजंगा (8,598 मी.), मैकालू (8481 मी.) तथा धोलागिरी (8172 मी.) प्रमुख है।

उत्तराखण्ड हिमालय का भौगोलिक विस्तार 2843' से 31°27' अंक्षाशो व 77°34' से 81°02' पूर्वा देशान्तरों के मध्य अवसिथत है। इसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 53,483 वर्ग कि.मी. है। इसकी पूर्वी सीमा नेपाल से उत्तर दक्षिण में प्रवाहित काली नदी तथा पश्चिमी सीमा हिमाचल प्रदेश से टौंस नदी द्वारा निर्धारित होती है। इस प्रकार सम्पूर्ण क्षेत्र दन्तुर पर्वत श्रेणी (Serrated Mountain), विशाल प्रवण (Large Cirque) बर्फ से आच्छादित पर्व प्रवण (Snow Clade Mountain Slopes), लटकती घाटियां (Hanging Valleys), सोपानी सरितायें (Cascade Rivers), नदी वेदिकायें, हिमादी से युक्त है। यह ग्रेनाइट, ग्रेवो, क्वार्टजाइट, काग्लोमरेट, बलुवा पत्थर, स्लेट, सफ्टिक नीस आदि चट्टानों से निर्मित है। इसमें 07 जिले– गढ़वाल मण्डल (देहरादून, उत्तराकाशी, टिहरी गढ़वाल, पौड़ी गढ़वाल, रुद्रप्रयाग चमोली, हरिद्वार) और कुमायूँ मण्डल (ऊधमसिंहनगर, नैनीताल, चम्पावत, अल्मोड़ा, बागेश्वर, पिथौरागढ़) हैं।

उत्तराखण्ड हिमालय के अपवाह तन्त निर्माण में यमुना, टौंस, भगीरथी, भिलंगना, अलकनन्दा, पिण्डर, घौलीगंगा, मन्दाकिनी, नयरा, रामगंगा, सुखरौ, कोसी, गोला, काली, लोहावती नदियों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उत्तर भारत की प्रमुख सदानीरा गंगा, यमुना, काली या शारदा नदियों का उद्गम उत्तराखण्ड हिमालय से ही होता है। यहां पर प्रमुख पंचप्रयाग स्थित हैं– देवप्रयाग (भगीरथी–अलकनन्दा), रुद्रप्रयाग (मन्दाकिनी–अलकनन्दा), विष्णुप्रयाग (घौलीगंगा–विष्णुगंगा), कर्णप्रयाग (पिण्डर–अनकनन्दा) एवं नन्दप्रयाग (नन्दाकिनी–पिण्डर)।

अपनी विशिष्ट बलित अपनगीय एवं अभिनयीत संरचना

के कारण उत्तराखण्ड हिमालय में एक साथ उपोष्ण, शोतोष्ण, अल्पाइन एवं हिमालयी जलवायु के दिग्दर्शन होते है। साथ ही यहां की एक बन्द एवं विवृत घाटियों में अपनी अलग मौसमी दशायें हैं। इनमें स्थानीय मौसम से चलने वाली हवाओं एवं पर्वतीय समीर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

महान हिमालय क्षेत्र में स्थित पर्वतों के चारों ओर हिमानियां मालाओं के रूप में स्थित हैं जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि इन पर्वत शिखरों ने सफेद हिम की माला पहनी हुई है। इस उच्च हिमानी क्षेत्र में पश्चिम से पूर्व की पर्वत चोटियां इस प्रकार हैं– बन्दरपुंछ (6,320मी.), गंगोत्री (6,672 मी.), केदारनाथ (6,968 मी.), चौखम्बा (7,138 मी.), कामेंट (7,756 मी.), नन्दा देवी (7,817 मी.), दूनागिरी (7,066 मी.), त्रिशूल (6,480 मी.), नन्दाकोट (6,861 मी.), पंचाचूली (6,904 मी.), कुटी–शांग्टांग (6,480 मी.)। इस हिमालय क्षेत्र में हिमनदों के रूप में विशाल जलराशि संचित है जो नदियों को स्वच्छ जल के समृद्ध स्रोत हैं। प्रमुख हिमानियां इस प्रकार से हैं– भगीरथी–खरक, चोरावाड़ी, द्रोणागिरी, डोकरियानी, गंगोत्री, खतलिंग, मिलय, नन्दादेवी, पंचाचूली, सतोपंथ, सोना, यमुनोत्री हिमानी जिनसे यमुना, भगीरथी, अलकनन्दा, काली नदियां निकलती हैं। महान हिमालय तथा मध्य हिमालय के मध्य मके अनेक गुम्फित श्रेणियां एवं गहरी मोड़दार घटियों का जाल फैला है। मध्य हिमालय के दक्षिणी दलानों (3500–6000 मी. की ऊंचाई) पर छोटे–छोटे घास के मैदान पाये जाते हैं जिन्हें बुग्याल या पयार कहा जाता है। इनमें द्वारा, वेदनी, मुफसो, पावली, काठा प्रमुख बुग्याल हैं जिनमें बुगी, ममला इत्यादि मृद घासें मिलती हैं। इसी तुंगता पर ब्रह्मकमल, वत्सनाम, शालमपंजा, सोम, निर्विशी, कद्रवन्ती, विषकंडार आदि असंख्य जलीय पुष्प पाये जाते हैं।

वनोषधियों में खैर, ढाक, रीठा, हरण, मुलेठी, आंवला, मूसाकन्द, कयनार, वासा, सालम मिश्री, सालमपंजा, कुटकी, अतीस, जरामासी, अरारवर्ग, अश्वगन्धा, सर्पा, अजगरी, रुद्रवती मुख्य है। मध्य हिमालय के दक्षिण शिवालिक श्रेत्री के निम्नवर्ती भागों में 24 से 32 कि.मी. चौड़ी तथा 350 से 750 मीटर ऊंची संरचनात्मक घाटियां मिलती हैं, जिनमें देहरादून, पाटलीदून, पछवादून, पूर्वीदून, चड़ीदून, कोटादून, हर की दून, कोटा दून, मध्य दून की सुन्दर घाटियां विद्यमान हैं। हिमालय के सबसे नवीन भू–भाग शिवालिक श्रेणियां हैं जिसका निर्माण टरशियरी युगीन शैलो बलुआ पत्थर, चिकनी मिट्टी से हुआ है। इसके बाद 08 से 12 कि.मी. की चौड़ाई में पत्थरों एवं कंकड़ों की बहुतायत वाले पथरीले दलुआ धरातल वाला भाबर प्रदेश स्थित है। यह क्षेत्र वन–सम्पदा तथा वन्य जीवों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इससे लगा हुआ 15 से 30 कि.मी. क्षेत्र की चौड़ाई में दलदली एवं जलभराव वाले क्षेत्रों की अधिकता वाला तराई क्षेत्र है जहां हाथी घास तथा कोंस जैसी ऊंची घासों के विकास की अनुकूल परिस्थितियां पाई जाती हैं। यहां आर्द्र जलवायु के कारण रोगाणुओं की प्रचुरता मिलती है। इसकी संरचना में छोटे कंकड़, पत्थरों, रेत एवं चिकनी मिट्टी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

भौमकीय एवं तुंगता की विविधता के कारण उत्तराखण्ड हिमालय में भरपूर वनस्पतिक समृद्धता दिखने को मिलती है। परिस्थितकीय सन्तुलन बनाये रखने तथा स्थानीय लोगों की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में इन वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस प्रदेश के 3799.6 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में वन सम्पदा का विस्तार है जो कि 71.05 प्रतिशत है जिसमें ज्ञातव्य है कि प्रदेश की 90 प्रतिशत भूमि पहाड़ी एवं पर्वतीय उच्चावय वाली है। ऊंचाई के अनुसार 100 से 900 मी. तक उपोराण जलवायु, 900 से 1800 मी. तक गर्म शीतोष्ण जलवायु, 2400 से 3000 मी. तक शीत जलवायु, 3000 से 4200 मी. तक अल्पाइन जलवायु, 4200 मी. से अधिक हिमानी जलवायु पायी जाती है।

इसी जलवायु का अनुसरण करती विविध प्रकार की वनस्पतियां इन ऊंचाइयों पर स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है। 800 से 1500 मी. की ऊंचाई पर चीड़ के वृक्षों की बहुतायत मिलती है। आंतरिक हिमालय में ये 2100 मी. की ऊंचाई तक पाये जाते हैं। इनसे तारपीन का तेल एवं लीसा की प्राप्ति होती है। 1500 से 2800 मी. की ऊंचाई पर बांज, बुरांस, केल, माऊ खर्सू, बर्च, साइप्रेस, काफल, सेब, अखरोट पाये जाते हैं जबकि उपोष्ण वन क्षेत्र में साल, कंजू, सेमल, हल्दू, खैर, तुन, सेज मुख्य वृक्ष पाये जाते हैं जिनसे प्राप्त उत्पाद आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है। 2800 से 3800 मी. की ऊंचाई पर देवदार, स्प्रेस, सिल्वर, फर, ब्लू पाइन, भोजपत्र के नुकीली परती वाले वृक्ष पाये जाते हैं जिनकी सुगन्धित, मुलायम तथा टिकाऊ लकड़ियां बहुत मूल्यवान हैं।

इन विविध पारिस्थितकीय विशेषताओं से भरपूर उत्तराखण्ड हिमालय का यह वानस्पतिक क्षेत्र मानवीय अतिक्रमण का शिकार हो रहा है। एक लम्बी अवधि तक उत्तराखण्ड हिमालय की वन उपजों का अवैज्ञानिक रूप से दोहन करने के पश्चात सरकारों का ध्यान शाश्वत विकास हेतु गया है। हिमालयी भागों में हाल के वर्षों में औद्योगिकीकीण, शहरकरण, जनाधिम्य, वन–विनाश, आग लगाना, सड़कों का निर्माझा, जल–विद्युत परियोजनायें, नदियों के प्रवाह भागों पर होटल, लॉज का निर्माण प्रमुख रहा है। नदियों में मलबे तथा .अवशिष्टों के निक्षेप, सड़क निर्माण के विस्फोटों, वन जीवों के अवैध शिकार से पर्यावरणीय असन्तुलता बढ़ रही है। जिसके फलस्वरूप अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकम्पन, मिट्टी कटाव, एवालांच, बाढ़ आदि परिस्थितियों में उत्तराखण्ड का पर्यावरण लगातार प्रभावित हो रहा है। उत्तराखण्ड हिमालय की इस अमूल्य प्राकृतिक सम्पदा को संरक्षित रखने के लिए केन्द्र और राज्य सरकार को संरक्षण प्रदान करना होगा साथ ही लोगों में जागरुकता लाने की नितान्त आवश्यकता है।

महिला नेतृत्व एवं राष्ट्र का सशक्तीकरण

डॉ0 राखी पंचोला
विभाग प्रभारी

''मातृदेवो भवः'' के अनुपम घोष से अनुप्रमाणित हमारी भारतीय संस्कृति में महिलाओं का सदा से ही अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान रहा है। नारी करूणा, ममता, स्नेहद्व सहिष्णुता आदि से ओतप्रोत होती है। पुरूष और नारी जीवन रूपी गाडी के दो पहिये हैं। एक के बिना दूसरा अपूर्ण, अस्तित्वहीन है। प्रत्येक मनुष्य की सफलता के पीछे किसी न किसी का सहयोग होता है। तुलसी को तुलसीदास बनाने का श्रेय उनकी पत्नी रत्नावली को है। कालिदास को पत्नी विद्योत्तमा ने महाकवि बना डाला। महिला घर का निर्माण करती है। अतः उसे गृहणी कहा जाता है। महिला के बिना घर की कल्पना नहीं की जा सकती इसलिए कहा गया है ''न गृहे गृह मित्याडुः गृहणी गृहमुच्यते''। इतिहास साक्षी है कि भारतीय महिलाओं ने सतीप्रथा और जौहर प्रथा को अपने बलिदान से स्वीकृति प्रदान करी। महर्षि रमण के अनुसार ''पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए शील और जीव मात्रा के लिए करूणा सजोने वाली महाकृति का नाम नारी है''।

वर्तमान समय में महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव हुआ है। आधुनिक महिला अब घर की चार–दिवारी तक सीमित नहीं है। महिलाएं हर तरह से अपनी क्षमता और उपयोगिता को महसूस कर रही है। उन्होने तकरीबन हर क्षेत्र में बाधाओं का दूर किया है। देश की कुल आबादी में महिलाओं की हिस्सेदारी तकरीबन आधी है। सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की भूमिका में बढोतरी हुई है। महिला सशक्तिकरण की दृष्टि से वर्तमान घटनाक्रम उत्साहजनक है। भारतीय वायुसेना में महिला लडाकू पायलट की नियुक्ति की गयी है। महिलाएं अब सेना में युद्ध से जुडी भूमिका में भी जा सकती है। ओलिम्पिक, राष्ट्रमण्डल खेल, क्रिकेट, बेडमिंटन आदि अनेक अंतरराष्ट्रीय खेल आयोजनों में भारतीय महिलाओं का शानदार प्रदर्शन रहा है। भारत में

मंगलयान मिशन की सफल शुरूआत और 104 नैनो उपग्रह को एक रॉकेट के जरिये कक्षा में स्थापित करने वाली टीम में महिला वैज्ञानिक भी शामिल थी।

फीसदी तक पहुँच गयी। भारत में काम काजी महिलाओं की संख्या बढ़ रही है। एक तिहाई सर्टिफाइड इंजीनियर महिलाएं हैं। प्राथमिक स्तर पर तीन चौथाई से भी ज्यादा स्वास्थ्यकर्मी भी महिलाएं ही है। एक अनुमान के मुताबिक तकरीबन एक तिहाई सभी चिकित्सा क्षेत्र में शोध करता, बैंकिग कर्मचारी, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र के कर्मी और चार्टड अकाउंटेंट महिलाएं है। देश में लगभग 20 फीसदी महिला उद्यमि है।

राजनीति में भी महिलाओं की भागीदारी बढी है। पंचायतों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या तकरीबन 46 फीसदी है। ग्रामीण स्तर पर 13 लाख से भी अधिक महिला प्रतिनिधियों के कारण जमीनी स्तर पर बदलाव आया है। 1957 के चुनाव में सिर्फ 45 महिलाओं के आम चुनाव लडा था। जबकि 2014 के आम चुनाव में 668 महिलाओं चुनावी मैदान में थी।

देश की आजादी के बाद संविधान निर्माताओं और राष्ट्रीय नेताओं ने महिलाओं को पुरूषों के समान स्थान दे दिया। बाद में सभी सरकारों ने महिलाओं को पुरूषों के समान स्थान दिया। केन्द्र एवं विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं ने महिलाओं की विमुक्ति की दिशा में कार्य किया किन्तु आज भी महिलाएं असमानताओं में जी रही है।

किसी भी राष्ट्र का सशक्तिकरण महिलाओं के बिन अधूरा है। महिला सशक्तीकरण का उद्देश्य एक न्यायपूर्ण एवं सम–समाज की स्थापना करना है। क्योंकि लैंगिक समानता को सुशासन की कुंजी कहा जाता है। यद्यपि विश्व भर में लगभग आधी संख्या महिला मतदाताओं की है। किन्तु उनमें से सिर्फ 18ः ही संसद है। नार्डिक देशों में 41ः अमेरिकी देशों में 21.8ः, यूरोपीय देशों में 9.6ः और भारत के संदर्भ में राष्ट्रीय विधायकों में महिला भागीदारी 11.8ः है। देश भर में कुल 4118 विधानसभा सदस्यों में से केवल 9ः महिलाएं है।

मानव विकास रिपोर्ट 2015 के अनुसार भारत में लैंगिक असमानता सूचकांक में 188 देशों में भारत का 130 वां स्थान है। भारत में बालिकाओं का औसत स्कूलिंग बालकों की तुलना में 3.6 वर्ष कम है। जनगणना 2011 के अनुसार देश में स्त्री और पुरूष का अनुपात असंतुलित है। 0 से 06 वर्ष तक की आयु तक की आयु तक के बच्चों में लड़कों की संख्या ज्यादा है। भारतीय प्रशासनिक सेवा में महिलाओं की भागीदारी सिर्फ 11ः है। नई दिल्ली में 99 सचिव स्तरीय पदों में से केवल आठ पद महिलाओं के पास है और 65 अतिरिक्त सचिवों में से केवल 04 महिलाएं है। 283 संयुक्त सचिवों में 37 महिलाएं हैं। भारतीय पुलिस सेवाओं में महिलाओं की भागीदारी 5.6ः के आसपास है। भारतीय वन सेवा में महिला भागीदारी नगण्य है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अद्यतन रिपोर्ट के अनुसार वेतनदायी कार्य में महिलाओं की कुल संख्या 15ः है। अर्थात् 85ः महिलाएं नियति वशीभूत है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि महिलाएं आज भी वंचना कि शिकार है। अतः राष्ट्रों के सशक्तिकरण हेतु महिला सशक्तिकरण एक आवश्यक पूर्व शर्त है।

भारत में महिलाओं के समान अधिकारी प्रदान करने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीयों अभिसमयों तथा मानवाधिकार तत्वों का समर्थन किया है। भारत द्वारा मैक्सिकों कार्ययोजना (1975) नैरोबी फारवर्ड लूकिंग स्ट्राटेजी (1985) बीजिंग घोषणा तथा कारवाई मंच (1995) व 21वीं शताब्दी में महिला पुरूष समानता और विकास एवं शान्ति पर संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र में अंगीकार किए गए निष्कर्ष दस्तावेज को भी मानता है। सितम्बर 2015 में संयुक्त राष्ट्र संघ के 69वें महासभा अधिवेशन द्वारा चलाये गए विश्व अभियान 'ही फॉर शी' में भी भारत सम्मिलित हुआ।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि किसी भी राष्ट्र की परम्परा और संस्कृति उस राष्ट्र की महिलाओं से पता चलता है महिलाएं समाज की रचनात्मक शक्ति होती है। वर्तमान समाज को समृद्ध करने एवं भविष्य को बेहतर बनाने के लिए हमें महिलाओं की स्थिति को सुधारना होगा। उसके लिए समाज की मानसिकता बदलनी होगी एवं अपनी पुरानी मानसिकता का त्याग करना होगा। स्वामी विवेकानन्द की उक्ति को चरितार्थ करना होगा कि ''जब तक महिलाओं कि स्थिति में सुधार नहीं होगा विश्व के कल्याण कि कोई संभावना नहीं होगी''।

विज्ञान, टेक्नोलॉजी और समाज

–डा0 नवीन कुमार नैथानी
भौतिक विज्ञान विभाग

विज्ञान और टेकनोलोजी एक दूसरे से जुडे हुए किन्तु अलग–अलग क्षेत्र हैं. सामान्य बातचीत में प्रायः इन्हें एक दूसरे के पर्याय के रूप में देख लिया जाता है. टेकनोलोजी उतनी ही पुरानी है जितनी सभ्यता. सभ्यता को विज्ञान तक पहुंचने में सदियां लग गयीं. मनुष्य टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल प्रागैतिहासिक समय से ही करता रहा है। आग टेकनोलॉजी के प्रारंभिक दौर की ही देन है. टेकनोलोजी तात्कालिक जरूरतों को पूरा करने के लिये हर युग से मनुष्य के साथ रही है. सभ्यता जिस तरह से विकास करती रही, उसी के साथ–साथ टेक्नोलॉजी का भी विकास होता गया. विभिन्न औजारों का बनाना और खेती का विकास करना टेकनोलोजी के बिना संभव नहीं था. मनुष्य अन्य प्राणियों से अलग इसीलिये है कि वह प्रकृति के भरोसे नहीं बैठ गया.उसने अपनी शारीरिक सीमाओं का अतिक्रमण कर प्राकृतिक घटनाओं के बीच हस्तक्षेप की चेष्टा की. इन्हीं प्रयासों के दौरान विज्ञान सामने आया. प्रारंभ में शायद नदी किनारे की सभ्यताओं में बारिश, बाढ़ ,ओला–वृष्टि जैसी प्राकृतिक घटनाओं की पुनरावृत्ति से उत्पन्न पैटर्न को समझने की कोशिशों से विज्ञान की आधारशिला पड़ी. आज हम जिसे विज्ञान कहते हैं वह निश्चित रूप से प्रकृति और जीवन को जानने और समझने की विशेष पद्धति है जो सदियों के अनुभवों, प्रेक्षणों और तर्क–शक्ति के निरंतर उपयोग से अस्तित्व में आयी है. वस्तुनिष्ठता और प्रयोगों की सार्वभौमिकता इस पद्धति के आधार–स्तंभ रहे हैं .

प्रारंभिक दौर में जितनी आसानी से टेकनोलोजी और विज्ञान के फ़र्क को बतलाया जा सकता था आज वह अन्तर बहुत महीन रह गया है– बहुधा दोनों एक दूसरे की सीमाओं में निर्बाध संचरण कर जाते हैं. यह बात बिल्कुल सच है कि प्रारंभ में विज्ञान के विकास ने टेकनोलोजी के उत्थान में बड़ी भूमिका निभाई.बाद में टेकनोलोजी ने विज्ञान के लिये नये रास्ते खोले. आज हम सूक्ष्म जगत के बारे में इतना कुछ जानते हैं तो टेकनोलोजी के कारण! उसी तरह ब्रह्माण्ड की विराटता का अनुभव भी टेकनोलोजी के कारण ही कर पा रहे हैं.विज्ञान की थर्मोडायनामिक्स जैसी शाखा तो औद्योगिक क्रान्ति से ही उपजी है जिसके मूलभूत नियम विज्ञान के बहुत सारे अनुशासनों की आधार–भूमि हैं.

इसी सन्दर्भ में विज्ञान और दर्शन के परस्पर संबन्धों पर भी बात की जा सकती है..आधुनिक विज्ञान जब प्रकृति के मूलभूत नियमों की ओर जाता है तो दर्शन के सवालों से भी टकराता है.पहले वैज्ञानिक इन सवालों से बचने की कोशिश करते थे. अब वे इन प्रश्नों से कतरा कर नहीं निकल जाते बल्कि विज्ञान की सीमाओं के भीतर रह कर इन से जूझने की कोशिश करते भी देखे जा सकते हैं.कुछ क्षेत्र तो ऐसे भी हैं जहां हम विज्ञान, टेक्नोलॉजी और दीगर अनुशासनों में बहुत ज्यादा भेद नहीं कर पाते!उदाहरण के लिये आजकल बहुतायत में इस्तेमाल होने वाले पद 'कृत्रिम बुद्धि' (आर्टिफ़िशिअल इन्टेलिजेंस) को लें .सामान्य आदमी के लिये यह टेक्नोलॉजी का मसला है.रोजर पेनरोज़ ने लगभग तीस साल पहले एक किताब लिखी थी 'एम्परर्स माइंड'.यह मुख्यतः कृत्रिम बुद्धि से संबद्ध समस्याओं के साथ गणित,भौतिकी और मनोविज्ञान के भीतर डूबते हुए चेतना के सवालों को पाठकों के सामने रखती है.तब उस किताब से गुजर कर आश्चर्य हुआ था.लगा था कि विज्ञान की जटिलताओं से अछूते पाठक के लिये इसे आत्मसात करना मुश्किल होगा. आज उस किताब को एक आम पाठक ज्यादा सहजता के साथ ग्रहण कर सकेगा.उस वक्त पेनरोज़ विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक जिज्ञासाओं को सामने रख रहे थे .आज हम जिस समय में रह रहे हैं वहां टेक्नोलॉजी के कारण वे सब चीजें अमूर्त प्रतीत होती अवधारणाओं से बाहर निकल कर हमारी जिंदगी का हिस्सा बन चुकी हैं.

अगर सरल भाषा में कहें तो टेक्नोलॉजी व्यवहार से उपजी और विज्ञान जिज्ञासा से फलीभूत हुआ. विज्ञान के मूल

में यह जिज्ञासा दर्शन की जिज्ञासा से थोड़ा अलग है.दर्शन सिर्फ़ विचार और चिन्तन के जरिये सत्य तक पहुंचने का प्रयास करता है;विज्ञान सतत निरीक्षण और नियन्त्रित प्रयोगों पर आधारित सिद्धांतों को पुनः प्रयोगों की निर्मम कसौटी पर कसने के पश्चात ही सत्य के निकट पहुँच पाने की कोशिश करता है.साथ ही अन्तिम सत्य जैसी अवधारणा से भी भरसक बचने की कोशिश करता है. वस्तुगत होने की बाध्यता के चलते विज्ञान के साथ एक और चीज जुड़ गयी– परिमाणात्मकता.किसी चीज या गुण को अगर हम मात्रा के रूप में व्यक्त कर सकें तो उसका वैज्ञानिक निरीक्षण और परीक्षण वस्तुनिष्ठ हो सकेगा!कंप्यूटर यही करता है.आधुनिक प्रबंधन की बहुत सारी प्रणालियां इसी कोशिश का नतीजा हैं. यहां तक कि पसंद / नापसंद जैसे नितांत व्यक्तिनिष्ठ भाव भी नाप जोख की प्रणालियों में बदल दिये जाते हैं.इस काम के लिये बहुत से गणितीय माडल विकसित किये गये .

जब हम अतीत की तरफ देखते हैं तो एक प्रजाति के रूप में मनुष्य होने के प्रति गर्व की भावना से भर उठते हैं.विज्ञान (साथ में टेक्नोलॉजी भी) आज जहां तक पहुंच पाया है, वह अनगिनत व्यक्तियों और समूहों के अथक प्रयासों का नतीजा है.आप कल्पना कीजिये कि आज से बाइस सौ साल पहले इरेटोस्थिनीज़ ने ज्यामिती के तथ्यों और ज्ञात दूरी के दो शहरों पर सूर्य की परछाई को नाप कर इस विशाल धरती की परिधी का अनुमान कर डाला था.यह विशुद्ध विज्ञान था! टेक्नोलॉजी एक दूसरे रास्ते से आगे बढ़ रही थी.एक प्रजाति के रूप में मनुष्य की गतिशीलता जैसे–जैसे बढ़ी वैसे–वैसे उसके लिये टेक्नोलॉजी में और सुधार की जरूरतें भी बढ़ती गयीं.जहां–जहां आर्थिक गतिविधियां बढ़ती गयीं , वहां–वहां वैज्ञानिक गतिविधियों के लिये अधिक अवसर मिलते रहे. आधुनिक काल की शुरूआत में जब आर्थिक हलचलों का केन्द्र यूरोप हुआ तो वैज्ञानिक गतिविधियां भी यूरोप–केन्द्रित रहीं.बाद में आर्थिक गतिविधियां यूरोप से हट कर अमेरिका की तरफ अधिक होने लगीं और वैज्ञानिक अनुसंधानों के नये केन्द्र भी अमेरिका में स्थापित हुए.

विकास के क्रम में धीरे–धीरे विज्ञान की टेकनोलोजी पर निर्भरता बढ़ती चली गयी. टेक्नोलॉजी अब शुद्ध मानवीय जिज्ञासा और उपयोगिता तक ही सीमित नहीं रह गयी बल्कि आर्थिक,व्यावसायिक एवं राजनैतिक सत्ताओं को भी प्रभावित करने लगी.इसके लिये पूंजी की भूमिका महत्वपूर्ण हो उठी. आज विज्ञान की मूलभूत खोजों के लिये बेहतरीन मस्तिष्कों के साथ बहुत ज्यादा संसाधन और पूंजी की भी जरूरत होती है.यह समझना बहुत आसान है कि आज क्यों कुछ देश वैज्ञानिक गतिविधियों में बहुत आगे हैं और बहुत सारे देश बहुत पीछे हैं.विज्ञान के साथ राजनीति उसी तरह जुड़ी है जिस तरह आर्थिक गतिविधियों के साथ.

अगर यह कहा जाये कि आधुनिक विज्ञान की नींव में व्यापार की बहुत बड़ी भूमिका है तो गलत न होगा.समुद्री रास्तों पर नाविकों के पथ–प्रदर्शन की जरूरत ने वेधशालाओं को सक्रिय और अधुनातन होने के लिये बाध्य किया. फलस्वरूप खगोलविद टायको ब्राहे के तीस सालों के प्रेक्षणों पर आधारित केपलर के नियमों ने ग्रहों की गति के पैटर्न को समझा और थोड़े ही वक्त बाद न्यूटन का आविर्भाव हो गया. यह कोई संयोग नहीं था कि न्यूटन के आगमन से पहले गैलीलियो ने एक पुष्ट आधारभूमि तैयार कर ली थी. दूरबीन का आविष्कार हो चुका था और गैलीलियो के मन में खयाल आया कि इस दूरबीन को आकाश की तरफ उठा कर भी देखा जाये!

विज्ञान के भीतर शुरू से एक निरन्तरता रही है. लेकिन निरन्तर विकास की यह यात्रा इतनी सरल भी नहीं रही. विज्ञान को एक दूसरे मोर्चे पर सघन चुनौतियां मिलती रहीं. सत्ता पर वर्चस्व की लड़ाई में धर्म बहुत पहले से एक प्रमुख कारक बना रहा है! विज्ञान को अपनी विकास–यात्रा में संस्थागत धर्म के साथ संघर्ष करना पड़ा.गैलीलियो की जिन्दगी से हम सब परिचित हैं. वर्चस्व की यह लड़ाई आज भी जारी है .

आज यह संघर्ष बहुस्तरीय और जटिल हो गया है. सामान्यतः यह धारणा व्याप्त है कि विज्ञान हमारी बहुत सारी समस्याओं को आसानी से हल कर देगा.अतीत में जिस तरह चिकित्सा के क्षेत्र में महान खोजों ने मानव जीवन को अधिक आयुवान और बेहतर बनाया ,इस धारणा का बनना स्वाभाविक ही था. विज्ञान और टेकनोलोजी की इस जुगलबन्दी ने आर्थिक विकास के लिये मजबूत आधारशिला रख दी.लेकिन इस विकास के लिये पूंजी पर निर्भरता भी बढ़ती चली गयी. यह स्वाभाविक ही था कि इन अनुसंधानों का आर्थिक लाभ उठाया जाये. मानव जीवन के उन्नयन की सदेच्छायें निवेशकों के हितों की बलि चढ़ गयीं! विज्ञान हमेशा मनुष्य की बेहतरी के लिये है, इस बात पर अब भरोसे के साथ विश्वास करना संभव नहीं रहा.

भारत के सन्दर्भ में हम इस बात को औपनिवेशिक जमाने की दो महान प्रतिभाओं के उदाहरण से समझ सकते हैं. जगदीश चन्द्र बोस और सी.वी.रमन के नाम और काम से दुनिया परिचित है.रेडियो तरंगों के क्षेत्र में बोस का काम सारी दुनिया जानती है.उसी वक्त मार्कोनी भी इन तरंगों पर काम कर रहा था.बोस को कुछ यूरोपीय कंपनियों द्वारा इस खोज के व्यावसायिक दोहन के लिये आकर्षक प्रस्ताव दिये गये. 1901 में बोस ने रवीन्द्र नाथ टैगोर को लिखे एक पत्र में इस संबन्ध में लिखा था . बोस ने अपने काम को पेटेंट नहीं कराया.बोस मानते थे कि विज्ञान पर मनुष्य के लिये है.इसी तरह 'रमन–प्रभाव' के नाम से प्रसिद्ध खोज के व्यावहारिक उपयोगों के बारे में रमन बहुत अधिक उत्सुक नहीं थे और उन्होंने भी इस खोज का पेटेंट नहीं कराया.लेज़र–युग की

शुरूआत के बाद रमन प्रभाव पर आधारित 'रमन स्पेक्ट्रोमिट्री' रासायनिक विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण औजार बनकर सामने आया है.

विज्ञान के विकास के लिये एक चीज बहुत जरूरी है– तथ्यों और सूचनाओं का निर्बाध संचार.वर्चस्व की राजनीति सबसे पहले इन्हीं पर अंकुश लगाती है.दूसरे विश्व–युद्ध के समय और उसके बाद शीत–युद्ध के दौर में यह प्रवृत्ति खूब पनपी .शीत–युद्ध की समाप्ति के बाद कुछ लोग उम्मीद कर रहे थे कि अब खुली विश्व–व्यवस्था में सूचनाओं का प्रसार बिना रोक–टोक के जारी रहेगा.लेकिन हम सब गवाह हैं कि यह सिर्फ सदिच्छा ही थी।

कुल मिलाकर विज्ञान और टेकनोलोजी के क्षेत्र समाज और इसकी राजनीति से अलग नहीं है.वस्तुपरकता विज्ञान का एक प्रमुख मूल्य है.यह वह प्रमुख गुण है जिसे हमें आत्मसात करना चाहिए.वैज्ञानिक दृष्टि से संपन्न समाजों में वस्तुनिष्ठता एक प्रमुख जीवन–मूल्य होना चाहिए.लेकिन व्यवहार में हम इसे नहीं पाते.यहां विज्ञान एक हथियार के तौर पर इस्तेमाल होता है.नयी खोज और अनुसंधानों की दिशा वैज्ञानिक तथ्य तय नहीं करते बल्कि आर्थिक/राजनैतिक शक्तियां इन्हें तय करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं.

यहाँ एक और बात पर ध्यान देना जरूरी है.कई बार सत्ताओं द्वारा वैज्ञानिक तथ्यों का इस्तेमाल अपने बर्चस्व को बढ़ाने के लिये किया जाता है.इससे बचने के लिये हमें अपने विवेक को हमेशा जागृत रखना होगे – वह विवेक जो मनुष्य के पक्ष में देख सकने की दृष्टि देता है.

इसे हम आनुवांशिकी के उदाहरण से समझने की कोशिश कर सकते हैं.आनुवांशिक गुणों के बारे में वैज्ञानिक खोजों ने हमारे जीवन में बहुत प्रभाव डाला है.बल्कि बहुत से रोगों के निदान और उपचार के नये मार्ग भी खुले हैं.यदि कुछ नस्लवादी शक्तियां इन खोजों का हवाला देते हुए नस्लीय श्रेष्ठता के सिद्धान्तों को हवा देते हुए मनुष्य विरोधी विचारों को स्थापित करती हैं तो हम उसे स्वीकार नहीं कर सकते. आनुवांशिकी के क्षेत्र में जो नये क्रांतिकारी अनुसंधान हुए हैं उन्होंने हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाने की नयी समस्याओं से परिचित कराया है.इनके समाधान के लिये हमें विज्ञान से बाहर सामाजिक ढांचे तरफ़ देखना होगा. सामाजिक समरसता और प्राकृतिक बहुलता ही जीवन को आगे ले जाने का बीज–मन्त्र है.इसके लिये हमें मनुष्य होने के ज्ञान से अर्जित विवेक का सहारा लेना होगा. हमारा यह विवेक ही हमें बतायेगा कि विविधता और बहुलता प्रकृति का गुण है .प्रकृति के साथ सामंजस्य ही मनुष्यता को आगे ले जा सकता है.

उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।

– स्वामी विवेकानन्द

विभिन्न लोकसभा चुनावों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

–डा0 अंजलि वर्मा
राजनीति विभाग

भारत के स्वतंत्रता संग्राम की अनेक विशेषताओं में से एक महत्वपूर्ण विशेषता है – महिलाओं की प्रतिभागिता। महात्मा गाँधी ने आरंभ से ही महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होने के लिये प्रोत्साहित किया और कई छोटे–छोटे आंदोलनों द्वारा उन्हें इसमें शामिल किया। अतः पूरे देश में राजनीतिक जीवन और सामाजिक आंदोलनों में महिलाओं को संविधान ने बिना संघर्ष के अधिकार प्रदान किये। वे हैं स्थानीय स्वराज्य संस्थाओं से लेकर लोकसभा तक के सभी चुनावों में मतदान करने का अधिकार। इन सभी चुनावों में प्रत्याशी बनने का अधिकार। इस पृष्ठभूमि पर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विगत 75 वर्षों में महिलाओं का मतदान तथा उनकी जीतने की संख्या कैसे बढ़ती गयी, ये देखना उद्‌बोधक होगा।

लोकतंत्र शासन – व्यवस्था स्वीकृत देश में सामाजिक जीवन में बदलाव लाने हेतु प्रगति को गति देने हेतु और देश का भविष्य बनाने का एक प्रभावी माध्यम है – संसद। संसद के माध्यम से समाज के विविध घटकों का विकास करना हो तो सभी घटकों को संसद में आवश्यक प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए।

भारतीय चुनाव आयोग ने सन् 1952 से 2019 तक लिये गये चुनावों की समीक्षा प्रकाशित की है। इस समीक्षा के आधार पर कुछ महत्वपूर्ण मुद्‌दों पर चर्चा करने का प्रयास किया है।

1. इन सभी चुनावों में मतदाता के रूप में महिलाओं का कार्य कैसा है?
2. उम्मीदवारों की संख्या कितनी है?
3. उम्मीदवार का चुनाव जीतने का प्रमाण क्या है?
4. चुनी गयी महिला प्रतिनिधियों की लोकसभाा में कितनी संख्या है?

चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित जानकारी के आधार पर इस बाबत संख्यात्मक स्थिति को जाना जा सकता है। लोकसभा में प्रतिनिधित्व पाने के बाद वे इस पद का कितने प्रतिशत प्रभावी रूप से तथा किस प्रकार इस्तेमाल करतीहे, ये एक अलग पहलू है।

मतदान तथा महिला – स्त्री एवं पुरूष मतदाताओं की संख्या

मतदाता के रूप में महिलाओं का चुनाव में क्या योगदान है, इसके आँकड़े सारिणी क्र० 1 में दिये गये हैं।

सारिणी क्र० 1

विविध लोकसभा चुनावों में प्रत्यक्ष मतदान करने वाली महिलाओं एवं पुरूषों का अनुपात

वर्ष	कुल मतदान	पुरूष	महिला	पुरूष एवं महिलाओं के अनुपात में अंतर
1957	45.4	56.0	38.8	17.2
1962	55.4	63.3	46.6	16.7
1967	61.0	66.7	55.5	11.2
1971	55.2	60.9	49.1	11.8
1977	60.4	65.6	54.9	10.7
1980	56.9	62.1	51.2	10.9
1984	63.6	68.1	58.6	9.5
1989	61.9	66.1	57.3	8.8

वर्ष	कुल मतदान	पुरूष	महिला	पुरूष एवं महिलाओं के अनुपात में अंतर
1991	56.7	61.5	51.3	10.2
1996	57.9	62.0	53.4	8.6
1998	61.9	65.7	57.6	8.1
1999	59.9	63.9	55.6	8.3
2004	58.0	61.6	53.6	8.0
2009	58.1	61.0	55.8	5.2
2014	66.4	67.1	65.7	1.4
2019	67.11	69.4	69.47	0.07
औसतन	58.5	63.40	9.7	

(भारतीय चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित अहवाल 1951 से 2019 तक भारत सरकार)
(असम एवं पंजाब में 1985 में हुए चुनावों का समावेश नहीं। पंजाब में 1992 में हुए चुनावों का समावेश) नहीं।

सारिणी क्र० 2

विविध चुनाव लड़ने वाले महिला–पुरूष

वर्ष	कुल उम्मीवार	पुरूष प्रत्याशी संख्या	स्त्री प्रत्याशी संख्या
1957	1519	1474	45
1962	1985	1919	66
1967	2369	2301	68
1971	2784	2701	83
1977	2439	2369	70
1980	4629	4486	143
1984	5312	5150	162
1989	6160	5962	198
1991	8668	8342	326
1996	13952	13353	599
1998	4750	4476	274
1999	4648	4364	284
2004	5435	5080	355
2009	8070	7514	556
2014	8232	7590	644
2019	8049	1117	724

(भारतीय चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित अहवाल 1951 से 2019 तक भारत सरकार असम एवं पंजाब में 1985 में हुए चुनावों का समावेश नहीं। पंजाब में 1992 में हुए चुनावों का समावेश) नहीं।

1951 से 2019 के दौरान हुए लोकसभा चुनावों में खड़े उम्मीदवारों के आँकड़े दर्शाने वाली ये सारिणी है। उस पर एक नजर डालें तो स्त्री–पुरूष समानता का दिखावा करने वाला हमारा समाज राजनीति के फलक पर महिलाओं का कर्तव्य कैसे आँकता है, ये सहजता से संज्ञान में आता है। चुनावों में विविध पक्षों से कुछ स्वतंत्र प्रत्याशी खड़े होते हैं। महिलाओं की उम्मीदवारी को नाममात्र प्रतिनिधित्व देते हैं। सन् 1951 में जो उम्मीदवार थे, उनमें महिला उम्मीदवारों की संख्या 2.9% थी, जो धीमी गति से बढ़ते–बढ़ते 2014 में 7.8% हुई और 2019 में 14.3% हुई। यहाँ एक और बात ज्ञातव्य है कि चुनाव लड़ने वालों में सफल उम्मीदवारों में पुरूषों की अपेक्षा महिलाएं आगे हैं। उदाहरण किसी चुनाव में यदि पुरूष प्रत्याशी हों तो उनमें से लगभग 25 यानी 5 पुरूष चुनाव जीतते हैं और यदि 10 महिला प्रत्याशी हो तो आमतौर पर 5 महिलाएं चुनाव जीतती हैं।

लोकसभा में प्रतिनिधित्व :

लोकसभा के सभी चुनावों में महिला प्रत्याशियों के जीतने की संख्या पुरूषों की तुलना में अधिक होने पर भी लोकसभा में प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की संख्या पुरूषों की तुलना में अत्यंत अल्प है। ये निम्न सारिणी द्वारा ज्ञात होता है।

सारिणी क्र०

विविध लोकसभा चुनावों में जीतने वाले महिला एवं पुरूष उम्मीदवारों की संख्या

वर्ष	कुल प्रतिनिधि	पुरूष संख्या	स्त्री संख्या
1957	403	381	22
1962	494	463	31
1967	520	491	29
1971	518	489	29
1977	542	523	19
1980	529	501	28
1984	514	472	42
1989	529	500	29
1991	521	484	37
1996	543	503	40
1998	543	500	43
1999	543	494	49
2004	543	498	45
2009	543	484	59
2014	543	482	61
2019	542	464	78
कुल	8370	7729	641
औसतन	522	484	37

(भारतीय चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित अहवाल 1951 से 2019 तक भारत सरकार असम एवं पंजाब में 1985 में हुए चुनावों का समावेश नहीं। पंजाब में 1992 में हुए चुनावों का समावेश) नहीं।

उपरोक्त सारिणी से कुछ महत्वपूर्ण मद्दे स्पष्ट होते हैं।

सन्1957 में कुल 403 प्रतिनिधि चुने गये थे। इनमें 22 महिलाएं थीं। यानी संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 4.5% था। 1971 तक महिला प्रतिनिधियों की संख्या 55. 5% हुई। 1977 में आपालकाल के बाद के चुनावों में लोकसभा में केवल 3.5% महिलाएं विजयी हुईं। आज तक के चुनावों में ये सबसे कम संख्या है। शायद आपातकाल के विरोध में विविध पक्षों के कार्यकर्ताओं ने आंदोलन किया, उसके फलस्वरूप प्रस्थापितों के विरोध में मतदान करके जनता ने नए प्रतिनिधियों को अवसर दिया। इसमें पुरूष आगे रहे। अर्थात आपालकाल के विरोध में विविध पक्षों की महिला कार्यकर्ता भी सक्रिय थीं। उन्होंने कई बार आंदोलनों का नेतृत्व भी किया फिर भी लोकसभा में उनका नेतृत्व नहीं बढ़ सका। महिलाओं को प्रस्थापित होते समय अधिक प्रतिकूल सामाजिक परिस्थितियों से लड़ना पड़ता है। तत्पश्चात् 1984 की लोकसभा में महिलाओं के प्रतिनिधित्व में 8.4% की अधिक वृद्धि हुई।

1990 के बाद राज्य स्तर पर कुछ महिलाओं का नेतृत्व उभरा। उदाहरण पश्चिम बंगाल में सुश्री ममता बैनर्जी, तमिलनाडु–जयललिता, उत्त प्रदेश–सुश्री मायावती, इ. राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रभाव पड़ा किंतु लोकसभा में महिलाओं की संख्या धीमी गति से बढ़ती रही।

2014 तक धीमी गति से बढ़कर ये संख्या 11.2% हो गयी है। 2014 में 543 सदस्यों वाली संसद में महिलाओं की संख्या केवल 61 है। 2019 में यह संख्या 78 हुई है। इस गति से महिलाओं की संख्या बढ़ती रही तो 50% तक पहुंचने में और कितने वर्ष लगेंगे?

50% न हो तो भी लोकसभा में महिलाओं के लिये 33% आरक्षित स्थान रखें जायें, ऐसा विधेयक कई बार प्रस्तुत किया गया है। कोई भी विचारधारा की सरकार हो, फिर भी इस विधेयक का विरोध करने में सभी पक्ष एकमत हो जाते हैं। इसीलिये विधेयक अभी भी पारित नहीं हुआ। देखा जाये तो लोकसभा में 50% महिलाओं के प्रत्यक्ष सहभाग बाबत इतनी में चुनाव लड़ने का अधिकार दिया गया है फिर भी लोकसभा में महिलाओं के प्रत्यक्ष प्रतिभागिता में इतनी निराशाजनक परिस्थित क्यों है? इसके पीछे के कारण की चर्चा करें तो प्रकृति और समाज ने महिलाओं पर जो जिम्मेदारी सौंपी हैं, वो ही महिलाओं के राजनीतिक सहभाग में सबसे बड़ी बाधा है।

प्रकृति ने महिलाओं पर मातृत्व की जिम्मेदारी सौंपी है। 20 से 40 वर्ष उम्र तक का समय संतानोत्पत्ति और उसके पालन–पोषण में चला जाता है। साथ ही, भारत जैसे पुरूष प्रधान समाज में पितृसत्तात्क समाज व्यवसीा होने से परिवार के देखभाल की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं पर आती है। सभी मध्यमवर्गीय, निम्नवर्गीय, ग्रामीण और शहरी महिलाएं जिम्मेदारी सम्भालती हैं। नारी उच्च शिक्षित हों, ऊँचे पदों पर हों, फिर भी घर की जिम्मेदारी से महिलाएं मुक्त नहीं होतीं। ऐसी परिस्थिति में राजनीतिक क्षेत्र के विषय में सोचना व सहभागिता करना अत्यंत दुष्कर हो जाता है। कोई भी राजनीतिक दल इस विषय पर गम्भीर नहीं है। महिलाओं की सहभागिता में केवल चुनाव प्रचार व मतदान तक या संगठत तक ही सीमित रखना चाहते हैं।

विश्व स्तर पर महिला नेताओं का शासन काल

- श्रीलंका की सिरिमाओं भंडार नायके – दुनिया की पहली महिला राष्ट्रप्रमुख
- 1960 में उनकी नियुक्ति के बाद आजतक दुनिया में 63 महिला राष्ट्रप्रमुख
- आइसलैंड को लिी सर्वाधिक 16 वर्षों तक महिला राष्ट्रअध्यक्ष
- अमेरिका में आजतक एक भी महिला राष्ट्रअध्यक्ष नहीं बनी
- प्रगत राष्ट्रों की बजाए अप्रगत राष्ट्रों में महिला राष्ट्रअध्यक्षों की संख्या अधिक
- आजतक 79 देशों में महिला राष्ट्रप्रमुख नहीं हैं
- भारत सहित 5 राष्ट्रों को लिा 15 वर्ष से अधिक महिला नेतृत्व

विश्व स्तर पर जहाँ लोकतंत्र शासन पद्धति है, ऐसे देशों में महिलाओं का संसद में प्रतिनिधित्व कैसा है, देखना जरूरी है। Inter Parliamentary Union द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट में विविध देशों में संसद में महिलाओं का कितना प्रतिनिधित्व है, इसकी जानकारी दी है। विविध देशों में लोकसभा में महिला एवं पुरूषों का कितनीी संख्या में प्रतिनिधित्व है, इसका समय–समय पर अवलोकन किया गया। 1995 में तथा 2019 में विविध देशों से संसद सदनों में महिलाओं की कितनी संख्या थी, इस बाबत जानकारी दी गयी है। ये जानकारी इकट्ठी दी जा सके, इस हेतु दुनिया के विविध देशों का भौगोलिक स्थान पर आधारित समूह बनाकर इकट्ठा जानकारी दी है। उदाहरण यूरोपियन देशों का समूह, एशियाई देशों का समूह है। विश्व स्तर पर देखें तो महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ा है। 1995 में महिला प्रतिनिधियों का औसत अनुपात 11.3% था, 2015 में बढ़कर 22.1% हुआ है। और 2019 तक विश्व प्रतिनिधित्व विविध देशों में 24% हुआ महिला प्रतिनिधित्व अभी तक –

- नॉडिक देशों मे – 41.5%
- यूरोपियन देशों में – 25%
- अमेरिका एवं लैटिन अमेरिका में – 26.4%
- सब सहारन अफ्रीका समूह के देशों में – 22.3%
- एशियाई देशों में – 18.5%
- अरब देश समूह में – 16.1%
- रवांडा देश में – 63.8%
- बोलिविया में – 53.11%
- क्यूबा में – 48.91%

- स्वीडन में – 43.61%
- स्नेगल में – 42.71%
- फिनलैंड में – 42.51%
- इक्वाडर में – 41.51%
- भारत में – 121%

भारत में 1995 से 2015 तक की कालावधि में महिला प्रतिनिधियों का अनुपात 4.81% तक बढ़ा है। 1995 में भारत की संसद में महिलाओं का अनुपात 7.21% था और 2015 में 121% हुआ है। इस प्रकार विभिन्न देशों का परिदृश्य भी कुछ देशों को छोड़कर अत्यधिक उत्साहजनक नहीं है। महिलाएं चाहे किसी भी देश की हों, परिस्थितियां सभी की लगभग एक समान है। वहाँ चुनौतियां भी एक समान प्रतीत होती हैं।

ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां पहले से हमारी हैं। वो
हम ही हैं जो अपनी आंखों पर हांथ रख लेते हैं
और फिर रोते हैं कि कितना अंधकार है।

– स्वामी विवेकानन्द

लॉकडाउन के समय में मानसिक स्वास्थ्य, समस्या व समाधान

डॉ. पूनम पाण्डे
असि. प्रो., मनोविज्ञान विभाग

कोरोना वायरस के चलते, लागू लॉकडाउन में लोगों का मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ने का खतरा बढ़ गया है। प्रमुख अखबारों, सोशल मीडिया, न्यूज चौनलों के आधार पर इस दौरान तनाव, चिंता ,घरेलू हिंसा, आत्महत्या के मामले बढ़ गए है।

नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंसेज की एक रिपोर्ट के मुताबिक उन्हें साइकोलॉजिकल हेल्पलाइन में पहले दिन 1000 फोन कॉल्स आए और दूसरे दिन यह फोन कॉल 3000 हो गए। जिन्हें थोड़ी सी भी मानसिक दिक्कत थी उनमें और इजाफा हो गया। असल में लॉकडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग की जो अवधारणा है वह हमारे लिए बिल्कुल नई है। लगातार घरों में बैठे रहने और बाहर नहीं निकल सकने की बंदिश व कई प्रकार की अनिश्चितताओं के कारण लोगों में तनाव बढ़ रहा है। हम सबके लिए इससे उबरना मुश्किल है। इसका असर व्यक्तियों के मानसिक स्तर पर पड़ना स्वाभाविक है। कोलकाता के मेंटल हॉस्पिटल एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर के संस्थापक डॉ तपन कुमार रे का कहना है कि उन्होंने कोरोना वायरस के दौरान अपने हॉस्पिटल में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कई मरीजों में कोरोना वायरस की चिंता देखी है। इस समय पर ठीक से दवाइयों और काउंसलिंग का मिलना बहुत जरूरी है।

लॉकडाउन के दौरान चिंता, निराशा, घबराहट के दौरे ,भूख में अचानक वृद्धि, अनिद्रा, अवसाद, मनोदशा में परिवर्तन, भ्रम, भय और आत्महत्या की प्रवृत्ति जैसी चीजें आम बात है। शरीर व व्यवहार दोनों पर इसका असर दिखाई दे रहा है। बार–बार सिर दर्द का होना, थकान, ब्लड प्रेशर में उतार–चढ़ाव, बुरे ख्यालों का आना, नकारात्मक सोच जैसे नौकरी चली गई तो क्या होगा, कोरोनावायरस से ग्रसित हो गए तो फिर क्या, अपने सगे संबंधियों को कुछ हो गया आदि खयाल। एक काम पर ध्यान ना लगना, शराब, तंबाकू, सिगरेट का ज्यादा सेवन, ज्यादा टीवी देखना, ज्यादा चीखने चिल्लाने लग जाना या फिर चुप्पी साध लेना जैसी व्यवहारिक समस्याएं।

इन सब समस्याओं हेतु ऑनलाइन मनोचिकित्सकीय सलाह व मदद दी जानी चाहिए। जिससे कि तनावग्रस्त व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन कर उसे उचित उपचार उपलब्ध कराया जा सके। लॉकडाउन के दौरान सबसे पहला काम होना चाहिए कि इससे लड़ें नहीं इसे स्वीकार करें। पहले समस्या थी की काम और घर पर संतुलन नहीं बना पा रहे थे परिवार के लिए समय निकाल पाना मुश्किल हो रहा था और अब अचानक उनके पास समय ही समय है। लेकिन वे नहीं जानते कि इसके साथ क्या करना है ख्ऐसे समय में मानसिक स्वास्थ्य तब तक ठीक नहीं होगा जब तक सकारात्मक नहीं रहेंगे। परिवार से जुड़ेंगे नहीं और सोशल मीडिया से अन्य लोगों से संपर्क में नहीं रहेंगे।

दिन में कम से कम 1 से 2 घंटे खुद को टीवी, फोन, लैपटॉप आदि से बिल्कुल दूर रखें। ताकि आसपास की जानकारी के अति प्रवाह से निपटने में मदद मिल सके। इंस्टिट्यूट ऑफ ह्यूमन बिहेवियर एंड एलाइड साइंसेज के निदेशक डॉक्टर निमेश जी देसाई कहते हैं 'इसके लिए जरूरी है कि लोग उतनी खबरें देखें और पढ़ें जितना जरूरी है उन्हें समझना होगा कि एक ही चीज बार–बार देखने से उनके दिमाग में वही चलता रहेगा। इसलिए दिन भर का एक समय तय करें और उसी वक्त न्यूज चौनल देखें।' अतः अपने कार्यकलापों की लिस्ट बनाएं, रूटीन सुनिश्चित करें सोना, उठना, सही समय पर खाना और काम करने का एक नियमित चक्र बनाएं, जिससे कि मानसिक रूप से व्यवस्थित रखने में मदद मिलेगी और अपने कार्यों को करने की संतुष्टि भी मिलेगी।

दिमाग व्यस्त रखने के लिए गार्डनिंग करें, पेंटिंग बनाएं, डांस करें, म्यूजिक वीडियोस बनाएं। दिमाग व्यस्त रहेगा तो तनाव महसूस करने या लक्षणों के बिगड़ने की आशंका कम होगी। व्यायाम, ध्यान, प्रार्थना मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। होम वर्कआउट के द्वारा आसान व्यायाम करने का प्रयास करना चाहिए। शरीर को थोड़ा हिलाने की कोशिश व स्ट्रेच करें। इसके पश्चात आप थोड़ा बेहतर महसूस करेंगे, फिर थोड़ा ध्यान व प्रार्थना करें। छत पर टहलें, बाल्कनी में खड़े होकर सुबह की धूप का आनंद लें, अपनी कोई भी हॉबी को पूरा करें, भावनाओं को जरुर व्यक्त करें।

घबराहट या चिंता से निपटने के लिए आसपास की चीजों में ध्यान केंद्रित करें। कुछ देर चिड़ियों की चहचहाहट को सुनें, ठंडे पानी में हाथों और पैरों को डुबोयें, गहरी–गहरी सांसे लें, आसपास के फूलों को छुएं, अपने गमले के पौधे के हरे रंग को निहारे, सीढ़ियां चढ़े और उतरे, अपने फ्रिज की आइस ट्रे से एक बर्फ के क्यूब को लेकर थोड़ी देर तक पकड़ें, पसंदीदा परफ्यूम लगाएं और उसकी खुशबू को महसूस करें, ऐसी छोटी–छोटी चीजें करने से भी आपकी चिंता का स्तर कम होगा।

कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पेरेंट्स को अपने बच्चों के साथ कुछ भी ज्यादा जबरदस्ती नहीं करनी चाहिए उन्हें उनकी बायोलॉजिकल शेड्यूल के अनुसार चलने दें, बदली हुई परिस्थिति में एडजस्ट होने दें। कुछ समय अकेले छोड़ दें, तो वे कुछ समय बाद खुद ही अपना समय निर्धारित करेंगे, और कुछ ना कुछ जरूर क्रिएटिव करेंगे।

आधुनिकयुगे संस्कृतस्योपयोगिता

डॉ0 रेखा नौटियाल
असिस्टेंट प्रोसेसर, संस्कृत विभाग

संस्कृतभाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा। आधुनिका भाषाशास्त्रणाविचक्षणा निर्विवाद स्वीकुर्वन्ति यत् – भारोपीयभाषापरिवारस्यादिमं लिखितं प्रमाणं ऋग्वेद एवास्ति। ऋग्वेदश्च संस्कृतस्यभाषायामेव निबद्धः। इत्थं संस्कृतस्यभाषा विद्भभाषाणामं, विशेषतस्तु एवास्ति सर्वासां भारतीयाभाषाणां जननी कथ्यते। यथा जननी दुग्धादिदानेन शिशून् संवर्धयति तथैव संस्कृतं स्वशब्दकोषदानेन सर्वाः भाषाः समृद्धयति। संस्कृता परिष्कृता व्याकरणनियमपरिशुद्धा भाषाविज्ञाननिकषोपलपरीक्षिता च या भाषा सैव – ''संस्कृतभाषा'' – इति नाम्ना ज्ञायते।

संस्कृतं न केवलं भारतीयानां जीवने विशिष्ट स्थानं धारयति अपितु वैदेशिकानां हृदये अपि गरिमाम्आदधाति। अयं भारतवर्षः धन्यः यत्र इयं भाषा विलसति। विविधशब्द सन्दोहप्रवासिनी इयं भाषा प्राचीन कालाद्एवं निखिलेषु वाङ्मयेषु सर्वश्रेष्ठा प्रशस्ता च आसीत्। इयं भाषा देवभाषा देववाणी सुरभारती गीर्वाणवाणी संस्कृत भाषा प्रभृतनाम्ना प्रख्याता च अस्ति। छात्राणाम्अध्यनाय यद्यपि विज्ञान वाणिज्यादयः बहवः विषयाः सन्ति तथापि यादृशं विपुलं उदात्तं वाङ्मयं, यादृशी अध्यात्मपरता, चरित्र निर्माणाय प्रेरणा, अन्यत्र। इयं भाषा विविधभाषाणां जननीं वेदवेदाङ्गपुराणतिहासस्मृति ग्रन्थानाम् उत्पादयित्री च वर्तते। वेदेषुउपनिषत्षु, स्मृतिषु, धर्मशास्त्रेषु, रामायणमहा– भारतपुराणेतिसादिषु, अन्येषु च संस्कृतनाटकादिषु या संस्कृतिर्या वा सद्विचारसरणिवर्णिता तामनुसृत्य विश्वकल्याणं सुकरं। अस्ति वेदमन्त्रषु विश्वबन्धुत्वस्योपदेशः।

तद्यथा –

''मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।''
''सर्वा आशा मम भिन्नं भवन्तु।''
''बन्धुमें माता पृथ्वी महीयम्''।

सर्वभूतहितमयी भावना मानवसंस्कृतेः पराकाष्ठा। सा तु यथा–

एतादृशी उदात्तभावना देववाण्यामेव प्रथमं प्रादुर्बभूव। यदीयं भव्यभावना विश्वमानवमानसेषु प्रतिश्ठामाप्नुयात् तर्हि न क्वचिदपि किंचिदपि क्लेशों रागद्वेषलेशों वा भवेत। विश्वशान्तिस्थापनाय संस्कृतस्य अध्ययनं आवश्यकं वर्तते। अधुना वैदेशिका अति अस्मां शास्त्रेषु निहितानां शान्तिपरक वाक्यानाम् अध्ययनेन, भाषणेन प्रेरिता सन् शान्तयर्थ बहुषु आश्रमेषु संस्कृतं पाठ्यमाना दृश्यन्ते। संस्कृतभारती तु भारते एवं न अपितु अमेरिका देशे विंशतिवर्षाद् संस्कृत समृद्धिये प्रचाराय च यतमाना अस्ति। पूर्ववर्षेथाइलैण्डदेशस्य षोडशस्य विश्व संस्कृत सम्मेलनस्य आयोजनम् अभवत्। यस्य उद्घाटनं अस्माकं देशस्य भूतपूर्व विदेश मंत्रिणा श्रीमत्या सुषमा स्वराज महाभागया कृतम्। स्वकीये सम्बोधने सा अकथयत् यत् संस्कृत भाषा वर्तते। विश्वेसप्त–सप्तधिकैकशतेषु देशेषु योगस्य अनुयायिनः सन्ति। संस्कृतस्य बिना योगस्य अध्ययनम्अपूर्णम्। अतः अद्य संस्कृतं अत्यन्तं वेगेन प्रसरत् निरन्तरं वर्धमानं च वर्तते। संस्कृत भाषा न केवलं भारते देशे अपितु बहुषु देशेषु संस्कृतस–म्भाषणशिविराणाम् आयोजनं करोति। संस्कृतभाषा सामान्य भाषा नास्ति। इयं प्राचीन भारतस्य शिल्पकृषिरसायनखगोल भूगोल पशुविज्ञान अर्थशास्त्र राजनीति प्रभृतीनां विविध शास्त्राणां भाषा वर्तते।

आधुनिकयुगे संस्कृतोपयोगित्वादिविषयेषु विचारार्थ अन्येषु च शास्त्रीयविषयेषु शोधपूर्णचर्चार्थ विविध विश्वविद्यालयेषु शोधसंस्थानेषु च काले काले संस्कृतसम्मेलनानि शोधगोष्ठयश्च समायोज्यन्ते। विशिष्टावसरेषु संस्कृत कविसम्मेलनान्यपि क्रियन्ते। संस्कृतस्य शोधकार्यहेतवः अपि संगणके विविध साधनानि सन्ति। संस्कृतस्य प्रचाराय विविधः पत्रिकाः अपि सन्ति यासु सम्भाषणसंदेशः, सुधर्मा, संस्कृत रेडियों दूरदर्शने वार्तावली च अन्तर्जालपुटे उपलब्धाः। बहवः संस्कृतसंस्थाः अपि संस्कृतस्य प्रचाराय यतमाना सन्ति यासु संस्कृत अकादमी, संस्कृत भारती, वेदविज्ञान गुरूकुलम्, देहली, हरिद्वार, उज्जैन, कर्नाटक, जयपुर, हैदराबाद स्थिता संस्कृत अकादमी, संस्कृत संवर्धन प्रतिष्ठानम् अन्ताराष्ट्रिय संस्कृताध्ययन समवायः अन्तर्जालयुता सन्ति। बहवः संस्कृत गोष्ठ्यः अपि ई मेल माध्यमेन जिज्ञासूनां छात्राणां संशयच्छेदनाय तत्पराः सन्ति। विविधाः संस्कृत विश्वविद्यालयाः अपि संस्कृत समृद्धस्ये प्रयत्नवस्यः सन्ति येषु देहली – तिरूपति उत्तराखण्डे स्थितं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, कर्णाटक – वाराणसी – जयपुर – जबलपुर – देहली आदि प्रान्तेषु स्थितः संस्कृत विश्वविद्यालयाः अपि संस्कृतस्य उन्नत्यै प्रयासरता सन्ति।

आधुनिकसमये संस्कृतस्य आधुनिकविषयेः सह योजनं, समकालीन साहित्यस्य निर्माणं, संस्कृत ग्रन्थानां वैज्ञानिका दृष्ट्या अध्ययनम्आवश्यकम् अस्ति। आधुनिकसमये संस्कृतस्य शिक्षणे सम्भाषणविधेः परिष्कार, पठन–पाठन पद्धते, नवीनीकरणं, समुचित पाठय्क्रम निर्धारणं, लघुवाक्येषु परस्परं सम्भाषणं सरलतया विधिना व्याकरणं सुत्राणां पाठनम् संस्कृतभाषयाम् एवं शोधकार्य, शोधकार्य संरक्षणाय समयदां, भाविभारतस्य आवश्यकतानुसां भाविसंस्कृत विदुषां निर्माणं, संस्कृते निहितं ज्ञानविज्ञानदीनां वर्तमान परिस्थिति उपयोगः कालस्य पररवर्तनानुरूपं अद्यतनीनाम् आवश्यकतानां पूर्तिहेतवे संस्कृतस्य महत्वं प्रतिपादनीयम्।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. यजुर्वेद 36/18, **2.** अथर्ववेद 19/15/6,
3. ऋग्वेद 1/164/33

भगवान का भेजा गया मानव के लिये एक तोहफा "माँ"

–जितेन्द्र सिंह नेगी
कनिष्ठ सहायक

सभी को जितेन्द्र सिंह नेगी (जीती) का प्यार भरा नमस्कार! आपने पहले भी **"धरोहर"** पत्रिका के माध्यम से **"माँ"** पर कहानियां पढ़ी हैं। जैसे अगर ईश्वर नहीं दिखता, तो माँ को देख लीजिए। माँ का प्यार, माँ जैसा कोई नहीं, जिसको आपने बहुत सराहा है। इसी के साथ मैं आपके लिये एक और माँ पर कहानी लेकर आया हूँ। जिसका आपको बहुत बेसब्री से इंतजार रहता है, जिसके लिये मैं आप सभी का दिल से धन्यवाद करता हूँ। इस बार भी सभी को बहुत बेसब्री से इंतजार था कि जितेन्द्र इस बार फिर माँ पर कुछ नया लेकर आयेगा। मेरे को सभी ने पछा कि इस बार भी क्या माँ पर कुछ लेकर आयेगा? तो मुझे बहुत अच्छा लगा सुन के कि सभी को कितना इंतजार है माँ पर कहानी का, क्योंकि दुनिया में शायद ही कोई ऐसा होगा, जो अपनी माँ को प्यार ना करता है। सभी करते हैं।

कुछ दिन पहले मुझे हमारी आदरणीय प्राचार्य महोदया जी ने भी मुझसे पूछा कि इस बार आपने **"धरोहर"** पत्रिका के लिये कुछ नहीं दिया? जब उन्होंने कहा कि माँ पर तो मुझे ये सुनकर बहुत अच्छा लगा और ये सोचने लगा कि सभी माँ पर कहानी पढ़ना पसंद करते हैं। इसी के साथ आज मैं सभी के लिये माँ पर कहानी लेकर आया हूँ।

भगवान का भेजा गया मानव के लिये एक अनमोल तोहफा "माँ" का नाम दिया है। एक बच्चे का भगवान से पूछा गया बहुत ही सुन्दर सवाल – एक बच्चा, जिसने अभी तक जन्म भी नहीं लिया था। उसका जन्म होना वाला था। उसने जन्म से कुछ ही समय पहले भगवान से पूछा – 'मैं इतना छोटा और मासूम हूँ। मैं खुद से कुछ नहीं का पाऊंगा, तो इतनी बड़ी धरती पर अकेला कैसे रहूंगा? भगवान, आप मुझ छोटे से बच्चे को अपने पास रहने दो, मैं धरती पर कभी नहीं जाना चाहता हूँ।' उस मासूम की बातों कोसुनकर भगवान बोले – 'हे बच्चे! मेरे पास बहुत सारे फरिश्ते हैं, उन फरिश्तों में से एक मैं तुम्हारे लिये चुन के भेजूंगा, जो आपको बहुत प्यार करेगा और आपका ख्याल रखेगा। आप मुझे बताइये कि मैं यहां स्वर्ग में कुछ नहीं करता हूँ। बस गीत गाता हूँ और मुस्कराता हूँ। मेरे लिये खुश रहने का यह एक बहुत प्यारी और सुन्दर जगह है। जिस फरिश्ते को मैं आपके लिये भेजूंगा, वह फरिश्ता आपके लिये गायेगा भी और तुम्हारे लिये मुस्करायेगा भी। तुम उसके प्यार को महसूस करोगे और खुश रहोगे।'

'जब मुझे किसी से बात करनी होगी तो या लोग मुझसे बात करेंगे, मैं उनकी बातों को और भाषा को कैसे समझूंगा। मुझे उनकी भाषा नहीं आती।' बच्चे ने कहा।

भगवान ने कहा – 'मेरा भेजा गया फरिश्ता तुमसे बहुत ही मीठे और प्यारे बोल बोलेगा और बात करेगा। वो ऐसे प्यारभरे शब्दों में तुमसे बात करेगा, जो तुमने यहां नहीं सुने होंगे और वो तुम्हें बहुत ही धैर्यपूर्ण ढंग से बोलना सिखायेगा। वह तुम्हें प्रार्थना करना सिखायेगा, जिससे तुम मुझसे बात कर सकोगे और मिल सकोगे।'

बच्चा बोला – 'हे भगवान, धरती पर पर बहुत ही बुरे प्राणी रहते हैं। उन गन्दे और बुरे प्राणियों से मुझे कौन बचायेगा?'

'मेरा भेजा गया फरिश्ता हर बुराइयों से तुम्हारी रक्षा करेगा, चाहे उसकी जान ही क्यों न चली जाये और सबसे बड़ा दुख मेरे लिये यह होगा कि मैं आपको नहीं देख पाऊंगा। इसकी चिन्ता तुम बिल्कुल मत करना, तुम्हारा प्यारा फरिश्ता हमेशा तुम्हें मुझसे मिलने के बारे में बतायेगा कि तुम वापस मेरे पास कैसे आ सकते हो।'

उस बच्चे के इतने प्यारे और मासूम सवालों को सुनकर व भगवान के इतने स्पष्ट उत्तर सुनकर स्वर्ग में एक असीम शांति थी मगर पृथ्वी से किसी के रोने व कराहने के स्वर सुनाई दे रहे थे। वो प्यारा व छोटा बच्चा समझ गया कि अब उसे भगवान को छोड़कर फरिश्ते के पास जाना है। उसने बहुत ही करुणामयी शब्दों में रोते–रोते कहा – 'हे भगवान, अब तो मैं धरती पर जाने वाला हूँ। आपसे विनती है कि मुझे इतना प्यार और दुलार देने वाले फरिश्ते का नाम क्या है?' तो भगवान बोले – 'उस फरिश्ते का बहुत बड़ा महत्व है, जिसको हर प्राणी नहीं समझ पाता, वह मेरे द्वारा भेजा गया मानव के लिये एक अनमोल तोहफा है और मेरा मानना है कि बच्चे के लिये उससे बेहतर इस दुनिया में ना कोई है और ना ही माना जा सकता है। मेरा दूसरा रूप है वह ओर सागर से गहरा है। उसका प्यार व घर कोई स्वर्ग से कम नहीं है। जहां उस फरिश्ते को मेरे से ऊपर का स्थान मिला है और मेरे से पहले पूजा जाता है। और अगर प्यार और सच्चे मन से उनका सम्मान और सेवा कर ली तो समझो सारे तीर्थ ओर मन्दिर घूम लिये। सारे भगवान की पूजा कर ली। बच्चे, तुम बस इतना जान लो कि तुम उस फरिश्ते को प्यार से 'माँ' कहकर पुकारोगे।'

"मेरे शब्दों में माँ का अर्थ" मैं माँ के बारे में क्या बोलूं। मुझे लगता है, माँ वो है, जिसके हाथों में बच्चा अपने–आपको सबसे सुरक्षित मानता है। उसे लगता है कि दुनिया में अगर स्वर्ग है तो बस माँ की गोद में है, क्यों मैंने चलती–फिरती आँखों से अदा देखी, जन्नत तो नहीं देखी पर मैने माँ देखी है। वो कहते हैं ना माँ शब्द अपने–आपमें परिपूर्ण है। दुनिया

में हम चाहे कितने भी रिश्तों में क्यों न बंधे हुए हों लेकिन बिना माँ के हमारा जीवन अधूरा होता है। हर रिश्ते को आपसे कुछ पाने की आस रहती है लेकिन माँ का पुत्र के बीच एक ऐसा रिश्ता है, जो सिर्फ प्यार चाहता है। माँ और बेटे का प्यार, जिससे बढ़कर बच्चे के लिये दुनिया में कुछ भी नहीं है। जो एक माँ अपनी संतान को सुन्दर अच्छा जीवन देना चाहती है, माँ भूखी सो सकती है लेकिन कभी भी अपनी संतान का भूखे पेट सोना सपने में भी नहीं देखना चाहती है। माँ तो हरवक्त अपनी संतान के कल्याण की बात सोचती है कि किस प्रकार उसी संतान आगे बढ़े और जग में नाम करे, क्योंकि बच्चे की जिन्दगी का पहला गुरु और दोस्त भी माँ ही है। जिन्दगी भी माँ और जिन्दगी देने वाली भी माँ है। लेकिन माँ भले ही पढ़ी–लिखी हो या ना हो पर संसार का महत्वपूर्ण ज्ञान हमें माँ से प्राप्त होता है। इससे ज्यादा मैं माँ के लिये क्या लिखूं। माँ को शब्दों में नहीं तोला जा सकता है। संसार के सभी प्राणियों के लिये 'भगवान' का भेजा गया एक अनमोल तोहफा 'माँ' है।

कमजोर कभी माफ़ी नहीं मांगते। क्षमा करना तो ताकतवर व्यक्ति की विशेषता है।

– महात्मा गाँधी

राष्ट्रीय सेमिनार : इतिहास विभाग

–डा0 नूर हसन
असि. प्रोफेसर, इतिहास
संयोजक सेमिनार

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महविद्यालय, डोईवाला देहारादून के इतिहास विभाग में भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (ICSSR) नई दिल्ली द्वारा अनुदानित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार "भारतीय साहित्य और परम्पराओं में सामाजिक सहिष्णुता" नमक विषय पर दिनांक 23–24 मार्च 2021 ई० को आयोजित किया गया, जिसमे देश के प्रसिद्ध बुद्धिजीवियों, प्राध्यापकों एवं शोधार्थियों ने प्रतिभाग किया व शोध पत्र प्रस्तुत किए ।

सेमिनार का उदघाटन सत्र प्रोफेसर डी० पी० सकलनी के उदबोधन से प्रारम्भ हुआ, जिनके द्वारा भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया। तदुपरान्त प्राचार्य प्रोफेसर डी० सी० नैनवाल एवं सेमिनार के संयोजक डॉ नूर हसन के द्वारा सेमिनार के थीम्स पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामाजिक विविधताओं का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण भारत है, जोकि विश्व का एक मात्र ऐसा देश है जहाँ अनेक प्रकार की विविधताएँ व्याप्त है। पंथीय, क्षेत्रीय, जातीय विविधताओं के साथ–साथ भारत में नस्लीय, भाषाई, भौगौलिक, एवं सांस्कृतिक विविधताएँ भारत को विश्व के अन्य देशों से पृथक करती है। लगभग 1652 भाषाएँ एवं बोलियाँ भारत में बोली जाती है, 30 लाख वर्ग किमी से भी अधिक भूभाग वाला उपमहाद्वीप क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवाँ स्थान रखता है । विश्व में व्याप्त सभी धर्मों के मानने वालें लोग इस भूभाग में निवास करते है। ऐन्थ्रोपौलोजिकल सर्वे आफ़ इण्डिया (2002) के अनुसार भारतीय भू–भाग पर लगभग 4635 विभिन्न समुदाय निवास करते है जिनकी अपनी – अपनी आनुवांशिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व भाषाई विशेषताएँ हैं।

सेमिनार के की नोट वक्ता दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर रमेश मेहता के द्वारा सामाजिक सहिष्णुता के उदाहरण प्रस्तुत किए गए। दिल्ली विश्वविद्यालय के अन्य प्रोफेसर डॉ अलीम अशरफ खान के द्वरा फारसी साहित्य में सामाजिक सहिष्णुता पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ कमर आलम के द्वारा भी सामाजिक सहिष्णुता पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया । सेमिनार के प्रथम दिन कि संध्या में मुशायरा का आयोजन किया गया जिसमें देश विदेश के प्रसिद्ध शायरों ने भाग लिया । सम्मिलित होने वाले शायरों में डॉ खालिद आज़मी, अफजल मंगलौरी, असलम खतौल्वी, मीरा नवेली और ओम प्रकाश नूर ने अपनी गजल प्रस्तुत की।

सेमिनार के दूसरे दिन प्रोफेसर सिराज मुहम्मद, प्रोफेसर देवेंद्र गुप्ता, डॉ प्रमोद भारतीय के द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। सेमिनार ऑनलाइन ऑफलाइन दोनों प्रकार से आयोजित किया गया जिसमे लगभग 400 विद्वजनों ने प्र्तिभाग किया।

क्विज प्रतियोगिताओं द्वारा करियर गाइडेंस्

डॉ अफ़रोज़ इकबाल
विभाग

शहीद दुर्गामल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला, देहरादून में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ अफ़रोज़ एकबाल जो की करियर गाइड के नाम से मशहूर हैं।

प्रथम कोरोना काल में अपने यू ट्यूब के माध्यम से सामान्य ज्ञान /सामान्य अध्ययन की तैयारी वैज्ञानिक तरीके से करा रहे हैं। उत्तराखंड में सर्वप्रथम राज्य स्तरीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर डा अफ़रोज़ एकबाल ने क्विज प्रतियोगिता एव निबंध प्रतियोगिता प्रारंभ किया था।साथ ही साथ उन्होंने इस प्रतियोगिता को लगातार नियमित रूप से अभी भी कराते रहते हैं।

एक भारत श्रेष्ठ भारत के माध्यम से महात्मा गांधी के जन्म दिवस पर 2अक्टूबर, 2021 से ै/च्ै की तैयारी ऑनलाइन करा रहे हैं। इसके लिए 25 व्हाट्स ऐप ग्रुप बनाए गए हैं जिसमे देश के विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया है और तैयारी कर रहे हैं।

अपने चौनल के माध्यम से निः शुल्क ARMY, POLICE, FOREST GUARD, SSC, GROUP C, VDO का सम्पूर्ण कोर्स 3 महीने के लिए तैयार किया गया है।साथ ही साथ ै/च्ै /छम्ज के लिए एक साल का कोर्स उपलब्ध है। कोर्स निः शुल्क है ।अगर कोर्स के बारे में समझना है तो डा अफ़रोज़ एकबाल से संपर्क करें।

डा अफ़रोज़ एकबाल का विद्यार्थियों को मैसेजः

प्रिय विद्यार्थियों,

आप सभी इस बात से परिचित है कि वर्तमान युग प्रतियोगिता का युग है , प्रत्येक वर्ष हजारों प्रतियोगी परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है।

भारत की आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए हमने आप सभी विद्यार्थियों के लिए शिक्षा का एक ऐसा मंच संचालित किया है जहा आप निःशुल्क सभी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर सकते है और अपने भविष्य को एक नई दिशा दे सकते है। सर्वप्रथम इस कार्यक्रम से जुड़ने के लिए आप यू ट्यूब पर कैरियर गाइड डॉ अफ़रोज़ इकबाल/क्विज़ गुरु डा अफ़रोज़ इकबाल सर्च कीजिए, चौनल को सब्सक्राइब कीजिए।

आप इस जानकारी को अपने सभी मित्रों के साथ भी शेयर करें जिससे सभी विद्यार्थी इस कार्यक्रम का लाभ उठा सकें।

हमारे इस चौनल में आपको सामान्य ज्ञान, सामान्य अध्ययन, इतिहास,राजनीति, भूगोल, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र आदि विषयों से संबंधित प्रतियोगी प्रश्नों की वीडियो उपलब्ध कराई गई है।

आप इन प्रश्नों को रोज सुनिए नोट कीजिए यदि कोई प्रश्न समझ में न आए तो आप कॉमेंट बॉक्स में लिख सकते है आपके प्रश्नों का जवाब देना हमारा प्रथम कृत होगा। कैरियर काउंसलिंग से संबंधित कोई भी प्रश्न हो तो वह भी आप पूछ सकते हैं। हम सदैव आपके मार्गदर्शन के लिए तत्पर है ।

हमारा यह कार्य क्रम सभी प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे समूह ग,बैंक,रेलवे, फॉरेस्ट गार्ड ,सीडीएस,आर्मी ,पुलिस , बी एड, टी ई टी और साथ साथ नेट, पीसीएस, यूपीएससी जैसे सम्मानित परीक्षाओ में भी सहायक होगा।

अगर आप आईएएस,पीसीएस की तैयरी करना चाहते है तो उसके लिए भी सामान्य ज्ञान ,सामान्य अध्ययन अति आवश्यक है।इसके साथ ही एनसीईआरटी इतिहास, भूगोल,विज्ञान ,राजनीति, समाजशास्त्र की पीडीएफ भी इस कार्यक्रम के माध्यम से उपलब्ध कराई जाएंगी ।

आप अभी जिन्दगी के जिस पथ पर है हम पथिक बनकर उस पथ से निकल चुके है, हमारी सभी बातें स्वयं के अनुभव पर आधारित है। आपके मार्गदर्शन और बेहतर भविष्य के लिए यह कार्यक्रम संचालित किया गया है।

सभी परीक्षाओं की तैयारी हेतु वॉट्सएप पर अलग अलग कक्षाएं संचालित की जाती है मूल्यांकन हेतु प्रति सप्ताह,प्रति माह ऑनलाइन परीक्षा का आयोजन भी किया जाता है ।

आप सभी अपने बेहतर भविष्य के लिए हमारे इस कार्यक्रम से जुड़कर हमें कृतार्थ करें।

कोई भी प्रश्न हो आप बिना किसी संकोच के किसी भी माध्यम से हमसे पूछ सकते है। हम हमेशा आपके उचित मार्गदर्शन हेतु तत्पर है।।

डॉ. राकेश जोशी की ग़ज़लें

डॉ. राकेश जोशी
एसोसिएट प्रोफ़ेसर (अंग्रेज़ी साहित्य)

1

लाचारी के दौर में कोई लाचारों के साथ नहीं था
तूफ़ानों के डर से कोई मछुआरों के साथ नहीं था

जंगल, बस्ती जहां कहीं भी आग लगाई थी जिस दिन भी
उस दिन कोई भी अंगारा अंगारों के साथ नहीं था

हर युग में लड़ने वाला हर सैनिक खूब लड़ा था, पर वो
हथियारों के बीच में रहकर हथियारों के साथ नहीं था

सच्चाई के नाम पे जब–जब झूठ छपा था अख़बारों में
अख़बारों का अक्षर–अक्षर अख़बारों के साथ नहीं था

बिकने वाले की कीमत तो तय कर दी बाज़ारों ने, पर
बिकने वाला माल कभी भी बाज़ारों के साथ नहीं था

जंगल–जंगल, पर्वत–पर्वत, भटका लेकिन क्या जानूं मैं
क्यों बंजारा होकर भी मैं बंजारों के साथ नहीं था

2

हर नदी के पास वाला घर तुम्हारा
आसमां में जो भी तारा हर तुम्हारा

बाढ़ आई तो हमारे घर बहे बस
बन गई बिजली तो जगमग घर तुम्हारा

तुम अभी भी आँकड़ों को गढ़ रहे हो
देश भूखा सो गया है पर तुम्हारा

फिर तुम्हें कोई मदारी क्यों कहेगा
छोड़कर जाएगा जब बंदर तुम्हारा

ये ज़मीं इक दिन उसी के नाम पर थी
वो जिसे कहते हो तुम नौकर तुम्हारा

दूर उस फुटपाथ पर जो सो रहा है
उसके कदमों में झुकेगा सर तुम्हारा

3

सर छुपाने के लिए छप्पर नहीं था
लोग कहते हैं कि उसका घर नहीं था

इन ग़रीबों के लिए केवल सड़क थी
दौड़ पड़ने का कोई अवसर नहीं था

जो बनाने के लिए भटका बहुत वो
घर वहीं था, बस वही घर पर नहीं था

हम ही उसके गांव में रहने लगे थे
सच, हमारे गांव में बंदर नहीं था

पांव थे जो चल रहे थे बेवज़ह ही
मैं सफ़र में था, मगर अक्सर नहीं था

आज सब कुछ है मगर है नींद ग़ायब
वो भी दिन थे, नींद थी, बिस्तर नहीं था

फ़्लैट में रहकर अकेले थे बहुत हम
सर पे छत तो थी मगर अंबर नहीं था

गालियां तो हमने थीं जी–भर के दे दीं
हाथ में बस, आपका कॉलर नहीं था

तोड़ देते सभ्यता के कांच सारे
क्या करें पर, हाथ में पत्थर नहीं था

4

अंधियारों से तो ये डर बोलेगा जाकर
दरबारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

ये बोलेगा इससे, उससे वो बोलेगा
सरकारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

तू भी है उस पार कहीं, इस पार कहीं मैं
दीवारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

चांद, समंदर, साजिश, कश्ती, ख़ामोशी है
मछुआरों से कौन मगर बोलेगा जाकर

जंगल–जंगल आग लगी है, बुझना होगा
अंगारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

थोड़ा चूल्हा सुलगाओ कुछ धुआं दिखे तो
बंजारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

क्या लिखना है, क्या लिखते हो, शर्म करो कुछ
अख़बारों से कौन मगर बोलेगा जाकर

5

अगर जंगल में रहना है तो डर क्या है
तेरा है हाथ सर पर तो फ़िकर क्या है

सफ़र क्या है, नदी से पूछकर आना
समंदर क्या बताएगा सफ़र क्या है

अँधेरे में बता मत तू कि है जगमग
उजाले में बता तेरा शहर क्या है

ख़बर वो है जो तुझको खूब चौंका दे
अगर तुझको ख़बर है तो ख़बर क्या है

किसी फुटपाथ पर सोई ग़रीबी से
किसी मज़दूर से पूछो कि घर क्या है

ये बादल तो है अनपढ़ क्या बताएगा
फ़सल ही अब बताएगी ज़हर क्या है।

सामाजिक अनुभूति

शकीला
एम.ए. (मनोविज्ञान विभाग)

सामाजिक अनुभूति मनोविज्ञान के विभन्न शाखाओं का एक विषय है जो इस बात पर केन्द्रित है कि लोग अन्य लागों और सामाजिक स्थितियों के बारे में कैसे जानकारी एकत्रित व संग्रहित करते हैं, यह उस भूमिका पर केन्द्रित है। दो संज्ञानात्मक प्रक्रिया सामाजिक अंतः–क्रियाओं में निभाती है।

अधिक तकनीकी रूप से सामाजिक अनुभूति से तात्पर्य है कि कैसे लोग (एक ही प्रजाति के सदस्य) या यहां तक की प्रजातियों (जैसे पालतु) की जानकारी के साथ चार चरणों में शामिल होते हैं– 1. एंड–कोडिंग, 2. भंडारण, 3. पुनः प्राप्ति, 4. प्रसंस्करण। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में सामाजिक अनुभूति एक विशेष दृष्टिकोण को संदर्भित करती है। इसमें संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और सूचना प्रसंस्करण सिद्धांत के तरीकों के अनुसार इन प्रक्रियाओं पर अध्ययन किया जाता है। 'इस दृष्टिकोण के अनुसार सामाजिक अनुभूति विश्लेषण का एक स्तर है,' जिसका उद्देश्य उन संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के जांच करके सामाजिक मनोवैज्ञानिक घटनाओं को समझना है जो रेखांकित करती है।

'दृष्किोण की प्रमुख चिंताएं'– सामाजिक उत्तेजना की धारणा निर्णय और स्मृति में शामिल प्रक्रियाएं हैं। सूचना प्रसंस्करण पर सामाजिक और भावनात्मक कारकों का प्रभाव और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के व्यवहार और पारस्परिक परिणाम।

विश्लेषण के इस स्तर को सामाजिक मनोविज्ञान के भीतर किसी भी सामाग्री क्षेत्र पर लागू किया जा सकता है जिसमें इंटरपर्सनल और इंटरग्रुप प्रक्रियाओं पर शोध शामिल है। सामाजिक अनुभूति शब्द का उपयोग मनोविज्ञान और संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान में कई क्षेत्रों में किया जाता है। सबसे अधिक बार आत्म केन्द्रित में बंधित विभिन्न सामाजिक क्षमताओं को सदंर्भित करने के लिए। शिजोफेनिया और मनोरोगी संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान में सामाजिक अनुभूति के जैविक आधार की जांच की जाती है। विकासात्मक मनोविज्ञान में सामाजिक अनुभति क्षमताओं का विकास अध्ययन करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

–तमन्ना परवीन
बी.कॉम द्वितीय वर्ष, सेमेस्टर 4

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए इस दिन को महिलाओं के आर्थिक, राजनीति और सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष में यह उत्सव के तौर पर मनाया जाता है।

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है– 'यस्य पूज्यते नार्यस्तु तत्त रमन्ते देवताः', अर्थात्, जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। किन्तु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं उसमें नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे भेग की वस्तु समझकर आदमी अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है। यह बेहद चिंताजनक बात है। लेकिन हमारी संस्कुति को बनाये रखते हैं, नारी का सम्मान कैसे किया जाये किस तरह नारी का सम्मान करना जरूरी है।

माता का हमेशा सम्मान हो

माँ अर्थात् माता के रूप में नारी धरा पर सबसे पवित्र रूप में है। माता ही जननी, माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है क्योंकि ईश्वर की जन्म ढात्री भी नारी ही रही है। मां देवकी (कृष्ण) तथा मां पार्वती (गणपति) को हम भगवान के रूप में मां के स्थान पर रखते हैं।

महिलाओं का आसमान छूना

अगर आजकल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि लड़कियां आजकल बहुत बाजी मार रही हैं। उन्हें हर क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है। विभिन्न परिक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियां तेजी से आगे बढ़ी हैं। किसी समय उन्हें कमजोर कमजोर समझा जाता था किन्तु उन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली हैं। इन की इस प्रतिभा का सम्मान किया जाता है।

कंधे से कंधा मिलाकर चलती नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से मिलाकर चलने में ही बीत जाता है। पहले पिता की छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है। पिता के घर

में भी उसे काम करना पड़ता है, साथ में अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है। उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है। उसे इस दौरान घर के कामकाज के साथ पढ़ाई–लिखाई की दोहरी जिम्मेदारी भी निभानी होती है। जबकि इस दौरान लड़कों को पढ़ाई–लिखाई के आलावा और कोई काम नहीं रहता है। कुछ नवयुवक तो ठीक से पढ़ाई भी नहीं करते हैं जबकि उन्हे इसके अलावा और कोई काम ही नहीं रहता है। इस नजरिए से देखा जाये तो नारी सदैव पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर तो चलती ही है, बल्कि उससे भी अधिक जिम्मदारियों को निर्वज्ञ भी करती ळै। नारी इस तरह से भी सम्मानीय है।

किन्तु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है। यह चिंताजनक पहलु है। सब धन लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। परंतु जन्म देने वाली माता के रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए जोकि वर्तमान में कम हुआ है। यह सवाल आजकल प्रश्नचिन्ह की तरह चहुंओर पांव पसारता जा रहा है।

नारी के अन्दर ईष्वर ने ऐसी क्षमता दी है कि पुरुष उसे जो भी देता है उसे वह पुरुष को बढ़ा कर ही देती है। जैसे एक पुरुष अनाज देता तो नारी उस बदले में उसे पकाकर भोजन देती है। पुरुष नारी को इज्जत व सम्मान देता है तो वह उसे कई गुना बढ़ाकर देती है और अपने पति को भगवान के रूप में स्वाभीमान मानती है। परंतु वही महिला अगर अपने अधिकारी चाहती है और पृरुष उसे दर्द देता है, तो वह उसे सबक भी सिखा ही देती है।

कृपया नारी का दिल से सम्मान करें, भारत की नारी जिन्दाबाद।

नारी के ऊपर कुछ पंक्तियां

नारी तो बर नारी है, नारी तो बस नारी है।
नारी को मान दो, नारी को सम्मान दो।
नारी तो बर नारी है, नारी तो बस नारी है।
प्यार और दुलार की मूर्ति है नारी
ममता की मूर्ति है नारी।
बच्चों से लेकर बूढ़ों तक
सभी को संवारती है यह नारी।
नारी तो बर नारी है।
उसकी महिमा जो समझ जाये
वह इस दुनिया से तर जाये।
नारी का सम्मान करो
उसे भी उड़ने दो गगन में।
अपनी स्वतंत्रता से और फिर
देखो नारी का असली रूप।

गणित के क्षेत्र में महिलाओं का योगदान

–गौरव बिंजोला
बी.एससी. पीसीएम, द्वितीय सेमेस्टर

हमारे राष्ट्रीय जीवन का शायद ही कोई हिस्सा ऐसा है, जहाँ महिलाओं की उपस्थिति ही नही, उनका योगदान भी बड़ा अहम है। लेकिन, पुरूषों की तुलना में उनकी संख्या न सिर्फ कम है, बल्कि समाज के द्वारा उपस्थित की गई बाधाओं का उन्हें सामना करना पड़ता है, वे अवरोध पेशेवर जीवन में भी रास्ता बाधित करते है। गणित भी कुछ ऐसा ही क्षेत्र है, जिसमें महिलाओं के उत्कृष्ट योगदान और क्षमता के बावजूद उन्हें प्रोत्साहन और अवसर नहीं मिल रहे हैं।

वैसे तो गणित के क्षेत्र में कई पुरूष गणितज्ञों ने अपना झंडा गाडा है जैसे कि आर्यभट्ट, रामानुजन आदि जाने कितने गणितज्ञों ने अपना नाम बनाया पर महिलाएँ भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रही है। मरियम मिर्ज़ाखानी, शकुन्तला देवी, ऐडा लवलेस, कैथरीन जॉनसन और भी कई महिला गणितज्ञ ऐसी हुई हैं जिनका योगदान भुलाया नहीं जा सकता। तभी तो कहते है :–

''सिर्फ खेलकूद और विज्ञान में नहीं, इन्होने गणित में भी परचम लहराया है।

ये वो महिलाएँ है, जिनके नाम से यह जग जगमगाया है।''

इन्हीं में से एक गणितज्ञ 'मरियम मिर्ज़ाखानी' जो ईरान–अमेरिका से संबंध रखती थीं उनका योगदान गणित में बड़ा अहम है। यह फिल्ड मेडल प्राप्त करने वाली प्रथम महिला थी। फील्ड मेडल मैथस की दुनिया का सबसे बड़ा सम्मान है जो पाने वाली यह पहली महिला बनी। इन्हें इनकी 'कॉम्पलेक्स जियोमेट्री एंड डायनामिकल सिस्टम' के लिए फील्ड्स मेडल से नवाजा गया। ये हॉवर्ड यूनिर्विसटी में प्रोफेसर भी रह चुकी थी। सिर्फ यह ही नहीं, इनके जैसी कई महिला गणितज्ञ ने अपना नाम रौशन किया है। उसी प्रकार 'हाईपाटिया' नाम महिला गणितज्ञ थी जिनकी वज़ह से महिलाओं का गणित में रूझान बढता चला गया और 'सोफी

गेरसिन' को तो भूला नहीं जा सकता, जिनका योगदान अतुलनीय है। इनको फ्रमेट के अंतिम प्रमेय पर अपने काम के लिए जाना जाता है। लोग सिद्धांत के बारे में लिखने के लिए जर्मन पेरिस विज्ञान अकादमी से पुरस्कार जीतने वाली पहली महिला बनी और न जाने कितनी महिलाओं ने अपना योगदान इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में दिया है। सिर्फ दुनिया की ही नही बल्कि भारत की भी कई महिला गणितज्ञ है जिन्हें पूरी दुनिया जानती है। उन्हीं में से एक है 'शकुन्तला देवी' जिन्हें आम तौर पर 'मानव कम्प्युटर' के नाम से जाना जाता है। इनकी इसी प्रतिभा को देखते ही इनका नाम 1982 में 'गिनिज़ बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्डस' में भी शामिल किया गया। सिर्फ शकुन्तला देवी ही नहीं, सरस्वती अम्मा और भी कई भारतीय महिलाओं ने भी इसमें अपना योगदान दिया है। लेकिन सवाल यह उठता है इतना सारा योगदान के बाद भी महिलाएँ इस क्षेत्र में इतनी कम क्यों है घ आइयें जानते हैं।

गणित के क्षेत्र में महिलाओं की संख्या कम क्यों है :–

वैसे आपको बता दूँ कि 'फील्डस मैडल' के चार विजेताओं में से एक थी मंजुल भार्गव जो कि यह उपलब्धि दर्ज करने वाली प्रथम भारतीय मूल गणितज्ञ थीं। आप सभी को पता है कि मिर्ज़ाखानी मॉडयूली स्पेसिज, ताइखम्युलर सिद्धांत, हाइपरबोलिक ज्यातिय जैसे विषयों की विशेषज्ञ थी, लेकिन ऐसा क्यों है कि तब भी महिलाएँ इस क्षेत्र में इतना बढ़–चढकर हिस्सा नही लेती है।

संख्या की दृष्टि से सचमुच महिलाओं की गिनती भयावह है। 2015 के सर्वेक्षण के अनुसार महिलाओं की संख्या मात्र 14 प्रतिशत है। दुनिया के अनेक भावों में उनकी स्थिति के लिए काफी हद तक यह अवधारणा जिम्मेदार है कि महिलाएं गणित के मामले में प्रतिभाशाली नहीं होती। दुख की तो बात यह है कि पुरूषों के साथ–साथ महिलाएं खुद भी इस अवधारणा की शिकार है। मानने की बात तो यह है कि अवधारणा की स्मृति मात्र से ही महिलाओं में अपनी कारगुजारी को लेकर चिंता पैदा हो जाती है जिससे उनके कामकाज के नतीजों पर गलत प्रभाव पड़ता है और इस बात से भी काफी असर पड़ता है कि उनके शुरूआती वर्षों और स्कूली पढाई के दौरान उन्हें किस प्रकार की सलाह दी जाती है। अगर मुझसे पुछो तो मैं महिलाओं को यह ही कहना चाहूँगा –

''बस खुद पर करना थोडा विश्वास, इस क्षेत्र में नई क्रांति आएगी।

तुम बस एक कदम बढाओ तो सही, लोगों की सोच खुद बदल जाएगी।।''

उपसंहार :–

मैं तो बस यह कहूँगा की मेरी सोच कुछ मायने नही रखती और न ही उन लेखकों की जो इसके बारें में रोजमर्रा लिखते हैं, अगर किसी की सोच मायने है तो वो है हमारे देश की महिलाओं की। मैं तो बस गणित पढने वाला एक विद्यार्थी हूँ, जिसका यह मानना है कि गणित पढने के लिए और इसमें अच्छा होने के लिए आपका लिंग मायने नहीं रखता है। हाँ, माता हूँ कि अभी तक इस क्षेत्र में महिलाओं का योगदान पुरूषों से कम है, पर ऐसा कहाँ लिखा है कि हम इतिहास नहीं बदल सकते या फिर जो चला आ रहा है, आगे भी वैसे ही चलेगा। अगर हमें बार–बार सिर्फ मरियम मिर्ज़ाखानी या शकुन्तला देवी का और भी कई जिनके बारे में मैंने बात की है, उनका ही उदाहरण बार–बार देने पड़े तो यह ही समझ सकते है कि ये निबंध मात्र निबंध बनके रह गया और हमने इस सोच को अपने आस–पास बढावा नही दिया है। जब तक हम अपने आस–पास की लडकियों या महिलाओं को यह यकीन नहीं दिलायेंगे कि यह क्षेत्र भी उनके लिए बडा कारगर है। बस अंत में यह कहना चाहूँगा कि महिलाओं ने इस क्षेत्र में जो भी प्राप्त किया है । हम उसके लिए उनका सम्मान करें और जब भी बात गणित की हो तो बात सिर्फ आर्यभट्ट या रामानुजन की ही नही बल्कि उन महिलाओं की भी हो जिन्होंने इस क्षेत्र में अपना नाम रोशन किया है।

''यारों महिलाओं के योगदान को, इस क्षेत्र में भी पहचानो।

दो सम्मान उन्हें पूरा और उन्हें असली गणितज्ञ मानो।।''

वैदिक गणित की प्रासंगिकता

–निकिता रावत
बी.एससी. प्रथम वर्ष पीसीएम

प्रस्तावना – वैदिक गणित आज के गणित को हल करने के लिए कई वैकल्पिक विधियों का समावेश आधुनिक गणित के साथ करता है। यह परिस्थितियों के अनुसार वर्तमान गणित को हल करने के अनेक वैकल्पिक विधियों को आधुनिक गणित के साथ जोड़ता है। जो आज के गणित की नीरसता, उबाऊपन तथा कठिन विधियों को आधुनिक गणित में सरल तथा रोचक बनाता है।

उदाहरण के लिए आधुनिक गणित में गुणन करने के एक ही प्रचलित विधि का वर्णन है। जिसे ''गोमूत्रिका विधि'' के नाम से जाना जाता है। जबकि वैदिक गणित में उसी गुणन प्रक्रिया को करने के लिए विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार 20 से 25 विधियों का वर्णन है। उसी प्रकार भाग करने की छः विधियों का वर्णन है।

प्राचीन काल में वैदिक गणित की महत्वतता – ब्रहमाण्ड के सभी लिखित ज्ञान विज्ञान का प्राचीनतम श्रोत, वेद के बहुआयामी ऋचाएँ ही हैं, परन्तु कई बार हम उसके गणितीय आशय को समझाने में असफल हो जाते है।

स्वामी जी के कथन के अनुसार वे सूत्र जिन पर ''वैदिक गणित'' नामक उनकी कृति आधारित है, अथर्ववेद के परिशिष्ट में आते हैं।

प्राचीन काल से ही एक श्लोक प्रचलित है –

यथा शिखा मयूराणां नामाणां मठायो यथा।
तद्वद् वेदागशास्त्राणां गणितं मूर्थनि रिचतम्।।

याजुष ज्योतियम,

अर्थात् जैसे मोरों में शिखा और नागों में मणि सबसे ऊपर रहती है, उसी प्रकार वेंदाग और शास्त्रों में गणित सर्वोच्च स्थान पर स्थित है।

उपरोक्त श्लोक गणित की महानता तथा वेद वेदांग, उपनिषद पुराण में सर्वव्यापकता को प्रदर्शित करता है।

भारती कृष्ण तीर्थ का योगदान –

वैदिक गणित, जगगुरू स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ जी द्वारा सन् 1965 में विरचित एक पुस्तक है, जिसमें अंकगणितीय गणना की वैकल्पिक एवं संक्षिप्त विधियाँ दी गयी है। वैदिक गणित गणना की ऐसी पद्धति है, जिससे जटिल अंकगणितीय गणनाएं अत्यन्त ही सरल, सहज व त्वरित संभव है। स्वामीजी ने इसका प्रणयन बीसवीं सदी के आरम्भिक दिनों में किया।

इसमें 16 मूल सूत्र तथा 13 उपसूत्र दिये गये हैं। वैदिक गणित गणना की ऐसी पद्धति है, जिससे जटिल गणनाएं अत्यन्त कम समय में संभव हैं।

भारती कृष्णतीर्थ जी महाराज (14 मार्च 1884 – 2 फरवरी 1960) भारत के जगतनाथपुरी के शंकराचार्य थे। शास्त्रोक्त अष्टादश विधाओं के ज्ञाता, अनेक भाषाओं के प्रकांड पण्डित तथा दर्शन के अध्येता पुरी के शंकराचार्य भारती कृष्णतीर्थ जी महाराज ने वैदिक गणित की खोज कर समस्त विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया था। वे एक ऐसे अनूठे धर्माचार्य थे, जिन्होने शिक्षा के प्रसार से लेकर स्वदेशी, स्वाधीनता तथा सामाजिक क्रान्ति में अनूठा योगदान कर पूरे संसार में ख्याति अर्जित की थी।

वैदिक गणित के सोलह सूत्र –

स्वामीजी के एकमात्र उपलब्ध गणितीय ग्रन्थ वैदिक गणित' या 'वेदों के सोलह सरल गणितीय सूत्र' के बिखरे हुए सन्दर्भों से छाँटकर डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल ने सूत्रों तथा उपसूत्रों की सूची ग्रन्थ के आरम्भ में इस प्रकार दी है –

1. एकाधिकेन पूर्वेण
2. निखिल नवतश्चरमं दशतः
3. ऊर्ध्वविर्यम्भ्याम्
4. परावर्त्ययोजयेत्
5. शून्यं साम्यसमुच्चये
6. (आनुरूप्ये) शून्यमन्यत्
7. संकलपव्यवकलनाभ्याम्
8. पूरणापूरणाभ्याम्
9. चलनकलनाभ्याम्
10. थावदूनम्
11. व्यष्टिसमष्टिः
12. शेषाण्यंकेन चरमेण
13. सोपान्त्यद्वयमन्त्यम्
14. एकन्यूनेन पूर्वेण
15. गुणितसमुच्चयः
16. गुणकसमुच्चयः

वैदिक गणितीय सूत्रों की वि ोशताएं –

1. ये सूत्र महज ही समझ मे आ जाते हैं, उनका उपयोग सरल है तथा सहज ही याद हो जाते है। सारी प्रक्रिया मौखिक हो जाती है।

2. ये सूत्र गणित की सभी शाखाओं के सभी अध्यायों में सभी विभागों पर लागू होते हैं। शुद्ध अथवा प्रयुक्त गणित में ऐसा कोई भाग नहीं जिसमें उनका प्रयोग न हो। अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित समतल तथा गोलीय त्रिकोणमितीय, समतल तथा धन ज्यामिति (वैश्लेषिक), ज्योतिर्विज्ञान, सभाकल तथा धन तथा अवकल कलन आदि सभी क्षेत्रों में वैदिक सूत्रों का अनुप्रयोग समान रूप से किया जाता है। वास्तव में स्वामीजी ने इस विषयों पर सोलह कृतियों की एक श्रृंखला का सृजन किया था, जिनमें वैदिक सूत्रों की विस्तृत व्याख्या थी।
3. कई पीड़ियों की प्रक्रियावाले जटिल गणितीय प्रश्नों को हल करने में प्रचलित विधियों की तुलना में वैदिक गणित विधियाँ काफी कम समय लेती है।
4. छोटी उम्र के बच्चे भी सूत्रों की सहायता से प्रश्नों को मौखिक हल कर उत्तर बता सकते हैं।
5. वैदिक गणित का संपूर्ण पाठ्यक्रम प्रचलित गणितीय पाठ्यक्रम की तुलना में काफी कम समय में पूर्ण किया जा सकता है।

कुछ सूत्रों का परिचय –

एकाधिकेन पूर्वेण (गुणन का स्वदेशी तरीका) इस सूत्र का शाब्दिक अर्थ है 'पहले वाले की तुलना में एक अधिक से', यह सूत्र गुणा करने वाले और भाग करने वाले दोनों प्रकार के अल्गोथम में उपयोग में लिया जा सकता है।

'एकाधिकेन' और पूर्वेण' में तृतीया विभक्ति है जो यह संकेत करती है कि यह सूत्र गुणा या भाग पर आधारित है क्योंकि योग और घटाना में द्वितीया या पंचमी विभक्ति (जव और तिवउ) आती है।

एकाधिकेन पूर्वेण का प्रयोग करते हुए

35X35	=	(3X4), 25
	=	12, 25
125X125	=	(12X13), 25
	=	156.25

उपसंहार –

वैदिक गणित प्राचीनकाल काल से ही गणनाओं को सरल व सहज रूप से करने के लिए प्रचलित है। इसकी खोज के पश्चात गणनाएँ त्रुटिपूर्ण तथा कम समय में संभव है। ये सभी प्रकार की गणनाओं को करने में सक्षम है। स्वामी जी के अनुसार इसका उल्लेख अथर्ववेद में भी मिलता है। इसमें वर्णित भाग करने की छः विधियों से उत्तर मौखिक रूप में देने में सक्षम है।

अतः वैदिक गणित को समावेशी गणित भी कहते हैं।

Unlawful Activities Prevention Act (UAPA)

गैर कानूनी गतिविधियों रोकथाम संशोधन विधेयक - 2019

राज्य सभा में हाल ही में (UAPA) गैर कानूनी गतिविधियों (रोकथाम) संशोधन विधेयक–2019 को पारित किया है। देश के राजनीतिक गलियारों में इस कानून को लेकर अक्सर विवाद सामने आते है। जब भी UAPA कानून के तहत गिरफ्तारी होती है, देश में बहस छिड़ जाती है। चाहें वह किसान आन्दोलन के तहत 26 जनवरी को ट्रैक्टर रैली के दौरान हुई हिंसा और सेलेब्रिटी ट्वीट के विवाद के आद इस कानून के तहत कई गिरफ्तारियां की गयी हो या 84 वर्षीय कार्यकर्ता ''स्टेनस्वामी'' की गिरफ्तारी का मामला हो जिन्हें कोरे गाँव हिंसा से जुड़े मामले में UAPA कानून के तहत गिरफ्तार किया गया था जिनका हाल ही में निधन हो गया है।

UAPA आखिर है क्या ?

UAPA एक ऐसा कानून है जिसके तहत सरकार ऐसे लोगों को आतंकवादियों के तौर पर चिन्हित कर सकती है। जो आंतकवादी गतिविधियों में शामिल हैं। आतंकवादी घटना के लिए किसी को तैयार करते हैं या इसे बढ़ावा देते हैं।

यह विधेयक गैर कानूनी गतिविधियों (रोकथाम) अधिनियम 1967 में संशोधन करता है।

UAPA 1967 में क्या था ?

- यह कानून भारत की संप्रभुता और एकता का खतरें में डालने वाली गतिविधियों को रोकने के उद्देश्य से बनाया गया था। इसका तात्पर्य उन कार्यवाहियों से है जो व्यक्ति/संगठन द्वारा देश की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता को भंग करने वाली गतिविधियों को बढावा देती है।
- यह कानून संविधान के अनु–19 द्वारा प्राप्त प्रदत्त वाक व अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता शास्त्रों के बिना एकत्र होने के अधिकार और संघ बनाने के अधिकार पर युक्ति युक्तप्रतिबंध आरोपित करता है। राष्ट्रीय एकता और क्षेत्रवाद पर समिति ने उपरोक्त मौलिक अधिकारों पर

युक्ति युक्तप्रतिबंध लगाने का अनुमोदन किया।

- इस कानून में पूर्व में भी वर्ष 2004, 2008 और 2012 में संशोधन किया गया था।
- गैर कानूनी गतिविधियां (रोकथाम) संशोधन विधेयक 2019
- इन नए विधेयक में नए प्रावधान पेश किये गये हैं जो 1967 के विधेयक को संशोधित करते हैं।
- आतंकवाद कौन कर सकता है :– अधिनियम के तहत केन्द्र सरकार एक संगठन को आंतकवादी संगठन के रूप में नामित कर सकती है। यदि–

1. आतंकवाद के कृत्यों में भाग लेता है।
2. आतंकवाद के लिए तैयार करता है।
3. आतंकवाद को बढावा देता है।
4. अन्यथा आतंकवाद में शामिल है।

- NIA द्वारा संपत्ति की जब्ती की मंजूरी :–अधिनियम के तहत एक जांच अधिकारी को आतंकवाद से जुडी संपत्तियों को जब्त करने के लिए पुलिस महानिदेशक की पूर्व स्वीकृति प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। विधेयक में कहा गया है कि अगर जांच NIA (राष्ट्रीय जांच एजेंसी) के एक अधिकारी द्वारा की जाती है तो ऐसी संपत्ति की जब्ती के लिए NIA के महानिदेशक की मंजूरी की आवश्यकता होगा।
- NIA द्वारा जांच :– अधिनियम के तहत मामलों की जांच उप–अधीक्षक या सहायक पुलिस आयुक्त या उससे ऊपर के स्तर के अधिकारियों द्वारा की जा सकती है।
- आतंकवादी के रूप में नामित व्यक्ति की व्यक्तिगत/वित्तीय जानकारी विभिन्न पश्चिमी एजेंसियों के साथ साझा की जा सकती है। यह उन संपत्तियों की जब्ती की अनुमति देते हैं जो आतंकवाद से जुडी हो सकती है।
- यह अधिनियम की अनुसूचि में सूचीबद्ध नौ संधियों में से किसी के दायरे में किए गए कृत्यों को शामिल करने के लिए आंतकवादी कृत्यों को शामिल करने के लिए आंतकवादी कृत्यों को परिभाषित करता है कुछ संधियों में शामिल है।
- आतंकवादी बम विस्फोटों के दमन के लिए कन्वेंशन (1997)
- बंधकों को लेने के खिलाफ कन्वेंशन (1979)
- परमाणु आतंकवाद के कृत्यों के दमन के लिए कन्वेंशन 2005
- UAPA मामलों की सुनवाई विशेष अदालतों द्वारा की जाती है।

UAPA अन्य कानूनों से ज्यादा सख्त

जानकार बताते हैं कि अगर किसी शख्स पर UAPA तहत केस दर्ज हुआ है तो उसे अग्रिम जमानत नहीं मिल सकती यहां तक की अगर पुलिस ने उसे छोड़ दिया हो तब भी उसे अग्रिम जमानत नहीं मिल सकती। दरअसल कानून के सेक्शन 43 क (5) के मुताबिक कोर्ट शख्स को जमानत नहीं दे सकता अगर उसके खिलाफ प्रथम दृष्टया केस बनता है–

- अदालत जमानत से इनकार कर सकती है अगर उसकी राय में मामला ''प्रथम दृष्टया'' सच है।
- एक आरोपी अग्रिम जमानत की मांग नही कर सकता हैं और लोक अभियोजक के अनुरोध पर जांच की अवधि को 90 दिनों से 180 दिनों तक बढाया जा सकता है। जिसका अर्थ है कि आरोपी के पास डिफॉल्ट रूप से जमानत मिलने का कोईमौका नही है।

कानून की कई धाराओं में कठोर प्रावधान

UAPA में धारा 18, 19, 20, 38 और 39 के तहत केस दर्ज होता है, धारा 38 तब लगती है जब आरोपी के आंतकी संगठन से जुडे होने की बात पता चलती है। धारा 39 आंतकी संगठनों को मदद पहुंचाने पर लगायी जाती है।

इस एक्ट के सेक्शन 43 डी(2) में किसी शख्स पुलिस कस्टडी की अवधि दोगुना करने का प्रावधान है। इस कानून के तहत पुलिस को 30 दिन की कस्टडी मिल सकती है। वहीं न्यायिक हिरासत 90 दिन की भी हो सकती है। बता दें कि अन्य कानूनों में अधिकतम अवधि 60 दिन ही होती है।

निष्कर्ष

अंत में यही कहा जा सकता है कि संवैधानिक स्वतंत्रता और आतंकवाद विरोधी गतिविधियों की अनिवार्यता के बीच संतुलन बनाना राज्य न्यायपालिका, नागरिक समाज पर निर्भर है।

अम्फान चक्रवात : एक भौगोलिक विश्लेषण

–लक्ष्मी
एम0ए0 III सेमेस्टर

सन्दर्भः भारत के मौसम विभाग के अनुसार बंगाल की खाड़ी, अम्फान में तूफान प्रणाली 18 अप्रैल को एक सुपर चक्रवात के रूप में विकसित हुई और 20 अप्रैल को पश्चिम बंगाल–बांग्लादेश तट के साथ टकराव होने की आंशका है।

परिचयः चक्रवात एक अनियमित वायु गति है जिसमें एक निम्न दबाव केन्द्र के आस–पास बंद वायु परिसंचरण शामिल होता है। यह बंद वायु परिसंचरण पृथ्वी की सतह के ऊपर और ऊपर वायुमंडलीय असंतुलन के कारण होता है जो पृथ्वी के रोटेशन के साथ मिलकर होता है, जो इन असंतुलनों को एक भयावह गति प्रदान करता है।

चक्रवात विनाशकारी और हिसंक गडबड़ियों से जुड़े होते हैं, जैसे कि मूसलाधार वर्षा।

विस्तारः इस खतरनाक तूफान अम्फान का नाम थाइलैंड ने दिया है, थाईलैंड में इसे उम–पुन नाम से जाना जाता है। अटंलाटिक सागर के आस–पास के देशों ने 1953 से चक्रवातों को नाम देना शुरू किया है जिसके बाद अब वर्ल्ड मीटिरियोलाजिकल आर्गनाइजेशन ने यह नियम बनाया है कि चक्रवात जिस क्षेत्र से उठेगा, उसके आस–पास के देशों से ही जुडे नाम उसे दिया जायेगा। 16 साल पहले अरब सागर में बंगाल की खाड़ी में समुद्री तूफानों के नाम रखने का सिलसिला शुरू हुआ था और इसके लिए एक सूची भी बनाई गई थी, जिसमें 8 देश शामिल है। 8 देशों को इसके लिए 8 नाम देने है और जब जिस देश का नम्बर आता है तो उस देश की सूची में दिए गए नाम के आधार पर उस तूफान का नामकरण कर दिया जाता है।

अम्फान (Super Cyclone Amphan live status) तूफान का नाम थाईलैंड ने दिया है। यह तूफान साल 2014 में आए 'हुदहुद' तूफान (Cyclone hudhud) से कॉफी भयावह और विध्वंसक हो सकता है। 2014 में 'हुदहुद' ने पश्चिम बंगाल और ओडिशा जैसे तटीय राज्यों के अलावा उत्तर प्रदेश समेत कई मैदानी राज्यों के भी भयंकर तबाही मचाई थी।

अम्फान के नुकसान

अम्फान तूफान पश्चिम बंगाल के पूर्वी मिदनापुर, दक्षिणी एवं 24 उत्तरी परगना, हावडा में भारी तबाही मचा सकता है। इसके अलावा ओडिशा के मैसूरभल, बालाकोट, भद्रक जैसे जिले में तूफान कहर मचा सकता है। अम्फान 19–20 मई को पश्चिम बंगाल के दीघा और बंग्लादेश के हटिया द्वीप के बीच तट से टकराया। इसका असर गुरूवार तक रहेगा। जानमाल के नुकसान रोकने के लिए एन0डी0आर0एफ0 की 53 टीमें तैनात की हैं। तटीय गांव खाली कराए जा रहे हैं। समुद्र के किनारे न जाने की सलाह है। रेल और बस सेवाओं के रूट

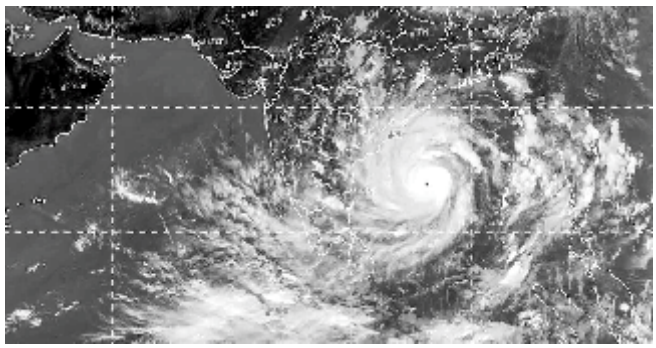

बदले गए हैं। एन0डी0आर0एफ0 के महानिदेशक एस0एन0 प्रधान ने सोमवार को बताया कि 'अम्फान' को हल्के में नही लिया जा रहा है क्योंकि ऐसा दूसरी बार हुआ है, जब भारत बंगाल की खाडी में आये प्रंचड चक्रवतीय तूफान का सामना कर रहा है। कच्चे मकान, मकानों की कच्ची छतों, नारियल के पेडों, टेलीफोन और बिजली के खंभों को गंभीर क्षति पहुँच सकती है। 1999 के सुपर साइक्लोन ने 1000 से अधिक लोगों की जान ले ली थी।

विश्व में अम्फान चक्रवात के प्रभाव

1. श्रीलंकाः चक्रवात बनने की शुरूआती प्रणाली के दौरान, अम्फान में श्रीलंका में भारी बारिश और हवा चली। केमेल में 16 मई को 24 घंटे की कुल 214 एम.एम. की बारिश दर्ज की गई थी। तेज चली हवाओं के कारण 400 घरों को नुकसान पहुँचा।

2. भारतः

(i) दक्षिणी भारतः 16 मई चक्रवात के कारण बारिश और तेज हवाएँ चली। इस चक्रवात ने तिरूवंतपुरम के बलियाधुरा उपनगर में गंभीर तटीय कटाब किया। कोट्टायम जिले में विशेषकर बैकोम तालुक में इस चक्रवात ने घरों मन्दिरों के तो और बिजली के खंभों को अत्याधिक नुकसान पहुँचाया। गधंर्वकोट्टई और अख्यांगी के आस–पास लगभग 34 एकड़ केले की फसल नष्ट हुई।

(ii) पूर्वी भारतः कोलकाता और उसके आस–पास के इलाकों में हवा से 300 से ज्यादा इमारतों को नुकसान पहुचाया, पश्चिम बंगाल में 72 लोगों की मृत्यु हो गई है। जिसमें से 11 कोलकाता शहर के हैं।

3. बांग्लादेशः तूफान के मुख्य भूमि पर आने से पहले ही तटीय जल स्तर बढने के कारण बांग्लादेश में इसका हानिकारक प्रभाव शुरू हो गया। गैलाफैयीया, कालापारा और रंगाबाली में तटबंध टूट जाने के कारण 17 गाँव डूब गए। अभी तक इस तूफान से 7 लोगों की मृत्यु हो गयी है।

मौलिक कर्तव्य का अर्थ परिभाषा एवं महत्व

–माधुरी मण्डल
बी0ए0 । सेमेस्टर

''यदि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने अधिकार का ही ध्यान रखें एवं दूसरों के प्रति कर्तव्यों का पालन न करें तो शीघ्र ही किसी के लिए भी अधिकार नहीं रखेंगे'' 26 जनवरी 1950 में लागू किये गये भारतीय संविधान में नागरिकों के केवल अधिकारों का ही उल्लेख किया था। मूलकर्तव्यों का नहीं। संविधान के 42वें संसोधन के द्वारा भाग 4 में धारा 511 के अंतर्गत 11 मौलिक कर्तव्यों का उल्लेख किया गया है। सन् 2002 में धारा 511 अनुभाग द्वारा एक और एक और कर्तव्य इसमें जोड़ दिया गया है।

कर्तव्य हैं :–

1. संविधान का पालन करें राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्र गान का आदर करें।
2. ऐसे आदर्शों का अनुसरण करें, जिनसे स्वतन्त्रता आंदोलन का प्रोत्साहन मिलता था।
3. भारत की एकता और अखण्डता की रक्षा करें।
4. जब भी आवश्यकता पडे तो देश की रक्षा करें।
5. सभी वर्गों के लोगों में भ्रातृत्व और समरसता की भावना बढाएं और स्त्रियों की प्रतिष्ठा का आदर करें।
6. अपनी गौरवशाली पंरपरा और समरस संस्कृति को बनाए रखें।
7. प्राकृतिक पर्यावरण जिसमें वन, नदियां, झील और जगत के जीव–जंतु शामिल है, का संरक्षण एवं सुधार करना।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास।
9. सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना और हिंसा का प्रयोग न करना।
10. व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यकलाप के हर क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए प्रयास करना।
11. 6 से 14 वर्ष की आयुतक के बच्चों को उनके माता–पिता या अभिवावक द्वारा शिक्षा प्रदान करना (86 संविधानसंसोधन, 2002 धारा 51ए अनुभाग (के))

मौलिक कर्तव्यों का महत्व

अधिकारों और कर्तव्यों का घनिष्ठ संबंध सदैव से हो रहा है। अधिकार और कर्तव्य एक ही सिक्के के ही पहलू है। एक के बिना दूसरा अस्तित्वहीन हो जाता है। कर्तव्यों के बिना अधिकारों की मांग करना नीति संगत और न्यायोचित नहीं है। बाइल्ड के अनुसार– ''केवल कर्तव्यों के संसार में ही अधिकारों की प्रतिष्ठा है। '' संविधान के 42वें संशोधन द्वारा नागरिकों के लिए कर्तव्यों का समावेश करके हमारे संविधान की एक बहुत बडी कमी को पूरा किया गया है। मौलिक कर्तव्यों को आंका जा सकता है :–

1. **संप्रभुता तथा अखण्डता की रक्षा** – मौलिक कर्तव्यों द्वारा नागरिकों को यह निर्देश दिया गया है कि वे देश की संप्रभुता तथा अखण्डता चिरस्थायी बनी रहेगी।
2. **देश की प्रगति मे सहायक**– नागरिकों द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाए जाने से देश प्रगति की दिशा में आगे बढेगा और विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आ जाएगा।
3. **प्राकृतिक तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा** – भारत में प्रकृति तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट करने में लोग कोई संकोच नही करते। मौलिक कर्तव्यों में दिये गए निर्देश के पालन में प्राकृतिक तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा होगी। प्रदूषण दूर होगा जिससे स्वास्थ्य रक्षा होगी, साथ ही देश की प्रगति होगी।
4. **लोकतन्त्र को सफल बनाने में सहायक** :– भारत द्वारा अपनायी गयी लोकतांत्रिक शासन–व्यवस्था तब तक सफल नही हो सकती, जब तक नागरिक लोकतांत्रिक संस्थाओं का आदर न करें। मौलिक कर्तव्यों को संविधान में स्थान दिये जाने से लोग इन संस्थाओं का आदर करेंगे, जिससे लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था सुदृढ़ होगी।
5. **संस्कृति की रक्षा और संरक्षण** :– भारत में समन्वित संस्कृति होने के कारण कश्मीर से कन्याकुमारी तक विभिन्न प्रकार की गौरवशाली परम्पराएं है। मौलिक कर्तव्यों के पालन से ही विभिन्न प्रकार की इन परम्पराओं में समन्वय स्थापित कर सकेंगे और उनका संरक्षण कर सकेंगे। इससे भारत की सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ होगी।
6. **विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास** :– मौलिक कर्तव्यों में भारतीय नागरिकों को सद्भावना तथा भाई–चारे की भावना बनाये रखने का निर्देश दिया गया है, साथ ही हिंसा से दूर रहने का परामर्श दिया गया है। ये निर्देश और परामर्श मानवीय दृष्टिकोण अपनाने और विश्व–बंधुत्व की भावना को विकसित करने में सहायक सिद्ध होंगे।
7. **स्त्रियों का सम्मान** :– मौलिक कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करने से समाज में स्त्रियों को सम्मान प्राप्त होगा, जिससे उसकी गरिमा में वृद्धि होगी और लिंग संबंधी भेदभाव समाप्त होकर समानता स्थापित होगी।

मौलिक अधिकार की विशेषताएं :–

- यह सरकार की निरंकुशता पर रोक लगाता है।
- यह आम नागरिक को सशक्त बनाता है।
- यह राष्ट्रीय भावना को ध्यान में रखकर बनाया गया है।
- यह सीमित मात्रा में है जिससे नागरिक निरंकुश न बन सके।
- इसे न्यायालय द्वारा संरक्षण प्राप्त है।
- यह देश के नागरिकों और विदेशी नागरिकों में अंतर करता है।
- मौलिक अधिकार राज्य के कानून से ऊपर है।
- यह व्यावहारिकता के आधार पर बनाया गया है।
- यह देश की शांति, समृद्धि और खुशहाली के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष :– किसी भी देश का संविधान उस देश की आत्मा और प्राण होता है, ठीक उसी तरह भारत का संविधान भी इसकी आत्मा है। आज मौलिक अधिकारों की बदौलत देश के नागरिक शांतिभाव से अपना जीवन यापन कर रहे है। यह हमारे लिए बहुत ही जरूरी है। पर अधिकार के साथ कर्तव्य की भावना भी होनी चाहिये। देश खुशहाल और समृद्धि तभी बन सकता है जब हम सभी अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्य पालन भी करते रहेंगे।

आत्महत्या

–संदीप कुमार
एम.ए. (हिन्दी)

''आत्महत्या'' सुनने में ही भयानक लगने वाला यह शब्द आपको आये दिन समाचार पत्रों व टेलीविजन पर देखने को मिल जाएगी।

आत्महत्या का शाब्दिक अर्थ – अपना जीवन स्वयं समाप्त करने की क्रिया है। आत्महत्या आज न केवल हमारे देश की बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। बीते कुछ वर्षों में आत्महत्या से जुडे आंकडों में बडी तेजी से इजाफा हुआ है।

लगभग 8,00,000 से 10,00,000 लोग हर वर्ष आत्महत्या करते है जिसके कारण से यह दुनिया का दसवें नम्बर का मानव मृत्यु का करता है। अनुमानतः प्रत्येक वर्ष 10 से 20 मिलियन गैर–घातक आत्महत्या प्रयास होता है। युवाओं तथा महिलाओं में प्रयास अधिक आम है।

हाल ही के आंकडों के अनुसार हर 40 सेकंड में एक व्यक्ति की मौत आत्महत्या के कारण होती है। इनमें 15–29 वर्ष के आयु समूह के व्यक्तियों के संख्या अधिक है। यह आंकडा अपने आप में डराने वाले है।

यदि हम भारत के परिपेक्ष्य में इन आंकडों को देखे तो वर्ष 2016 के आंकडों के मुताबिक भारत में आत्महत्या के आंकडों में जबरदस्त उछाल देखने को मिलता है। हर वर्ष आत्महत्या के दरों में 2,30,814 तक का इजाफा हो रहा है। सड़क दुर्घटनाओं के बाद 15–29 की आयु वर्ग के युवाओं की मृत्यु का दूसरा कारण आत्महत्या है।

हर वर्ष पूरी दुनिया में 8 लाख लोगों की मौत आत्महत्या के कारण होती है। इनमें से 1,35,000 लोग भारत में निवास करते है। 1987 से 2007 के बीच आत्महत्या की दर में जबरदस्त उछाल आया है। पहले ये दर 7.9 / 1 लाख थी अब 10.3 प्रतिशत / 1 लाख है।

आत्महत्या से जुडे आंकडों का विश्लेषण करने के बाद यह विचार करना आवश्यक है कि हमें किस प्रकार आत्महत्या के बढती दरों को कम करें।

आत्महत्या करने के पीछे किस प्रकार की मानसिक अवस्था होती है। जो किसी व्यक्ति की दिमाग पर इस कदर हावी हो जाती है कि वो अपनी जान लेने जैसा कदम उठा लेता है।

आत्महत्या के कारण – वैसे तो आत्महत्या के कई कारण हो सकते है परन्तु इसमें कुछ कारण सभी आत्महत्या के मामलों में समान पाये जाते है :–

सहनशक्ति का अभाव आज हमारे बीच देखने को नही मिलता है। जो कि आत्महत्या का बडा कारण हो सकता है। भारतीय युवा समाज में पहले इतना कमजोर कभी नही था जितना की आज दिखायी देता है। पहले सीमित संसाधनों में भी संतोष में रहने का गुण इस देश की संस्कृति में रचा–बसा था। मेरे विचार से इसका आधार हमारी आध्यामिकता नही है। क्योंकि ईश्वर पर आस्था रखने वाला किसी भी परिस्थिति का सामना एक अनास्तिक के तुलना में हिम्मत और धैर्य से कर सकता है।

आज साधनों और सुविधाओं के पीछे हम इस कदर पागल है कि हम अपनों से कटते जा रहे है। आधुनिकता की दौड़ में आज का मानव इस कदर अंधा हो गया है कि उसके पास इतना भी समय नहीं है कि वह कुछ पल अपने व्यक्तिगत समय से निकाल कर अपने परिवार के साथ बिताए। अव्वल

रहने कि होड़ में एक व्यक्ति अतना मानसिक तनाव लेता है कि वह यह समय भयभीत रहता है कि कहीं वह पीछे न रह जाए। यह मानसिक तनाव आगे चलकर अनेंको बड़े अवसाद का कारण बनता है।

इन अवसादों में डिप्रेशन, बायपोलर, डिसआर्डर, सिजोफ्रेनिया–पर्सनैलिटी डिसआर्डर, एन्जाइटी–डिसऑडर– आदि मानसिक अवसाद आगे चलकर आत्महत्या का कारण बनते है।

आत्महत्याओं की रोकथाम के लिए विश्वस्त पर उठाये गये कुछ सराहनीय कदम – आत्महत्याओं के दरों को कम करने के लिए कई देशों ने बड़े ही सराहनीय कदम उठाये हैं:–

1. इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर सुसाइड प्रिवेंशन (IASP) द्वारा हर वर्ष 10 सितम्बर को वर्ल्ड सुसाइड प्रिवेंशन डे के रूप में मनाया जाता है जो कि अपने आप में एक सराहनीय कदम है। वर्ल्ड फेडरेशन फॉर मेंटल हेल्थ के साथ मिलकर 2003 से लगातार दुनिया भर में विद्व आत्महत्या की रोकथाम दिवस मनाया जा रहा है। इस दिवस पर आत्महत्या को रोकने के लिए विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

2. वर्ष 2020 में इसका विषय working together of prevent suicide था। वैसे तो आत्महत्या करने के कई तरीके है परन्तु सबसे आम तरीको में फाँसी लगाना विष के रूप में कीटनाशक का उपयोग करना या फिर स्वयं को गोली मारना इन्हीं तरीको को आधार मान कर कुछ देशों ने इनके उपयोग पर या तो पूर्ण रूप से रोक लगा दी या तो इन्हें प्रयोग करने के कुछ नियमों को इजाफा किया जिससे उन देशों में आत्महत्या के दरों में कुछ कम भी हुई है।

3. ब्रिटेन में पेनकिलर के पैकेट को बोतल की जगह ब्लिष्टर पैकेट में बदलने से ही वहाँ आत्महत्या की दर 44 प्रतिशत तक कम हो गई।

4. आस्ट्रेलिया में बंदूकों और रस्सियों व शराब को सीमित करके आत्महत्या दर को कम किया।

5. भारत में आत्महत्या करने के लिए अक्सर कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है। भारत के अनेक हिस्सों में अधिकतर ग्रामों में इनकी उपलब्धता को कम करके आत्महत्या के दरों को कम किया।

6. आत्महत्या दरों को कम करने में सबसे अच्छा उदाहरण हमारे पडोसी देश श्रीलंका में देखने को मिला है जहाँ कीटनाशकों पर लगातार प्रतिबंध लगाये जाने के कारण देश में आत्महत्या की घटनाओं में 70 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई है।

7. कोरिया गणराज्य में जहाँ आत्महत्या के लिये सबसे ज्यादा कीटनाशक पैराक्वैट का उपयोग किया जाता था। वर्ष 2011–2012 में इस पर प्रतिबंध लगाए जाने के बाद

8. कीटनाशक की विषक्ता से होने वाले आत्महत्याओं में कमी आई है।

आत्महत्या जो कि आज एक वैश्विक समस्या बन चुकी है। आज यह आवश्यक हो गया है कि इसके प्रति जागरूक होना होगा हमें ना केवल अपना बल्कि अपने समाज का भी ध्यान इस ओर खींचना होगा।

यह जीवन अनमोल है इसे आपने या मैंने नही बनाया इसलिए इसको समाप्त करने का हक भी हमें नहीं है। साफ तौर पर कहते तो अगर आप के पास किसी चीज को रचने शक्ति नहीं है तो आपको उसे नष्ट या बिगाडने का भी अधिकार नहीं है।

मानव एक सामाजिक प्राणी है तो यह स्वाभाविक है कि उसके जीवन में हर तरह के हालात आयेंगे – कुछ अच्छे तो कुछ बुरे और कुछ बेहद भयानक भी, फिर भी उसे अपनी जान लेने का कोई हक नहीं क्योंकि उसमें इसको रचने की क्षमता नही है।

आत्महत्या को विश्रित रूप से समझने के लिए हम महान समाजशास्त्री स्माईल दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित–आत्महत्या का सिद्धांत (The theory of suicide) को आधार बना सकते है।

दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित पुस्तक The Suicide सन् 1897 में प्रकाशित हुई। जिसमें आत्महत्या के सिद्धांत के विषय में उल्लेख है। इस पुस्तक में आत्महत्या के अर्थ को बडी ही सहजता से समझाया गया है। पूर्व में यह समझा जाता था कि व्यक्ति के स्वयं के प्राणों का स्वयं हरण करना ही आत्महत्या है। परन्तु दुर्खीम इस सामान्य अर्थ को अस्वीकारतें हुए कहते हैं कि आत्महत्या को एक स्त्री मृत्यु की संज्ञा दे सकते है, जो किसी विशेष उद्देश्य के लिए घटित हुई हो। परन्तु इस कथन से हमारे समक्ष यह समस्या उभरकर सामने आती है कि आत्महत्या के पश्चात आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के उद्देश्य विषय में किस प्रकार जानकारी प्राप्त हो। इन्हीं सब तथ्यों को विषय बनाकर दुर्खीम आत्महत्या को समाज शास्त्रीय प्रारूप में परिभाषित करते है :–

''आत्महत्या शब्द का प्रयोग उन सभी मृत्युओं के लिए किया जाता है जो कि स्वयं मृत व्यक्ति के किसी सकारात्मक या नकारात्मक ऐसे कार्य के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष परिणाम होते है। जिनके विषय के व्यक्ति जानता है कि वह कार्य इसी परिणाम अर्थात मृत्यु को उत्पन्न करेगा।''

दुर्खीम ने अपने इस पुस्तकों को तीन भागों में विभक्त किया है। पुस्तक के प्रथम भाग में दुर्खीम ने प्रस्तावना में आत्महत्या की परिभाषा वैधानिक आधार पर ही है। पुस्तकें के दुसरे भाग में आत्महत्या के लिए उत्तरदायी करके कि व्याख्या तथा पुस्तकें के अन्तिम भाग में दुर्खीम ने समूहवादी सिद्धांत की प्रतिपादन किया है।

यदि हमें बीते वर्षों 2019–20 के आंकडों को देखे तो कोविड–19 महामारी ने वैश्विक स्तर पर मानसिक तनाव को बढा दिया है। हालाकि वर्ष 2019 में लगभग 7,03,000 लोगों या 100 में से एक व्यक्ति ने आत्महत्या से मृत्यु हो गई। इसमें से कई युवा थे अधिक वैश्विक आत्महत्याएं (58%) 50 वर्ष की आयु वर्ग से पहले हुई। वर्ष 2019 में वैश्विक स्तर 15–29 आयुवर्ग के युवाओं में मृत्यु का चौथा प्रमुख कारण आत्महत्या थी।

इन आंकडों में निम्न और उच्च आय वाले देशों में यह हर लगभग 77 : वर्ष 2019 में रही। यदि हम क्षेत्रीय डेटा के आधार पर वर्ष 2019 में हुए आत्महत्याओं का अध्ययन करें तो देखने का मिलेगा कि अफ्रीका, युरोप और दक्षिण पूर्व एशिया में आत्महत्या की दर वैश्विक औसत से अधिक दर्ज की गई। यह संख्या दक्षिण पूर्व एशिया में (10.5) का स्थान था।

पिछले 20 वर्षों (2000–2019) में वैश्विक आत्महत्या हर 36ः कमी आई थी और हम अपने देश कि बात करें तो (राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो) के अनुसार भार में वर्ष 2018 में आत्महत्या के कुल 7,34,516 मामलें दर्ज किए गए।

भारत में आत्महत्या के प्रयासों को लेकर कानून :–

यदि आप भारतीय संविधान के (अनुच्छेद–21) जोकि मौलिक अधिकारों के अंतर्गत आता है तो आप पाएगें कि इसे के अनुसार– ''किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता से विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार भी वंचित किया जाएगा'' जबकि संविधान में जीवन या स्वतन्त्रता का अधिकार शामिल है, इसमें मृत्यु का अधिकार शामिल नहीं है।

थ्कसी के जीवन लेने के प्रयास को जीवन के संवैधानिक अधिकारों के दायरे में नही माना जाता है। भारतीय दंड संहिता (IPC) की धारा 309 में कहा गया है – यदि कोई व्यक्ति आत्महत्या का प्रयास करता है या आत्महत्या जैसे अपराधिक कार्य करते तो उसे साधारण कारावास या जुर्माना या दोनों सजा से दंडित किया जा सकता है जिसे एक वर्ष तक बढाया जा सकता है, परन्तु यदि कोई व्यक्ति किसी को आत्महत्या करने के लिए उकसाता है तो उस उकसाने वाले व्यक्ति के लिए दंड का प्रावधान (IPC) की धारा के तहत है तथा एक बच्चे को आत्महत्या के लिए उकसाने पर दंड का प्रावधान धारा 305 के अंतर्गत है।

आत्महत्या किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। समस्या सभी के जीवन में है। कोई भी मानव इस संसार में नही हुआ और न ही भविष्य में होगा जिसके जीवन में समस्या नही हो हर सफलता से पहले असफलता आती है। असफलतों से डर किस बात का यदि आप आज असफल है तो यह संकेत है कि आप भविष्य में अवश्य सफल होगें। कोई भी समस्या मानवीय शक्तियों से बडी नहीं यदि समस्या है तो उसका समाधान भी है। हमें सदैव श्रेष्ठ रचना है स्वयं पर गर्व कीजिए और हर समस्या से लडने को तथा उसे परास्त करने को सदैव तत्पर रहिए।

संविधान दिवस

–सिमरन
सेमेस्टर

मौलिक कर्तव्य (Fundamental Rights)

मौलिक कर्तव्य का अर्थ :– भारत के मूल संविधान में केवल मूल अधिकारों को ही शामिल किया गया था जबकि मौलिक कर्तव्य प्रारंभ में संविधान में उल्लेखित नही था, ऐसी आशा की जाती थी कि भारत के नागरिक स्वतन्त्र भारत में अपने कर्तव्यों की पूर्ति स्वेच्छा से करेंगे किन्तु 42वें संशोधन अधिनियम, (1976) द्वारा भाग 4(क) और अनुच्छेद 51 (क) जोडा गया, जिसमें दस मौलिक कर्तव्यों का उल्लेख किया गया।

मौलिक कर्तव्यों का संविधान में समावेश करने के लिए 'सरदार स्वर्ण सिंह' की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया, ये मूल कर्तव्य मुख्यतः पूर्व सोवियत संघ के संविधान से प्रेरित थे।

मौलिक कर्तव्यों का महत्व :– संविधान के 42वें संशोधन द्वारा नागरिकों के लिए कर्तव्यों का समावेश करके हमारे संविधान की एक बहुत बडी कमी को पूरा किया गया है। मौलिक कर्तव्यों को हमारे जीवन में आंका जा सकता है।

1. **सम्प्रभुता एवं अखण्डता की रक्षा** :– मौलिक कर्तव्यों द्वारा नागरिकों को यह निर्देश दिया गया कि वे देश की सम्प्रभुता तथा अखण्डता की रक्षा करें, यदि सभी नागरिक निष्ठा एवं ईमानदारी से अपने इस कर्तव्य का पालन करने लग जायें तो भारत की सम्प्रभुता और अखण्डता चिरस्थायी बनी रहेगी।
2. **देश की प्रगति में सहायक** :– मौलिक कर्तव्यों द्वारा नागरिकों को आहन किया गया कि वे संकट के समय देश की सुरक्षा हेतु तन–मन–धन से अपने योगदान दें।

''नागरिकों द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाये जाने से देश प्रगति की दिशा में आगे बढेगा और विकसित राष्ट्रों की श्रेणी में आ जायेगा''।

3. **प्राकृतिक तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा** :– भारत में प्राकृतिक तथा सार्वजनिक संपत्ति को नष्ट करने में लोग कोई संकोच नही करते। मौलिक कर्तव्यों में दिये गये निर्देश के पालन से प्राकृतिक तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा होगी। प्रदूषण दूर होगा, जिससे स्वास्थ्य की रक्षा होगी, साथ ही देश की प्रगति होगी।

4. **लोकतन्त्र को सफल बनाने में सहायक** :– भारत द्वारा अपनायी गयी लोकतांत्रिक शासन–व्यवस्था तब तक सफल नही हो सकती, जब तक नागरिक लोकतांत्रिक संस्थाओं का आदर न करें। मौलिक कर्तव्यों को संविधान में स्थान दिये जाने से लोग इन संस्थाओं का आदर करेंगे, जिससे लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था सुदृढ़ होगी।

भारतीय संविधान में नागरिक के मूल कर्तव्य :–

1. संविधान का पालन करें और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।
2. स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलनों को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हम संजोए रखें और उनका पालन करें।
3. भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण बनाए रखें।
4. देश की रक्षा करें और आव्हान किये जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भातृत्व की भावना का निर्माण करें, जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करें, जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है।
6. हमारी समाजिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परीक्षण करें।

मौलिक कर्तव्यों की आलोचना :– मौलिक कर्तव्य अत्याधिक आदर्शववाद विचारों से प्रेरित हैं, जैसे :– राष्ट्रीय आदर्शों की पालना, देश की समन्धित संस्कृति व गौरवशाली परम्परा की रक्षा करना, ''वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद ऐसे ही मान्य तथ्य है कि कर्तव्यों की पालना किये बिना अधिकारों का उपयोग संभव नही है।''

प्रत्येक नागरिक द्वारा इन कर्तव्यों का पालन करना सवौच्च धर्म समझा जाना चाहिए।

- राष्ट्रीय गौरव अपमान निवारण अधिनियम, (1971) भारत के संविधान, राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रीयगान के अनादर का निवारण करता है।
- सिविल अधिकार संरक्षण अधिनियम, (1955) जाति एवं धर्म से सम्बन्धित अपराधों पर दंड की व्यवस्था करता है।
- वन्य जीव (सरंक्षण) अधिनियम (1972) दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियों के व्यापार पर प्रतिवंध लगाता है।

मूल कर्तव्यों का अपना महत्व है :– **जैसे** :–

- ये नागरिकों के लिए प्रेरणास्रोत है और उनमें अनुशासन और प्रतिवध्ता को बढाते है।
- मौलिक कर्तव्य राष्ट्र विरोधी एवं समाज विरोधी गतिविधियों के खिलाफ चेतावनी के रूप में कार्य करते है।
- मौलिक कर्तव्य, अदालतों को किसी विधि की सवैंधानिक वैधता एवं उनके परीक्षण के सम्बन्ध तें सहायता करते है।

उपसंहार (निष्कर्ष) :– यह कर्तव्य अगर हम सभी नागरिक निभाने लगे तो हमारा देश उँचाईयों पर पहुँच जाएगा। भारत के सभी नागरिकों को मौलिक कर्तव्य का पालन करना चाहिए जिससे हमारा देश विकास करें यह कर्तव्य समाज की भलाई के लिए बनाए गए इनके बिना हमारा जीवन असंभव है जब हम मौलिक कर्तव्यों का पालन करेंगे तो हम कई क्षेत्र में आगे बढ सकेंगे, क्योंकि वह अपनी जिम्मेदारियों को समझता है।

प्रकृति तथा सार्वजनिक सम्पत्ति को नष्ट करने में लोग कोई संकोच नही करते। मौलिक कर्तव्यों में दिये गए निर्देश के पालन में प्राकृतिक तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा होगी। प्रदूषण दूर होगा जिससे स्वास्थ्य रक्षा होगी, साथ ही देश की प्रगति होगी।

4. **लोकतन्त्र को सफल बनाने में सहायक** :– भारत द्वारा अपनायी गयी लोकतांत्रिक शासन–व्यवस्था तब तक सफल नही हो सकती, जब तक नागरिक लोकतांत्रिक संस्थाओं का आदर न करें। मौलिक कर्तव्यों को संविधान में स्थान दिये जाने से लोग इन संस्थाओं का आदर करेंगे, जिससे लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था सुदृढ़ होगी।

5. **संस्कृति की रक्षा और संरक्षण** :– भारत में समन्वित संस्कृति होने के कारण कश्मीर से कन्याकुमारी तक विभिन्न प्रकार की गौरवशाली परम्पराएं है। मौलिक कर्तव्यों के पालन से ही विभिन्न प्रकार की इन परम्पराओं में समन्वय स्थापित कर सकेंगे और उनका संरक्षण कर सकेंगे। इससे भारत की सांस्कृतिक एकता सुदृढ़ होगी।

6. **विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास** :– मौलिक कर्तव्यों में भारतीय नागरिकों को सद्भावना तथा भाई–चारे की भावना बनाये रखने का निर्देश दिया गया है, साथ ही हिंसा से दूर रहने का परामर्श दिया गया है। ये निर्देश और परामर्श मानवीय दृष्टिकोण अपनाने और

विश्व–बंधुत्व की भावना को विकसित करने में सहायक सिद्ध होंगे।

7. **स्त्रियों का सम्मान** :– मौलिक कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करने से समाज में स्त्रियों को सम्मान प्राप्त होगा, जिससे उसकी गरिमा में वृद्धि होगी और लिंग संबंधी भेदभाव समाप्त होकर समानता स्थापित होगी।

मौलिक अधिकार की वि ोशताएं :–

- यह सरकार की निरंकुशता पर रोक लगाता है।
- यह आम नागरिक को सशक्त बनाता है।
- यह राष्ट्रीय भावना को ध्यान में रखकर बनाया गया है।
- यह सीमित मात्रा में है जिससे नागरिक निरंकुश न बन सके।
- इसे न्यायालय द्वारा संरक्षण प्राप्त है।
- यह देश के नागरिकों और विदेशी नागरिकों में अंतर करता है।
- मौलिक अधिकार राज्य के कानून से ऊपर है।
- यह व्यावहारिकता के आधार पर बनाया गया है।
- यह देश की शांति, समृद्धि और खुशहाली के लिए आवश्यक है।

निश्कर्श :– किसी भी देश का संविधान उस देश की आत्मा और प्राण होता है, ठीक उसी तरह भारत का संविधान भी इसकी आत्मा है। आज मौलिक अधिकारों की बदौलत देश के नागरिक शांतिभाव से अपना जीवन यापन कर रहे है। यह हमारे लिए बहुत ही जरूरी है। पर अधिकार के साथ कर्तव्य की भावना भी होनी चाहिये। देश खुशहाल और समृद्धि तभी बन सकता है जब हम सभी अधिकारों के साथ–साथ कर्तव्य पालन भी करते रहेंगे। त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरूद्ध है।

6. हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझें और उसका परीक्षण करें।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव है। रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणी मात्र के प्रति दया भाव रखें।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।
10. व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढने का सतत प्रयास करें जिससे राष्ट्र निरंतर बढते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू लें।
11. 6 से 14 वर्ष तक की उम्र के बीच अपने बच्चों को शिक्षा के अवसर उपलब्ध कराना।

यह कर्तव्य 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 के द्वारा जोड़ा गया तथा इसी के साथ 10 मूल कर्तव्यों की सूची एक और मूल कर्तव्य जोडा गया। अतः वर्तमान में 11 मूल कर्तव्य हो गए है।

मूल कर्तव्यों की विशेषताएँ

निम्नलिखित बिंदुओं को मूल कर्तव्यों की विशेषताओं के संदर्भ में उल्लिखित किया जा सकता है :–

1. उनमें से कुछ नैतिक कर्तव्य है तो कुछ नागरिक उदाहरण के लिए स्वतन्त्रता संग्राम के उच्च आदर्शों के सम्मान एक नैतिक दायित्व है।

2. कि राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रीयगान का ..... कर्तव्य

1. भारतीय परम्पराओं पौराणिक कथाओं, धर्म, जात–पात से सम्बन्धित है। दूसरे शब्दों में वह..... जीवन पद्धति के आन्तरिक कर्तव्यों का .....करण है।

2. मूल अधिकार जो सभी लोगों के लिए है, के विकास के लिए हों या विदेशी लेकिन मूलकर्तव्य केवल ..... के लिए हैं ना की विदेशियों के लिए हैं।

3. ..... तत्वों की तरह मूलकर्तव्य गैर न्यायोचित ....में सीधे न्यायालय के जरिए उनके ..... नही हैं। खाली उनके तथ्य के खिला..... उनके सस्तुति नही है.....

4. अवमुक्त विधान द्वारा उनके क्रियान्वयन स्वतन्त्र है।

मूलकर्तव्यों का महत्व

तथ्यों एवं विरोध के बावजूद मूलकर्तव्यों की .... को निम्नलिखित दृष्टिकोण के आधारपर ..... किया जा सकता है :–

1. मूल कर्तव्य सचेतक के रूपमें से ..... जब वह अपने अधिकारों का प्रयोग करते है तो अपने देश अपने समाज और अपने जिलों के प्रति अपने कर्तव्यों .....

भारत का संविधान

–दीपक पासवान
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

भारत का संविधान – भारत का सर्वोच्च विधान है जो संविधान सभा द्वारा 26 नवम्बर 1949 को पारित हुआ तथा 25 जनवरी 1950 से प्रभावी हुआ। यह दिन 26 नवम्बर भारत के संविधान दिवस के रूप में घोषित किया गया है।

जबकि 26 जनवरी का दिन भारत में गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता है। डा0 भामराव अम्बेडकर को भारतीय संविधान का प्रधान वास्तुकार कहा जाता है।

भारत का संविधान विश्व के किसी भी गणतान्त्रिक देश का सबसे लम्बा लिखित संविधान है।

भारतीय संविधान की संरचना – यह वर्तमान समय में भारतीय संविधान के निम्नलिखित भाग है –

1. एक उद्देशिका
2. 470 अनुच्छेदों से युक्त 25 भाग
3. 12 अनुसूचियाँ
4. 5 अनुलग्नक (appendices)
5. 104 संशोधन

अब तक 124 संविधान संशोधन विधेयक संसद में लाये गये हैं जिनमें से 103 संविधान संशोधन विधेयक पारित होकर संविधान संशोधन अधिनियम का रूप ले चुके हैं।

124 वां संविधान संशोधन विधेयक 1 जनवरी 2019 को संसद में अनुच्छेद 368 विशेष बहुमत से पास हुआ जिसके तहत आर्थिक रूप से कमजोर सामान्य वर्ग का शैक्षणिक संस्थाओं में 8 अगस्त 2016 को संसद ने वस्तु और सेवा कर (ळैप्) संशोधन किया।

स्वामी विवेकानंद के विचारों की उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

–श्रेया भट्ट
बी.एस.सी. तृतीय वर्ष

मुख्य बिंदु –

- प्रस्तावना
- स्वामी विवेकानंद जी का अल्मोड़ा से लगाव
- काकड़ी घाट धाम यात्रा
- रामकृष्ण कुटीर
- स्वामी विवेकानंद और देहरादून
- हिमालय और स्वामी विवेकानंद
- उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता
- स्वामी विवेकानंद जी के प्रेरक विचार
- उपसंहार

"सोयी दुनिया को जिसने जगाया,
भारत के नैतिक एवं जीवन मूल्यों को विश्व के कोने–कोने तक पहुंचाया।
अपने प्रेरक विचारों से जिसने, विश्व को –
ज्ञान का एक नया मार्ग दिखाया,
भारत माता का वह सपूत 'स्वामी विवेकानंद' कहलाया।।"

प्रस्तावना :– स्वामी विवेकानंद जी एक महान व्यक्तित्व के धनी, प्रतिभाशाली, अद्वितीय हिन्दू–सन्यासी थे, जिन्होंने भारत के वर्चस्व, ज्ञान एवं अध्यात्म को पूरे विश्व तक पहुंचाया। अपने प्रेरक विचारों से ही लोगों के हृदय में उत्साह और उमंग का संचार करने वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी को कौन नहीं जानता?

भारतीय युवाओं के बीच उनकी लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि आज भी वे अस्सी प्रति से अधिक शिक्षित भारतीय युवाओं के आदर्श हैं। स्वामी विवेकानंद जी के विचार उन्हें सबसे अलग व कोहिनू की भांति चमकाते हैं।

स्वामी विवेकानंद जी ने विश्व भ्रमण के साथ उत्तराखण्ड के अनेक क्षेत्रों में भी भ्रमण किया।

भारत में स्वामी विवेकानंद जी को देशभक्त सन्यासी के रूप में माना जाता है तथा उनके जन्मदिवस को 'राष्ट्रीय युवा दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

स्वामी विवेकानंद जी का प्रारम्भिक जीवन :– स्वामी

विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी, 1863 में कलकत्ता, बंगाल, ब्रिटिश भारत में एक परम्परानिष्ठ हिन्दू परिवार में हुआ था। उनके पिता विश्वनाथ दत्त, कलकत्ता हाइकोर्ट के एक प्रसिद्ध वकील थे। उनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों की महिला थीं। स्वामी विवेकानंद जी के बचपन का नाम नरेन्द्र था। नरेन्द्र बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के थे। उन्होंने 'ईश्वर चन्द्र विद्यासागर मेट्रोपोलीटैंट इंस्टीट्यूशन' से अपनी पश्चिमी शिक्षा प्राप्त की। पढ़ाई में वह अच्छी तरह से पश्चिमी और पूर्वी दर्शनशास्त्र में निपुण हो गये। उनके शिक्षक कहते थे कि नरेन्द्र में एक विलक्षण स्मृति और बौद्धिक क्षमता है।

सन् 1884 में उनके पिता विश्वनाथ दत्त की मृत्यु हो गयी, जिस कारण घर का भार नरेन्द्र के कंधों पर पड़ा।

रामकृष्ण परमहंस की प्रशंसा सुनकर नरेन्द्र उनके पास पहले तो तर्क करने के विचार से ही गये, किंतु रामकृष्ण परमहंस देखते ही नरेन्द्र की बुद्धिमत्ता और अद्वितीयता को पहचान गये। परमहंस जी की कृपा से इनको आत्म–साक्षात्कार हुआ। फलस्वरूप नरेन्द्र, परमहंस जी के शिष्यों में प्रमुख हो गये।

सन्यास लेने के बाद इनका नाम विवेकानंद हुआ।

स्वामी विवेकानंद जी का अल्मोड़ा से लगाव :– अल्मोड़ा खूबसूरत, मनोरम स्थान है। अल्मोड़ा कुमाऊँ की पहाड़ियों में बसा हुआ एक पहाड़ी नगर है। चारों तरफ हरे–भरे जंगलों का सौन्दर्य अपनेआप में एक विशेष आकर्षण पैदा करता है। बसन्त ऋतु में अल्मोड़ा की छवि दर्शनीय हो जाती है। प्राचीन युग में ही अल्मोड़ा का धार्मिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक महत्व कई दिशाओं में अग्रणीय रहा है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी अल्मोड़ा समस्त कुमाऊँ अंचल का प्रतिनिधित्व करता है।

स्वामी विवेकानंद जी को सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा से बेहद लगाव था। अल्मोड़ा नगर से स्वामी विवेकानंद जी का सम्बंध तब का है, जब वे केवल नरेन्द्रनाथ दत्त थे। अपने जीवनकाल में स्वामी जी ने तीन बार अल्मोड़ा की पैदल यात्रा की। अल्मोड़ा में उन्होंने कई दिनों तक प्रवास किया और लोगों को अध्यात्म पर प्रवचन भी दिये। अल्मोड़ा के दौरान स्वामी जी ने कई स्थानों पर कठिन तपस्या की।

स्वामी विवेकानंद जी 1890 में एक आम सन्यासी की तरह अपने गुरु भाई अखंडानंद के साथ पहली बार अल्मोड़ा पहुंचे। यहां शारदानंद और स्वामी कृपानंद से उनकी मुलाकात हुई। यहां वह लाल बद्री शाह के घर पर रुके। एकातंवास की चाह में एक दिन वह घर से निकल पड़े और कसारदेवी पहाड़ी की गुफा में तपस्या में लीन हो गये। कुछ समय बिताने के बाद स्वामी जी यहां से बद्रीनाथ की यात्रा पर निकल गये।

11 मई 1897 में विवेकानंद दूसरी बार अल्मोड़ा पहुंचे, तब उन्होंने यहां खजांची बाजार में जनसभा को सम्बोधित किया। कहा जाता है कि तब यहा पांच हजार लोगों की भीड़ उनके दर्शन के लिये एकत्र हुई थी।

स्वामी जी ने अपने भाषणा में कहा था – "यह हमारे पूर्वजों के स्वप्न का स्थान है। यह पवित्र स्थान है, जहां भारत का प्रत्येक सच्चा धर्म पिपासु व्यक्ति अपने जीवन का अंतिम काल बिताने का इच्छुक रहता है। यह वही पवित्र भूमि है, जहां निवास करने की कल्पना मैं अपने बाल्यकाल से ही कर रहा हूँ।" 1897 में दूसरी बार अल्मोड़ा के भ्रमण के दौरान स्वामी विवेकानंद जी ने लगभग तीन माह तक यहां निवास किया।

वह 1898 में तीसरी बार अल्मोड़ा आये। इस बार उनके साथ स्वामी तुरियानंद और स्वामी निरंजनानंद के अलावा कई शिष्य भी थे। इस बार उन्होंने सेवियर दम्पत्ति का आतिथ्य स्वीकार किया। इस दौरान करीब एक माह की अविध पर स्वामी जी अल्मोड़ा में प्रवास पर रहे।

काकड़ी घाट धाम यात्रा :– काकड़ी घाट धााम नैनीताल जिले में अल्मोड़ा रोड पर स्थित वह स्थान है, जहां से ही स्वामी विवेकानंद जी का कुमाऊँ आगमन प्रारम्भ हुआ। स्वयं उन्होंने इस स्थान के बारे में लिखा है कि – "यहां आकर उन्हें लगा कि उनके भीतर की समस्त समस्याओं का समाधान हो गया और उन्हें पूरे ब्रह्माण्ड के एक अणु में दर्शन हुए।" यही ज्ञान था, जिसे उन्होंने 11 सितम्बर 1893 को शिकागों में पूरी दुनिया के समक्ष रखकर देश का मान बढ़ाया। युगों–युगों से 'काकड़ी घाट धाम' ऋषियों की तपोभूमि रही है। काकड़ी घाट का प्राचीन महत्व है।

भारत को दुनिया में आध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रस्तुत करने वाले, युवाओं को सृष्टि के कल्याण के लिये 'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रूको' का मूलमंत्र देने वाले वेदान्त के विख्यात स्वामी विवेकानंद जी को आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति नैनीताल जनपद के काकड़ी घाट में हुई थी। विवेवकानंद जी की देवभूमि यात्रा यहीं से प्रारम्भ हुई थी।

स्वामी विवेकानंद जी और देवभूमि का गहरा सम्बंध रहा है। वह तीन बार देवभूमि आये।

रामकृष्ण कुटीर :– स्वामी विवेकानंद जी अल्मोड़ा में एक एक ध्यान अध्यात्म का केन्द्र स्थापित करना चाहते थे किंतु अपने जीते–जी वह इस केन्द्र की स्थापना नहीं कर सके।

स्वामी विवेकानंद जी की इच्छा को पूरा करने के लिये स्वामी तुरियानंद तथा स्वामी शिवानंद ने 22 मई 1916 में अल्मोड़ा में 'ब्राइट एंड कॉर्नर' पर एक आध्यात्मिक केंद्र की स्थापना की, जिसे आज 'रामकृष्ण कुटीर' के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में यहां से स्वामी विवेकानंद जी के विचारों का प्रचार–प्रसार किया जाता है।

स्वामी विवेकानंद और देहरादून :– स्वामी विवेकानंद जी

का द्रोण की नगरी देहरादून से भी करीबी रिश्ता रहा है। द्रोणनगरी को भी दो बार उनके दर्शनों का सौभाग्य मिला। यह पावन भूमि स्वामी जी के अपने गुरुभाई से मिलन की भी साक्षी रही है। अपनी आत्मकथा और भाषणों के संग्रह 'लैटर्स फ्रॉम कोलम्बो टू अल्मोड़ा' मे उन्होंने इसका वर्णन किया है।

देहरादून में राजपुर में प्राचीन बावड़ी शिव मंदिर है। यह वह स्थल है, जहां पर एक कुटिया में स्वामी जी के गुरुभाई स्वामी तुरियानंद तप कर रहे थे। अल्मोड़ा से आते समय स्वामी विवेकानंद को जब उनके तप के बारे में पता चला, तब वे देहरादून आये।

बावबड़ी के सुरम्य वातावरण में स्वामी विवेकानंद जी का मन रम गया। प्राकृतिक स्रोत, धरती के गर्भ से निकलती जब की पावन धारा और शांत वातावरण उन्हें वहीं रुकने के लिये विवश करने लगी। बावड़ी में ही रहकर स्वामी जी ने साधना की। कदाचित तुरियानंद की तरह स्वामी विवेकानंद जी को भी द्रोण की नगरी की दैवीय शक्ति अपनी ओर आकृष्ट कर रही थी, वे यहीं तुरियानंद जी के कक्ष में रहे और 13 दिन तक तप किया।

देहरादून की यात्रा में स्वामी जी तीन हफ्ते तक रहे। देहरादून में स्वामी जी एक स्थानीय व्यापारी के घर में रहते थे।

हिमालय और स्वामी विवेकानंद :– हिमालय दुनियाभर के आध्यात्मिक जिज्ञासुओं के लिये अति महत्वपूर्ण गन्तव्य रहा है। हिमालय ने भारत को बहुत कुछ दिया है। हम ऋणी हैं देव स्थान हिमालय के। यहां के कण–कण में जीवन–दर्शन दिखता है, चाहे वे हिमाच्छादित उच्च शिखर हों या हिमालय के सर्पीले मार्ग, लम्बे–लम्बे वृक्ष हों या कठोर शिलों हों या दुर्गमता हो या हिमालय के जीवन की कठिनाइयां हों, हिमालय का सूर्योदय हो या सूर्यास्त हो, हिमालय का सब–कुछ दर्शन की दिव्यता से ओत–प्रोत है।

भारत के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक इतिहास में हिमालय की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। हिन्दू समाज में हिमालय को देवत्व के काफी करीब माना जाता है। युवाओं के गुरु और मेरे आदर्श स्वामी विवेकानंद जी को हिमालय से काफी लगाव था। हिमालय की हिमाच्छादित शुभ्र चोटियां उन्हें अपनी ओर सदैव आकृष्ट करती थीं।

स्वामी विवेकानंद जी की जीवनी युगनायक विवेकानंद के अनुसार, उनकी पहली हिमालय यात्रा का उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्त करना था। स्वामी जी का कहना था कि – 'हिमालय से मिलना और उसके साथ एकाकार करना – यह मेरी कामना है।'

स्वामी विवेकानंद जी ने विश्व भ्रमण के साथ उत्तराखण्ड के अनेक क्षेत्रों में भी भ्रमण किया। अपने जीवन के अल्प समय में स्वामी जी ने उत्तराखण्ड की चार यात्राएं कीं और काफी समय यहां व्यतीत किया। वे यहा ध्यान के लिये और आध्यात्मिक साधना, विश्राम और स्वास्थ्य लाभ क लिये आते रहते थे। उन्होंने कुमाऊँ हिमालय की चार बार यात्रा की, जिनमें नैनीताल, अल्मोड़ा और चम्पावत यात्राएं प्रमुख हैं।

स्वामी जी ने अपने सम्बोधन में कहा था कि इन पहाड़ों के साथ हमारी श्रेष्ठतम स्मृतियां जुड़ी हुई हैं। यदि धार्मिक भारत के इतिहास से हिमालय को निकाल दिया जाये तो उसका कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता :– स्वामी विवेकानंद जी ने विश्व भ्रमण के साथ उत्तराखण्ड के अनेक क्षेत्रों में भी भ्रमण किया। स्वामी विवेकानंद जी का देवभूमि उत्तराखण्ड से गहरा लगाव था। उन्होंने प्रदेश के कई स्थानों में भ्रमण किया। उन्होंने उत्तराखण्ड आकर अपनी वाणी व विचारों से सम्पूर्ण क्षेत्र को अपनी ओर आकर्षित किया। स्वामी जी हिमालय क्षेत्र में रहना पसंद करते थे। उन्होंने कुमाऊँ हिमालय की चार बार यात्रा की, जिनमें नैनीताल, अल्मोड़ा और चम्पावत यात्राएं प्रमुख हैं।

हिमालय को महिमामंडित करते हुए स्वामी विवेकानंद जी ने एक बार कहा था कि महान हिमालय प्रकृति के काफी समीप है, यहां अनेक देवी–देवताओं का निवास है। हिमालय देवभूमि है।

उनके द्वारा कहा गया यह वाक्य वर्तमान समय में भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना कि उस समय था। आज भी हिमालय को देवभूमि कहा जाता है। अतः आवश्यक है कि जो प्रदूषण आज पर्यटकों द्वारा हिमालय पर फैल रहा है, उसे समाप्त कर, स्वामी जी के विचारों को अपनाकर, हिमालय को देवताओं की भूमि के रूप में पूजा जाये। साथ ही, हिमालय से प्राप्त आध्यात्मिक ऊर्जा को सतत भाव से ग्रहण किया जाये तथा हिमालय में उपस्थित संसाधनों का संरक्षण किया जाये।

उत्तराखण्ड की इन वादियों से ही,

जुड़े हें सपने हजार।

स्वामी जी के विचारों से ही,

सुशोभित हुआ है देवभूमि उत्तराखण्ड आज।।

स्वामी विवेकानंद जी कहते थे कि इन पहाड़ियों के साथ ही हमारी श्रेष्ठतम स्मृतियां जुड़ी हैं। यदि धार्मिक भारत के इतिहास से हिमालय को निकाल दिया जाये तो उसका कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

हिमालय में निस्तब्धता, ध्यान तथा शांति की प्रधानता है। आज युवाओं में बढ़ती हिंसा प्रवृत्ति के लिये आवश्यक है कि वे स्वामी विवेकानंद जी के विचारों का अनुसरण करें। स्वामी जी के अनमोल विचार हर युवा के लिये 'सफलता की चाबी' सिद्ध हो सकते हैं।

स्वामी जी ने 'नर सेवा – नारायण सेवा' का जो मंत्र हमें दिया है, वह आज के स्वार्थी समाज में अति महत्वपूर्ण स्थान रखताहै। स्वामी विवेकानंद जी के विचार उत्तराखण्ड राज्य के परिप्रेक्ष्य में वर्तमान समय में भी अति महत्वपूर्ण हैं। स्वामी जी के विचार आज भी हिमालय से लेकर यहां रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रभावित करते हैं।

वे उत्तराखण्ड के बारे में हमेशा कहा करते थे – "मैं फिर आऊंगा ... अगले वर्ष ... और उसके अगले वर्ष भी।"

वह अपने वादे पर आज भी अडिग हैं, वह आज भी आते हैं, परंतु फर्क सिर्फ इतना है कि पहले वे तन–मन के साथ आते थे और आज अपने विचारों के रूप में आकर प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में अपनी विशेष पहचान बनाये हुए हैं। वे आज भी उत्तराखण्डवासियों और भारतीयों के हृदय में जीवित हैं।

स्वामी विवेकानंद जी के प्रेरक विचार :– स्वामी विवेकानंद जी के प्रेरक विचारों से भारत ही नहीं, अपितु समस्त विश्व प्रभावित है। स्वामी जी के अनमोल विचार युवाओं के लिये ही नहीं, अपितु समाज के प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिये अति महत्वपूर्ण हैं। स्वमी जी के कुछ अनमोल विचार निम्नलिखित हैं –

- उठो, जागो और लक्ष्य प्रापित तक मत रूको।
- पहले हर अच्छी बात का मजाक बनताहै, फिर विरोध होता है और फिर उसे स्वीकार कर लिया जाता है
- खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।
- जैसा तुम सोचते हो, वैसे ही बन जाओगे। खुद को निर्बल मानोगे तो निर्बल और सबल मानोगे तो सबल ही बन जाओगे।
- सत्य को एक हजार तरीकों से बताया जा सकताहै फिर भी हर एक सत्य ही होगा।
- ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियां, पहले से हमारी हैं। वो हम ही हैं, जो अपनी आँखों पर हाथ रख लेते हैं और फिर रोते रहते हैं, अंधकार कितना है।
- एक समय में एक काम करो और ऐसा करते समय अपनी पूरी आत्मा उसमें डाल दो, बाकी सब भूल जाओ।
- जब तक जीना, तब तक सीखना। अर्थात अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।
- संभव की सीमा जानने का केवल एक ही तरीका है – असंभव से भी आगे निकल जाना।
- सभी शक्ति तुम्हारे भीतर है, आप कुछ भी और सब–कुछ कर सकते हो।
- मुझे गर्व है कि मैं उस देश से हूँ,

  जिसने दुनिया को सहिष्णुता और

  सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है

  हम सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं।
- किसी दिन जब आपके सामने कोई समस्या न आये तो, आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि आप गलत मार्ग पर चल रहे हैं।
- प्रसन्नता एक अनमोल खजाना है,

  इसे छोटी–छोटी बातों पर लुटने ना दें।
- लोग तुम्हारी स्तुति करें या निन्दा, लक्ष्य तुम्हारे ऊपर कृपालू हो या न हो, तुम्हारा देहान्त आज हो या युग में, परंतु तुम न्याय पथ से कभी भ्रष्ट न होना।
- आज्ञा देने की क्षमता प्राप्त करने से पहले, प्रत्येक व्यक्ति को आज्ञा का पालना करना सीखना चाहिये।
- जिस प्रकार केवल एक ही बीज पूरे जंगल को पुनर्जीवित करने के लिये पर्याप्त है, उसी प्रकार एक ही मनुष्य विश्व में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिये पर्याप्त है।

उपसंहार :– बहुमुखी प्रतिभा वाले महान व्यक्तित्व के धनी, स्वामी विवेकानंद जी समस्त भारतीयों के लिये प्रेरणा स्रोत हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन और विचार प्रेरणा देने वाले हैं। उन्होंने वेदांत दर्शन का प्रासर पूरी दुनिया में करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे कर्म करने पर भरोसा रखने वाले व्यक्ति थे। भारत के निर्माण एवं सामाजिक सेवा के लिये उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की।

4 जुलाई 1902 में स्वामी विवेकानंद जी ने उन्तालीस वर्ष की अल्पायु में ध्यानावस्था में ही अपने ब्रह्मारंध्र को भेद महासमाधि ले ली। स्वामी विवेकानंद जी उन्तालीस वर्ष के संक्षिप्त जीवनकाल में जो काम कर गये, वे आने वाली अनेक शताब्दियों तक भावी पीढ़ियों का मार्गदर्शन करते रहेंगे।

अपने अनमोल प्रेरक विचारों से जिसने,
दुनिया को ज्ञान की नयी राह दिखाई।
भारत की ख्याति, जिसने समस्त विश्व में फैलाई,
ऐसे महापुरुष स्वामी विवेकानंद ने 4 जुलाई 1902 –
में जग से ली अंतिम विदाई।
छोड़ गये वो अपने अनमोल संदेश,
उन्हीं के विचारों से प्रेरित होकर हम भारत को –
फिर से बनाएंगे सोने का समृद्ध विकसित देश।।

'जय हिन्द, जय भारत, जय उत्तराखण्ड'

उत्तराखण्ड के विकास में युवाओं की भूमिका

–पंकज सिंह रौथाण
बी.एससी. तृतीय वर्ष

प्रस्तावना

प्रकृति की अमूल्य कृति, हिमालय की गोद में बसा 'उत्तराखण्ड' एक देवभूमि हैख् जहां पुरातन काल से देवगणों, ऋषि–मुनियों एवं तपस्वियों की तपोभूमि एवं निवास स्थान रहा है। उत्तराखण्ड को पुराणों में 'मानस', केदारखण्ड एवं कूर्मांचल नाम दिया गया है।

'उत्तराखण्ड' का अर्थ है उत्तर का खण्ड अर्थात उत्तर का भाग। उत्तराखण्ड राज्य का गठन 9 नवम्बर सन् 2000 में हुआ। राज्य स्थापना के समय इस राज्य का नाम उत्तरांचल था। 01 जनवरी 2007 से उत्तराखण्ड नाम इस प्रदेश का रखा गया। यह राज्य देश का उत्तरी सीमांत प्रदेश है। इसके उत्तर में हिमाचल प्रदेश एवं चीन, पूर्व में नेपाल, दक्षिण में उत्तर प्रदेश एवं पश्चिम में हरियाणा एवं हिमाँचल प्रदेश हैं।

उत्तराखण्ड देश का 27वाँ राज्य है। इस राज्य को 2 मई 2001 से विशेष राज्य का दर्जा मिला। इस राज्य का क्षेत्रफल 53,483 वर्ग किमी. है। उत्तराखण्ड राज्य के प्रथम राज्यपाल बनने का श्रेय श्री सुरजीत सिंह बरनाला एवं प्रथम मुख्यमंत्री श्री नित्यानंद स्वामी को गया है। राज्य के प्रथम मुख्य सचिव श्री अजय सिंह विक्रम एवं प्रथम पुलिस महानिदेशक श्री अशोक कांत शरण रहे हैं।

उत्तराखण्ड राज्य का उदय किसी एक व्यक्ति या संगठन की शहादत और सोच का परिणाम नहीं है, बल्कि यह आजादी से पूर्व गठित हो रहे अनेक संगठनों एवं दो दशक पूर्व शुरू हुए जनांदोलन के दौरान शहीद हुए राज्य प्रेमियों के बलिदान का प्रतिफल है। किसी भी राज्य के विकास में वहां की राजनीति एवं सरकार एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उस राजनीति को कुशल एवं विकासशील बनाने का कार्य वहां की जनता करती है। और उसी जनता का एक अंग है 'युवा पीढ़ी', जो आज अपने अधिकार, कुशल विकास एवं भविष्य के लिए संघर्ष कर रहा है।

आज हमारे देश की पहचान पूरी दुनिया में एक युवा देश के रूप में है। पूरी दुनिया की नजरें आज हमारे देश की युवा पीढ़ी पर है। दुनिया हमारे देश की इस युवा पीढ़ी को ललचाई नजरों से देखती है लेकिन आज न तो हम और न ही इस देश के सर्वेसर्वा इस युवा पीढ़ी के प्रति संवेदनशील है।

उत्तराखण्ड का इतिहास एवं पौराणिक उत्तराखण्ड :–

उत्तराखण्ड देश का रमणीय पर्यटन स्थल है। ऐतिहासिक व पौराणिक स्थल एवं प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर क्षेत्र है। यह क्षेत्र वर्षों से सामाजिक संस्कृति का वाहक रहा है। पुरातात्विक खोजों के अनुसार, 'गढ़वाल' एवं 'कुमाऊँ' पूर्व में 'मौर्य साम्राज्य' का अंग थे। ऐतिहासिक खोजों में 'कुषाण'

और 'कुणिदों' का यहां शासन होने के प्रमाण मिले हैं। छठवीं शताब्दी में यहां 'पौरव वंश' का शासन था, जो 12वीं शताब्दी तक रहा।

इससे पूर्व छठी शताब्दी में प्रसिद्ध चीनी यात्री 'ह्वेनसांग' भी यहां आया था। 'कत्यूर वंश' के पतन के फलस्वरूप यह क्षेत्र 'चन्द' और 'पंवार' शासकों के अधीन रहा। इसी बीच 'कुमाऊँ' और 'गढ़वाल' के रूप में इसका विभाजन हो गया।

राज्य स्थापना : संघर्ष एवं आन्दोलन :–

उत्तराखण्ड के गठन के लिए 'उत्तर प्रदेश पुनर्गठन विधेयक–2000' लोकसभा में 27 जुलाई, 2000 ई. को प्रस्तुत किया गया। लोकसभा में 1 अगस्त 2000 को व राज्यसभा में 10 अगस्त 2000 को पारित किया गया। इस विधेयक को राष्ट्रपति ने अपनी स्वीकृति 28 अगस्त 2000 ई. को प्रदान की तथा इसे अधिनियम के रूप में सरकारी गजट में अधिसूचित कर दिया गया था। उत्तराखण्ड का औपचारिक गठन 9 नवम्बर 2000 ई. को किया गया।

उत्तराखण्ड का उदय किसी एक व्यक्ति या संगठन की शहादत और सोच का परिणाम नहीं है, यह आजादी से पहले गठित होते रहे अनेक संगठनों व दो–ढाई दशक पहले शुरू हुए जनांदोलन के दौरान शहीद हुए दर्जनों से अधिक राज्य प्रेमियों के बलिदान का प्रतिफल है।

क्षेत्रीय समस्याओं के लिए सन् 1926 ई. में कुमाऊँ परिषद का गठन हुआ, जिसके कर्ताधर्ता पं. गोविन्द वल्लीा पंत, तारा दत्तत गैरोला तथा बद्री दत्त पाण्डे थे। सन् 1938 ई. में श्रीदेव सुमन ने दिल्ली में 'गढ़ देश सेवा संघ' की स्थापना की, जिसे बाद में 'हिमालय सेवा संघ' नाम दिया गया। आजादी के बाद सन् 1950 ई. में वृहद हिमालयी राज्य (हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखण्ड) के लिए 'पर्वतीय जन विकास समिति' का गठन किया गया। जून 1967 ई. में 'पर्वतीय राज्य परिषद' का गइन, 1970 में 'कुमाऊँ रष्ट्रीय मोर्चा' का गठन, 1972 ई. में नैनीताल में 'उत्तराखण्ड परिषद' का गठन, 1979 ई. में 'उत्तराखण्ड क्रांति दल' का गठन, 1988 में 'उत्तराखण्ड उत्थान परिषद' का गठन, सितम्बर 1988 ई. में 'उत्तराखण्ड प्रदेश संघर्ष समिति' तथा 1989 में 'उत्तराखण्ड संयुक्त संघर्ष समिति' गठित हुआ।

सन् 1994 में जनांदोलन के दौरान उत्तराखण्ड के विभिनन क्षेत्रों समेत देश की राजधानी दिल्ली में भी तमाम संगठनों ने राज्य प्राप्ति आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। इनमें उत्तराखण्ड क्षेत्र के उत्तराखण्ड संयुक्त छात्र संघर्ष समिति, उत्तराखण्ड छात्र युवा संघर्ष समिति, प्रगतिशील महिला मंच, नारी संघर्ष समिति, उत्तराखण्ड महिला मोर्चा, उत्तराखण्ड संयुक्त संघर्ष समिति, पर्वतीय कम्रचारी शिक्षक संगठन, उत्तराखण्ड भूतपूर्व सैनिक संगठन ने प्रमुख भूमिका निभाई। उत्तराखण्ड जनता संघर्ष मोर्चा, उत्तराखण्ड महासभा, उत्तराखण्ड राज्य लोकमंच और उत्तराखण्ड संयुक्त संघर्ष समिति ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखण्ड के युवाओं का योगदान : –

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अविस्मरणीय योगदान करने वाले उत्तराखण्ड का यशस्वी सपूत चन्द्र सिंह गढ़वाली ने पेशावर में 28 अप्रैल सन् 1930 में जिस सैनिक क्रांति का सूत्रपात किया, वह 'पेशावर काण्ड' आजादी के इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है। पेशावर काण्ड की घटना से प्रभावित होकर मोतीवाल नेहरू ने सम्पूर्ण देश में 'गढ़वाल दिवस' मनाने की घोषणा की।

स्वतंत्रता संग्राम में उत्तराखण्ड के युवाओं का योदान स्वर्णाक्षरों में अंकित है। आजाद हिन्द फौज की संख्या 40 हजार थी, उसमें से 2500 गढ़वाली थे। अकेले उत्तराखण्ड के साढ़े तीन लाख भूतपूर्व सैनिक हैं। पृथक उत्तराखण्ड राज्य की आकांक्षा रखते हुए दर्जनों लोग मौत के मुँह में गये एवं सैकड़ों लोग घायल हुए। उत्तराखण्ड के युवा देश के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं परंतु यह क्षेत्र आज भी विकास वंचित है।

राज्य के विकास एवं गौरव में युवाओं की भूमिका :–

देवभूमि के रणबांकुरे प्रदेश की सैन्य विरासत को अर्से से जिन्दा रखे हुए हें। सेना उनके लिये रोजगार नहीं, बलिक परम्परा है और युवा पीढ़ी दर पीढ़ी पूर्ण निष्ठा के साथ इस परम्परा निर्वहन कर रहे हैं। यहां के युवा वर्ग में देश के लिये प्राण न्यौछावर करने का जो जुनून है, शायद ही अन्यत्र कहीं देखने को मिले। देश की सैन्य शक्ति में उत्तराखण्ड के युवाओं का अद्वितीय योगदान है और हमेशा रहेगा।

युवा वर्ग आज किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है। युवा वर्ग ही किसी राष्ट्र की नींव होती है। पूरे राष्ट्र की अखण्डता, विकास, शक्ति और समृद्धि युवाओं के कंधों पर होता है। युवा ही राष्ट्र के भविष्य एवं रक्षक हैं। युवाओं के बिना राष्ट्र की रक्षा करना असंभव है। युवाओं की शक्ति और जोश के ओ कुछ भी असंभव नहीं लगता। उत्तराखण्ड के विकास एवं राज्य की स्थापना में युवाओं ने अद्वितीय योगदान दिया।

युवाओं के सराहनीय कदम :–

उत्तराखण्ड राज्य की स्थापना से लेकर राज्य के विकास एवं समृद्धि में यहां के युवाओं के काम सराहनीय रहे हैं। राज्य का विकास तभी हो सकता है, जब यहां के युवाओं में विकास की भावना हो। विकास मतलब स्मार्ट सिटी बनाना, नई सड़कें, फ्लाईओवर बना ही नहीं है, बलिक एक सुसंगठित, सुव्यस्थित एवं स्वस्थ समाज का निर्माण भी है। राज्य का उच्च स्तरीय विकास तभी हो सकता है, जब राज्य का हर युवा शारीरिक एवं मानसिक रूप से विकसित हो। जब राज्य का हर युवा सकारात्मक सोच रखे, तभी एक बेहतर जीवनशैली की कल्पना की जा सकती है।

युवाओं को भी हिंसा, भड़काऊ भाषण एवं भ्रष्टाचार से दूर रहना होगा। हमें भ्रष्टाचार को समाज से दूर रखना होगा। इसके लिये युवाओं को ही पहले आगे आना होगा। साथ ही, प्रशासन को भी इसमें सहयोग करना चाहिये। आज लोग भ्रष्टाचार का अर्थ घूस (रिश्वत) लेने तक ही समझते हैं और अधिकतर लोग राजनेताओं एवं सरकारी कर्मचारियों को ही दोषी मानते हैं (भ्रष्टाचार के मामले में), परंतु आज समाज का हर वर्ग इसकी चपेट में है। हम लोग भी अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पा रहे हैं, तो क्या हम भ्रष्टाचार से मुक्त हैं?

समाज एवं राज्य के विकास एवं तमाम हिंसा, भ्रष्टाचार को दूर करने के लिये सबसे पहले गुणकारी शिक्षा की आवश्यकता है। यदि युवा वर्ग शिक्षित है तो निश्चित रूप से वह भ्रष्टाचार एवं हिंसा से दूर रहने का प्रयास करेगा। इस दिशा में शासन को उचित काम करने की जरूरत है।

मैं श्री आनंद रावत जी का आभारी रहूंगा कि उन्होंने हमारे कॉलेज में आकर हमें प्रशासनिक सेवा के बारे में जानकारी दी और हमें उस दिशा की ओर मोड़ा। हमें सिविल सर्विस में सफलता के गुर सिखाये एवं समाज को बेहतर बनाने का संकल्प हमारे मन में भरा। यदि हमारे राज्य में कार्यरत सिविल आफिसर्स इसी राज्य के होंगे तो निश्चित रूप से वो पहाड़ी इलाकों की समस्याओं, क्षेत्रीय गतिविधियों से ज्यादा वाकिफ होंगे और राज्य के विकास एवं युवाओं के बेहतर भविष्य की भावना उनमें कहीं अधिक होगी। इसके लिये युवाओं को हर स्तर पर प्रयासरत होना जरूरी है। श्री आनंद रावत ने कई महाविद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों को प्रशासनिक सेवा के प्रति जागरूक किया। यह एक सराहनीय कदम रहा।

उत्तराखण्ड में जैविक खेती को बढ़ावा देने के मकसद से कृषि उपकरणों पर 80 फीसदी छूट और किसानों को पुरस्कृत करने की सरकार की योजना को एक सही कदम माना जा सकता है। केन्द्र की बहुआयामी स्मार्ट सिटी योजना में पूरे देश से इतर उत्तराखण्ड में शिथिलता करते हुए एक स्मार्ट सिटी दिया गया, जो एक बड़ी उपलब्धि है। प्रदेश में लोकायुक्त की तैनाती के मसले पर सरकार को सकारात्मक पहल करनी चाहिये। लोकायुक्त मजबूत व प्रभावी बने, इसके लिये दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी होगी।

उत्तराखण्ड के विकास के प्रति युवाओं को आकर्षित करने के प्रयत्न :–

किसी भी क्षेत्र के विकास के लिये उस क्षेत्र की राजनीति एवं शासन की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अच्छी राजनीति एवं अच्छे शासन प्रणाली के माध्यम से उस क्षेत्र एवं उस क्षेत्र के युवाओं का विकास किया जा सकता है। यदि राजनीति अच्छी है तो राज्य का सुनियोजित विकास किया जा सकता है। मुख्य बात यह है कि राजनीति भी युवाओं के हाथों की बात है। युवा वर्ग को सोच–समझ कर राजनीतिक बदलाव लाने होंगे।

समाज की राजनीति का सीधा असर युवाओं पर ही पड़ता है परंतु आज कुछ युवा नौकरी करने के लिये अन्य राज्यों तथा विदेशों में जा रहे हैं। इस मामले में प्रशासन को भी उन्हें अपने ही राज्य में नौकरी करने पूरा अवसर देना चाहिये। परंतु कुछ युवा इसी प्रदेश से डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनकर दूसरे देशों एवं प्रदेशों में सेवाएं दे रहे हैं। हम युवाओं को अपनी सोच बदलने की जरूरत है और अपनी बेहतर सेवाएं अपने ही राज्य को देना होगा, तभी राज्य का सुनियोजित विकास सम्भव है और हमारी आने वाली पीढ़ी भी इस दिशा में अग्रसर रहेगी।

हमें अपना शत–प्रतिशत सेवा अपने राज्य को देना होगा ताकि हम भावी पीढ़ी के लिये रोल मॉडल बन सकें। इसके लिये हमें व्यवसायिक शिक्षा के बल देने की भी जरूरत है। साथ ही, राजनीति में जागरूकता दिखाने की जरूरत है। तभी एक बेहतर समाज एवं विकसित राज्य का निर्माण किया जा सकेगा। हमें अपने राज्य के प्रति इन जिम्मेदारियों को निभाना होगा।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड राज्य के गठन से न केवल उत्तर भारत की राजनीति में गहरा प्रभाव पड़ा, बल्कि विकास और आर्थिक संतुलन को लेकर भी कई बड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन चुनौतियों के समाधान व राज्य के विकास में यहां के युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। युवाओं की इच्छाशक्ति ही राज्य के विकास का बेहतर स्वरूप निर्धारित करेगी। अगरर राज्य को कुशल युवा नेतृत्व मिलता है तो उत्तराखण्ड राज्य एक बेहतर स्वरूप हासिल कर सकेगा।

कश्मीर 370 से आजाद

–श्रुति नौटियाल
बी.एससी. प्रथम सेमेस्टर

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि मोदी सरकार अपनी बुलंदियों को छुए जा रही है। मोदी सरकार द्वारा उठाये गये कई कड़े कदम उन्हें उनकी सफलता के पथ पर अग्रसर कर रहे हैं। जिनमें से एक कड़ा कदम है धारा 370, जो मेरे या किसी भी भारतवासी के हिसाब से एक खतरनाक धारा है, जो पूरे भारत और कश्मीर को अलग करती है।

अनुच्छेद 370 वास्तव में पाकिस्तान समर्थक अलगाववादियों का रक्षा कवच और वहां रहने वाले गैर–मुस्लिम अल्पसंख्यकों के लिये दिन–रात प्राण सुखाने का प्रावधान था। अनुच्छेद 370 को हटाना असम्भव और अकल्पनीय माना जा रहा था। वह इस कदर लुप्त या यों कहें कि गायब हुआ, मानो वैष्णो देवी मंदिर में अर्चना का कोई नया नियम बन रहा हो। अनुच्छेद 370 की बात करें तो ये ऐसा नियम है, जिसने जम्मू–कश्मीर को अलग देश के रूप में बनाया हुआ था। इसके तहत जम्मू–कश्मीर का अलग झण्डा, अलग संविधान थे, जिसके तहत कोई बाहरी व्यक्ति (जम्मू–कश्मीर के बाहर का) यहां न तो जमीन खरीद सकता है, न ही यहां कोई अच्छी नौकरी पा सकता है। यदि कोई इंजीनियर, डॉक्टर या अन्य कोई व्यक्ति यहा नौकरी करना चाहे तो उसे केवल चपरासी का पद ही मिलेगा। ठीक इसी प्रकार यदि जम्मू–कश्मीर की कोई महिला यहां के किसी पुरुष को छोड़कर, अन्य राज्य के पुरुष से शादी करती है तो उसकी जम्मू–कश्मीर की नागरिकता खत्म हो जायेगी एवं उसकी संतान भी अपने जम्मू–कश्मीर के अधिकारों से वंचित हो जायेगी।

अनुच्छेद 370 जम्मू–कश्मीर के लोगों को दोहरी नागरिकता प्रदान करती थी। पहली भारतीय होने की तथा दूसरी जम्मू–कश्मीरी होने की। लेकिन इस अनुच्छेद के खत्म होते ही भारत के एकीकरण का सपना साकार हुआ। अटलबिहारी बाजपेयी, सरदार वल्लभ भाई पटेल, इत्यादि कई बड़े दिग्गज नेताओं का सपना साकार हुआ है। इस अनुच्छेद के बाद से ही देशभर में खुशियों की लहर दौड़ पड़ी है। इसके बाद से ही अब जम्मू–कश्मीर को दो राज्यों में बांटा गया है – जम्मू–कश्मीर और लेह–लद्दाख। जम्मू–कश्मीर को केंद्रशासित राज्य, जैसे दिल्ली, पुडुचेरी के तहत विधानसभा होगी एवं लेह–लद्दाख में चंडीगढ़ के तर्ज पर विधानसभा नहीं होगी। जम्मू–कश्मीर में अब कोई भी भारतीय नागरिक किसी भी राज्य का जमीन खरीद सकता है एवं यहां की युवती अब किसी भी राज्य के पुरुष से विवाह कर सकती है।

हिन्दी : वर्तमान स्थिति चिंताजनक

–अहमद कमाल
बी.एससी. प्रथम सेमेस्टर

जो देश अपना इतिहास भूल गया, वह कभी अपना इतिहास नहीं लिख पायेगा। अपनी संस्कृति को भूलना सचमुच किसी भी राष्ट्र के लिये अत्यंत लज्जा की बात है। मिटता इतिहास किसी भी देश की बर्बादी की पहली निशानी है। तात्पर्य यह कतई नहीं है कि रूढ़िवादिता का खंडन न किया जाये किंतु पिछलग्गू होने की प्रवृत्ति सचमुच लज्जास्पद जान पड़तीी है।

चीन की मिसाल सबसे पहले है, जिन्होंने अपनी संस्कृति का सम्मान किया, अपनी भाषा के महत्व को समझा और आज वह एक विकसित राष्ट्र है। उन्होंने अंग्रेजों व पाश्चात्य संस्कृति की नकल करने के बजाय अपनी सभ्यता व संस्कृति को बेहतर समझा और विकास के पथ पर आगे बढ़े। किंतु भारतीय अपनी सभ्यता व संस्कृति को पश्चिमी संस्कृति की तुलना में तुच्छ समझने लगे। उसी का यह परिणाम हुआ कि किसी भी समय विश्व प्रधान देश कहलाने वाला भारतवर्ष आज एक गरीब, विकासशील देश कहलाने का दंश झेल रहा है। जबकि चीन आज दुनिया के विकसित देशों में गिना जाता है।

वर्तमान भारत की स्थिति ऐसी है कि आज का पढ़ा–लिखा तबका अपनी भाषा को अंग्रेजी की तुलना में तुच्छ व छोटा समझता है। यह एक अत्यंत दुखदायक बात है। आज के छात्र–छात्राओं को हिन्दी भाषा के शब्द बोलने में लज्जा महसूस होती है, जैसे वो कोई बड़ा अपराध करने जा रहे हों। विलायत से पढ़कर आने लोग तो हिन्दी बोलने और हिन्दुस्तानी कहलाने में भी स्वयं को लज्जित महसूस करते हैं। यह एक कड़वा सच है। कानों पर महंगा हेडफोन लगाकर अंग्रेजी गाने सुनने वाले हिन्दुस्तानी साहब और मेमसाहब हमेशा हिन्दी अखबार पढ़ने वाले लोगों को नीचा दिखाने में अंग्रेजों से चार जूते आगे रहते हैं।

चलिये, बात निकल ही पड़ी है तो आपको अपना अनुभव

भी सुना देता हूँ। बात कुछ ऐसी थी कि मैं स्टेट बैंक गया था, वहां बड़ी भीड़ थी। पैसे जमा कराने के लिये मुझे भी लम्बी कतार में खड़ा होना पड़ा। बड़ी मुश्किल से जब मेरी बारी आयी तो मैंने हिन्दी में हस्ताक्षर कर दिये। बस, फिर क्या था, सामने कुर्सी पर विराजमान दीदी और पीछे कतार में खड़े लोगों ने ऐसी भयानक दृष्टि से देखा, जैसे मैं कोई अपराधी हूँ। सामने बैठी मैडम ने तुरंत ही 'आप' के बजाय 'तुम' कहकर सम्बोधित करना शुरू कर दिया। शायद उन्होंने मान लिया कि इस बैं में उपस्थित इस समय सबसे अनपढ़ व्यक्ति मै। ही हूँ।

हमारे पड़ोस में एक बेरोजगार अंग्रेजी एम.ए. भैया रहते हैं। उन्हें अंग्रेजी नोवल पढ़ने का बड़ा शौक है। बड़ी मुश्किल से ऑनलाइन मंगाकर मुंशी प्रेमचंद इंग्लिश ट्रांसलेट नोवल पढ़ते रहते हैं। पड़ोस का बुक सेलर मुझे अच्छी प्रकार पहचानता है क्योंकि एक मैं ही हूँ जो उससे हिन्दी कॉमिक्स, पत्रिका, उपन्यास आदि खरीदता हूँ। कुछ खरीदते ही नहीं, जो खरीदते हैं, वे अंग्रेजी ही खरीदते हैं, क्योंकि हिन्दी पढ़ना तो उनकी शान के खिलाफ है।

आप भी कभी ये बातें अनुभव कीजिएगा। सवेरे–सवेरे जॉगिंग से लौटते हुए भारतवासी अंग्रेजों को सुप्रभात या नमस्ते अथवा प्रणाम बोलकर देखिये और हँसी का पात्र बनिये। चार आदमियों के बीच हिन्दी में हस्ताक्षर कीजिए और अपना मजाक बनवाइये। ये बातें सुनने में बड़ी छोटी प्रतीत होती है परंतु राष्ट्रभाषा का इससे बड़ा अपमान क्या हो सकताहै? यह एक अत्यंत दुखद बात है। देश की संस्कृति के लिये एक बड़ा खतरा है।

उत्तराखण्ड के विकास में युवाओं की भूमिका

–ऋषभ शुक्ला
बी.एससी. द्वितीय वर्ष

प्रस्तावना

संसार में सर्वाधिक शक्ति सम्पन्न एवं सामर्थ्यवान, कुछ भी करने के लिये प्रस्तुत, आकाश से तारे तोड़ने के लिये भी कोई है तो वह है हमारी युवा शक्ति। इन युवाओं की असीम कार्य क्षमता के लिये यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि इनके शब्दकोष में असम्भव नाम का कोई शब्द ही नहीं है। ये वहां तक जा सकते हैं, जहां सूर्य की किरणें भी अपना आलोक पहुंचाने में सक्षम नहीं है। यही कारण है कि उत्तराखण्ड के विकास में इनका सहयोग प्राप्त किये बिना हम अपने उत्तराखण्ड को विकसित नहीं कर सकते। स्वतंत्रता के पश्चात हमाारा उत्तराखण्ड प्रत्येक क्षेत्र में विकास कर रहा है। इस कार्य की सफलता बिना युवाओं के सहयोग सम्भव नहीं है। अतः उत्तराखण्ड के नवनिर्माण में युवाओं को पूर्ण रूप से योगदान देना चाहिये।

वर्तमान युग विज्ञान और अर्थवाद का युग है। भारतवर्ष की वैज्ञानिक और आर्थिक उननति नितांत आवश्यक है। किसी विदेशी विद्वान ने कहा था कि भारत एक धनी देश है पर वहां गरीब लोग बसते हैं। इसका वास्तविक अर्थ यह है कि प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता के कारण ही यहां के लोग दीन–हीन हैं। यदि इन साधनों का समुचित उपयोग किया जाये तो भारतवासी सम्पन्न हो सकते हैं। स्वतंत्र भारत में प्राकृतिक साधनों को प्रयोग करने का कार्य प्रारम्भ हो चुका है। इन सभी प्रयोगों की अंतिम सफलता युवा वर्ग पर निर्भर है। जब युवा पूरी लगन और निष्ठा से अपने कार्यों को करेंगे, तभी देश का कल्याण और उसके राज्यों का कल्याण हो सकता है। तभी उत्तराखण्ड विकास की राह पर आगे बढ़ता रहेगा।

कृषि, उद्योग, यातायात तथा वैज्ञानिक अनुसंधानों के कार्य हो रहे हैं। कारखाने बन रहे हैं। विद्युत शक्ति उत्पादन कार्य हो रहा है। परमाणु शक्ति की खोज तथा उपयोग के लिये प्रयोगशालाएं बन रही हैं। सुरक्षा के साधन जुटाये जा रहे हैं। पर्यटन के क्षेत्र में विकास हो रहा है। धार्मिक स्थलों पर ध्यान दिया जा रहा है। अब विकास की अनेक योजनाएं प्रयोग में लायी जा रही हैं किंतु यह सभी सफलता युवा वर्ग पर निर्भर है।

हमारे उत्तराखण्ड में सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में परिवर्तन लाने के प्रयास हो रहे हैं। समाज में कतिपय दुर्गुण अवश्य आ गये हैं, जिनका सुधार भी आवश्यक है। समाज के ढांचे को बिगड़ने से बचाना भी है। कोई भी सुधार अंधानुकरण के आधार पर नहीं होना चाहिये। सुधार के भावी परिणामों को दृष्टि में रखना आगे बढ़ना भी आवश्यक है। भारतीय धम तथा संस्कृति की मूल विशेषताओं को ध्यान में रखकर उपयोगी सुधार होना चाहिये। चूंकि इन सभी गतिविधियों का अंतिम परिणाम तो आज की युवा पीढ़ी को पूर्णतया भोगना पड़ेगा। अतः उन्हें विवेक से काम लेना आवश्यक है। वह ही सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में क्रांति ला सकते हैं।

आज संसार के राजनीतिक मान्यताएं द्रुत गति से बदल रही है। यह परिवर्तन स्वतंत्र भारत में तेजी से हो रहा है। दो प्रकार की विचारधारा विश्व में फैली है। एक विचारधारा परम्परा तथा प्रजातांत्रिक भावना का समर्थन कर रही है। इस विचारधारा में व्यक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें व्यक्ति की उन्नति तथा स्वतंत्रता पर समुचित ध्यान दिया जाता है।

दूसरी विचारधारा राज्यों या पार्टियों को ही सर्वस्व मानती है। इस साम्यवादी विचारधारा में शक्ति शक्ति स्वतंत्रता के लिये स्थान नहीं है। यहां पर अधिनायकवाद दृढ़ होता जा रहा है। यह लोग वर्गहीन समाज की बात करते हैं। उत्तराखण्ड में भी दोनों प्रकार की विचारधाराओं से सम्बंधित नीति चल रही है। युवा वर्ग को सोच–समझ कर विचारों को भारतीय संस्कृति के अनुकूल बनाकर अपनाना चाहिये।

आज यह समस्या बड़ी जटिर हो गयी है कि युवा वर्ग किस विचारधारा को अपनाये तथा उत्तराखण्ड के विकास में किस प्रकार योगदान करें। बहुत से नेता नवनिर्माण के कार्यों को अपने–अपने ढंग से सामने रख रहे हैं। सरकार चलाने वाले नेता भी अपनी योजनायें लाद रहे हैं। कतिपय विरोधी नेता उनकी विचारधारा का विरोध कर रहे हैं। वास्तविकता यह है कि कहने वाले ही अधिक हैं, सुनने वाले कम। कई आर युवा वर्ग भावावेश में आकर अनेक ऐसे कार्य कर बैठता है और अपना तथा समाज का अहित कर देता है। फिर भी यह समाज क्षम्य समझा जाता है। युवाओं को चाहिये कि वे अपने मन में अच्छा और बुरा समझने की क्षमता उत्पन्न करें और अपने विवेक, बुद्धि से ऐसे कार्यों को करें, जो देश के लिये और हमारे राज्य उत्तराखण्ड के लिये कल्याणकारी हो।

आज युवाओं के कर्तव्य अधिक गम्भीर हो गये हैं। उनके सामने इतनी अधिक तथा परम्परा, भिन्न विचारधारायें आती हैं कि उनके लिये उपयोगी विचार अपनाना कठिन हो गया है। अनेक प्रकार की पुस्तकें, अनेक प्रकार के वक्ता और अनेक प्रकार की समस्यायें आ रही हैं। ऐसी दशा में उनका दायित्व है कि वे जीवन की सर्वांगीण उन्नति पर ध्यान दें, प्राचीन तथा आधुनिक विचारकों के विचार को सोच–समझकर अपनायें। यदि भावुकता या आवेशवश किसी प्रकार पथभ्रष्ट हो जायेंगे, तो लाभ के बदले हानि ही उठायेंगे।

भारतवर्ष एक गणतंत्र देश है और उत्तराखण्ड उसका एक राज्य। यहां जनता के चुने हुए प्रतिनिधि ही देश की नीति का संचालन करते हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति शासन में अपना प्रतिनिधित्व चाहता है। अपने स्वार्थ में दूसरों को बहकाने का प्रयास करता है। यह गंदी दलबंदी ही आज की राजनीति बन गयी है, जिससे दूर रहने के लिये युवाओं को कहा जाता है। उनके पास उत्साह है, उमंग है, परंतु साथ–साथ अनुभवहीनता के कारण जब शासन उनके विरूद्ध कार्यवाही करता है, तब उस समय पथभ्रष्ट करने वाले नेताओं के दर्शन नहीं होते। जनता कहती है कि स्वतंत्रता संग्राम में युवाओं को भाग लेने के लिये प्रेरणा देने वाले आज उन्हें राजनीति से दूर रहने के लिये क्यों कहते हैं? निःसंदेह युवा वर्ग को राजनीति में भाग लेने का अधिक है पर देश की रक्षा के लिये, उसके सम्मान एवं संवर्द्धन के लिये, न कि शासन के कार्य में विघ्न–बाधा डालने और देश में अशांति फैलाने के लिये।

युवाओं का परम कर्तव्य विद्या–अध्ययन ही है, इसमें दो मत नहीं हो सकते। उन्हें अपनी पूरी शक्ति ज्ञानार्जन में ही लगानी चाहिये। अब भारतवर्ष स्वतंत्र है। अपने देश की सर्वांगीण उन्नति के लिये एवं पूर्ण समृद्धि के लिये उन्हें अभी बहुत प्रयत्न करने हैं। देश के योग्य इंजीनियरों, विद्वानों, डॉक्टरों, साहित्य मर्मज्ञ विद्वानों, वैज्ञानिकों और व्यापारियों की आवश्यकता है। इसकी पूर्ति वह ही करेंगे। उनकी देशभक्ति रचनात्मक सेवा करने में है न कि विरोध प्रदर्शन करने में है। हमारा देश अज्ञान–अंधकार के गहन गर्त में शताब्दियों से विलीन है। वह देश में ज्ञान–रश्मियों के प्रसार में पूर्ण सहयोग दे सकते हैं। तभी हमारा देश और हमारा उत्तराखण्ड विकास की राह पर आगे बढ़ते जायेंगे।

निष्कर्ष

युवाओं को गाँवों मे जाकर, वहां की समस्याएं समझनी चाहिय और उनके निदान का प्रयत्न करना चाहिये। उनहें स्वयं कार्य करना चाहिये तथा दूसरों के लिये आदर्श उपस्थित करना चाहिये। इससे ग्रामीण जनता में उनकी लोकप्रियता बढ़ेगी तथा विभिन्न प्रकार की प्रगतियों से वह परिचित होते जायेंगे। उन्हें अपने आस–पड़ोस में सहयोग तथा सद्भावना का वातावरण पैदा करना चाहिये, जिससे विरोध मिटे तथा सहकारी भावना का विकास हो। सहकारिता की भावना और लाभ को समझना चाहिये। उनका यह भी कर्तव्य है कि सरकार की विभिन्न योजनाओं में सहयोग करें तथा यदि उसमें कोई कमी या दोष दिखायी दे तो सामूहिक रूप से उसे हटवाने का उपाय करें। उन्हें बहुश्रुत बनना चाहिये तथा अनेक प्रकार के निर्माण कार्यों में सम्मिलित होना चाहिये। उनमें कर्तव्यपरायणता, सत्यप्रियता तथा सेवाभाव का दृढ़ विकास होना चाहिये। उन्हें स्वावलंबी तथा समाज सेवक बनने का प्रयास करना चाहिये। साथ–साथ अपनी रूचि के अनुकूल विषयों का गहन अध्ययन कर नवीन खोजों की ओर बढ़ने का प्रयास करना चाहिये। यही सब ऐसे कार्यक्रम हैं, जिन्हें अपनाकर वे देश और अपने राज्य उत्तराखण्ड के निर्माण में सहायक बनेंगे।

रविन्द्रनाथ टैगोर- एक परिचय

–लक्ष्मी
एम.ए. हिन्दी 3 सेमेस्टर

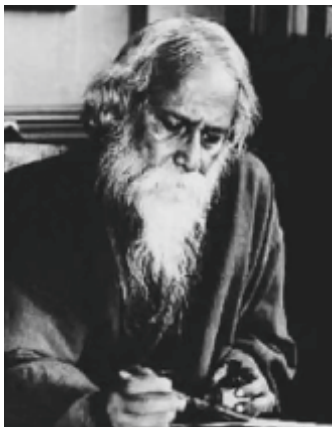

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म सन् 1861 को कोलकाता में हुआ था, रवीन्द्रनाथ टैगोर एक कवि उपन्यासकार, नाटककार, चित्रकार और दार्शनिक थे। रवीन्द्रनाथ टैगोर एशिया के प्रथम व्यक्ति थे जिन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, वे अपने माता–पिता की तेरहवीं संतान थे। बचपन में उन्हें प्यार से 'रबी' बुलाया जाता था। आठ वर्ष की उम्र में उन्होने पहली कविता लिखी और सोलह साल की उम्र में उन्होंने कहानियां और नाटक लिखना प्रारंभ कर दिया था। रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्व–विख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक और भारतीय साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता है। बांग्ला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूँकने वाले युगदृष्टा थे, वे एशिया के प्रथम नोबल पुरस्कार सम्मानित व्यक्ति थे। पिता के ब्रहासमाजी होने के कारण वे भी ब्रहासमाजी थे। उनकी रचनाओं में मनुष्य और ईश्वर के बीच के चिरस्थायी सम्पर्क की विविध रूपों में अभिव्यक्ति मिलती है। उन्होने बंगाली साहित्य में नए तरह के पद्य और गद्य के साथ बोल–चाल की भाषा का भी प्रयोग किया। इससे बंगाली साहित्य संस्कृत के प्रभाव से मुक्त हो गया। टैगोर की रचनाएं बांग्ला साहित्य में एक नई ऊर्जा ले कर आई, उन्होने एक दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे, इनमें चोखेरबाली, घरे बहिरे, गोरा आदि शामिल है। उनके उपन्यासों में मध्यम वर्गीय समाज विशेष रूप से उभर कर सामने आया। 1913 ईस्वी में गीतांजलि के लिए इन्हें साहित्य का नोबल पुरस्कार मिला जो कि एशिया में प्रथम विजेता साहित्य में है। मात्र आठ वर्ष की उम्र में पहली कविता और केवल 16 वर्ष की उम्र में पहली लघुकथा प्रकाशित का बांग्ला साहित्य में एक नए युग की, शुरूआत की रूपरेखा तैयार की। उनकी कविताओं में नदी और बादल की अठखेलियों से लेकर अध्यात्मवाद तक के विभिन्न विषयों को बखूबी उकेरा गया। उनकी कविता पढ़ने से उपनिषद की भावनाएं परिलक्षित होती है। टैगोर ने अपने जीवनकाल में कई उपन्यास, लघुकथाएं, यात्रावृत्त, हजारों गाने भी लिखे है। वे ज्यादातर अपनी पद्य कविताओं के लिए जाने जाते है। गद्य में लिखी उनकी छोटी कहानियां बहुत लोकप्रिय रही है। टैगारे ने इतिहास, भाषाविज्ञान और आध्यात्यमिकता से जुड़ी पुस्तकें भी लिखी थी। टैगोर के यात्रावृत्त, निबन्ध और व्याख्यान कई खंडों में संकलित किए गए थे। जिनमें यूरोप के पत्रों (यूरोप से पत्र) और 'मनुषेर धर्म' (मनुष्य का धर्म) शामिल थे। टैगोर के 150वें जन्मदिन के अवसर पर उनके कार्यों का एक (कालनुक्रमिक रवीन्द्र वचनावली) नामक एक संकलन वर्तमान में बंगाली कालानुक्रमिक क्रम में प्रकाशित किया है। इसमें प्रत्येक कार्य के सभी संकलन शामिल है, और लगभग अस्सी संस्करण है। जीवन के 51 वर्षों तक उनकी सारी उपलब्धियां और असफलताएं केवल कोलकाता और आस–पास के क्षेत्र तक ही सीमित रही। 51 वर्ष की उम्र में वे अपने बेटे के साथ इंग्लैंड जा रहे थे। समुद्री मार्ग से भारत से इंग्लैंड जाते समय उन्होने अपनी कविता संग्रह गीताजंलि का अनुवाद करने का सोचा, जिसके पीछे उनका कोई उद्देश्य नहीं था, केवल समय काटने के लिए कुछ करने की गरज से उन्होने गीताजंलि का अनुवाद करना प्रारंभ किया। उन्होंने एक नोटबुक में अपने हाथ से गीताजंलि का अंग्रेजी अनुवाद किया। अपने जीवन में उन्होने एक हजार कविताएं, आठ उपन्यास, आठ कहानी संग्रह और विभिन्न विषयों पर अनेक लेख लिखे, इतना ही नही रवीन्द्रनाथ टैगोर संगीत प्रेमी थे। और इन्होने अपने जीवन में 2000 से अधिक गीतों की रचना की। उनके लिखे दो गीत आज भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगान है। उपन्यास और लघु कथा के रूप में उनका महान लेखक मानव चरित्र के बारे में उनकी बुद्धिमत्ता गहरे अनुभव और समझ की ओर इशारा करता है। वो एक ऐसे कवि थे, जिन्होने देश को बहुत प्यारा राष्ट्रगान ''जन–गण–मन'' दिया है। उनके कुछ महत्वपूर्ण कार्य है। ''गीताजंलि'' श्रृंगार सोनार बांग्ला, होर–बेर, रवीन्द्र संगीत, आदि गीताजंलि के उनके महान अंग्रेजी संस्करण लेखन के लिए 1913 में उन्हें नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वो 1902 में शांतिनिकेतन में विश्वभारती यूनिवर्सिटी के संस्थापक थे। इनका महान लेखन आज भी देश के लोगों को प्रेरणा देता है। वो एक महान कवि होने के साथ ही एक देशभक्त भी थे। जो हमेशा जीवन की एकात्मकता और इसके भाव में भरोसा करता है। अपने पूरे लेखन के द्वारा प्यार शांति और भाई–चारे को बनाये रखने के साथ ही लोगों को और पास लाने के लिए उन्होने अपने सबसे बेहतर प्रयास किया। अपने कविताओं और कहानियों के माध्यम से प्यार और सौन्दर्य के बारे में उन्होने अच्छे से बताया था। टैगोर के पूरे जीवन ने एक दूसरे से प्यार और सौंदर्य के स्पष्ट विचार को भी उपलब्ध कराया, निम्न कर्तव्यों से उनका देश के प्रति समर्पण दिखायी देता है। 'मेरा देश जो हमेशा भारत है। मेरे पिता का देश है।' मेरे बच्चों का देश है और दुबारा मैं फिर से अवश्य भारत में पैदा होंऊगा। उनके विचारो को खाँचों में नही रखा जा सकता। न उनके कार्यों की भविष्यवाणी हो सकती है। न उनकी कला पर लेबिल चिपकाया जा सकता है। गहन चिन्तानात्मक जीवन से वे प्रायः समाजिक और राजनीतिक

विवाद के बीचोंबीच कूद पडते थे। साठ वर्ष की उम्र में वे चित्रकार के रूप में प्रकट हुये।

टैगोर के जीवन सम्बन्धी सामग्री बहुत प्रचुर मात्रा में प्रकाशित हो चुकी है और उनके जीवन तथा कला के विकास चिह्न इतिहास का अंग बन चुके है – जैसे पूर्वी बंगाल में पदमा नदी के किनारे उनका जीवन जहां उन्होने भारतीय चिन्तन और साहित्य की लोक परम्पराओं को आत्मसात किया। स्वदेशी आंदोलन में उनका योग, एक के बाद एक श्रेष्ठ काव्य–कृतिका नोबल पुरस्कार और विश्वव्यापी ख्याति, शांतिनिकेतन में विश्वविद्यालय की स्थापना, सुदूर–पूर्व की यात्राएँ इंग्लैंड और अमरीका में व्याख्यान देने के लिए यात्राएं साम्राज्यवाद और फासिज्म की निंदा, किसी महान चिंतक के विचारों को गढने वाले स्रोतों और प्रभावों को अलग करना या उनका वर्गीकरण करना सदा ही कठिन कार्य होता है। टैगोर के संबंध में यह कार्य इसलिए और भी जटिल हो जाता है क्योंकि इस युग में जो परस्पर विरोधी विचारधाराएँ प्रबल रही उनका हिसाब रख सकना, अथववा किसी प्रकार के तर्कसंगत ढंग से उनका अनुसरण कर सकना संभव नही। इसके अतिरिक्त अपने परिवेश के प्रति अपनी सृजनात्मक प्रवृत्ति के कारण टैगोर सभी आत्मसात् प्रभावों को इस प्रकार सम्पूर्णतः रूपान्तरित कर लेते थे कि उनसे किसी सुस्पष्ट पहचानने योग्य रूप में हमारा सामना ही नही होता। टैगोर का आग्रह है कि जीवन में से ही नही होता। टैगोर का आग्रह है कि ''जीवन में से सिद्ध समस्त सत्यों की भांति औपनिषद विचार मूर्त है। उनमें विचारों की बहुत सी प्रवृत्तियों का सांमजस्य मिलता है क्योंकि जीवन स्वयं भी बहुत सामाजस्यकारी है। यदि भारत के कट्टरपंथी लोग उपनिषदों की रूढ़िवादी और एकांगी व्याख्या करते है, तो बहुत से यूरोपीय लेखक उनमें दुःख और निवृत्ति के नकारात्मक सिद्धान्त ही देख पाते है, किन्तु उपनिषदों में सकारात्मक तत्व भी है जो उन समस्त अमूर्त विचारो से कही अधक महत्वपूर्ण है। जिन पर शास्त्रीय दार्शनिकों ने बल दिया है। यह सकारात्मक तत्व आनन्द में, चिरन्तर आनन्दपूर्ण जीवन में जगत में विचार में और उपनिषदों में मिलने वाली अमरता की खोज में भी दृष्टिगोचर होता है। टैगोर स्वयं भी इस बात को भली–भांति समझते थे कि उनके मूलतः काव्यात्मक दृष्टिकोण से उनके दर्शन में अंतर पड़ता है। अपनी धार्मिक मान्यताओं की चर्चा करते हुए और उनके लिए धर्म और दर्शन में कोई मूल–भूत अंतर न था। टैगोर कहते है, ''मेरा धर्म मूलतः एक कवि धर्म है। उनका स्पर्श उन्हीं अदृश्य और पदहीन सूत्रों से प्राप्त होता है, जिनसे मेरी संगीत की प्रेरणा मेरा धार्मिक जीवन मेरे काव्यात्मक जैसी ही रहस्यात्मक लोकों पर विकसित होता रहा है। किसी न किसी प्रकार दोनों एक दूसरे से जुडे हुए है। टैगोर मानते है कि सर्वतोमुखी दर्शन में किसी न किसी प्रकार वैयक्तिक और निवैर्यक्तिक सगुण और निर्गुण साकार और निराकार के बीच सामंजस्य का स्थल अवश्य खोजना चाहिए। जैसा हम बाद में देखेंगे'' टैगोर के अपने दर्शन में सौंदर्यमूलक अनुभूति की दृष्टि से ऐसा सांमजस्य का स्थल प्रस्तुत किया गया है।

सफलता और संघर्ष

–नेहा नेगी
बी.एससी. (पीसीएम) प्रथम सेमेस्टर

कुछ अक्षरों के मेल से बनता है – नाम। नाम से हर व्यक्ति की पहचान होती है। क्या नाम का महत्व सिर्फ किसी व्यक्ति की पहचान मात्र के लिये है? और नाम तो बहुत से व्यक्तियों के एक जैसे होते हैं। तो फिर पहचान कैसे होगी? शायद नाम के पीछे लगे 'सरनेम' से। सरनेम से पहचान में थोड़ी आसानी होगी। क्या है ये नाम, आखिर क्या जरूरत पड़ी होगी इसकी। सोचिए, कैसा होता अगर किसी का कोई नाम ही ना होता या फिर नाम अंकों में होता । तो कैसा होता। अगर किसी व्यक्ति का कोई नाम ही ना हो, तो उसकी पहचान उसके कर्मों, संघर्ष, व्यवहार इत्यादि से की जायेगी। सुनने में छोटा सा शब्दद है – नाम। परंतु इस नाम के पीछे छिपा होता है हमारे जीवनभर का परिश्रम।

केवल इस नाम के लिये रात–रातभर जागकर पढ़ाई करते हैं हम। दिन–रात परिश्रम करते हैं। क्रीड़ा आदि को थोड़ा कम समय देते हैं। परिश्रम करते हैं प्रतिदिन। न खाने की सुध, ना ही विश्राम की। सभी अपने पसंदीदा कार्य में परिश्रम करते हैं। अलग–अलग तरीकों से (रास्तों से) सफलता पाने के लिये। सफल होकर क्या होगा? क्या पैसे मिलेंगे या जीविकोपार्जन के साधन उपलब्ध होंगे। परंतु जीने के लिये तो हवा, खाना, पानी, वस्त्र और एक रहने के लिये स्थान से अधिक और किसी चीज की आवश्यकता नहीं। तो फिर क्यों सफलता के लिये सब परिश्रम कर रहे हैं। इतना संघर्ष आखिर क्यों? क्या नाम के लिये, क्या इसलिये कि सब उनका सम्मान करें।

एक पिता रोज मेहनत करता है, अपने बच्चों के अच्छे भविष्य के लिये और बच्चे अगर सफल हो जायें तो समाज कहता है – 'बच्चों ने अपने माँ–बाप का नाम रोशन किया है।'

नाम हमारी पहचान है। इस नाम को सार्थकता प्रदान करने के लिये हमारा परिश्रम और संघर्ष। तत्पश्चात् हमारी सफलता। इतना कुछ सिफ नाम के लिये। नाम के पीछे लगा 'सरनेम' पिताजी का परिश्रम है। पिताजी का सरनेम उनके पिता का संघर्ष है। काफी लम्बा रिश्ता है, इस नाम का हमसे। हमारी सारी मेहनत, सफलता, पूंजी, आशाएं, सपने, सबकुछ एक नाम के पीछे छिप जाते हैं। समाज में लोगों में केवल नाम

की प्रचलित होता है। परिश्रम भी प्रचलित होता है। परंतु हमारा परिश्रम नाम से पहले तो नहीं आता ना।

रानी लक्ष्मी बाई, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, महाराणा प्रताप, सचिन तेंदुलकर, किरन बेदी, अमिताभ बच्चन, कुछ नाम, जिन्हें हम रोज जीवन में सुनते हैं। सभी अलग–अलग क्षेत्र में सम्मानित हें। सभी ने बहुत अच्दे कार्य किये, परंतु इनके कार्यों की पहचान हुई इन सभी के नामों से। पहली प्राथमिकता मिली 'नाम' को। सभी की कीर्ति पूरे विश्व में विख्यात है। परंतु विख्यात है नाम से। काफी विषम परिस्थितियों से जूझना पड़ा होगा, सबको केवल एक ना को अस्तित्व में लाने के लिये। नाम के बिना हमारा कोई अस्तित्व नहीं।

तेल की बढ़ती कीमत का अर्थ–व्यवस्था पर प्रभाव

भारत की बढती जनसंख्या के कारण देश को लोगों की आवश्यकतायें भी बढ रही है। देश में हाल ही में एक ओर समस्या उत्पन्न हो गई है जो कि पेट्रोल डीजल की कीमत में बढोतरी है, लगातार इनकी कीमत बढने से देश की जनता व अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव पडा है। आपेक (OPEC) 13 देशों द्वारा उत्पादन में कटौती से अंतर्राष्ट्रीय स्तर कच्चे तेल की कीमतों में बढोतरी हुई जिसके कारण कुछ महीनों में भारत में पेट्रोल और डीजल के दामों में तेज वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रीााव दिखाई दिए। कच्चे तेल की कीमत बढने का कारण प्रमुख तेल उत्पादक देशों द्वारा कोविड–19 महामारी के कारण मांग में भारी गिरावट के कारण तेल उत्पादन में कटौती भी है। इसके साथ ही OPEC ने हाल ही में यह घोषणा की है कि वह तेल उत्पादन सीमित मात्रा में ही करेगा। अतः इन्हीं सब कारणों से तेल की कीमतों में भारी वृद्धि हुई जिसका प्रभाव भारत की अर्थव्यवस्था पर भी पडा तेल आयातक देश है जो कि सबसे अधिक तेल सऊदी अरब और इराक से आयात करता है। इसी कारण भारत पर विदेशी मुद्रा भंडार का अतिरिक्त भार पडता है।

तेल की कीमत बढने का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव –

- कच्चे तेल की कीमत बढने से पेट्रोल व डीजल की कीमतों पर भी दबाव पडेगा जो कि पहले से ही अधिक है इसका असर देश की आम जनता पर भी पडेगा क्योंकि तेल की कीमत बढने से उन्हें पहले की तुलना में ज्यादा पैसे चुकाने पडेंगे।
- कच्चे तेल की कीमत बढने से आयात बिल भी बढेगा, चूंकि भारत 85 प्रतिशत तक कच्चा तेल सऊदी अरब, इराक व दूसरे देशों से आयात करता है। अतः खाडी देशों में अस्थिरता होती है तो इसका नकारात्मक प्रभाव देश की अर्थव्यवस्था पर पडेगा।
- तेल की कीमत बढने से सरकार को पेट्रोल व डीजल के करों में कटौती करनी पडेगी जो कि केन्द्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा लगाए जाते है। करों के घटने से सरकार को मिलने वाली आय की मात्रा घट जाएगी जिससे राजस्व का संतुलन बिगड जाएगा।
- कच्चे तेल की कीमत में वृद्धि से मुद्रास्फीति में भी वृद्धि होती है जिसके कारण मौद्रिक नीति समिति को नीतिगत दरों का निर्धारण करने में कठिनाई होगी।
- पेट्रोल व डीजल की कीमत में वृद्धि से देश की अर्थव्यवस्था में मौद्रिक नीति का उपयोग व विनियोग के व्यवहार पर भी पडेगा।
- जिन लोगों के पास व्यक्तिगत वाहन नहीं है, उन पर भी तेल की कीमत बढने का बुरा असर पडेगा क्योंकि इन्हें सार्वजनिक बाहर का लाभ लेने के लिए अधिक भुगतान करना पडेगा।
- गरीब वर्ग के लोग जो प्रतिदिन अपने सामान की बिक्री के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं, उन्हें कीमतें बढने से घाटा होगा क्योंकि तेल की कीमतें बहुत ऊँची है। और इनकी आमदनी बहुत कम है, इससे वह अपने परिवार का पालन पोषण सही ढंग से नहीं कर पाएगें।
- अधिकांश वस्तुओं व उत्पादों को बनाने में पेट्रोल का प्रयोग किया जाता है (प्लास्टिक से ईंधन) कीमत बढ जाने से पेट्रोल से बनाये गये उत्पाद भी मंहगें हो जाएगें। फलस्वरूप लोग वस्तुएं नही खरीद पाएगें और उत्पादन की मात्रा भी घटती जाएगी, जो मांग में कमी का कारण होगा।
- तेल की कीमतों ने आर.बी.आई. जो देश का केन्द्रीय बैंक है के सामने भी मुश्किलें खडी कर दी हैं। आर.बी.आई. के अनुसार कीमतें बढने से विनिर्माण की लागत भी बढेगी और मँहगाई भी उत्पन्न होगी।
- ट्रांसपोटर्स जो ट्रकों में सामान को एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तक ले जाते हैं उनका मानना हे कि जहां तेल की कीमत सामान्य थी तब इनका मालभाडा उतना ही था जितना

कीमतों के बढने के कारण है, जिसके कारण उनको घाटा हो रहा है।

- कीमतें बढने से पेट्रो से उत्पाद बनने की लागत भी बढेगी जिसका असर मांग पर पड़ेगा। वस्तुओं की कीमतें बढने से मांग भी घट जाएगी, जिसके कारण अर्थव्यवस्था में मंदी की स्थिति उत्पन्न होगी।
- तेल की कीमतों के बढने के साथ मँहगाई बढने की संभावना भी तेज हो जाती है। कोरोना वायरस के कारण हाल ही में लगाए गए लॉकडायन की वजह से लाखों लोगों का काम बंद हो गया है। और लोगों की आय पर बुरा असर पडा है, इसके कारण लोगों पर दोहरी मार पडी है।

अतः तेल की कीमतें बढने से अर्थव्यवस्था में नकारात्मक प्रभाव तो उत्पन्न होंगे ही लेकिन इसके साथ ही कुछ सकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते हैं।

अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव –

- तेल की कीमतें बढने से देश की जनता वैकल्पिक ऊर्जा के स्त्रोत व संसाधनों पर ध्यान केन्द्रित करेगी (बिजली से चलने वाली काट) और सौर ऊर्जा को भी प्रोत्साहन मिलेगा तथा पर्यावरण में प्रदूषण की मात्रा कम होगी।
- लोग अपने निजी वाहनों का इस्तेमाल करने के बजाय सार्वजनिक वाहों में यात्रा करना पंसद करेंगें। जिके कारण सडकों पर लगने वाला ट्रेफिक कम होगा और सड़क दुर्घटनाएं भी कम होंगी।
- वर्तमान में हमारा पर्यावरण कई कारणों से प्रदूषित होता जा रहा है जो कि आने वाली पीढी के लिए सही नहीं है। प्रदूषण के अन्य कारणों से सडकें पर निकलने वाली अत्याधिक गाडियों का धुंआ भी है, तेल की कीमत बढने से सडकों पर उतरने वाली गाडियों की मात्रा कम होगी। परिणामस्वरूप पर्यावरण को शुद्ध बनाया जा सकेगा।
- पेट्रोल की कीमत बढने से लोग साइकिल का प्रयोग करना पंसद करेंगे जिसका सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पडेगा। साथ ही साइकिल का उत्पादन भी बढेगा। रोजगार बढेगा । फलस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था में सुधार आएगा।
- देश में तेल की कीमतें बढने से करों से सरकार के राजस्व में वृद्धि होगी जिसका उपयोग देश के विकास कार्यों में (जैसे – शिक्षा, आपदा प्रबन्धन, स्वास्थ्य उद्योग इत्यादि) किया जा सकेगा।

निष्कर्ष –

तेल की कीमतें बढने या मँहगाई होने से किसी भी देश की अर्थव्यवस्था पर दो प्रकार के परिणाम देखें जा सकते हैं – सकारात्मक और नकारात्मक। नकारात्मक परिणाम का प्रभाव धीरे–धीरे कम होता जाता है या उनके हल ढूंढकर अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने की कोशिश की जाती है।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

–तमन्ना परवीन
बी.कॉम द्वितीय वर्ष, सेमेस्टर 4

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस हर वर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है। विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के प्रति सम्मान, प्रशंसा और प्यार प्रकट करते हुए इस दिन को महिलाओं के आर्थिक, राजनीति और सामाजिक उपलब्धियों के उपलक्ष में यह उत्सव के तौर पर मनाया जाता है।

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है– 'यस्य पूज्यते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताः', अर्थात्, जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। किन्तु वर्तमान में जो हालात दिखाई देते हैं उसमें नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उस भेग की वस्तु समझकर आदमी अपने तरीके से इस्तेमाल कर रहा है। यह बेहद चिंताजनक बात है। लेकिन हमारी संस्कुति को बनाये रखते हैं, नारी का सम्मान कैसे किया जाये किस तरह नारी का सम्मान करना जरूरी है।

माता का हमेशा सम्मान हो

माँ अर्थात् माता के रूप में नारी धरा पर सबसे पवित्र रूप में है। माता ही जननी, माँ को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है क्योंकि ईश्वर की जन्म ढाती भी नारी ही रही है। मां देवकी (कृष्ण) तथा मां पार्वती (गणपति) को हम भगवान के रूप में मां ..... रखते हैं।

महिलाओं का आसमान छूना

अगर आजकल की लड़कियों पर नजर डालें तो हम पाते हैं कि लड़कियां आजकल बहुत बाजी मार रही हैं। उन्हें हर

क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए देखा जा सकता है। विभिन्न परिक्षाओं की मेरिट लिस्ट में लड़कियां तेजी से आगे बढ़ी हैं। किसी समय उन्हें कमजोर कमजोर समझा जाता था किन्तु उन्होंने अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर हर क्षेत्र में प्रवीणता अर्जित कर ली हैं। इन की इस प्रतिभा का सम्मान किया जाता है।

कंधे से कंधा मिलाकर चलती नारी का सारा जीवन पुरुष के साथ कंधे से मिलाकर चलने में ही बीत जाता है। पहले पिता की छत्रछाया में उसका बचपन बीतता है। पिता के घर में भी उसे काम करना पड़ता है, साथ में अपनी पढ़ाई भी जारी रखनी होती है। उसका यह क्रम विवाह तक जारी रहता है। उसे इस दौरान घर के कामकाज के साथ पढ़ाई–लिखाई की दोहरी जिम्मेदारी भी निभानी होती है। जबकि इस दौरान लड़कों को पढ़ाई–लिखाई के आलावा और कोई काम नहीं रहता है। कुछ नवयुवक तो ठीक से पढ़ाई भी नहीं करते हैं जबकि उन्हे इसके अलावा और कोई काम ही नहीं रहता है।

इस नजरिए से देखा जाये तो नारी सदैव पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर तो चलती ही है, बल्कि उससे भी अधिक जिम्मदारियों को निर्वज्ञ भी करती ळै। नारी इस तरह से भी सम्मानीय है। किन्तु बदलते समय के हिसाब से संतानों ने अपनी अपनी मां को महत्व देना कम कर दिया है। यह चिंताजनक पहलु है। सब धन लिप्सा व अपने स्वार्थ में डूबते जा रहे हैं। परंतु जन्म देने वाली माता के रूप में नारी का सम्मान अनिवार्य रूप से होना चाहिए जोकि वर्तमान में कम हुआ है। यह सवाल आजकल प्रश्नचिन्ह की तरह चहुंओर पांव पसारता जा रहा है।

नारी के अन्दर ईष्वर ने ऐसी क्षमता दी है कि पुरुष उसे जो भी देता है उसे वह पुरुष को बढ़ा कर ही देती है। जैसे एक पुरुष अनाज देता तो नारी उस बदले में उसे पकाकर भोजन देती है। पुरुष नारी को इज्जत व सम्मान देता है तो वह उसे कई गुना बढ़ाकर देती है और अपने पति को भगवान के रूप में स्वाभीमान मानती है। परंतु वही महिला अगर अपने अधिकारी चाहती है और पुरुष उसे दर्द देता है, तो वह उसे सबक भी सिखा ही देती है।

कृपया नारी का दिल से सम्मान करें, भारत की नारी जिन्दाबाद।

नारी के ऊपर कुछ पंक्तियां

नारी तो बस नारी है, नारी तो बस नारी है।

नारी को मान दो, नारी को सम्मान दो।

नारी तो बस नारी है, नारी तो बस नारी है।

प्यार और दुलार की मूर्ति है नारी

ममता की मूर्ति है नारी।

बच्चों से लेकर बूढ़ों तक

सभी को संवारती है यह नारी।

नारी तो बस नारी है।

उसकी महिमा जो समझ जाये

वह इस दुनिया से तर जाये।

नारी का सम्मान करो

उसे भी उड़ने दो गगन में।

अपनी स्वतंत्रता से और फिर

देखो नारी का असली रूप।

संस्कृतभाषाया महत्वम्

–प्रियंका
बी0ए0 प्रथम वर्ष

संस्कृतस्वरूपम्– संस्कृता परिष्कृता त्रयाकरण नियमपरिणुय विज्ञाननिक पोपलपरिक्षिता च या भाषा सव – ''संस्कृत भाषा'' नामना ज्ञायते।

द्वयं संस्कृतभाषा उपमाघलंकारैरलंकृता गरिमान्विता, श्रड. गरादिरसपरिप्लुता च सती विश्वप्राड.गणे विराजजे राम्।

संस्कृत प्राचीनता – संस्कृतभाषा विश्वस्य सवासु भाषासु प्राचीन ताम् आधुनिका भाषाशास्ख्णविचक्षणा निर्विवादं स्वाकुर्वन्ति यत् भारोपीय भाषा परिवारस्यादिमं लिखिमं प्रमाण ऋग्वेदे कथितम्

'' सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा

सत्य – अहिंसा – विश्वबन्धुत्वादोनि विश्वसंस्कृतित्वानि सर्वप्रथम वेदेभ्योडयेभयश्च संस्कृतसाहित्य ग्रन्थेभय सभुद्रभूतानि, संस्कृतमेव स्त्रोत ज्ञानविज्ञानयोः।

संस्कृत नाम देवी वागन्वाख्याता महर्षिभिः सर्वथा सार्थकता सूक्तिरियम् संस्कृत साहित्यग्रन्थोभ्यः संस्कृतभाषा दिव्यगुणसम्पन्ना खलु, अर्नयव भाषया स्तुतिः सकल च देवकार्य सम्पघते, देवाः संस्कृतभाषामेव व्यवहार चक्र, अव एव इयः देववाणी–अमरगिराः, सुरभारती, गीर्वाणी देवभाषा चेत्यादिर्भिवशेषरलाक्रियते, वेदाः वेदाडग.नि, उपनिषदः पुराणानि सकलानी च शास्त्राणी संस्कृतभाषायामेव निवद्वानि, दयमेव खलु दिव्यतः संस्कृतस्य, यथा देवाड.गनासु विलक्षणं आकर्षणम् यथा च तासां यौवन मखण्डित तथैव संस्कृत भाषायापि अद्वितीयमकर्षण तस्याश्च यौवन सर्वण अक्षुण्णम्, इत्यमपसरायिता खलु संस्कृत भाषा संस्कृतस्य लिपिवैज्ञानिकी यस्याः वर्णमाला भाषावैाानिकानां पथप्रदर्शिका।

संस्कृतसाहित्यसौनदर्यम् – अनिर्वगीय खलु संस्कृत साहित्यम् विश्वभाषाणा। कलाकारः संस्कृतसाहित्यसम्मुख नवस्तकाः संस्कृत कवयः स्वप्रतिभया संस्कृतसाहित्य भाषाया, आदिकाविर्वाल्मीकीः संस्कृतभाषायामेव रामचरित जगौ, कविताविलासः कालिदासः। काव्यव्याजोन सुरभारतीमेव ववन्दे, एवमेव अपवघोष आरवि–याच–श्रीहर्ष भवभूति शुद्रकादयः कवयोडपि स्वकाव्याञलिभिः देववाणीमेव आनर्चुः।

संस्कृतकाव्यं विलक्षणलाना जन्मभूमिः अस्मिन एकतः कालिदासस्य उपमासौन्दर्य चेतश्चमत्करोति अन्यतो भारवेरर्थगौरवं काव्ये गाम्भीर्य मादधाति, अपरतो दण्डिनः श्रीहर्षस्य च पदलालित्यलीला दिलासयाः कलयति, माधे तु उपमार्थ गौरवपदललिस्यानाः त्रयणमपि सगम संगम स्नामिवानन्दयति काव्यरसिकान्यथा योक्त संस्कृतसाहित्यसमालोचकः –

संस्कृतकाव्य सौन्दयस्य प्रतिमैवास्ति, संकाया संस्कृत कवितावनितायाः श्रृंगार कुर्वन्ते माधुयोज प्रसादगुणाः संस्कृतकाव्याकारो माधुर्यस्य ओजसः प्रसादस्य च वृष्टि कुर्वन्ते वैदर्भि सरसतयाः परिपूस्यन्ति, लक्षण व्यञजना च संस्कृतकविता मलौककिकताया मञचे संस्थापयतः संस्कृतकवीना वर्णनकौशल विलक्षणम्।

संस्कृत निबंध : परोपकार

–मोनिका रावत
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर

परेषाम्उपकारः परोपकारः इति अभिथीयते समाजे मानवः परस्य हितसाधनार्थम! यत् वितरति, मनसा वाचा कर्मणा वा परार्थम्सम्पादयति परेषां हितं वाइनुतिष्ठति, तत सर्वम् परोपकरो गण्यते, संस्कृत साहित्ये अनेकाः सूक्तयः वर्तन्ते।

''पिवन्ति नद्यः स्वयमेव नाम्भः
स्वयः न खादन्ति फलानि वृक्षः
नादन्ति सस्यं खलु वारिवाहाः
परोपकराय सतां विभूतयः''

अस्मिन संसारे परोपकारस्य अनुपमा महिमा अस्ति अनेन गुणेन नरस्य प्रतिष्ठा वर्तते, सः नरः आत्मा सन्तोषं लभते शरीरस्य शोभाचन्दनलेपनेन न, अपितु परोपकारेण भवति।

''श्रोतं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेव पाणिर्न तु कंकहोन
विभूति कायः खलु सज्जनानां परोपकरारेन तु चन्दनेन।''

वयं सर्वन पश्यामः यत् प्रकृतिः अपि अस्य परोपकारस्य एवं

शिक्षां प्रददाति, फलभारेण समन्विताः वृक्षाः स्वार्थाय न फलन्ति, अपितु तेषां फलानि अन्येषां कृते एव जायन्ते

''परोपकाराय फलन्ति वृक्षां परोपकास्य वहन्ति नहाः

परोपकाराय दर्हान्ते ग्रामः परोपकारार्थ मिदं भारीरम् ''

सज्जनाः वसुधैव कुटुम्बकम् इति मन्यन्ते, अत एवं ते सर्वान् जीवान् समानदृष्टया पश्यन्ति, ते मनसा वाचा कर्मणा दरिदद्राणां दुःखितानां च दुःखा पहरणं सम्पादयन्ति।

समाजे राष्ट्रे च परोपकारस्य भवाना अत्युपयोगी अस्ति। अस्य गुणस्य ग्रहणेन एव नरं समासेवायाः भावना, देशप्रेमभावना, देशभक्ति भावना, परदुःखकातरता, सहानुभूति गुणस्य च सत्रा भवति, अस्या भवनथा परिपूर्ण जना दीनेभ्यो दाने ददाति। निर्धनेभ्या धने धनं वस्त्रहीनेभ्यो, वस्त्रं पिपासितेभ्यो जलं, बुभूक्षितेभ्योडन्नम् अशिक्षितेभ्यश्यश्स्य शिक्षाम् ते स्वार्थं दुःखं न गणयन्ति, परं परोपकारेण एव प्रसन्ना भवन्ति। आत्मार्थम् तु लोके प्रत्येको नरो जीवति, किन्तु जीवनं श्लाथ्यं यः परार्थम जीवति।

वर्तमाने कालेडिप भारतवर्षे परोपकारंस्य सुप्रथितानि निदर्शनानि प्राप्नुवन्ति। अनेन एव जगतः अभ्युदयो भवति। शन्तिः सुखं च वर्द्यते। अतएव भागवतः 'वेदव्यासस्य' विषये महाभारते कथ्यते यत् –

''अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनइयम्,

परोपकारः पुष्याय पापाय पपडिनम् ''

उपमा कालिदासस्य

–बृहस्पति
बी0ए0 पंचम सेमेस्टर

कालिदास : कविशिरोमणिः कविकुलगुरू कालिदास कविश्रेष्ठ इति उच्च्यते। कालिदास प्राचीनकालिकः राष्ट्रकवि उच्च्यते। कालिदासस्य जन्मस्थान कश्मीराः वा वड्गभूभिर्वा राजस्थान वा उज्जयिनी वेति निश्रितं वक्तुं न शक्यते। न चास्य महानुभावस्य जीवनकालविषेय कश्रिद निर्णयः। महाराजविक्रमादित्य राजसभाया अवं प्रतिष्ठितों इति सर्वे स्वीक्रियते।

कालिदासस्य काव्ये किचिंत अलौकिकम् अपूर्वम् असाधारणम् च सौन्दर्य दीदृश्यते। तस्य काव्ये आकश्मीरात् आ कन्याकुमारीम् आ कन्याकुमारीम् आ द्वारिकायाः आ प्राग्ज्योतिषम् अपूर्व स्वाभाविक च सौन्दर्यवर्णम् उपलभ्यते। तस्य कात्यस्य निषीय निपीय जनानाम हदयम् नृत्येन आन्दोलितम् इव भवति ततुल्यः कोडपि कविः नासीत् अतः केनचित् कविना उक्तम्

पुरा कवीनाम गणनाप्रंसगे

कनिष्ठिकाधिश्ठितकालिदासा।

अद्यपि तत्तुल्यकवेरभवात्

अनामिका सार्थवती बभूव।।

कालिदासेन अभिज्ञानशाकुन्तलम्, विक्रमोर्वशीयम्।

मालविकाग्निमित्रं च इति प्रीणि कपकाणि, रघुवंशम् कुमारसम्भवम् च इति द्वे महाकाव्ये, प्रच्तुसहारम् मेघदूतं च इति खण्डकाव्ये विरचितानि। तस्यं कौशलम् यथा पद्यरचनायम् तथैव नाटकेषु वर्तते। कालिदासेन प्रकृति मानवसहचरीरूपेण वणिता यदा तस्य पात्रणि दृष्यन्ति तदा प्रकृतिः अपि प्रफुल्लता भवति यदा तस्य पात्रणि दुः खितानि भवन्ति तदा प्रकृतिरपि रोदितीय। यथा अभिज्ञानशकुतले तदा चतुर्थेडडके शकुलता यदा काव्याश्रम त्यक्त्वा पतिगृहं।

कालिदासस्य काव्यानां प्रमुख वैशिष्टयम उपमा–सौन्दर्यम्एवं अस्ति उपमा कालिदासस्य इति आभाणकम् प्रसिद्धमेव।

उपमा कालिदासस्य : कवितावनितावलासः कालिदासः सरस्वत्याः साक्षदवतार। लेदासकाव्य सहदयहदयाबजकम् कालिदासस्याजड्कारचातुरी सहसैव करोति चेतः सचेतस्यः। तस्य कविताकामिनी विविधालडकरैरडकता रमाणोवाकर्षति काव्यरसिकान् । यद्यपि कालिदासः सर्वेपामप्यलकायां प्रयोगे समथस्तथापि उपमालडकरयोनायां तस्यं प्रतिभा विशेषतों कसिता भासिता च। उपमा सघटनायां कालिदासो वस्तुतः सर्वेषामेव ज्ञोनामतिक्रमणं चकार। अत एवं सुष्ठूत्तकं साहित्यसमालोचकं – ''उपमा कालिदासस्य''

कालिदासस्य उपमाः रम्यां मनोहारिष्य शिक्षाप्रदाः
ज्ञानदान्यश्च सन्तोति नात्र सदेहः।

कालिदाससूक्तयः – कालिदाससूक्तयः मौक्तिकानीव विराजन्ते नोपमामाध्यमेनव प्रायशा रम्याः सूक्तयः सत्रिबद्धाः तस्यापमागर्भिता सूक्तश्चेतोहारिष्यः अम्तमयोपदेशदायिन्यः तथ्योदघाटिन्यः शाश्वसत्यकासु च सूक्तिपु सहदयरसिकानां स्वाभाविकी प्रतिस्तथैव जायते यथा वृक्ष निंगतानु मधुमयासु मादिनीषु च मजरीषु कामुकानां नैसर्गिकी प्रेमदृष्टिः ।

कालिदाससूक्तयां न केवल रमणीया एवं अपितु ताः व्यवहारज्ञानयुक्ताः सत्यं जीवनमार्गे सततं मार्गदशर्ननं कुर्वन्ति।

अभिनवं संस्कृत साहित्यम्

—शिखा
बी0ए0 प्रथम वर्ष

सर्वासु भाषासु संस्कृतभाषा प्राचीनतमा अस्ति। इय भाषा देववाणी गीर्वाणवाणी, सुखाणी इत्यादिनामभिः सुविख्याता। इयं भाषा अतीव रमणीया मधुरा च अस्ति। सा न कठिना, अपितु सरला सरसा एव। पुरा इयं भाषा व्यावहारिकी भाषा आसीत्। अद्यापि आंध्रप्रदेशे एकस्मिन् ग्रामें जनाः संस्कृतभाषामेव वार्तालाप कुर्वन्ति। रामायण महाभारतकाले संस्कृतभाषा एव प्रचलिता आसीत्। इयं भाषा अस्माकम् अमूल्यः निधिः एव। अस्यां भाषायां विपुलं साहित्यं वर्तते। चत्वारों वेदाः उपनिषदाः गीर्वाणभाषायामेव सन्ति। जनाः वेदान न केवलम् अस्माकं देशे अपितु विदेशे अपि पठन्ति। मुनस्मृतिः याज्ञवलक्य – स्मृति एतौ द्वौ ग्रन्थौ विख्यातौ स्तः। लौकिक – साहित्रू नाट्यसाहित्य, काव्यसाहित्य, कथासाहित्यमपि विद्यते। महाकवेः कालिदासस्य साहित्य विदेश अपि सुविख्यातम्। संस्कृतभाषैव आधुनिक प्रांतीयभाषाणा जननी। अस्याः व्याकरणम् सर्वाङ्ग पसिपूणमस्ति। संस्कृतभाषायाम् एकस्य शब्दस्य अनेके पर्यायशब्दाः सन्ति। अतः इयं भाषा सम्पन्ना अस्ति। उचित कथ्यते, अपूर्व कोडपि कोशोडय विद्यते तव भारति।

संस्कृतभाषा अस्माकं सांस्कृतिकी भाषा अस्ति, यत अस्माकं सर्वे धार्मिक – संस्काराः अस्यां भाषामेव विद्यन्ते। संस्कृतभाषायाम् अनेकानि सुवचनानि सुभाषितानि च सन्ति यानि बालकेभ्यो, युवकेभ्यः च प्रेरणां यच्छन्ति। अस्यां भाषाया मानवीय गुणानां विवेचनं प्राप्यते। आध्यात्मिक शान्तये इयं भाषा सर्वेः पठनीया खलु। अस्यां भाषायाम् एव सर्वेषां कल्याणेच्छा दृश्यते 'यथा' सर्वे भवन्तु सुखिनः सन्तः सर्वे सन्तु निरामयाः सर्वेः भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःचामाप्नुयात् । एवं संस्कृतभाषायाः महत्वं विज्ञाय सर्वेः एषा भाषा पठनीया, सर्वत्र च प्रसारः करणीयाः।

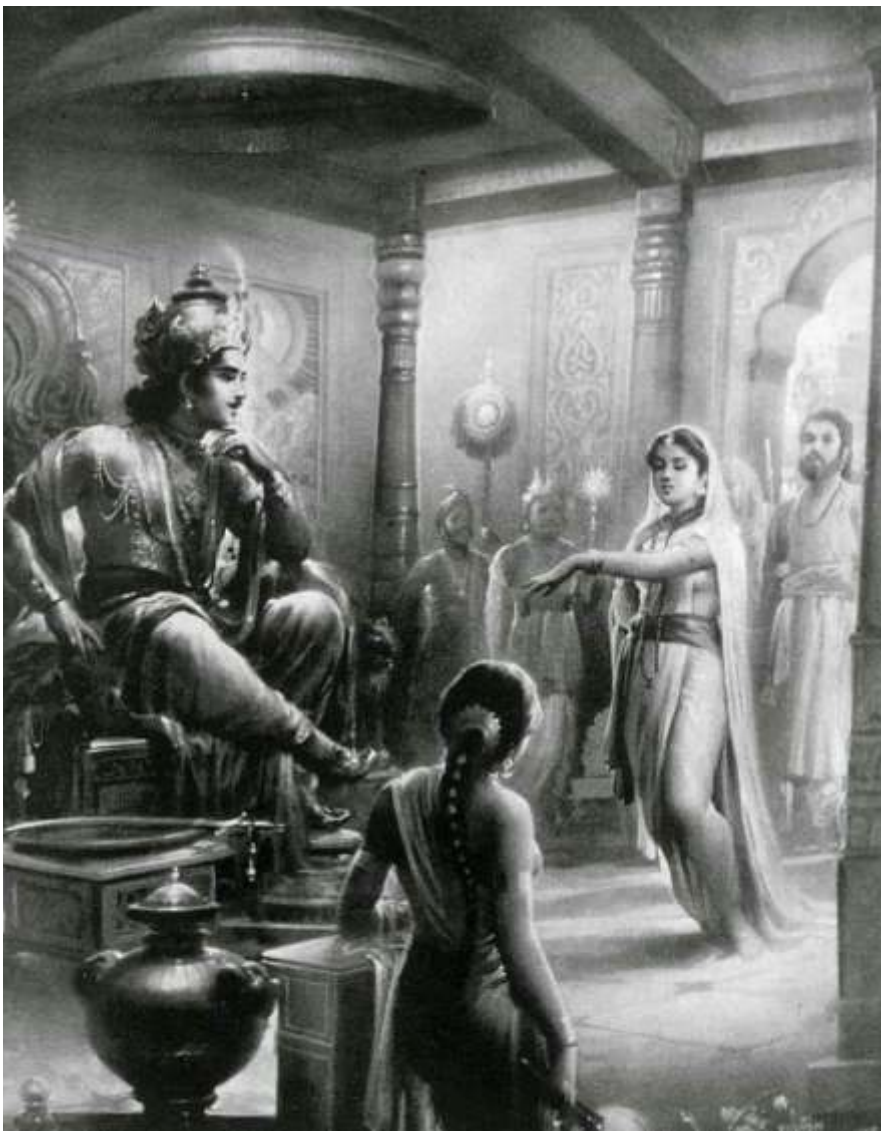

संस्कृत भाषा परिशुद्धा व्याकरण सम्बन्धिदोशादिराहिता संस्कृत भाषेति निगद्यते। संस्कृतभाषैव भारतस्य प्राणभुताभाषा अस्ति राष्ट्रस्य ऐक्य च साधयति भाषा अस्ति। संस्कृतभाषा जिवनस्य सर्वसंस्कारेषु संस्कृतस्य प्रयोगः भवति। सर्वासामेताषा भाषाणाम इयं जननी। संस्कृतभाषा सर्वे जानाम आर्याणां सुलभा शोभना गरिमामयी च संस्कृत भाषा वाणी अस्ति। वेदाः, रामायणः, महाभारतः, भगवद्गीता इत्यादि ग्रन्थाः संस्कृतभाषायां एवं विरचितानि। संस्कृतभाषायाः एवं विरचितानि। संस्कृतभाषायाः संरक्षणार्थ वयं संस्कृतपठन प्रचरण च अवश्यं करणीयं। संस्कृतवाडमयं स्वस्य अद्वितीय स्थानम् अलड.करोति। सम्यक् परिष्कृतं शुद्धमर्थाद् दोषरहित व्याकरणेन संस्कारितं वा यत्तदेव संस्कृतम्। एवञ्च सम् – उपसर्गपूर्वकात् कृधातोर्निप्यन्नोडयं शब्द संस्कृतभाषेति नाम्रा सम्बोध्यते।

मेरी मंजिल तो आसमान है

सीढ़ियां उन्हें मुबारक जिन्हे छत तक जाना है
मेरी मंजिल तो आसमान है मुझे रास्ता खुद बनाना है।
किसी भी परिस्थिति से न घबराना है
ना ही पीछे मुड़कर जाना है।
मेरी मंजिल तो आसमान है मुझे रास्ता खुद बनाना है।
मंजिल में आने वाली सारी मुसीबतों का
डटकर सामना कर मंजिल को पाना है।
मेरी मंजिल तो आसमान है मुझे रास्ता खुद बनाना है।

स्कूल के दोस्त

संडे त्योहार सा लगता है दिन,
घर रहने के थे बहाने हजार पर
खींच ले जाता था दोस्तों का प्यार....
यारों का रूठना तो कभी उनका हमें मनाना,
रो होमवर्क ना करने के बहाने ढूंढ लाना,
टीचर की डांट खाने पर भी मुस्कुराना...
याद आते हैं वह बचपन के यार और उनकी यारी
जिनके साथ में खुशियां थी सारी...

गुरु का महत्व गुरु महिमा

आप अभिमान हो आप सम्मान हो
आप ही आदर्श,
आप ईश्वर से पहले पूजनीय भगवान हो।
आप ज्ञान रूपी प्रकाश हो जिनके आगमन ने
हमारी अज्ञानता रूपी अंधकार मिटाया है।
आपके मार्गदर्शन ने हमें
उचित–अनुचित का ज्ञान करने योग्य बनाया है,
आपकी सीख ने हमें
सही राह पर चलना सिखाया है।
आप के योग्य ना सही पर
आपकी परछाई बनना है।
हमें आपकी की तरह मजबूत इरादों व
कोशिश के पैरों की मजबूती से सदा सफलता की सीढ़ी चढ़ना है।

–शकीला हुसैन,
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर, मनोविज्ञान विभाग

मेरी पहचान–मेरे पिता

पीपल की ठंडी छांव से हैं मेरे पिता
अंधेरे में रोशनी की किरण हैं मेरे पिता।
जमीन पर खुदा का रूप हैं मेरे पिता,
इंसानों में फरिश्ता हैं मेरे पिता।
मेरी ख्वाहिशों को पूरा करते–करते
अपने दर्द को भूल जाते हैं
मेरी हर मुस्कुराहट की वजह हैं मेरे पिता।
खुद का ख्याल रखना भूल जाते हैं और
हमारी छोटी सी चोट से परेशान हो जाते हैं।
अपनी तकलीफ भूलकर
मेरी खुशियों में मुस्कुराते हैं,
हर मुसीबत से लड़ना
गलतियों का विरोध करना सिखाते हैं।
मेरी हिम्मत ही नहीं मेरा विश्वास हैं मेरे पिता,
निराशा में उम्मीद की आस हैं मेरे पिता।
मेरी पहचान मेरा आत्मसम्मान हैं मेरे पिता।

यूं तो मैंने धरती पर भी
फरिश्तों सा इंसान देख है।
मैंने मेरे पिता के रूप में मेरी
हर ख्वाहिश पूरी करने वाला
भगवान देखा है।

कि रास्तों पर चलते हुए कुछ
गलत होते–होते भी जब मैं
बच जाती हूं।
शाम को घर लौट कर आती हूं तो
अक्सर मां को सजदे मे पाती हूं।

दरगाह पर नहीं जाती मैं
खुदा की तलाश में।
मैंने मा–बाप में ही
खुदा को देखा है।

परेशानियां

–दिव्या रावत
बी. ए. (प्रथम वर्ष)

परेशानियां तो परेशानियां होती हैं
यह हमें कुछ पल के लिए उदास कर देती हैं,
हम में नकारात्मक प्रभाव भर देती हैं,
हमारे विचार बदल देती हैं,
कभी मजबूरियों की वजह से जीना मत छोड़ो,
क्योंकि कठिनाइयां हमें बहुत कुछ सिखा जाती हैं।

मैंने देखा है, मजबूरियां हमें जीना सिखाती हैं,
कहते हैं गरीबी मजबूरी का नाम है
पर साहब उन्हीं मजबूरियों की वजह से गरीबों को,
कामयाब होते हुए देखा है मैंने।

कोई कहता है कि मैं यह नहीं कर सकता,
क्योंकि मेरे पास सुविधा ही नहीं है।
अरे भाई, 'यह तो बहाना बनाने जैसी बात हो गई'
कठिनाई किसके जीवन में नहीं होती फर्क इतना है,
कुछ लोग कठिनाइयों को जिंदगी का आधार बना लेते हैं,
और कुछ लोग बहाने बनाते ही रह जाते हैं,
और बहाना बनाने वाले हमेशा हार जाते हैं।
जीतने वाले तो उनका सामना कर जीत जाते हैं।

सब कहते हैं कठिनाइयों से लड़ो
पर मैं कहती हूं ,'कठिनाइयों से सीख लो'
अनजाने में बहुत कुछ सिखा जाती है कठिनाइयां
हमें कामयाब बना जाती है कठिनाइयां
और मैं कहती हूं, सिखाने और सीखने का नाम है कठिनाइयां।

गणित के रोचक तथ्य

–दिव्या रावत
बी. ए. (प्रथम वर्ष)

1. 1089 X 9 = 9801
2. 2520 ऐसा सबसे छोटा अंक है, जो 1 से लेकर 10 तक के सभी अंकों से पूरा भाग हो जाता है।
3. अगर एक जगह पर 23 आदमी खड़े हैं, तो उनमें से 2 का जन्मदिन मिलने की संभावना 50ः है।
4. संसार में कुछ लोग ''मैथ एन्जाइटी'' से पीड़ित होते हैं और यह समस्या मैथ में कमजोर लोगों को होती है।
5. 21978 को 4 गुणा करने पर उत्तर इस संख्या का उल्टा आयेगा।
6. लूडो के पासे में ऊपर आने वाले संख्या को उसके विपरीत दिशा में आने वाले संख्या को जोड़ने पर योग हमेशा सात आयेगा।
7. आप 1 से 100 तक नंबर जोड़ देते हैं, तो उसके कुल का योग 5050 होता है।
8. शब्द MATHEMATICs ग्रीक शब्द Mathena से बना है, जिसका अर्थ है ''ज्ञान या सीख''।

किसने सोचा था

–अजय कुमार
एम0ए0 द्वितीय सत्र

किसने सोचा था, कि ये वक्त भी आएगा
साँसों पर इस तरह कभी, ''ऑक्सीजन'' का संकट छाएगा
होंगे स्कूल कालेज 'बन्द' गलियारे विरान रहेंगे
अस्पतालों में मौत का ताण्डव, लाशों से घिरे श्मशान रहेंगे
कितनी ही साँसों को, 'वायु प्राण' मिल न सका
कितनी ही 'देह' को 'अन्तिम धाम' मिल न सका
होगा मानव बेबस यूँ, ''सिस्टम'' भी लाचार हो जाएगा
होगा सब कुछ 'बन्द' मानव पंगु बन जाएगा
'बचने–बचाने' की जदद्ोजहद में, नित मौत से टकराएगा
एक दूजे से मिलना भी, डर के साये में होगा
मानव से मानव ही, खौफ़जद़ा हो जाएगा
किसने सोचा था कि ये वक्त भी आएगा
यूँ तो दुनिया ने, कई–कई खौफ झेले हैं
लेकिन इस खौफ का आतंक, कई सदियों तक जाएगा
गिरना, गिरकर उठना, उठकर चलना मानव की नियति है
देखें इस नियति से 'कोई', आखिर कब तक टकराएगा
किसने सोचा था कि ये वक्त भी आएगा
एक अनुभव एक सीख दे गया, ये 'संकटकाल' भी
बिन प्रकृति है अधूरा, हे! मनव तू आज भी
भागमभाग में मत भूल, जीवन को जीना
न जाने जीवन कब जीना छोड, जाएगा
किसने सोचा था कि ये वक्त भी आएगा

गणित के रोचक तथ्य

–मोनिका उनियाल
बी.एससी. प्रथम वर्ष

1. 259X39X आपकी उम्र = तीन X आपकी उम्र
2. 2520 ऐसा सबसे छोटा अंक है, जो 1 से लेकर 10 तक के सभी अंकों से पूरा भाग हो जाता है।
3. MATHEMATICIANS के अनुसार टाई बाँधने के 177,147 तरीके है।
4. 1900 में पूरी दुनिया की गणितीय जानकारियों को सिर्फ 80 किताबों में लिखा जा सकता था, लेकिन आज ये 1 लाख से भी ज्यादा किताबें भर सकती है।
5. पुरातन बेबीलोन के लोग गणित को 10 के बजाय 60 के आधार पर करते थे, इसी वजह से ब्पतबसम में 360° और 1 मिनट में 60 सेकेंड होते है।
6. 21978 को 4 गुणा करने पर उत्तर इस संख्या का उल्टा 87912 आयेगा।
7. Issac Newton's के mathematics सिद्धांत में एक छोटी सी calculation गलत थी लेकिन 300 साल तक इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया।
8. Eratosthenes ने आज से 2200 साल पहले मिस्र से बाहर जाए बिना ही धरती की परिधि की गणना गणित की सहायता से कर दी थी।
9. गणितज्ञ Paul Erdos. 4 साल की उम्र में ही इतना तेज था कि अगर उसे किसी मरे हुए आदमी की उम्र बता देते थे तो वो दिमाग में ही बंसबनसंजपवद करके ये बता देता था कि आदमी कितने सेकेंड जिया।
10. सबसे बडा Primary Number 2 करोड़ 20 लाख अंको से भी बड़ा है।
11. शब्द Hundred दूसरे शब्द "Hundrath" से लिया गया है जिसका मतलब 120 होता है न कि 100
12. 10 सेकेंड पूरे 6 हफतों के बराबर है 10 मतलब 10 का फैक्टर 10 = 10 X 9X8X7X6X5X4X3X2X1 त्र 362800 सेकेंड, जो कि 42 दिन यानि 6 हफतों के बराबर है।

यादें

—सुरभि पुण्डीर
बी.ए.

वो यादें ही तो हैं,
जो मेरी डायरी के
उन पन्नों मे सिमटी हुई
हर रोज़ मुझसे कुछ कहती हैं,
जब भी उन पन्नों को पढ़ूं,
प्रफुल्लित स्मृतियां
उजागर होती हैं,
अनेक पलों से सिमटी
मेरी वो डायरी,
जिसमें सुख–दुःख
सभी लम्हें जो अचूक से थे,
नहीं सिमट पाए उन पन्नों में,
नहीं लिख पाई मैं उन्हें,
काश लिख लेती !
वो उन्हीं पन्नों की
विस्तृत गर्जन ही तो है
जो मुझे विवश करती है
उन्हें पलटने में !

मैं लिखना चाहती हूँ

—सुरभि पुण्डीर
बी.ए.

मैं लिखना चाहती हूँ
असंख्य पन्ने,
उन असंख्य पन्नों से निकले
असंख्य शब्द,
उन असंख्य शब्दों से निकले
असंख्य मर्म,
मैं लिखना चाहती हूँ
अपने मन में उपस्थित
लिखने की तीव्र इच्छा को,
मैं लिखना चाहती हूँ
हर उस घटना को
जो सहायक है बदलने में
जीवन का रूख,
मैं लिखना चाहती हूँ
प्रयत्न करती हूँ

वक्त

—सुरभि पुण्डीर
बी.ए.

वक़्त पर वक़्त को समझना
फिर समझदारी से काम लेना
फिर सब एक ख्याब बनकर रह गया
हम सोचते रह गए,
और वक़्त
वक़्त हमसे अलविदा कह गया,
कुसूर उस वक़्त का भी नहीं,
क्योंकि वक़्त है,
जाने के लिए तो आता है,
अरे कुसूर तो हमारा है,
जो वक़्त को वक़्त पर ना समझे
फिर ढूंढते हैं बहाने
वक़्त को कुसूरवार ठहराने के
ये भी नहीं समझते,
वक़्त ही रूठ गया
तो ज़िन्दगी प्रेमिका।

मँहगाई

—रुखसार
बी.कॉम. 6 सेमेस्टर

आम–आदमी दबा जा रहा है, मँहगाई रो रोकर चिल्ला रहा है।
अपनी यह व्यथा वह किसको सुनाए, अपना दुख रोने वह किसके पास जाए।
एक तो यहाँ बेरोजगारी है, दूसरी आरे मँहगाई का पलड़ा भारी है।
सबके चेहरे पर छाई है निराशा, शौक पूरे करने की न है कोई आशा।
छाल, चावल, आटा सब पर इस तरह छायी है, मँहगाई।
खायें–पिये क्या, सबके सामने यह समस्या आई।
रोते हैं पैसा उसका ही बोलबाला, एक तरफ दुहाई लगा रहा है, गरीब।
दूसरी ओर देश के नेता घूस खा रहें हैं आम आदमी दबा जा रहा है।
मँहगाई– मँहगाई से रो–रोकर चिल्ला रहा है।

थोड़ा समय निकाला करो

थोड़ा समय निकाला करो
कभी उन बूढों से भी बतियाया करो,
वो बूढे जो तुमसे कभी
तुम्हारा समय नहीं मांगते
थोड़ा देर उनके पास भी बैठ जाया करो,
ना लिया करो उनके साथ तस्वीरें
सिर्फ सोशल साइट्स पर
अपना हैशटैग वाला प्रेम जताने को,
लिया करो उनके साथ तस्वीरें
उन यादों को कैद करने को,
अरे सुना करो उनकी बातें
कभी–कभी बहुत भोली बातें करते हैं
जी भरकर मुस्कुरा दोगे तुम
जिसके लिए वो तरसते हैं,
अभी समय है
बतिया लिया करो
उनके किस्से कहानियां भी
सुन लिया करो
जब हो जाएगी देर
वो याद बहुत आंएगे।

सुरभि पुण्डीर

प्रकृति

आज आसमान में एक पंछी उड़ा,
उड़ते–उड़ते न जाने वो कहाँ पहुँच गया।

नीचे गई उसकी नजर, पूरी जमीं पड़ी थी बंजर,

न कोई पेड़ है, डाल पर बैठ जाऊँ, न कोई तालाब है, पानी पी आऊँ।

घर है पर घर में कोई नहीं, जमीं है पर जमीं पर किसी का पैर नहीं।

चारों तरफ सूखा ही सूखा पड़ा है,

न पानी है पीने को, न हवा है साँस लेने को,

क्या ऐसी दुनिया है पृथ्वी पर, या फिर मनुष्य ने इसे ऐसा बनाया।

पानी के बिना जीवन नहीं है, हवा के बिना साँस नहीं है,

कैसी जगह विरान है, पंछी सोचकर हैरान हैं।

मनुष्य वृक्ष काट तो देते है, पर लगाते नहीं।

पानी बेवजह बहा देते हैं, पर बचाते नहीं।

जल होगा तो जीवन होगा, पेड़–पौधे होंगे तो जीवन का अस्तित्व होगा।

अंशुल, एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

नये जमाने के बच्चे

दो पन्नों की कॉपी लेकर, कॉलेज पढ़ने जाते हैं
मिल गया यार तो, पिक्चर को मुड़ जाते हैं।
क्रीम–कलर की पैंट देख लो, चश्मा आंखों पर होगा,
छींट की शर्ट, रंगीन रुमाल, शू भी चमकदार होगा।
इन्टरवल में लगी तलब तो चौराहे पर जाते हैं
मुंह में बढ़िया पान चबाकर, सिगरेट सुलगाते हैं।
उपस्थिति जब शुरु हुई तो दौड़े भागे आते हैं
प्रिन्सिपल ने नहीं तो टीचर को फुसलाते हैं।
पढ़ा लिखा तो नहीं पर पास की आस लगाते हैं
रिजल्ट आउट होने पर वे घर से भाग जाते हैं
तब माँ–बाप दुखी होकर पेपर में छपवाते हैं
जहां कहीं हो आ जाओ हम तुम्हें बुलाते हैं।
पेपर में पढ़ लिया जब खुशी–खुशी घर आते हैं
माता–पिता की चिन्ता नहीं, फिर जूते भी चमकाते हैं।

सोनाली काला, बी.ए., षष्ठ सेमेस्टर

मैं और मेरी माँ

–रजनी कश्यप
बी.कॉम. 6 सेमेस्टर

मैं एक नन्हा सा पौधा हूँ
(माँ) अंधेरे में मुझे जन्म दिया
रोशनी से मुझे दूर कर किया
जब भी चाहत हुयी
अंधेरे को मिटाने की
इस डर ने मुझे फिर
रोशनी से दूर कर दिया
पर इस दिन रोशनी ने अंधेरे को
मिटा दिया।
और फिर इस अंधेरे के के जन्में
पौधे ने अपने जीवन को इन
नया रूख दिया।
अंधेरे के जन्मे पौधे ने सोचा
जब मुझे रोशनी से दिया गया मिला
तो क्यों न मैं भी रोशन करूं,
इक माँ के दिल की अंधेरी जमीं को।
आज उस पौधे को इंसान ने ही मिटा दिया।
वह पौधा तो कई जिन्दगियों को रोशन कर गया पर,
(माँ) उसकी यादों ने मुझे फिर अंधेरे में कर दिया।

ससुर, दामाद और दहेज

–कोमल भट्ट
बी.कॉम. 6 सेमेस्टर

ससुर जी ने दामाद से पूछा –
बताइये दहेज में क्या चाहिए,
आप जरा भी न शर्माइये, बेहिचक बताइये।
बात सुन दामाद जी हो गये प्रसन्न,
बोले – आप से क्या मैं मांगू,
नगदी, जेवर और एक कार,
घर भी मेरा है बेकार, एक घर मिल जाये तो हो
जायेगा बेडा पार।
देख दामाद का लालचीपन, ससुर ने सोचा मन हीमन,
दे भी दूँ अगर ये सामान, क्या देगा ये मेरी बेटी का मान?
ससुर ने विवाह से हाथ पीछे हटाया,
पुलिस का नम्बर घुमाया।
कहा – दरोगा जी, इधर तो आना, यहाँ बैठा
दहेज–दीवाना।
दहेज की दीवानगी चढी है, कुछ इस कदर,
माँग रहा दहेज में, नगदी, मोटर और एक घर।
दामाद को लगी बडी फटकार,
जल्द हो गया वह फरार।
अगर दहेज की कहानी यूँ ही बढती जायेगी।
तो क्या नारी समाज में, सही सलामत रह पायेगी?

अनुभव ज्ञान से बेहतर होता है

–वन्दना
बी.एससी. (पीसीएम) प्रथम वर्ष

ज्ञान को हम बाह्य माध्यम या दूसरों के आधार पर प्राप्त कर सकते हैं लेकिन अनुभव वह सम्पत्ति है, जिसे केवल हम जब तक खुद न करें, यह प्राप्त नहीं होगा तथा अनुभव के आधार पर हम अपने ज्ञान को बेहत तरीके से व्यक्त कर सकते है। जिसे केवल ज्ञान होता है, उसे ज्ञानी कहते हैं तथा जिसे अनुभव हो, उसे अनुभवी कहते हैं लेकिन जिसे यह दोनों सम्पत्ति प्राप्त हो, उसे विद्वान कहते हैं।

सफलता हमारी

ना रास्ता ना पता मालूम है मंजिल का
बस हम चले जा रहे हैं,
जो मन में संवर रहे हैं सपने
जब उन सपनों को हकीकत बना रहे हैं।
एक आशा है मन में ,
चमकेंगे आसमान में बनके सितारा
दुनिया देखती रह जायेगी सफलता हमारी।।
लोग कहते हैं, तो कुछ भी कहते रहें,
हमें किसी की परवाह नहीं
मंजिल अपनी पाकर रहेंगे
हाथ पसारने या मिन्नत की चाह नहीं ...
हमारी इबादत दर्ज होगी तारीखों में,
फूल बनके मुस्कराते रहेंगे काँटों में,
सूरज पर भी चढ़ाई कर देंगे
आकाश को ढक लंगे बनकर बादल आवारा ...।
दुनिया देखती रह जायेगी सफलता हमारी।।
हौसलों के गगन यान में,
सवार होके जीत लेंगे जग सारा।
दुनिया देखती रह जायेगी सफलता हमारी।।
हाथों की लकीरों से कोई वास्ता नहीं,
हमें अपना रास्ता स्वयं बनाना है,
ब्रह्मा ने कुछ भी लिखा हो भाग्य में,
हमें अपने भाग्य से ज्यादा पाना है...
आज की जिद, कल ज्वालामुखी बनेगी
हमारी इस दुनिया में हर किसी से ठनेगी
कदम उठ गये हैं, अब रूकेंगे नहीं
भले ही सब छोड़ के हो लें सायोनारा।
दुनिया देखती रह जायेगी सफलता हमारी।।

नेहा नेगी, बी.एससी. (पीसीएम) प्रथम वर्ष

विज्ञापन @ LOAN

विज्ञापन एक माध्यम है जनता को किसी संसाधन की विशेषताएं उनका उपभोग कर जीवन में सरलता लाने का प्रतिदिन टी.वी. पर। न्यूजपेपर, सोशल मीडिया पर तमाम विज्ञान प्रदर्शित होते हैं, जो किसी भी सामान की खूबियां गिनाते फिरते हैं और जब साइड्स इफेक्ट की बात आती है, तो Terms & Condition Apply पर हम देख कहां पाते हैं। नहीं, इसका तात्पर्य यहां बिल्कुल नहीं है कि हम नेत्रहीन हैं, बल्कि हमें जल्दी ही इतनी होती है। हो भी क्यों न Discount भी तो 50% होता है।

Discount तो बैंक भी देता है। Loan पर जब RBI CRR कम देता है तो बैंक Loan हलवे की बांटते हैं। विजय माल्या और नीरव मोदी भी तो लोन के झमेले से पीछा छुड़ाने के लिये विदेश चले गये। पर सुना है कि अब माल्या मून एयरलाइंस की शुरुआत कर रहे हैं, क्योंकि धरती पर तो अनेक समस्यायें हैं भईया!!!

पर आम आदमी क्या करे, जरूरत पड़ने पर तो लोन लेना ही पड़ता है। लोन लेने के लिये एक व्यक्ति बैंक जाता है और सारी खानापूर्ति कर देता है। तभी बैंक अफसर का ध्यान उस कॉलम पर जाता है, जहां लिखा होता है – लोन लेने का कारण। व्यक्ति वहां – 'विज्ञापन से प्रेरित' – लिख देता है। जिस कारण अफसर यह सवाल पूछता है – ऐसा क्यों?

व्यक्ति उत्तर देता है कि घर में यह आलम है कि जितने मुँह उतने दाँत, उतने ही टुथब्रश–टूथपेस्ट, बाल धोने के लिये प्रत्येक का अलग शैम्पू है क्योंकि किसी के बाल सिल्की तो किसी के रूखे हैं, पांच प्रकार के तेल हैं क्योंकि किसी को चिपचिपा तेल पसंद नहीं है और किसी को खुशबू वाला। नहाने का साबुन और मुँह धोने के अलग हैं। 10 प्रकार के बिस्कुट हैं, सुबह का अलग, शाम का अलग और कुत्ते का अलग। पेट दर्द और जोड़ों के दर्द की अलग क्रीम, पेट कम करने और याददाश्त बढ़ाने की अलग गोलियां हैं।

अफसर ने कहा – इसमें विज्ञापन का क्या दोष है? हर घर की यही कहानी है।

व्यक्ति बोला – मेरे घर के सदस्य टी.वी. विज्ञापनों को बहुत ध्यान से देखते हैं। हर महीने एक–दो बार पुराना छोड़कर नया प्रोडक्ट खरीद लाते हैं।

अफसर को लोन के कागजात पर व्यक्ति की जगह अपना नाम दिखायी देने लगा। अतः विज्ञापनों से भ्रमित होकर लोन लेने का कष्ट न करें।

नेहा नेगी, बी.एससी. (पीसीएम) प्रथम वर्ष

एक वर्ष के बारह मास

मास जनवरी हँसता आया,
लोहरी का संदेश सुनाया।
फरवरी मास बड़ा सुखदायी,
बसन्त पंचमी गुड़्डी लाई।
होली मार्च मास में आती,
तरह–तरह के रंग उड़ाती।
अप्रैल मास बैशाखी आती,
नदी किनारे सैर कराती।
मई–जून है ऐस आते,
पढ़ने से छुट्टी दिलवाते।
मास जुलाई जब है आता,
भरकर बादल पानी लाता।
अगस्त मास की अजब बहार,
आता राखी का त्योहार।
मास सितम्बर हँसता आया,
गर्मी को है मार भगाया।
दशहरा है अक्टूबर लाया,
बच्चों के मन को है भाया।
नवम्बर मास दीवाली आई,
खील बताशे भर लाई।
मास दिसम्बर हँसता आता,
यूं ही वर्ष पूरा हो जाता।

सौरभ कुमार, बी.एससी. (पीसीएम)
द्वितीय सेमेस्टर

शहीद का पत्र माँ के नाम

माँ तुम्हारा लाडला रण में अभी घायल हुआ,
पर देख उसकी सूरत खुद शत्रु भी कायल हुआ।
रक्त की होली रचाकर मैं प्रलंयकर दिख रहा हूं,
माँ उसी शोणित से तुमको पत्र अंतिम लिख रहा हूं।
युद्ध भीषण था मगर न इंच भी पीछे हटा हूं,
माँ तुम्हारी थी शपथ, मैं आज इंचों से कटा हूं।
एक गोली वक्ष पर कुछ देर पहले ही लगी है,
माँ कसम दी थी जो तुमने, आज मैंने पूर्ण की है।
छा रहा है सामने लो आंखों के आगे अंधेरा,
पर उसी में दिख रहा है, माँ मुझे नूतन सवेरा।
कह रहे हैं शत्रु भी मैं जिस तरह रौंदा हुआ हूं,
लग रहा है शेरनी की कोख से पैदा हुआ हूं।
यह न सोचे माँ कि चिर नींद लेने जा रहा हूं,
माँ तुम्हारी कोख से फिर जन्म लेने आ रहा हूं।

विष्णु क्षेत्री, बी.एससी. (पीसीएम) प्रथम वर्ष

August Visitors

A good beginning is half the work done

National Seminar

Book Release

Most Welcome

Knock at the door you'll be rewarded!

A united team has every chance of winning the game

A good laugh is sunshine in a house

कैप्सन

Many Miles to go...!

MoU signed between Swami Ram Himalayan University and Doiwala College

Sports
We march on...!

Activities

Not destruction but assimilation is our motto!

छात्रसंघ सदस्य

2017-18

अंशुल कठैत
2017-18 अध्यक्ष

मीनाक्षी
उपाध्यक्ष

गौतम नेगी
महासचिव

दिलीप मध्देशिया
सहसचिव

रश्मि
कोषाध्यक्ष

हरविन्दर सिंह
वि.वि. प्रतिनिधि

पूजा
छात्रा प्रतिनिधि

2018-19

निशान्त मिश्र
2018-19 अध्यक्ष

Photographically Yours

सुरेखा राणा
उपाध्यक्ष

पंकज कुमार
महासचिव

मोहित कक्कड़
सहसचिव

निधि शर्मा
कोषाध्यक्ष

विक्रांत
वि.वि. प्रतिनिधि

सिमरन
छात्रा प्रतिनिधि

2019-20

अभिषेक पुरी
2019-20 अध्यक्ष

कुनाल सिल्सवाल
उपाध्यक्ष

विशाल
महासचिव

शिवम कोहली
सहसचिव

अम्बिका चौहान
कोषाध्यक्ष

आरती चौहान
वि.वि. प्रतिनिधि

Acquire Skill and Knowledge through MOOCs

Prof. (Dr) D. C. Nainwal
Principal

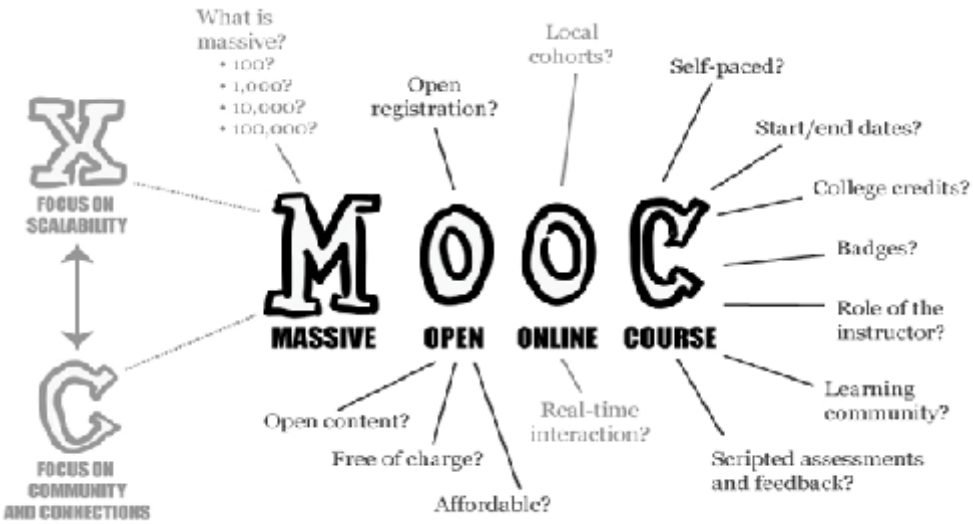

Massive open online courses (MOOCs) are an excellent way to develop a wide range of skills and knowledge that may help the students and early-career learners in particular. MOOCs are a good way to explore new areas while students figuring out how their career will take shape. Good career management requires continual learning and development. MOOCs not only keep your skills and knowledge fresh, they may also help you move up more quickly. Coursework through MOOCs will definitely boost the confidence at work. Confidence may translate into new opportunities and may ultimately lead to promotion. MOOCs are online courses available for anyone to enroll. MOOCs provide an affordable and flexible way to learn new skills for advancement of the career. There are number of platforms which provides online courses of skill development. Coursera, edX, Udacity, Swayam, Khan Academy, Udemy, Canvas, Open2study, etc are some the leading MOOC providers. e-PG Pathshala is an initiative of the MHRD under its National Mission on Education through ICT (NME-ICT) being executed by the UGC. It provides e- books,(e-Adhyayan) for the Post-Graduate Courses, e-Pathya (Offline Access) and also facilitate Online Courses UGC-MOOCs.

SWAYAM

Study Webs of Active–Learning for Young Aspiring Minds (SWAYAM) is a program initiated by Government of India as national MOOC platform , designed to achieve the three cardinal principles of India's Education Policy: access, equity and quality. It offers over 2,150 courses. One aspect that sets it apart from other providers is that it allows students in India to earn academic credit online. Since the platform was launched in 2017, over 10 million learners have taken courses on SWAYAM. Courses delivered through SWAYAM are available free of cost to the learners, however learners wanting a SWAYAM certificate should register for the final proctored exams that come at a fee and attend in-person at designated centres on specified dates. Eligibility for the certificate will be announced on the course page and learners will get certificates only if this criteria is matched. Universities/colleges approving credit transfer for these courses can use the marks/certificate obtained in these courses for the same.In order to ensure that best quality content is produced and delivered, nine National Coordinators have been appointed. They are - AICTE (All India Council for Technical Education) for self-paced and international courses; NPTEL (National Programme on Technology Enhanced Learning) for Engineering ; UGC (University Grants Commission) for non technical post-graduation education ; CEC (Consortium for Educational Communication) for under-graduate education; NCERT (National Council of Educational Research and Training) for school education; NIOS (National Institute of Open Schooling) for school education ; IGNOU (Indira Gandhi National Open University) for out-of-school students ; IIMB (Indian Institute of Management, Bangalore) for management studies and NITTTR (National Institute of Technical Teachers Training and Research) for Teacher Training program.

Number of Subjects under SWAYAM courses are- Humanities (47), Programming (19), Computer Science (38), Engineering (155), Data Science (7), Business (78), Science (108), Health & Medicine

(16), Social Sciences (54), Education & Teaching (24), Art & Design (12), Mathematics (34) and Personal Development (10)

Skill Development

While hard skills teach us what to do, soft skills tell us how to apply our hard skills in a social environment. The focus of the course is to develop a wide variety of soft skills starting from communication, to working in different environments, developing emotional sensitivity, learning creative and critical decision making, developing awareness of how to work with and negotiate with people and to resolve stress and conflict in ourselves and others. The uniqueness of the course lies in how a wide range of relevant issues are raised, relevant skills discussed and tips for integration provided in order to make us effective in workplace and social environments. The key areas addressed are conversation skills, group skills, persuasion skills, presentation skills, critical and creative thinking, emotional skills, positive thinking and vocational skills.

Skill India is an initiative of the Government of India which has been launched to empower the youth of the country with skill sets which make them more employable and more productive in their work environment. Our National Skill Mission is chaired by the Hon'ble Prime Minister, Shri Narendra Modi himself. The National Skill Development Agency (NSDA), an autonomous body, (registered as a Society under the Society's Registration Act 1860) was created with the mandate to co-ordinate and harmonize the skill development activities in the country, is part of the Ministry of Skill Development & Entrepreneurship (MSDE). The National Skill Development Corporation India (NSDC) was setup as a one of its kind, Public Private Partnership Company with the primary mandate of catalyzing the skills landscape in India.

The Directorate General of Training (DGT) consists of the Directorate of Training and Directorate of Apprentice Training. This includes a network of Industrial Training Institutes (ITIs) in States; National Skills Training Institutes (NSTIs), National Skills Training Institutes for Women (NSTI-W) and other central institutes. A number of training programmes catering to students, trainers and industry requirements are being run through this network. The building blocks for vocational training in the country - Industrial Training Institutes - play a vital role in the economy by providing skilled

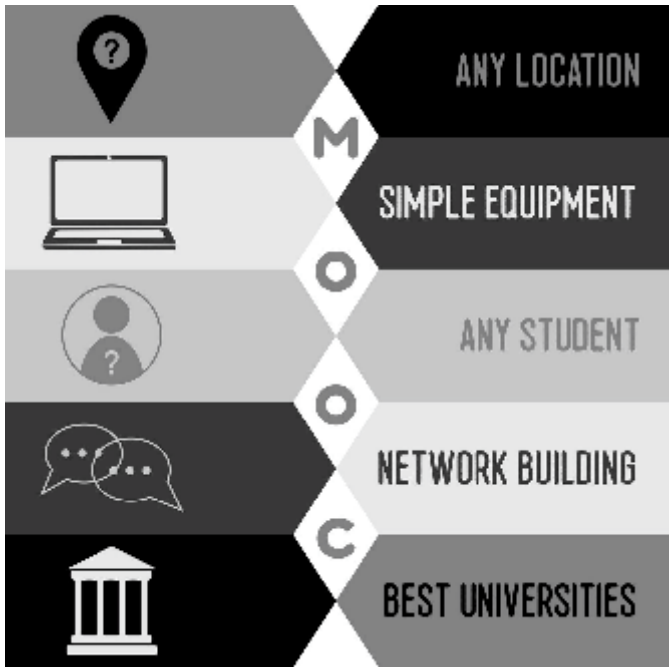

manpower in different sectors with varying levels of expertise. ITIs are affiliated by National Council for Vocational Training (NCVT).

India is a country today with 65% of its youth in the working age group. If ever there is a way to reap this demographic advantage, it has to be through skill development of the youth so that they add not only to their personal growth, but to the country's economic growth as well.

Skill India offers courses across 40 sectors in the country which are aligned to the standards recognised by both, the industry and the government under the National Skill Qualification Framework. The courses help a person focus on practical delivery of work and help him enhance his technical expertise so that he is ready for day one of his job and companies don't have to invest into training him for his job profile.

The Skill Mission launched by the Prime Minister on 15 July 2015, has gathered tremendous steam under the guidance of Shri Dharmendra Pradhan, Minister for Skill Development and Entrepreneurship and Shri Anant kumar Hegde, Minister of State, MSDE. More than one crore youth join the Skill India mission annually.

For the first time since India's independence, a Ministry for Skill Development & Entrepreneurship (MSDE) has been formed to focus on enhancing employability of the youth through skill development. The skill ecosystem in India, is seeing some great reforms and policy interventions which is reinvigorating and re-energising the country's

workforce today; and is preparing the youth for job and growth opportunities in the international market. The Hon'ble Prime Minister's flagship scheme, Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY) alone, has till date seen close to 50 lakh people get skilled and prepared for a new successful India. MSDE also recognises and certifies skills acquired through informal means through its Recognition of Prior Learning (RPL) program under PMKVY, bringing about a major shift from unorganised sector to an organised economy. So far more than 10 lacs people have been certified and formally recognised under the programs.

Skill India harbors responsibility for ensuring implementation of Common norms across all skill development programs in the country so that they are all standardized and aligned to one object. The ITI ecosystem has also been brought under Skill India for garnering better results in vocational education and training. The Ministry has also actively made comprehensive reforms to the Apprentices Act 1961, where maximum control has been given to the private sector so that the industry standards are maintained as per market requirement. More regulatory rights have been given to the industry where they can even set the target for apprentices that they require. This is a big opportunity that industry should leverage and benefit. MSDE also introduced a scheme called National Apprenticeship Promotion Scheme (NAPS) in August 2016 to promote this most sustainable model of skill development and industry connect. Under this scheme, the Government of India provides financial benefits for apprenticeship. More than 7 lakh apprenticeship trainings have been conducted so far.

MSDE has also introduced the Pradhan Mantri Yuva Yojana (PM-YUVA) which aims to educate and equip potential and early stage entrepreneurs and catalyse a cultural shift to support aspiring entrepreneurs. The candidates are linked to the MUDRA scheme of the government to get assistance in initial business funding.

Skill India is no more just limited to the domestic market but is actively engaging with countries across the world to promote cross geographical exposure and opportunities in the international market. India is a young nation and a skilled workforce will be able to certainly cater to not only the market demand within the country but also the global market demands. The success of a nation always depends on the success of its youth and Skill India is certain to bring a lot of advantage and opportunities for these young Indians. The time is not far when India will evolve into a skilled society where there is prosperity and dignity for all. Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana (PMKVY) is the flagship scheme of the Ministry of Skill Development & Entrepreneurship (MSDE). The objective of this Skill Certification Scheme is to enable a large number of Indian youth to take up industry-relevant skill training that will help them in securing a better livelihood. Individuals with prior learning experience or skills will also be assessed and certified under Recognition of Prior Learning (RPL). Under this Scheme, Training and Assessment fees are completely paid by the Government.

Skills Acquisition and Knowledge Awareness for Livelihood Promotion (SANKALP) project aims to implement the mandate of the National Skill Development Mission (NSDM), which was launched by Ministry of Skill Development & Entrepreneurship, through its core sub-missions. The project will be implemented in mission mode through World Bank support and is aligned with the overall objectives of the NSDM. The main objectives of the project include strengthening institutional mechanisms at both national and state levels, building a pool of quality trainers and assessors, creating convergence among all skill training activities at the state level, establishing robust monitoring and evaluation system for skill training programs, providing access to skill training opportunities to the disadvantaged sections and most importantly supplement the Make in India initiative by catering to the skill requirements in relevant manufacturing sectors. The project will focus on the overall skilling ecosystem covering both Central (MSD, NSDA and NSDC) and State agencies, and outcomes will be measured through Disbursement Linked Indicators (DLIs) agreed between MSDE and the Bank. A DLI verification protocol has also been established to measure DLIs on a periodic basis.

Free to Air Curriculum based Courses

The SWAYAM PRABHA is a group of 32 DTH channels to telecast 24 hours high-quality educational programs using the GSAT-15 satellite. Every day, there will be new content for at least (4) hours which would be repeated 5 more times in a day, allowing the students to choose the time of their convenience. The contents are provided by NPTEL, IITs, UGC, CEC, IGNOU, NCERT and NIOS. The INFLIBNET Centre maintains the web portal.

DTH channels cover curriculum-based course of Higher Education contents at post-graduate and under-graduate level covering diverse disciplines such as arts, science, commerce, performing arts, social sciences and humanities, engineering, technology, law, medicine, agriculture, etc. All courses would be certification-ready in their detailed offering through SWAYAM, the platform being developed for offering MOOCs courses. Other than the courses on telecast, One can go through the courses of ones interest uploaded in archives of each channels.. The contents of the channels are as-

Channel 01: VAGEESH: CEC/UGC: Humanities-1, Language and Literature

Channel 02: SANSKRITI: CEC/UGC: Humanities- 2, History, Culture & Philosophy

Channel 03: PRABODH: CEC/UGC: Social Science -1, Social & Behavioral Sciences

Channel 04: SAARASWAT: CEC/UGC: Social Science - 2, Education, Psychology, Home Science and related subjects

Channel 05: PRABANDHAN: CEC/UGC: Social Science - 3, Management, Library Science, Information Science and related subjects

Channel 06: VIDHIK: CEC/UGC: Social Science - 4, Law, Legal Studies, Human Rights and related subjects

Channel 07: KAUTILYA: CEC/UGC: Economics, Commerce and Finance

Channel 08: ARYABHATT: CEC/UGC: Physical sciences, Mathematics, Physics, Chemistry and related Subjects

Channel 09: SPANDAN: CEC/UGC: Life Sciences, Botany, Zoology, Bio-Science and related subjects

Channel 10: DAKSH: CEC/UGC: Applied Sciences, Allied Physical and Chemical sciences and related subjects

Channels 11 to 18 are Managed by NPTEL.

Channels 19 -22 are managed for high School students by IIT Delhi and is called IIT PAL.

Channels 23 to 26 are managed by IGNOU New Delhi.

Channels 27 ,28 and 30 are managed by the NIOS, New Delhi

Channel 29: UGC-INFLIBNET (PG Subject's & YOGA)

Channel 31: NCERT: School and Teacher Education

Channel 32: IGNOU and NIOS: Teacher Education

Sector Skill Councils (SSC)

Sector Skill Councils are set up as autonomous industry-led bodies by NSDC. They create Occupational Standards and Qualification bodies, develop competency framework, conduct Train the Trainer Programs, conduct skill gap studies and Assess and Certify trainees on the curriculum aligned to National Occupational Standards developed by them. As on date 37 Sector Skill Councils are operational. There are over 600 Corporate Representatives in the Governing Councils of these SSCs. Some important skill development sectors are- Beauty & Wellness Sector Skill Council, Banking, financial services and insurance (BFSC), Handicraft and Carpet sector, Logistic sector, Agriculture Sector Skill Council (ASCI), Media and Entertainment Skill Council (MESC), Tourism and Hospitality, Sports and Fitness sector, etc. Uttarakhand Skill Development Mission (UKSDM) provides free skill development training to youth in 48 sectors with the objective to skill the unskilled youth of the state. One can registered oneself for skill development cum training programs.

Few will have the greatness to bend history itself.
But each of us can work to change a small portion of events.
And in total of those acts will be written
The history of this generation.

-Robert F. Kennedy

Folk-Consciousness and its mystical engagement with Landscape, Myths and the element of Magic Realism in the Hindi stories of Naveen Kumar Naithani

Pallavi Mishra
Asst. Proessor

Ontopology, that signifies the rootedness of being in a particular place emphasizes upon the importance of location, geography and sense of place in the "construction" of self. Bakhtin's chronotope links the self with its temporal-geographical location. The "idyllic chronotope" for Bakhtin is where human life is conjoined to all other forms of life. Bakhtin therefore emphasized the interconnectedness of the life-forms in a specific locale. In the Hindi stories of Naveen Kumar Naithani, who is a story-teller weaving folk-lore into contemporary milieu there is a strong mystical tradition of relatedness and interdependence with the place and its inhabitants. In the story Paaras, the narrator introduces Sourie as 'an enclosed and discomfited world' where only stories grew to take on varied shapes. The inhabitants of Sourie would amass its history in their stories or destroy its history in the temporality of stories. Meanwhile, geography and landscape were the only truth of Sourie and they would relate their 'Being' with the land of Sourie." The stories Paaras, Chadhai, Zakhan, Mundari Budhiya ka Darwaza, Chor-Ghatdha and Chaand-Patthar portray the link that a primitive place and people nurture both in memories, stories and in person. Sourie is a place that is non-elemental, belonging solely to writer's imagination, his own discovery; yet Sourie does exist in the minds of men, in its folk-consciousness. It is an entity, solid, vivid, inerasable and unforgettable that finds a space in stories and folk-tales. The oral-narratives begin and end with Sourie bearing its untraceable mark upon them.

Zakhan is the river that flows in the imagination of Sourie, a river of stones that comes in a sweep and goes away without any previous warning. Zakhan weaves a tapestry of tales in the narratives of Sourie by being a mystical river that is powerful, destructive yet protects and yields. Without it, Sourie would turn lifeless; deprived of its dreams, memories and history. Zakhan appears on the scene more like a pre-historic creature than a river and is intuitively metaphorized by the inhabitants for their own near-extinct state. In the collective memory of the people, Zakhan is illusive, distract and distraught that fills them with fear of the brutal-severing of their historical and emotional ties with their land, forests, rivers. When nature is conceived as a subject, rather than an object that can be consumed and used by humans, then it works in a different position with relation to humans. It is imbued with its own acting force, an attribute which displaces it from human control and therefore, from the object position. (Journal of Contemporary Thought P. 10)

In the stories Chadhai, Chor- Ghatdha and Paaras, Mundari Budhiya ka Darwaza it is quite evident that the real distance to be travelled is psychological rather physical. It is the distance which separates the traveller from an incomprehensible situation, mentality or a configuration of sensibility that apparently appears strange. Chadhai or the act of ascension through landscape is in reality, an effort towards personal exploration. There is a tussle between man's sense of selfhood which is mandatory as a fixed mark upon his community and his strong urge to dissolve himself in the landscape. The high terrain that needs to be crossed over seems to represent the speaker; old Watchman Ram Prasad man seeming to possess natural qualities represents timelessness of spirit of man. It is not the nature that is personified; but the man. The number of years he has lived remains a mystery and he is engrossed in his usual act of accession till the end of story. Personifying time, nature and life all at once he listens to a few sincere voices that come to Sourie asking for his whereabouts. He wants to call back, retrieve all those who want to know him and finds his voice unable to reach the seekers and strike him back. This feeling for the primitive is "best defined as dissolution of subject-object divisions so radical that one experiences the sensation of merging with the universe. (Primitive Passions. P. 05).

If travel is a metaphor for a journey inside one's own psyche; it becomes both a physical place and an idea in itself. With time, it becomes an attractive destination for exploration of emotional and primitive side and Sourie is one such destination. Interest in the "Other" is really interest in oneself. The need to travel is both a need to get away from something, and a need to get back to oneself. Travelling to primitive places reveals a desire to probe the unconscious. As Torgovnick states:

"Primitivism is the utopian desire to go back and recover irreducible features of the psyche, body, land, and community- to reinhabit core experiences (P.5). Similarly, the journey of the father and Son towards Sourie in the story Chor-Ghatadha, is a journey that is intra-generational that would carry with it stories down the memory-lane. Search and apprehensions of the father is a process that may get transmuted to the generations to follow as mysticism relies upon personal experiences. Becoming nostalgic of the past, the watchman Ram Prasad of the story Chadhai, wants to find out of whatever happened to his life when he was out of Sourie and the circumstances that forced his return. The self-exploration for Ram-Prasad seems unending as he sees the effect of his presence upon others and is uncertain of revealing the truths regarding him. Khojram's illusive search of the Paraas in the story Paaras is the search of self and selfhood or the precious search of an artist of himself. Whether his search ends in desired results or the stone or his happiness is inconclusive but the journey he undertakes is undoubtedly powerful, moving, poetic and mystical. The beauty and happiness that he comes across this journey is the delight that comes from intense feeling, lucid awareness, passion and energy, the happiness of reverie, of response to beauty and of the free imagination.

Detailing of the physical features of the place is intricate, elaborate and clear but that does not reduce it to mere impressions of the writer rather can be called as the visible truth of Sourie's remoteness and primitivism. The word Sourie in the vernacular language hints at a temporary space inside a house where women are confined during natal care. It is a place safe, secure, warm, away from outside gaze; where unnecessary intrusion is not allowed and is mostly a domain of a few chosen women of the house who are willing to serve and take care of the new-born and the mother. Thus, Sourie semantically signifies warmth that supports growth, new life and is simultaneously is a space brimming with memories that have a potential for growth, youth, strength and liveliness. Temporality is a character of Sourie where people stay back for a while, for a few days and then move on; mostly passers-by who are there for a while either in search of someone or going towards some other destination. Sourie encompasses 'more than geography because it is socially and psychologically constructed by what is 'known' from what is 'unknown'. Life in Sourie is intricately connected to its natural world as nature is experienced as intrinsic to its own being and so they are content with the limitations of place because of the deep connection that they share with it.

In Paaras, we come across an impatient community that eagerly awaits the birth of a girl-child in any of their home as absence of daughters in the community is perceived as a physical and social failure on their part. A village bereft of all the sacred innocence of daughters might be a place that is accursed for some wrong-doings of its inhabitants is the general belief that circulates in and around Sourie. The community is unable to partake in the ceremony of a daughter's marriage or in welcoming the arrival of grooms-party, would never care for or value their daughters in law is the common perception of those who live outside Sourie resulting in the young men in the village to live without the bliss of marriage and family. Bearing a girl-child is the wish of every expecting mother so that the village can see daughter-in-laws as well. One particular day, Sourie sees the birth of eleven sons which subsequently strengthened the folk- belief that their village is under some strange and unknown curse. Khojram is one of those boys born on that ill-fated day and this disabled young man nurtures in him a desire to possess gold that may materialize his marriage. The fear of not getting a girl for himself fills in him a stubborn urgency to own a Paraas –stone that could turn any piece of iron into gold. His search for Paraas stone leads him to interiors of the forests, to remote spaces and his onward journey into unknown recesses of forests is a pursuit for happiness. Khojram is a dreamer with his own share of imaginative pleasures that others do not have in their share and nevertheless are deprived of the enjoyment which is Khojram's sole possession. He is the happy few who value passion...who know how not to be dupes and yet prefer to be the victims of their illusions and who know above all that it is divine to be taken in by the beauty of one's dreams. With the theme of alienation, travel, exhaustion and collapsing dreams Sourie holds the reader back in the pathos of departure and arrival. While his physical disability is oppressive, Khojram engenders in him a spirit that has imprisoned itself in a desire to find a companion and love that would free him from his current state of pity and alienation.

The girl whom Khojram meets on his journey is found in a semi-conscious state within the 'boundary' of Sourie who delivers a daughter by the side of a brook that flows into Sourie; thus, turning Sourie into a much-acceptable sacrosanct space in the public memory. The folk-consciousness is relieved of the burden of being a cursed space sans daughters. The folks infer that the girl had been taken/ influenced by the supernatural Accheris who take young man or woman with them if they develop a liking for them. In the mythic stories of Sourie,

Accheris are a part of nature, are powerful, mysterious women of extreme beauty having an element of romance in them. The myth of Accheris and their involvement in the scene is consoling to the readers. For the Romantics, "Nature is seen ...to be consoling or morally uplifting, a kind of spiritual healer... Nature is invested with personality; human moods and moral impulses are seen reflected from it. To the people of Sourie, Sunaina, Khojram's beloved appears an Accheri who blessed Sourie by bearing a girl-child. The same Sunaina asks her grandfather if her grandmother was an Accheri; a question of which she doesn't need any answer; as Sourie is a mysterious land of beliefs and faith that does not care for answers. Accheris find a place in the shared stories and are beyond interrogation. Myth for mythic people, who live mythically, is never some detached story. Sunaina proves to be the Paaras-Stone for which Khojram continues his illusive search. In the story, Chor-Ghatdha, the writer emphatically points out that Sourie is not 'a land of curiousities' rather is 'a land of desires'. They have all answers to their questions ever since they start knowing their land closely.

Kamla Rani of Kamalkot in the story Chaand-Patthar, comes to Sourie to get treated by Vaidya Leeladhar. As per the writer, Kamalkot is a village that is off the official records. Though there are some names in the official files viz., Kamalpur, Kamaldhar, Kamalgadh the houses there are in ruins. The folkloric and vernacular elements of Sourie and these villages, undoubtedly, provide an alternative to the constructed or imposed "official" landscape or culture. The official landscape rarely accounts for local differences and seeks, rather, to unify and homogenize land/ culture/ people into a controllable cartographic panopticon. The vernacular landscape and Bakhtinian chronotope may perhaps be represented today in the genres of nature-writing and folklore as these are localized and refer continually to the place (setting) of the story. 'Few homes', 'a few people' that find a repeated mention in the stories suggest a binary between general/ particular, fictional/real. The mental conception of Sourie relates to scarcity, of fewness, where the balance between nature and men is harmonious and the effort towards its destabilization is not in. Like any place, Sourie is shown to have borders, boundaries, locations and associations and also like any space it has changed and eventually, the mental conception of it is construed by the memories of its folk. In the story Chaand-Patthar (Moon-Stone), the illusive moon-stone gets its name by the moon-shaped red-mark over its surface.

Whether the boundary of Sourie ends at this famous moon-stone or begins here is quite uncertain but the inhabitants have a sense of natural pride in it as they suggest every passerby to go and have a look of the Chaand-Patthar. Nature is no mere "backdrop" but a real character in the tales of and around these villages. The lives of the characters are inextricably linked to their spatial locations; while nostalgia is an ever-present memory in Sourie where every single region/ part of Sourie doesn't look as it looked somewhere in the past when in the folklorish imagination it had 'thirty houses'

Vaiya Leeladhar never goes out of Sourie for treatment of ailing people of neighboring areas. His practice of never going out is fixed which he follows adamantly. Practices, according to Foucoult undermine some forms of power and reorganize others. Practice can form the ground for resistance to domination or contribute to the reproduction of power-relations. Practices are generative- they have the capacity to generate new experiences of space, new interpretations of codes, and new experiences of self. Practices thus produce subjectivity; they enable one to transform one's way of being. (JCT P.09) Vaidya Leeladhar breaks his practice of not moving out which causes a grave accident and he goes away never to return. The denial of Kamla Rani to come to Sourie weighs heavily on his conscience as someone provokes it by saying that 'it is sinful for a Vaidya to not go out for treating his patients' and so he moves out to Kamalkot where he gets forgetful. Vaidya's practice of self around his space gets disoriented which results in his tragic end. Here, we find men's vexed relationship to space and bewildering ecological changes. The mystery of moonstone gets an imprint in the psyche of folks as they tend to inter-mingle the form of Kamla Rani with some Accheri who might have taken the Vaidya resulting in his death due to delirium. The language of the dream often uses complex images that have no apparent basis in reality. It may take recourse to images where there is no rational connection between language and reality. (P.68) Moon-Stone is one such image.

M.G. Vassanji argues "This reclamation of the past is the first serious act of writing. Having reclaimed it, having given himself a history, he liberates himself to write about the present (P.63-68). Chor- Ghatadha is a story that re-articulates the past through reclamation and deliberate memorialization. All cultures are contaminated, miscegenated with and by the cultures they come in contact with. The native's quest for originary moments invokes the image of lost glory/memory that is hidden somewhere and needs be re-visited as it is valuable and important. It

is an act not just of committing to memory, but a way of making 'real' their connections to home. It is therefore a memorealization, where collective histories enable a 'return' to space that they have not quite forgotten. In the father is the anxiety to assert and establish the 'original' story, however, uncertainty prevails. He has returned home with his son to seek the bygone. The line from Chor-Ghatadha, "Jis Patthar ke neeche ka patthar gir jaaye, woh patthar bhi gir jaata hai." (If the underlying rock dismantles and falls off, then the rock over it also falls off) suggests the need of roots, base which the succeeding generation could hold up to. The father recalls his "asafal yaatraen" (unsuccessful journeys) undertaken and reminds his son not to go in search of places as a tourist. "Shayad main sailani bankar ush jgah ko dhoondhne gaya tha. Tum bhi agar jao toh sailani bankar mat jao. Wahan hamari jadein hain. Humein un par asstha rakhni chahiye aur vishwas karna chahiye." (Those are the places where we belong to; we have our roots there. We have to engender belief and faith over those places.) The ritual of nostalgic story-telling happens in the stories Chor-Ghatadha and Chadhai and the intuitive and emotional responses of the folk-narratives are probably because of their closest proximity with nature. In attempting to re-engage the memory of Sourie, we are made to know of the unique characteristic of Sourie that the winds in its hills would erase the memories of the outside world, of all those places they visited when out of Sourie, the places that exist beyond the boundaries of Sourie. So, people do not remember anything that happened to them in the world outside rendering Sourie a territory uncontaminated by the world outside.

"I have come from Sourie", a voice declares in the story beginning of the story Mundari Budhiya Ka Darwaza. Which Sourie? the old woman Mundari asks without being astir from her Charpoy. "Sourie which is of Hari Da" is the answer that she gets from a passer-by. "Where are you headed to? "Towards Kaudsi" is the response that she gets and the writer tells that on that moment the doors are ajar with a sound. The sound appears to Mundari as some storm that has raged from Sourie. The door of Old Woman Sourie encompasses memories; it is the threshold of past and present. The old woman deliberately hides her face full of wrinkles from the light of match-stick that the passer-by strikes or she is someone whom nobody has seen. Another passer-by with a new name comes at her door and on being asked says that he has come from the Sourie of the watchman Ram Prasad. This man in a similar way urges the old woman Mundari to make some light as it is dark inside her house. She makes a short laugh and answers that there is enough light outside. With the same noise the door opens and we come to know that this visitor is from the Sourie where Gokul, the Carpenter lived and that he too is headed towards Kaudsi. The sound of the doors and that of burning match-sticks have an impact over the scene for she seems to organize herself on the model of those sounds. Sound is the primordial substance of the world. At the end, the old woman Sourie hears a visitor speaking to her in her dreams that he has come from the Sourie that belongs to the old woman Mundari. Sourie, a space where children are delivered and nurtured during the initial period of their birth is also a space where the past and the present mingle to become one. Whether Sourie is a single, definite space or a psychological space remains undefined. Sourie that belongs to so many people who live in different time-frames cannot be the one place. The placement of Sourie organizes the wilderness around the house of Mundari. Mysticism deepens in the story Mundari Budhiya ka darwaza as in it the sense of timelessness and oneness of one and all is an implicit idea.

Depletion of forest and its conservation is a concern that is apparent. In the story Chadhai, the Watchman gets nostalgic for a Sourie that had thirty houses and laments that they are reduced to just six. He hates limiting Sourie in figures and numbers and so when inquired about the distance of it he minces words to say that it is quite far. The degradation of forest makes him to conclude that the decaying forest is also afflicted by tuberculosis as is the diseased young boy Sitaab Singh. The brook that passes by Sourie doesn't flow with the same vigour and force as it used to flow somewhere in the past and the Moon-Stone's height too has declined ever since. Alluding to landscape's power to renew, Kuo Hsi, an eleventh century Chinese master of landscapes writes, "the din of the dusty world and the locked-in-ness of human habitations are what human nature habitually abhors; while, on the contrary, haze, mist and the haunting spirits of the mountains are what human nature seeks." (P.129) Moving away from Sourie, Khojram of the story Paaras is into forests of which the writer describes that they inadvertently attack the mind of man. The decaying leaves and moist earth under deadened trees have in them a moist smell that overpowers the consciousness of men. The forest is also seen as a place of refuge and renewal, of safety and escape or a sacred place for those imprisoned or oppressed. Leeldhar Vaidya, in the story Chaand-Patthar urges the inhabitants of Sourie to to take from the forest only as much is needed. The forest would stop giving anything if too much would be extracted from it. In the creation of a place, the idea of a self that belongs there becomes mapped onto a location,

extending outward from the body and investing location with knowledge and memory: "place...is home, the locus of memories and the means of gaining a livelihood." (Tuan, Topophilia, P. 93).

The boundaries of a place are the boundaries of the known; and so the circumscribed and bordered place is familiar, comfortable. The people of Sourie would decipher that Leeladhar Vaidhya never went out of Sourie as every kind of herb that was needed for cure was available in the thick forest that existed once where sadly, a single Saal tree stands. The change over time has eroded the landscape of its physical nature and mystery both. The houses in ruins are the markings of failed habitation and dominance. The remains have disheartened his speakers, be it the old woman Mundari, or the father in the story Chor-Ghatadha or the Old Watchman in Chadhai. .Being distinct and uncommon, the Chaand-Patthar renders an identity and simultaneously pervades the memory of the folk. To the local people a sense of place is promoted not only by their settlement's physical circumspection in space; an awareness of other settlements and rivalry with them significantly enhances the feeling of uniqueness and of identity. Humans identifying a place as relevant to their identity cause in them an urge to protect it from exploitation.

Place is known and concrete, something that exists in the abstract expanse of space, but when place is marked in relation to space, this attention to space necessarily shifts the poetic setting from place to space. The refiguring of space, which goes beyond Bryson's space-consciousness, transforms both place and person on the field of space; both become geographically, culturally and socially bounded entities that operate equally within the wild plain of space. The only thing that the people are conscious of is their sense of place. Sourie is not a place; it is a character, an entity, destiny and identity of the folk that belong here and we come across the old woman's burden of memory engaging with her contemporary reality. Mysticism and history are juxtaposed together to provide the readers with a space of communication.

The folk self-consciousness as shown in Mundari Budhiya ka Darwaza, Sourie, Chaand-Patthar, Chor-Ghatdha, Chadhai is firmly grounded in community and its belief-systems which form a kind of continuum on which the past, present and future secede their distinctiveness to mingle into one composite consciousness. All these stories are extended flashback sequences that merge with the immediate present. The magic realism in the stories has rested in a great deal of indigenous beliefs, superstitions, rumours and myths alongside 'real' events, so that the line between 'historical' fact and fiction breaks down. The wondrous and the supernatural mix with the concrete and real, and the arrangement of these worlds is magic realism's 'seemiotics', that focuses on the 'seeming', appearance, illusion, delirium, blurring the line between reality and illusion.(P.236) Women occupy a precarious place in their relationship to both the land and their male cohabitants. Be it the Accheris or Sunaina, the beloved of Khojram or Kamla Rani in the story Chaand-Patthar, all these women live in the stories as elemental forces, acquiring a supernatural edge. Here, humans are not the dominant species, but one species with particular interests set among other species and environments with their particular interests.

Traditional mythic societies have all kinds of hierarchical power and authority, relations, rules, and taboos to ensure that their sacred myths are put into practice in the correct manner, as instructed by the mythic accounts and by those who have privileged access to them. Myth may appear as a vehicle of hegemonic control yet it serves to contain and condition the responses of the folk. Folk, though different from the elite survives and resists change. They share the commonality; the myths and illusive realities of Sourie, connect themselves to the aesthetics of wilderness and amazement and relish the romance that the stories have to offer. The folk-culture as shown in the landscape of Sourie comprises of learned habits, beliefs and expressions and thus is a shared experience.

Corona Viruses

Prof. S.P. Sati,
Dept. of Chemistry

Viruses are microscopic organism that exists almost everywhere on the earth. They can infect animals, plants, fungi and even bacteria. They consist of genetic material RNA or DNA surrounded by a coat of protein or glycol-protein. Viruses cannot replicate without a host so they are classified as parasite. Once inside the host cell it takes over, the cell is reprogrammed to produce the virus instead of doing what it was designated to do before. The virus is replicated thousand of time in that cell. The cell burst open and multitude of viruses move around the body infecting other cells. This can happen within a few hours. Virus survives through mutation. Slight mutation with a virus means our immune system might not recognised it. That means the muted virus copy can infect a new cell making another thousand copy new mutations without our immune system trying to stop it. The mutation results in a strain of virus. This happen the gene material chopped up in a little pieces. Let's say you caught two different strains of the flu at once from two different people. A cell in your body could get infected with these two different strains. The strain can jumble up within the host cell and mix and match their little pieces of genetic material to create a new different strain. The reassortant can spread quickly. Nobody's immune system recognise the new virus strain so it is able to spread rapidly. This is how a flu pandemic occur.

There is no cure for a virus but vaccination can prevent them from spreading. They can spread through:

- Touch
- Exchange of saliva, coughing or sneezing
- Sexual contact
- Contaminated food or water
- Insect that carry them from one person to another

Some viruses can live on an object for sometime so if a person touches an item with a virus of their hands the next person pick up that virus by touching same object. The object is known as **formite**.

The name coronavirus comes from the crown like projection on their surfaces. Corona in Latin means hello or crown. Among humans coronavirus infection most often occur during the winter months and early spring. Coronavirus are type of viruses that

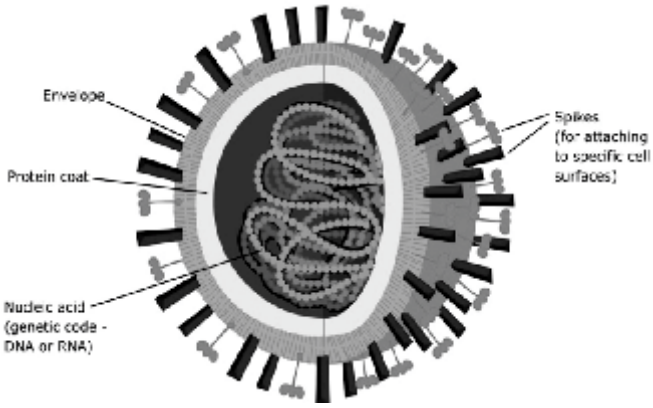

typically affect the respiratory tracts of birds, mammals including humans associated with common, cold, bronchitis and pneumonia. These viruses are typically responsible for common cold more than serious diseases. First coronavirus was isolated in 1937. This virus is responsible for an infection bronchitis virus in birds that they had the ability to devastate poultry stocks.

Scientist first found evidence of human coronaviruses (HCoV) in the 1960,s in the nose of the people with the common cold. Currently there are seven type of coronaviruses recognised that infect humans.

Common types-

HCoV 229E (alpha coronavirus)
HCoV NL-63 (alpha coronavirus)
HCoV OC-43 (beta coronavirus)
HCoV-HKU1 (beta coronavirus)

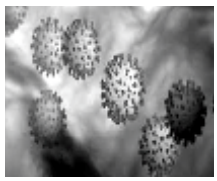

Rare strains that causes more severe complication includes – MERS-CoV, which causes Middle East Respiratory Syndrome (MERS) and SARS-CoV, the responsible for Severe Acute Respiratory Syndrome(SARS). In 2019 a new a strain called SARS-CoV-2 started circulating, causing the disease COVID-19.

SARS:

SARS is contagious disease that developed after infection by SARS-CoV coronavirus. During November 2002 the virus started in the Guangdong province in the Southern China and identified in February 2003. From there it rapidly spread around the world causing infection in more than 24

countries. SAARS-CoV can infect both the upper and lower respiratory tracts. At its most advanced stage SARS causes failure of lungs, heart or liver.

Authorities eventually controlled in July 2003 however it can still occur after infection with SARS-CoV. From November 2002 to July 2003 there were 8098 cases worldwide and 774 deaths.

MERS:

MERS spread due to coronavirus known as MERS-CoV. Scientists first recognised this severe respiratory illness in 2012 after it surfaced in Saudi Arabia. Since then it has spread to other countries. MERS was previously known as Novel Coronavirus. It is probably started in an animal. It has found in camel and bat. It is a flu like illness with signs and symptoms of pneumonia. MERS- CoV is thought to be a zoonotic virus exposure to camels or camel products appears to be the main source of human infection.

SARS-CoV-2 (COVID-19):

Most recently a new coronavirus novel coronavirus COVID-19 outbreak in Wuhan China that has now reached other countries. In 2019, the center for disease control and prevention (CDC) started monitoring the outbreak of new coronaviruses SARS-CoV-2 which caused the respiratory illness known as COVID-19. The first people who were affected with COVID-19 has links to an animal and sea food market. This fact suggested that animal initially transmitted the virus to humans. However people with more recent diagnosis had no connection with or exposure to the market, confirming that humans can pass the virus to each other. The world organisation (WHO) have declared a public health emergency and global pandemic to COVID-19.

Yongyi and Xiao Lihua of South China Agricultural University in Guangzhou announced in a press conference that they might have indentified the Pangolin as the source of virus. The two researchers used genomic sequencing to compare the DNA of the coronaviruses in humans with that in animals and found a 99% match with Pangolins.

To infect a cell, coronaviruses use a spike protein that bind to the cell membrane, a process that activated by specific cell enzymes. These host cell enzymes called furin. Furin is found in lots of human tissues including the lungs, liver and small intestine which means that the virus has the potential to attack multiple organs. The COVID-19 can survive for several hours in aerosolized form and for up to 3 days on plastic and steel surfaces.

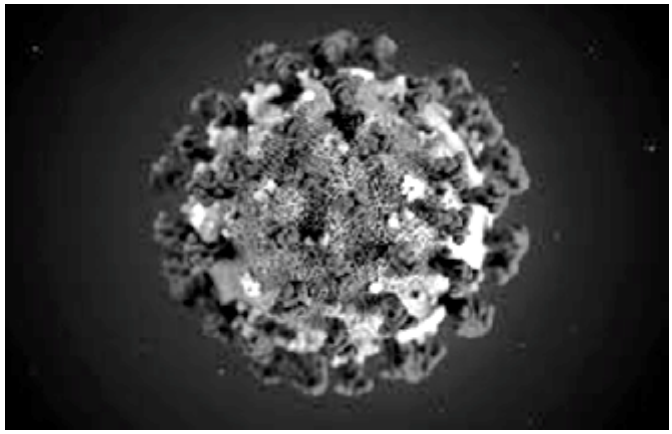

How COVID-19 is spread?

Like the flu COVID-19 is spread primarily via respiratory droplets – little blobs of liquids released as someone cough, sneezes or talks. Viruses contained in these droplets can infect other people via the eyes nose or mouth. Because respiratory droplets are too heavy to remain suspended in the air, direct person to person transmission normally happens when people are in close contact within about 6 feet to each other. It might also be possible for the virus to be transferred via surfaces (formite) contaminated by the respiratory droplets or other secretion from an infected person. There is no evidence to suggest COVID-19 is spread through air born transmission.

Symptoms of COVID-19:

Signs and symptoms of COVID-19 may appear two to fourteen days after exposure and can include:-

- Fever
- Cough
- Difficulty in breathing
- Tiredness
- Aches
- Runny nose
- Sore throat

The severity of COVID-19 symptoms can range very mild to severe. Some people have no symptoms. People who are older or have existing chronic medical condition such as heart or lung disease or diabetes may be at high risk of serious illness.

Complications:

- Pneumonia in both lungs
- Organ failure in several organs
- Death
- Making contact with the surface or object that has the virus (Formite) and then touching the eyes or mouth.

Prevention from COVID-19 transmission:

Although there is no vaccine available to prevent infection with this new coronavirus, WHO and CDC recommended following these precaution for avoiding COVID-19.

- Avoid large events and mass gatherings.
- To prevent transmission, people should stay at home and rest while symptoms are active.
- Avoid close contact (about 6 feet) with anyone who is sick or has symptoms.
- Wash your hands often with soap and water for at least 20 seconds or use an alcohol based sanitizer that contains at least 60% alcohol.
- Covering the mouth and nose with a tissue, handkerchief while coughing or sneezing.
- It is important to dispose any tissues after use.
- Avoid touching your eyes, nose and mouth if your hand are not clean.
- Avoid sharing dishes, clothes, bedding and other household items if you are sick.
- Clean and disinfect surfaces you often touch on a daily basis.
- Avoid eating raw or under cooked meat.

Education makes people easy to Lead, but difficult to drive; easy to govern, but impossible to enslave.

-Henry Brougham

Junk Food: Detrimental to Mental Health

Dr. Vandana Gaur,
Assistant Professor, Department of Psychology

India with its rich heritage of food and recipes has the tradition of preparing foods by deep frying in fats. This situation is getting complicated by emerging fast food culture in all section of society primarily due to them being readily available, easy to access, taste, marketing strategies and cafeteria culture. Therefore it becomes imperative to introspect about fast food or junk food consumption. High consumption of fast food has been reported in school going children and this is quite substantial in college and universities students. In spite of the fact that a significant proportion of population are aware about adverse consequences of fast food consumption. Fast food consumption is rising in India across all income categories and this is contributing significantly to rising trend of non-communicable diseases (NCDs)in this country.

The junk food includes almost all unhealthy foods in terms of their fat, sugar, salt content, or content of harmful non-nutritional substances, or having potential of being acceptable and well known to general public, because of it being closely linked to the popular word 'junk' in relation to unhealthy foods. Junk food is not only harmful for your metabolism but it also increase the risk of psychological problem irrespective of personal characteristics such as age ,gender, education and marital status, claims the study which was published in the International journal of food science and nutrition.

High sugar consumption was found to be linked with bipolar -disorder, while fried foods or processed grain were associated with depression, reported Hindustan Times.

"Perhaps the time has come for us to take a closer look at the role of diet in mental health because it could be that healthy diet choices contribute to mental health." said lead author Jim E Banta, Associate Professor at Loma Linda University in California.

"A pro-inflammatory diet can reduce systemic inflammation and this can directly increase the risk of depression" said Lassale, who is based at the department of epidemiology and public health at university college London. The research showed that poor diet has a likely causal link with the onset of

depression and not merely an association.

Junk food is linked to both moderate and severe psychological distress. Increased sugar consumption has been found to be associated with bipolar disorder, for example, consumption of foods that have been fried or contain high amounts of sugar and processed grains have been linked with depression. The study, published Feb 16 in the International journal of food sciences and nutrition, revealed that California adults who consumed more unhealthy food were also more likely to report symptom of either moderate or severe psychological distress than their peers who consume a healthier diet.

According to a study conducted by the Institute of Health Metrics and Evaluation (IHME) in Seattle, eating bad quality food is increasing the mortality rate at a higher speed than smoking. Your addiction to junk is actually cutting short your life and compromising on your life style and health. Not that junk food was ever considered a healthy food option to have ,experts ,have now pointed out that all those hours of binge -eating, mindless snacking and mid nigh craving for chips, colas, donuts and chocolate on a regular basis is one of the biggest threats mankind in facing and poses a grave threat to health living. In the absence of a healthy diet, what you risk developing is high-risk cardiac complication, heart attacks, and type -2 diabetes

How the Foods you eat affect how you feel

Serotonin is a neurotransmitter that helps regulate sleep and appetite, mediate moods, and inhibit pain. Since about 95% of your serotonin is produced in your gastrointestinal tract, and your gastrointestinal

tract is lined with a hundred million nerve cell, or neurons, it makes sense that the inner working of your digestive system don't just help you digest food, but also guide your emotions. What's more ,the function of these neurons-and the production of neurotransmitter like serotonin-is highly influenced by the billions of good bacteria that make up your intestine and ensure they provide a strong barrier against toxins and bad bacteria ;they limit inflammation; they improve how well you absorb nutrients from your food,and they activate neural pathways that travel directly between the gut and the brain.

Evidence shows that fast food consumers are prone to adverse psychological behavior .Among many studies ,showed that those with high scores on a 'junk/convenient 'eating pattern were more likely to have hyperactivity-inattention disorders. It is hypothesized that unhealthy diets affect mental state and brain functions through oxidation stress processes ,inflammations and stress response system(Jacka &Berk 2011),while vitamin ,antioxidants, beta-carotine, and minerals in fruits and vegetables are associated with lower level of inflammation and oxidative stress makers(Boldrick &Elborn 2012).

Through this table you can see the effect of junk food on mental health

Plan of Action

CONSEQUENCES	UNDERLYING MECHANISM
Addictive Phenomenon	• Ingredients of junk food give great taste and make consumer addictive. Fats and sugar in combination are capable of producing a dopamine driven sugar of intense pleasure in people with propensity for addictive behaviour. There is considerable similarity between dopamine production levels between drug addicts and junk food addicts. Addition to either one causes brain receptors receiving dopamine signals to lose their responsiveness. Thus in order to receive the same level of satisfaction there is need of increasing amount of addictive substance. • Prolonged consumption of junk food results in reduced activity in striatum of forebrain which register reward. Those on prolonged use of junk food require ever increasing amounts of its to get the same high • Too much of junk food alters the chemistry of the brain and are addictive like cocaine. High Fructose Crone Syrup (HFCS), Mono Sodium Glutamate (MSG) , hydrogenated oils, refined salt and other chemical preservatives in processed junk food do the same thing to a person's brain as cocaine does.
Alzheimer's disease	• Eating too much junk food or food rich in trans fata can shrink the brain. • The impact of trans fatty acids begins to take place at the foetal stage.
Attention deficit hyperactive disorder	• Hydrogenated fats and kind of food children eat are responsible for attention deficit hyperactive disorder.
Low IQ Level in children	• Junk food contains low nutrition value tends to reduce the IQ level of children.
Depression	• Consuming too much fast food may cause lose of essential nutrients like amino acid tryptophan and the lack of which may increase feeling of depression. • An imbalance of fatty acids is another reason why people who consumes more junk food are at a higher risk of depression.

Growing menace of fast food consumption needs to be restricted by awareness campaign approach for promoting health dietary practices. Instead of forcing people to quit junk food and sugar completely, doctors say it would be better to promote health alternatives and force people to include more grains and vegetable in their diet. Start paying attention to how eating different food makes you feel. Try eating a "clean" diet for two to three weeks-that means cutting out all processed foods and sugar. Add fermented food in diet and see how you feel freshly cooked home foods with minimal addition of sugar and no trans-fats should be preferred over packaged foods. Traditional and acceptable home-made snacks with long shelf-line can be offered to children as alternative of the JUNCS food.

References

Baldrick F.R., Elborn JS, Woodside JV, Patterson C.C.et al 2012,Effect of fruit and vegetable intake on oxidative stress and inflammation in COPD:A randomized controled trial, Eur Respir J:39:1377-84.

Jacka FN, Mykletum KA., Berk M, Bjelland I, TELL G.S.(2011), The association between habitual diet quality and the common mental disorder in

community-dwelling adults: The Hordaland health study. Psychosom Med; 73:483-90.

Jim E.Banta , Gina Siapco, Christine(2019).Mental health status and dietary intake among California adults: a population based survey. International journal of food science and nutrition, DOI:10, 1080/09637486-2019.1570085.

Keshari P, Mishra CP (2016)Growing menace of fast food consumption in India: time to act .Int.J. Comm Med and public health: 3: 1355-62.

Loma Linda University Adventist Health Science Center "Junk food is linked to both moderate and severe psychological distress".Science Daily,21 February 2019.<www.Science daily.com/release/2019/02/190221111701.htm>

http://ajcn.nutrition.org/content/99/1/181.long

http://www.ncbi.nlm.nih.gov/pubmed/23720230

Some of the world's greatest feats were accomplished by people not smart enough to know they were impossible.

- Doug Larson

English Language and its role in Society- An Introduction

Pallavi Mishra
Assistant Professor, Dept. of English

The historical development of the language of a race reflects the historical record of the growth of intelligence. Those who are seriously interested in the health and vitality of the intellectual and cultural life of the nation regard language as the soul of the nation. Language is not merely the medium of instruction at all levels of education; it is the medium of growth. It provides capacity for preservation and communication of intellectual life. Usually, Language is defined as speech symbols being used in communication of ideas. In education it is supposed to communicate Knowledge and in general life it is the instrument to pick up information. But in broader sense, it has a more important role to play. Every language has its own life and vitality which influence the mind possessing that language. It is the expression of human personality in words, whether written or spoken. It makes the mind imaginative, widens intellectual interests by giving intellectual training in social, racial, national, literary, scientific, religious and occupational life. The distinctive character and personality of the language go a long way in influencing the personality make up of a person who is devoted to its study from early childhood. It is the universal medium alike for conveying the common facts and feelings of everyday life and the philosophers searching after truth, and all that lies between. Like any other way of expressing the human mind, it must by the very nature of its being, be both inaccurate and incomplete and for this reason some modern philosophers have doubted its validity or usefulness for the attempt to convey any kind of truth other than that which pertains to material things. Yet thinkers and poets have always assumed that language can be the bearer of all kinds of truth.

Nothing is known for certain, though very much has been speculated, of the origin of language. This is partly because thought and language cannot clearly be separated, since the one can scarcely seem to exist without the other. Therefore, the origin of language seems to be bound up with that of human thought. We must decide when and how man began to think, to know of the beginnings of language; and we must know when and how he began to speak, to decide on the origins of his existence as a thinking being. The Greeks implied and included in their word logos both the power of speech (What the Latins termed Oratio) and that of thought (the Latin ratio); and in St. John's statement at the opening of his Gospel that "In the beginning was the Word (the Greek Logos), he may be held to have indicated that in the mind of God there co-existed from the beginning thought and language.

If one compares a number of languages, it probably soon appears that some of them have some sort of relationship to one another, while others may seem quite isolated. If we are able to trace a group of these apparently related forms in several languages to a common ancestor by means of older writings, it becomes almost certain that these forms must be branches from a common root.

There are numerous examples in history of divergent development leading to the formation of related languages. For example, when the Romans conquered a large part of Europe, North Africa and the Near East, their Language, Latin became spoken over wide areas as the standard language of administration and government, especially in the western part of Empire. Then, in the fourth century of our era, the Empire began to disintegrate, and, in the centuries which followed, was overrun by barbarian invasions- Huns, Slavs, Germans, and gradually broke up. In the new countries that eventually emerged from the ruins of the western Empire, various languages were spoken. In some places, both Latin and the local languages had been swept away and replaced by the language of an invader in England, by Anglo-Saxon in North Africa by Arabic. But in other places, Latin was firmly enough rooted to survive as the language of the new nation as in France, Italy and Spain. But, because there was no longer a single unifying centre to hold the language together, divergent development took place, and Latin evolved into a number of different new languages. The further a place was from Rome, the more the new language diverged from the original Latin.

In the early middle ages, there was a whole welter of local dialects developed from Latin: each region, with its own feudal court, would have its own local

dialect. But as the modern nation states developed, these dialects became consolidated into a few great national languages. Today, there are five national languages descended from Latin: Italian, Spanish, Portuguese, French and Roumanian. There are also other languages derived from Latin which have not become national languages, but which belong to some large group with a common culture: such as Romansch (spoken in parts of Switzerland and Italy), Provencal (spoken in Southern France), Catalan (spoken in Catalonia and the Balearic Isles) and Sardinian (spoken in Southern Sardinia). Languages descended from Latin are called Romance Languages. Each of the Romance languages has developed its own grammar and syntax, but they all bear signs of their common origin in Latin.

English belongs, in all its stages, to the Indo-European family of languages. One branch of Indo-European is Indo- Iranian, or Aryan, so called because the ancient people who spoke it called themselves 'Aryans' (noble ones). This branch has two groups, the Indian and the Iranian To the Indian group belongs the language of the ancient Vedic hymns from northwest India, which go back by oral tradition to a very remote past, perhaps to about 1400 BC. A later form of this language is Classical Sanskrit, which was standardized round about 300 BC, and has since been the learned language of India (rather like Latin in Europe). Modern representatives of the group are Bengali, Hindi and other languages of northern India, together with some from farther South, like Singhalese. The other Aryan group, Iranian includes modern Persian and neighboring languages such as Ossetian and Kurdish. "Indo-European" is used because it merely suggests that the languages it comprises cover most of Europe and India, or that Europe and India mark the length of its confines. "Aryan" was the name which the farer-skinned bringers of the Hindu civilization to India from the North gave themselves to distinguish them from the darker and less cultured peoples whom they largely conquered; and the belief among the predecessors of the more scientific German philologists that Sanskrit, with its remarkably full inflexions, was the ancestor of all the then studied European and Asiatic languages, may explain the use of the term 'Aryan' for what we now call Indo-European. If we take the words for 'is' in some of the better known European and Asiatic languages, we may reconstruct with fair probability the ancestral prehistoric word from which all must be descended. Latin 'est' Greek 'esti' Sanskrit 'asti' Russian 'est' German ' ist' Italian 'e', we can be pretty sure that the ancestral form from which all descend was 'esti'.

Another branch with ancient texts is Greek, which has a literature from the Seventh century B.C. The Homeric epics, which were long handed down by oral tradition, go back even earlier to the ninth and tenth century B.C. The Greek branch includes all the various ancient Hellenic dialects. Two branches which have some things in common are the Italic and the Celtic. Italic consisted of a number of dialects of ancient Italy, including Oscan, Umbrian and Latin. Celtic, once widely diffused over Europe can be divided into three groups Gaulish, Britannic and Gaelic. Gaulish was spoken in France and northern Italy in the time of the Roman Republic and was spread abroad by Celtic military expeditions to Central Europe and as far as Asia Minor. Britannic was the branch of Celtic spoken in Britain before the Anglo-Saxon invasions. The third branch, Gaelic includes Scottish Gaelic, Irish Gaelic and Manx; its earliest records are inscriptions from the fourth and fifth century AD in Irish.

Another two branches of Indo-European that have things in common are Baltic and Slavonic. The Baltic languages include Lithuanian, Letlish and Old Prussian. The Slavonic branch has many members including Serbo-Croatian, Bulgarian, Czech, Polish and various types of Russian.

The history of English is divided into three main periods: Old English, Middle English and Modern English. The Old English Period extends from the earliest written documents, about the close of the Seventh century, to about 1100, by which time the effects of the Norman Conquest begin to be perceptible in the language. It is characterized by a homogeneous Anglo-Saxon language with only a small amount of Latin influence Middle English extends from about A.D1100 to about 1450, and may be said to take in the medieval period. The effects of the Norman Conquest and of the consequent French Cultural influences were to deprive English finally of its homogeneous character.

Till the Renaissance, Latin was considered as a sacred and not a secular medium of expression being used mostly by the Clergy in Church services and religious treatises and words from Latin had little direct effect upon the English language. But after the Renaissance, new words were imported into the English vocabulary directly from the Latin. In addition to this, Italy being the centre of much of the new learning many Italian words were also borrowed

into the language during this period. Most of these Italian loan words are related to music and the fine arts in general. The Reformation which followed close upon the heels of Renaissance had also some influence on the language though its effect was mainly political and religious. The great religious controversies occasioned by the Reformation were productive of many new words, particularly words expressing disapproval. England being a protestant country, we find that many of the new words of disapproval relate to the Catholics. Though the Catholics too had their fund of new words disparaging the protestant, the only one of these which has survived in modern English is 'heretic'. A very important result of the Reformation was that it gave the English various versions of the Holy Writ, the chief of these being Tyndale's translation of 1526 and the Authorized Version of 1611. These Bible translations have had a greater effect on the language than works of any individual author except Shakespeare. In the first half of the 19th century English assumed a dominating position in the Indian sub-continent. In the words of Lord Curzon, "the cold breath of Macaulay's logic passed over the field of Indian languages and textbooks. English became the language of the rulers, and thus of those who wished to emulate their masters socially and professionally. It became almost exclusively the language of higher education. It was the language of the missionaries who ran a number of outstanding educational institutions in different parts of the sub-continent.

The developmental history of teaching of English in India may be divided into the following period.

i) **Earliest Period (1765-1813):** The British who had come here as traders were afraid of teaching their language in the beginning as they has lost colonies in America by imparting English education. After the battle of Plassey (1757), when the traders started becoming masters, they opened institutions of Classical learning namely Calcutta Madarssah (1781) and Benaras Sanskrit College (1791).

ii) **The Charter Period (1813- 1834):** In 1813, the charter of East India Company was renewed with an education clause added to it. Indian leaders Ram Mohan Roy made increasing demand for teaching of English, opposing oriental education.

iii) **Macaulay's Period (1834- 1853):** The famous Macaulay minutes strongly recommended western learning through the medium of English Language.

iv) **The period of Wood's Despatch (1854-1881):** The number of English medium schools and colleges increased by

v) **The Period of Commissions (1882- 1934):** The Commissions of 1882, 1902 and 1919 tried to adjust the claims of English and vernaculars by assigning to them different spheres of activity.

vi) **Period of Struggle and Independence (1935-1965) :** The need for a national language and the suitability of mother tongue as medium of instruction was strongly felt and advocate in this period.

English is the veritable Suez Canal for intellectual intercourse between the west and the east. Not only Indian thought from Vedic to modern times has found its way to the West, but eminent thinkers of yesterday and today- from Rama Mohan Roy and Keshab Chandra Sen to Vivekananda, Tagore, Sri Aurobindo, Gandhi and Radhakrishnan- have made themselves heard in the west, a cultural offensive (if so it may be called) rendered easier by their mastery of the English Languag After the attainment of Independence English happens to be the most convenient medium of interstate use. The persons who are required to deal with interstate and Central government papers in all the states are able to handle the English language with more ease and precision. Learning of English does not entail any intellectual hardship to the children because it is a means of obtaining knowledge. What Sanskrit did in India during her long and silent centuries in the past, what Latin did in Europe though divided into many states, English is doing now in India. It is the language that unites all the different regions of India into one and India herself with the rest of the world. It is a vehicle that brings to us the best from all parts of the civilized world. Language is a social activity and whether it is really desirable for English or any other language- real or invented- to become a world-medium , is a question which perhaps concerns the anthropologist and other students of the 'social sciences' rather than the student of the English language.

In the post colonial age, the Indians Writing in English face severe criticism from regional writers. "This notion that English is a necessary evil," points out Nimade, "is an afterthought. My ancestors migrated to Tanjore and Gujarat, where they became writers; not in English, but in the language of the region they'd migrated to. Aurangzeb didn't have to

learn English to converse with Shivaji. But the IWE are worse than colonial, they are so removed from their own ethos- addressing neither the Indian people nor their values, they produce for a different market. They're a mess." Says Jayamohan, "Writers like Arundhati Roy are superficial and exotic. When Arundhati Roy uses English to express a Malayalam idiom, it might be exotic for a westerner, but for Indians it is not very exciting. Similarly, Narayan's Malgudi was refreshing for English readers who have never known a Tamil village, but any Tamil writer would have put more life into his novels than R. K. Narayan did. Similarly, when one reads Bharati Mukherji or Jhumpa Lahiri, one can't tell from the way their characters speak, or the idiom they use, where they come from. It is the language they get from the drawing room, or the books they read, not the streets, that's why they don't sound natural. Another regional writer Gangopadhay says, "I prefer to write in Bengali as it's the tongue my mother spoke, that I hear in shops, farms, factories. I know its every nuance. It is okay when they talk of upper-class Indians but when it comes to portraying common Indians in sophisticated English, it sounds funny. "Even Amitav Ghosh, whom I admire, confesses Gangopadhyay, "I trust him more when he's writing about a society. I don't know much about, like Egypt or Burma. There is not only a lack of emotion when he writes about India; sometimes he makes funny mistakes like getting relationships or native words wrong." Such limitations will remain in the Indian writing in English but India has a large readership base worldwide with an enlightened intelligentsia that is reading and writing in English.

Hope on, Hope ever
after the darkest night
comes the Laughing
Morn.

Understanding Sociology

Dr. Anil Bhatt
Assistant Professor, Dept. of Sociology

Robert Morrison MacIver an eminent sociologist said that Society is a web of social relationship and sociology is the study of society comprehensively. The focus is on the way people form relationships and how these relationships, considered in their totality are represented by the concept of society. Sociologists examine the shared meanings that we attach to interactions with one another, and also study human experience as it unfolds within societies over time. The discipline enables us to develop a quality of mind that helps in using scientific knowledge and logical reasoning in order to develop understandings of what is going on in the world. The scope of sociology is so widespread that it ranges from the analysis of passing encounters between individuals in the street up to the investigation of worldwide social processes. August Comte, a French philosopher is considered as the father of sociology who introduced this discipline with an intention to study human behaviour and relationship in the society. He classified sciences and made sociology both logically and chronologically posterior to other sciences and proved it to be least general and most complex of all.

Since its inception in 1838, this discipline has come a long way and diversified manifold in almost every part of the world. The area of sociology cannot be disregarded or brushed aside by any member of society as it is indispensable to all aspects of human interaction and social life. At the personal level, sociology investigates the social causes and consequences of such things as romantic love, racial and gender identity, family conflict, deviant behaviour, aging, and religious faith. At the societal level, sociology examines and explains matters like crime and law, poverty and wealth, prejudice and discrimination, schools and education, business firms, urban community, and social movements. At the global level, sociology studies such phenomena as population growth and migration, war and peace, economic development and globalisation. Sociology offers a distinctive and enlightening way of witnessing and understanding the social world in which we live. Through its particular analytical perspective, social theories, and research methods, sociology is a discipline that expands our awareness and analysis of the human social relationships, cultures, and institutions that profoundly shape both our lives and human history.

Sociology is the newest of social sciences to establish itself in 1876 at the Yale university U.S.A, 1889 in France, 1907 in England. In Asia, the formal teaching of sociology started in 1893 in Tokyo University and in 1919 at Bombay University. A.R.Radcliffe Brown observed that the science of human society is in its extreme infancy. Despite being the youngest discipline, sociology touches every other area of the society. The subject matter is diverse, ranging from crime to religion, from the family to the state, from the divisions of race and social class to the shared beliefs of a common culture, and from social stability to radical change in whole societies Sociology as a discipline has been able to develop numerous branches like medical sociology, military sociology, environmental sociology, industrial sociology, criminology, sociology of punishment, social-demography, sociology of gender, sociology of internet, sociology of religion, sociology of family, sociology of education, sociology of sports, urban sociology, rural sociology, social psychology, social work, gerontology, political sociology, social work visual sociology and social engineering etc. Sociology is fast gaining momentum and popularity due to its indispensable nature and the fact that it touches our lives in some form or the other.. There is a need to pay sincere attention to this discipline as it is associated with, family, marriage, religion, education, kinship, culture, socialisation, feminism, positivism, personality, interpersonal relations, women-empowerment, education, economic system, norms, values etc. Unless one is not exposed to the aspects of society one might not function as per the interests of society resulting in social disorganization. Apart from this, sociology assists the society in social planning, knowledge, human welfare, social problems, through social research.

There are innumerable social research institutes in India like Tata Institute of Social Sciences Mumbai, Indian Council for Social Science Research New Delhi, Institute for Social and Economic Change Bengaluru, National Institute of Advanced Studies Bengaluru, Kalinga Institute of Social sciences Bhubaneswar, Dr. Babasaheb Ambedkar National Institute of social sciences Mhow, etc. Globally, the

universities offering course in sociology are Harvard University, University of California, University of Chicago, Stanford University, University of Michigan, Yale University, Columbia University, University of Melbourne, University of Minnesota and Stockholm University. Among the many Indian universities offering courses in sociology are Jawahar Lal Nehru University, Delhi University, University of Mumbai, Banaras Hindu University, Lucknow University, Allahabad University, University of Pune, HNB Garhwal University, Himachal Pradesh University, Bangalore University, Pondicherry University, University of Hyderabad etc. Apart from the regular university courses, sociology is also a part of AIIMS, IIT, IIM, NLU curriculum. As a result ,sociology finds a much deserved place in BA-LLB, B.Tech, BSc Agriculture, BSc Nursing, and various medical and para-medical courses because the need of learning the facts of society assumes fundamental significance along with the legal, technical, agricultural or medical aspects.

The students of sociology have an array of opportunities on the professional front. There are jobs available in fields like media, market research, census and one can also get into creative fields like advertising and copy writing. After Masters in sociology or MSW, one can opt for university teaching, social research, social work and public administration, public health and welfare organizations, civil services and agencies like CRY, UNICEF etc.. Students with a PG degree often secure employment as research assistants, data analysts, case workers. Sociology has greater demand in institutions that carry out projects in rural areas and in NGOs. Qualified sociologists will be considered for a job as experts in various child welfare departments and they can be placed in charge of juvenile homes or observation cells. International bodies such as World Health Organisation(WHO), United Nations Organisation(UNO) also advertise projects and posts where in the services of people with knowledge of sociology are required. Population and development studies also provide good opportunities for sociology students. Apart from them, there are various fields accepting Sociologists like Health-care, business consultation, central Government, state Government, education, family planning and counselling. In addition, multiple national and international sociological associations represent the sociologists of all nationalities working towards the objective of advancing sociological knowledge, research and exchange of information about various aspects and perspectives concerning social issues and problems.

Sociology is a subject which makes a person well-versed with the framework of society of which one is a part and involved in the various activities of that society. In other words sociology is relevant in our everyday life. In the present era of globalisation, industrialisation, modernisation, privatisation, large-scale migration, there is an urgent requirement to develop the awareness about social, economic, and cultural set up among the children at the elementary, intermediate and the higher level of education. There is a need to develop interest among students and good course structure with intensive on-field projects and field-trips by Indian universities which shall gradually increase scope and inclination for sociology careers in India. However, studying sociology as a subject, to a great extent, changes the way one sees the world, mainly in the way one sees people and their choices, have a better understanding of the behaviour of people. One has to put on the sociological lenses to study society in its truest sense. It can be further said that keeping in view the changing pace and pattern of social dynamism which is being influenced by an era of fast changing technology like multimedia, hypermedia, internet and advanced ways of communication, sociology as a discipline is likely to gain momentum, besides having voluminous subject matter and an enhanced scope, thereby ushering in more employment opportunities in India and worldwide.

Studying Economics: Ways Ahead

Dr. Neelu Kumari
Department

Economics is an evergreen subject because of its high demand across multiple sectors, including banking, insurance, financial services, trade and commerce and business management etc. Career and job opportunities depend upon type and level of education and training, one obtains, in Economics. It is suggested that just after +2, it is always better to decide as what to do further - whether to continue education or to start searching for job. Such decision depends upon many things like economic condition of your family, your own likes and dislikes about subjects and job/career preferences in life etc. Keeping in views all these things in mind, here, it is an attempt to guide you as what are the educational opportunities after doing 10+2 and what are the job opportunities after obtaining different level and types of education in the discipline of Economics.

AFTER 10+2

Job Opportunities

10+2 education is the most crucial milestone in one's life. It here that one is confronted with the task of deciding as what to do next. If someone is not in a position to continue further study and wants to a decent job in the field of economics, what should he do? Such students should do six months certificate or one year diploma course in the related fields of economics like accounting, statistics, marketing, retailing, taxation, banking, business skill, stock market accounting, consumer protection, digital marketing etc. These types of courses are offered both by private and public educational intuitions through face to face mode, open and distance education online and offline modes. Government portals like Swayam and swayamprabha also offer such programmes through online modes. Moreover, it is to address the need of such learners that the New Education Policy has made provision of vocational education as an integral part of Bachelor degree programmes. While working, and doing such short term courses, these candidates may continue their higher education leading to Bachelor degree through distance and online modes.

Educational Opportunities

After completing 10+2, there are many students who want to continue their further study. For them, many universities across India offer undergraduate programmes in economics. You can select from undergraduate degree like Bachelor of Arts in Economics, Applied Economics, Economics, Business Economics, Economics etc.

AFTER BACHELOR DEGREES

Job Opportunities

Teaching Profession: It is one of the best Career Scope in Economics after completion of the degree. As on Economics Graduate, you can appear for CTET or other state level teaching exams and become a teacher.

Banking Services within the Public Sector: Reserve Bank of India also recruits economists in the banking sector through their own different recruiting examinations. You should have an age limit of 21-28 years.

You can also find jobs in research institutes like the National Council of Applied Economic Research, New Delhi, Indian Council of Science Research Institute of Economic Growth, New Delhi, etc. One can appear in IBPS and State Bank Recruitment Exam to get absorbed in the banking sector.

Private and Foreign Banks: An Economic degree holder can try for Private and Foreign banks. The banking job profiles available are branch managers, clerks, economic adviser, development officers etc.

Entrepreneurship: Economists will have to have a depth of market knowledge. They will quickly understand the market trends and profitable sectors of business. Hence by creating their own business, they can soon achieve exponential growth. So a large number of job opportunities can be created this way. It will also be helpful to reduce the unemployment issue in the country.

Top job Roles for Economics Graduates: Professional Economist, Financial Risk Analyst, Data Analyst (Banking Sector), Financial Planner (Banking Sector), Equity Analyst, Cost Accountant, Business Researcher, Business Economist, Agricultural Economist, International Economist (Specialization), Labour Economist (Specialization), (Specialization), International Economist (Specialization), Labour Economist (Specialization), Investment Analyst

Educational Opportunities

After completing your graduation in Economics, you can opt for a Master Degree through Postgraduate Programme offered in various universities. You can choose from the following Postgraduate Programmes like Master of Arts in Economics, Econometrics, Business Economics, Applied Economics, Master of Science (M.Sc) in Economics and Master of Business Administration (MBA) in Business Economics. Further, you can continue your education to the doctorial level in Economics, econometrics and other allied fields.

AFTER MASTER DEGREES

Job and Educational Opportunities

After completing MA in Economics with at least 55% marks a candidate can either pursue Ph.D (through entrance exam) in any University or appear for University Grant Commissions National Eligibility Test currently conducted by National Testing Agency. By qualifying this test, a candidate can become eligible for the post of Assistant Professor in Indian Universities and Colleges or can get a Junior Research Fellowship in a Research Institution. The Ph.D degree holders are likely to get more job opportunities in every sector.

Indian Economics Services: You have to complete M.Sc or M.A in Economics with at least 55% marks that can appear in the India Economic Service Exam. The age range should 21-30 years. UPSC conducts the exam. After selection, one has to perform tasks like economic planning and analysis. They can also be placed in Planning Board, Ministry of Economic Affairs, National Sample Survey and other departments that need persons with expertise in economics.

International Agencies: Experienced and famous economist can get employment opportunities in a well known international organization like the World Bank, IMF and the International Labour Organization etc.

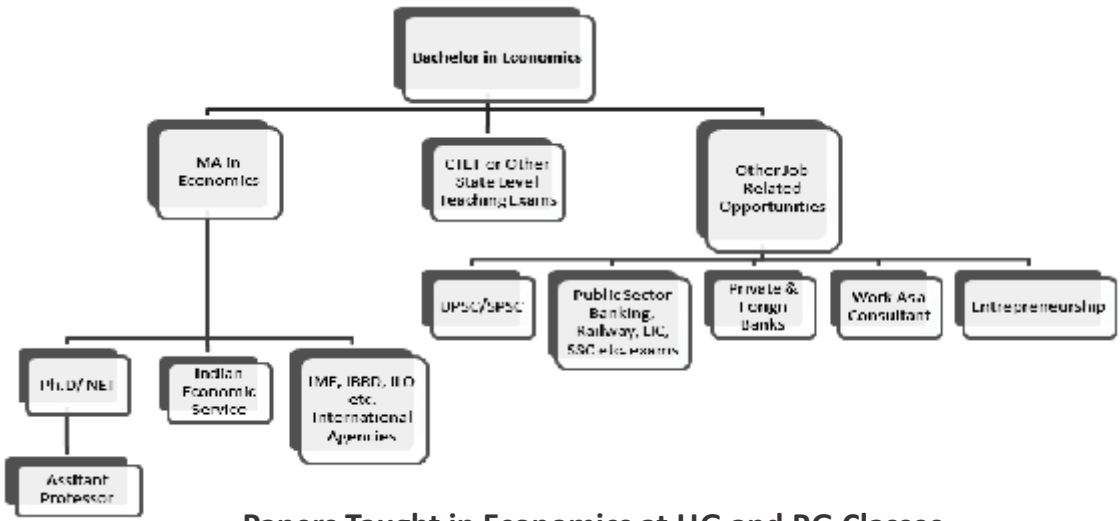

Papers Taught in Economics at UG and PG Classes

Under Graduation Classes

Sn	Class/Sem	Paper	Name of the paper	Suggested Books
1	B.A 1st year	I	Micro Economics	1. H.L. Ahuja –Advanced Econmics Theory, S.Chand , New Delhi 2. M.L.Seth –Micro Economics, Laxmi Narayan Agarwa, Agra
		II	Structure and Problems of Indian Economy	1. Mishra , S.K. & V.K. Puri, Indian Economy, Himalaya Publishing House, Mumbai 2. Agarwal, A.N.: Indian Economy, Wishwa Prakashan Newage Internation (P) Limite, New Delhi

3	B.A 2nd Year	I	Macro Economic Theory and Public Finance	1. M.L. Seth – Macro Economics, Laxmi Narayan Agarwal, Agra 2. Mithani, DMT Macro Economics, Himalaya Publishing House, Mumbai.
		II	Money Banking and International Economics	1. Gupta, S.B: Monetary Economics, Himalaya Publishing House, Mumbai. 2. Sethi T.T.: Money, Banking & International Trades
3	B.A 3rd Year (5th & 6th Sem)	I	Statistical Methods in Economics- I/ II	1. S.P. Gupta & V. K Kapoor - Fundamentals of Mathematical Statistics, S. Chand & Co. New Delhi 2. K.N. Nagar - Sankhiki Ke Sidhant, Meenakshi Prakashan, Meerut
		II	Economics of Development and Planning I/II	1. Mishra, S.K and V.K Puri, Economics Development and Planning, Himalaya Publishing House, Mumbai. 2. Jhingan M.L: Vikas Ka Arthshashtra Evam Aayojan, Vrinda Publication, New Delhi

Post Graduation Classes

Sn	Class/Sem	Paper	Name of the paper	Suggested Books
1	M.A 1st year	I	Micro Economics	1. Ahuja, H.L Advanced Economic Theory S. Chand & Co. New Delhi 2. Stigler G (1996), Theory of Price, Practice Hall of India, New Delhi
		II	International Economics	1. Verma, M.L International Trade , Vikas Publishing House Pvt. Ltd. New Delhi. 2. Dr. Harish Chandra Sharma, Antarashiriya Arthshashtra SBPS.
		III	Quantitative Methods and Statistical Techniques	1. Dr. B.N. Gupta G anitiya Arthshasttra Evam Sankhiyikiki, SBPD. 2. Gupta, S.C. Fundamentals of Applied Statistics, S. Chand & Son, New Delhi.
		IV	Uttarakhand Economy	1. Ashok Kumar Tiwari, Infrastructure and Economic Development in Uttarakhand, India Publishing House, New Delhi. 2. L.R. Sharma, Quality of Life in Himaliayan Region.
2	M.A 2nd year	I	Micro Economics-II	1. H. L Ahuja, Uchchtar Arthik Sidhant S. Chand Publication, New Delhi. 2. Stigler. G, Theory of Price (4th Edition) Practice Hall of India,
		II	Macro Economics	1. H.L. Ahuja, Uchchtar Samasti Arthshastra, S. Chand Publication, New Delhi 2. Romer, D.L. Advanced Macroeconomics, MC Grow Hill Company Ltd. New York.

		III	Economics of Growth and Development	1. M.K Jhingan, Vikas Ka Arthshastra Evam Ayojan, Vrinda Publication Ltd, New Delhi. 2. Kindlebetger, C.P. Economic Development 3rd Edition, MC Graw Hill, New York, Oxford.
		IV	Indian Economic Policy	1. Brahmananda, P.R. and V.R Panchmukhi (Eds), Development, Experience in the Indian Economy, Interstate prospective, Bookwell, Delhi. 2. T. R. Jain & V.K. Ohri, Bharat ne Arthik Vikas Evam Niti, V.K Global Publication
3	MA 3rd Sem	I	Public Finance	1. Mithani D.M Principles of Public Finance and Fiscal Policy, Himalya Publishing House, New Delhi. 2. H.C. Bhatia, Lokritt, Vikas Publishing House Pvt. Ltd.
		II	Monetary Economics	1. M.L Jhingan Modrik Arthshastra, Vrinda Publication Ltd., New Delhi 2. Gupta, S.B,Monaetary Planning In India, Oxford.
		III	Research Methodology	1. Bill Taylor Gautam Sinha, Tapash Ghoshal, Research Medthodology: A Guide for Researchers in Management and Social Sciences, Prentice Hall of India, Private Limited, New Delhi 2. Fudia B.L: Shodh Padhatiya , SBPD
		IV	Agricultural Economics	1. Ruddar Datt, K.P.M Sundaramn, Indian Economy, S. Chand Publication, New Delhi. 2. Gupta, S.B. Drishi Arthshastra, SBPD.
4	MA 4th Sem	I	Industrial Economics	1. Desai, B. Industrial, Economy in India, Himalaya Publishing House, Mumbai. 2. V.C. Sinha, Audyagik Arthshastra, SBPD
		II	Economic Planning	1. Brahma Nanda, P.R and C.N. Vakil, Planning for an Expanding Economy, Vora and Co. Bombay. 2. M.L Jhingam, Vikas Ka Arthshastra Evam Ayojan, Vrinda Publication Ltd., New Delhi.
		III	Economics of Human Development	1. National Council of applied Economic Research, Indian Human Development Report, New Delhi. 2. Anil B. Deolalikar, Attaining Millennium Development Goals in India, Oxford.
		IV	Demography	1. Srinivasan, K. and A. Shariff, Inida: Towards Population and Demographic Goals, Oxford University Press, New Delhi. 2. Sinha & Sinha, Janankiki, SBPD.

Remote Sensing and GIS: An Emerging ITC Tool for Disaster and Emergency Management

Dr. Pallavi Upreti
Assistant professor, Department of Geography

Introduction

Natural hazards and Disasters are most violent manifestation of natural forces and have been recurring events throughout the geological time scale .Natural disasters, which are often sudden and intense, result into considerable destruction, injuries and deaths, disrupting normal life as well as the process of development. The increasing frequency as well as magnitude of disasters threatening large population living in diverse environment, makes the situation more vulnerable. However lately, increase in their intensity and magnitude is majorly attributed to growing human interference. Much of it is due to long term environmental degradation caused by deforestation, unplanned land use planning and of course the population explosion especially in Developing countries of the world. The growing human population and activities at times, tends to disturb the delicate natural balance, triggering potential hazards into catastrophic Disasters. The condition in developing countries is more vulnerable due to continuous resource-demand conflict as a result of population explosion and India is no exception to it. The impact is also magnified because of diverse socio economic conditions, predominance of poverty, illiteracy, lack of disaster information, availability and mobility of resources, high level of exposure to disasters, and low coping capacities of people. Thousands of people lose their lives and property worth billions every year due to occurrence of natural disasters in these regions. It may not be possible to eliminate Natural Disasters completely, but creating proper awareness and preparing people for potential threats/ impacts may certainly help in reducing their risks and vulnerabilities.

In order to mitigate the impact of disasters in these countries it becomes imperative to design proper disaster management systems which renders quick response to disaster situation and also prepares masses for upcoming disaster situation. This requires devising reliable methods of hazards prediction and mitigation which can serve guide during emergency situations. Remote Sensing and GIS are becoming essential components of Disaster management programme since they can play a significant part in their early detection, prediction, response and mitigation particularly in case of cyclones, forest fires, floods, droughts etc. For the management of natural disasters a large amount of multi -temporal spatial data is required. Satellite remote sensing is the ideal tool for disaster management, since it offers information over large areas, and at short time intervals. However, the effective use of remote sensing data is not possible without a proper tool to handle the large amounts of data and combine it with data coming from other sources, such as maps or measurement stations which is only possible through GIS technologies.

Therefore, together with the growth of the remote sensing applications, Geographic Information Systems have become increasingly important for disaster management. During the last decades Remote sensing (RS) and Geographic information system (GIS) has emerged as an effective tool in disaster management. RS and GIS technologies are quite extensively used in almost all the phases of disaster management cycle today especial during preparedness/ warning/response monitoring phase. It is also effectively used to assess severity and impact of damage due to these disasters. In the disaster relief phase, GIS, grouped with global positioning system (GPS) is extremely useful during search and rescue operations especially in areas that have been devastated and remain inaccessible. Current GIS applications in Hazard zonation maps has surfaced as an effective tool for disaster risk reduction, which helps anticipate severity of possible disasters, thereby providing access to wide range of preventive measures.

Natural Hazards and Disasters Today, the term 'Disaster' is commonly used to denote any extreme event, be it natural or man-made, which brings about loss of life, property, infrastructure, essential services and means of livelihood to an extent that it becomes difficult to cope with the situation due to it being beyond the normal capacity of the affected communities to deal with unaided.

However hazards may be a pre-disaster situation which is defined as a potentially damaging physical event, phenomenon or human activity that may cause the loss of life or injury, property damage, social and

economic disruption or environmental degradation if triggered. A natural disaster could occur due to an immediate extreme event or it could be the result of a long duration process, which disrupts normal human life in its established social, traditional and economic system to a considerable extent. Natural disasters, which are often sudden and intense, result in considerable destruction, injuries and deaths, disrupting normal life as well as the process of development. The United Nations define it as " the occurrence of a sudden or major misfortune which disrupts the basic fabric and normal functioning of a society (or community)."Effective application of remote sensing and GIS can access the potential hazard situation in an area. Hazard zonation maps can act as guide to subsequent Land use planning thereby reducing the possibility of escalating Hazards into disaster.

India because of its geological complexity and climatic variability is exposed to numerous natural hazards like earthquakes, landslides, floods, fires, tsunamis, volcanic eruptions and cyclones, Floods, droughts, cyclones, earthquakes and landslides have been recurrent phenomena. About 60% of the landmass is prone to earthquakes of various intensities, over 40 million hectares is prone to floods, about 8% of the total area is prone to cyclones and 68% of the area is susceptible to drought. In the decade 1990-2000, an average of about 4344 people lost their lives and about 30 million people were affected by disasters every year. India is a developing country with billion plus population, most of which are exposed disaster risk, of varying degrees. It remains a big challenge and need for efficient application of RS and GIS technologies in to the entire domain of Disaster management to reduce socio economic vulnerabilities of people.

Information technology and Disaster preparedness

The Yokohama Declaration in 1994, outlined the need of information, knowledge and technology to reduce the effects of Disasters, and enhance regional and international cooperation in mitigating disasters. Information Technology (IT) is vital for disaster preparedness. Science and technology in disaster preparedness lays emphasis on the integration of natural sciences and social sciences and the studies of temporal and spatial clustering of natural disasters and comprehensive disaster preparedness and reduction. Disaster preparedness and management in this context, includes

1. Information Collection
2. Analysis and Diagnosis
3. Disaster Prediction
4. Transmission of Warning
5. Disaster Monitoring
6. Rescue and Relief
7. Post-disaster Recovery; and Reconstruction.

Remote Sensing and GIS in Disaster Management:

Remote sensing is the science and art of obtaining information about an object area, or phenomenon through the analysis of data acquired by a device which is not in direct physical contact of the object thus in contrast to on site observation. The term generally refers to the use of aerial sensor technologies to detect and classify objects on Earth (both on the surface, and in the atmosphere and oceans) by means of propagated signals (e.g. electromagnetic radiation). An increasing number of studies have elaborated on the importance and application of remote sensing data in disaster management (Verastappan-2009, Van Westen-2002, Bin and Jiping-2006). However, Satellite data alone cannot be used.

It has to be used with verification at the ground level. GIS software uses geography and computer generated maps as an interface for integrating and accessing massive amounts of location based information. This unique characteristic of GIS makes it an effective tool in the field of disaster response and preparedness. Remotely sensed data is acquired captured, geo referenced, stored, managed, analyzed and displayed in computer based application programme called GIS. It allows user to form multi layered arrangement of information that can be overlaid and compared to determine the correspondence between various geographic components. Similarly, land use data for multiple time periods can be overlaid to determine the nature of changes that may have occurred since the original mapping. This quality of GIS make s it a very essential tool for disaster risk planning where numerous attributes like, geological, metrological ,demographic, settlement data can be analyzed on a single platform.

During any emergency situation, the role of a reliable decision supports system is very crucial for effective response and recovery. Geographical information System (GIS) facilitates this task by providing information about hazard zoning, incident mapping, natural resources, critical infrastructure at risk etc. GIs-based information tools help disaster managers to quickly assess the impact of a disaster,

mobilize resources at right location within the best response time.

Geographical Information System is increasingly being utilized for hazard and vulnerability mapping and analysis, as well as for the application of disaster risk management measures. It is a combination of several disciplines such as geography, computing, cartography, remote sensing etc., which help in the analysis of spatial data. GIs helps users to collect, store, link, analyze and Update the data. It attempts to predict, quantify the expected losses arising out of disasters.

GIS can improve the quality and power of' analysis of natural hazards assessments, guide development activities and assist planners in the selection of mitigation measures and in the implementation of emergency preparedness and response action. GIs establishes linkage between data and maps. In other words, it provides a representation of data in the form of maps. Maps are the graphic representation of the real objects with points, lines, and polygons. G I s contains many layers of information. The GIS data base is an effective tool for emergency responders to get information about the 'location of public facilities, communication links and transportation network at national, state and district levels. The presence of a data base enables drawing up multi-layered maps on district wise base. These maps along with satellite images available for a particular area facilitates district administration and state government carry out hazard zonation and vulnerability assessment. A GIS also can be used for complex modeling to answer a wide range of "what if" and ecosystem simulation questions. These may be cartographic models designed to document the co-occurrence or interrelationship of multiple data layers or they may be hypothetical research models designed to mimic natural ecological systems. Similarly, modeling with GIS can be used to predict the impacts that one set of parameters will have on another as in case of disasters.

Source: *CC BY-SA 3.0*

GIS allows public safety personnel to effectively plan for emergency response, determine mitigation priorities, analyze historical events, and predict Future events GIS can also be used to provide critical information to emergency responders upon dispatch or while en route to an incident to assist in tactical planning. It also enables international agencies to integrate data for planning and interrelation ship purposes. Analysis of geographic features with GIs allows the analysts to view new patterns, trends, and relationships that were not clearly evident without visualisation of the data especially in case of a disaster. GIS can also be used to get critical information about a humanitarian crisis to appropriate response agencies in a coordinated and efficient manner. Once in the field, the coordination can continue as new data can be added and disseminated through wireless application.

Disaster Management cycle and GIS:

The concept of Disaster management cycle was introduced after Yokohoma Conference (1994) to introduce a holistic approach to Disaster Management. To expand short term disaster recovery activities, into long term preparedness and mitigation actions, in order to reduce the overall risk of disasters.

There are three key stages of activities in disaster management:

1) Before a disaster: to reduce the potential for human, material, or environmental losses caused by hazards and to ensure that these losses are minimized when disaster strikes.

2) During a disaster: to ensure that the needs and provisions of victims are met to alleviate and minimize suffering; and

3) After a disaster: to achieve rapid and durable recovery which does not reproduce the original vulnerable conditions.

Thus in the Disaster Management Cycle: prevention, mitigation and preparedness forms pre-disaster activities whereas response, comprising relief, recovery and rehabilitation are post-disaster activities. While emergency relief and rehabilitation are vital activities, successful disaster management planning must encompass the complete realm of activities and situations that occur before, during and after disasters. In the last decade GIS technologies are widely applied not only into post recovery process but also in pre-disaster prevention, mitigation, planning and preparedness activities..

GIS and Emergency Management

Emergency management activities include all the 3 phases of Disaster management cycle: pre disaster phase, during disaster phase and post disaster phase, that are related by time and function to all types of emergencies and disasters.

These phases are also related to each other, and each involves different types of skills. All phases of emergency management depend on data from a variety of sources. The appropriate data has to be gathered, organized, and displayed logically to

determine the size and scope of emergency management programs. During an actual emergency it is critical to have the right data, at the right time, displayed logically, to respond and take appropriate action. Emergencies can impact all or a number of government departments. Emergency personnel often need detailed information concerning pipelines, building layout, electrical distribution, sewer systems, and so forth. By utilizing a GIS, all departments can share information through databases on computer-generated maps in one location which improves their capability to response, coordinate during disasters. GIS provides a mechanism to centralize and visually display critical information during an emergency during the following five essential phases.

Planning is generally associated with Activities necessary to analyze and document the possibility of an emergency or disaster and the potential consequences or impacts on life, property, and the environment. This includes assessing the hazards, risks, mitigation, preparedness, response, and recovery needs. Planning Emergency management programs begin with locating and identifying potential emergency problems. Using a GIS, officials can pinpoint hazards and begin to evaluate the consequences of potential emergencies or disasters. When hazards (earthquake faults, fire hazard areas, flood zones, shoreline exposure, etc.) are viewed with other map data (streets, pipelines, buildings, residential areas, power lines, storage facilities, etc.), emergency management officials can begin to formulate mitigation, preparedness, response, and possible recovery needs. Lives, property, and environmental values at high risk from potential emergency or disaster become apparent. Public safety personnel can focus on where mitigation efforts will be necessary, where preparedness efforts must be focused, where response efforts must be strengthened, and the type of recovery efforts that may be necessary. Before an effective emergency management program can be implemented, thorough analysis and planning must be done. GIS

Source: *CC BY-SA 3.0*

Facilitates this process by allowing planners to view the appropriate combinations of spatial data through computer generated maps.

Mitigation: activities aims at reducing the probability of disasters (for example, land use management, establishing comprehensive emergency management programs such as vegetation clearance in high fire danger areas, or building restrictions in potential flood zones). As potential emergency situations are identified, mitigation needs can be determined and prioritized. Values at risk can be displayed quickly and efficiently through a GIS. Utilizing existing databases linked to geographic features in GIS makes this possible. A GIS can identify specific slope categories in combination with certain species of flammable vegetation near homes that could be threatened by wildfire. A GIS can identify certain soil types in and adjacent to earthquake impact zones where bridges or overpasses are at risk.

Preparedness: Preparedness includes those activities that prepare for actual emergencies. GIS can provide answers to questions such as, Location/nearness of focal centre like hospitals, fire stations, police stations, emergency centres etc, response time, routes taken, damaged areas and alternative routes, evacuation areas and facilities, identification of people, their movements, storage and relief facilities. GIS can display real-time monitoring for emergency early warning. Remote weather stations can provide current weather indexes based on location and surrounding areas.

Response These activities are designed to provide emergency assistance for victims (for example, search and rescue, emergency shelter, medical care, and mass feeding). GIS can provide one of the primary components for computeraided dispatch (CAD) systems. Emergency response units based at fixed locations can be selected and routed for emergency response. The closest (quickest) response units can be selected, routed, and dispatched to an emergency once the location is known. Depending on the emergency, a GIS can provide detailed information about activated, ongoing, emergency procedures etc.

Recovery: efforts begin when the emergency is over (immediate threat to life, property, and the environment).

Recovery efforts are often in two phases, short term and long term. Short-Term Recovery Short-term recovery restores vital services and systems. This may include temporary food, water, and shelter to citizens who have lost homes in a hurricane or large wildfire, assuring injured persons have medical care, and/or restoring electrical services through emergency generators, and so forth. The effects of the emergency may be continuous and ongoing, but the immediate threats are halted and basic services and vital needs are restored. A GIS can play an

important role in short-term recovery efforts. One of the most difficult jobs in a disaster is damage assessment. A GIS can work in concert with GPS to locate each damaged facility, identify the type and amount of damage, and begin to establish priorities for action (triage). Laptop computers can update the primary database from remote locations through a variety of methods. GIS can display (through the primary database) overall current damage assessment as it is conducted. Emergency distribution centers' supplies (medical, food, water, clothing, etc.) can be assigned in appropriate amounts to shelters based on the amount and type of damage in each area. GIS can display the number of shelters needed and where they should be located for reasonable access. A GIS can display areas where services have been restored in order to quickly reallocate recovery work to priority tasks. Action plans with maps can be printed, outlining work for each specific area. Shelters can update inventory databases allowing the primary command center to consolidate supply orders for all shelters. The immediate recovery efforts can be visually displayed and quickly updated until short term recovery is complete. This visual status map can be accessed and viewed from remote locations. This is particularly helpful for large emergencies or disasters where work is ongoing in different locations.

Long-Term Recovery Long-term recovery restores all services to normal or better. Long-term recovery (replacement of homes, water systems, streets, hospitals, bridges, schools, etc.) can take several years. Long-term plans and progress can be displayed and tracked utilizing a GIS. Prioritization for major restoration investments can be made with the assistance of GIS. As long-term restoration is completed, it can be identified and visually tracked through GIS. Accounting for disaster costs can be complicated. As funds are allocated for repairs, accounting information can be recorded and linked to each location. Long term recovery costs can be in the millions (or more) for large disasters.

Accounting for how and where funds are allocated is demanding. A GIS can ease the burden of this task.

Remote Sensing and GIS: Specific Hazard Analysis

Floods:

Different types of flooding (e.g. river floods, flash floods, dam-break floods or coastal floods) have different characteristics with respect to the time of occurrence, the magnitude, frequency, duration, flow velocity and the areal extension. Many factors play a role in the occurrence of flooding, such as the intensity and duration of rainfall, snowmelt, deforestation, land use practices, sedimentation in riverbeds, and natural or manmade obstructions. In the evaluation of flood hazard, the following parameters should be taken into account: depth of water during flood, the duration of flood, the flow velocity, the rate of rise and decline, and the frequency of occurrence. Satellite data has been successfully and operationally used in most phases of flood disaster management (CEOS, 1999). Multi channel and multi sensor data sources from GOES and POES satellites are used for meteorological evaluation, interpretation, validation, and assimilation into numerical weather prediction models to assess hydrological and hydro geological risks (Barrett, 1996).

Quantitative precipitation estimates (QPE) and forecasts (QPF) use satellite data as one source of information to facilitate flood forecasts in order to provide early warnings of flood hazard to communities. Earth observation satellites can be used in the phase of disaster prevention, by mapping geomorphologic elements, historical events and sequential inundation phases, including duration, depth of inundation, and direction of current. Earth observation satellites are also used extensively in the phases of preparedness/ warning and response/monitoring. The use of optical sensors for flood mapping is seriously limited by the extensive cloud cover that is mostly present during a flood event. Synthetic Aperture Radar (SAR) from ERS and RADAR SAT has been proven very useful for mapping flood inundation areas, due to their bad weather capability.

In India, ERS -SAR has been used successfully in flood monitoring since 1993, and Radarsat since 1998 (Chakraborti, 1999). A standard procedure is used in which speckle is removed with medium filtering techniques, and a piece-wise linear stretching. Colour composites are generated using SAR data during floods and pre-flood SAR images. For the disaster relief operations, the application of current satellite systems is still limited, due to their poor spatial resolution and the problems with cloud covers. Hopefully, the series of high resolution satellites will improve this. Remote sensing data for flood management should always be integrated with other data in a GIS. Especially on the local scale a large number of hydrological and hydraulic factors need to be integrated. One of the most important aspects in which GIS can contribute is the generation

of detailed topographic information using high precision Digital Elevation Models, derived from geodetic surveys, aerial photography, SPOT, LiDAR (Light detection and Ranging) or SAR (Corr, 1983). These data are used in two and three dimensional finite element models for the prediction of floods in river channels and floodplains (Geeet al., 1990).

Earthquakes:

It is absolutely very difficult to detect the occurrences of Earthquakes. But the areas affected by earth quakes can definitely be identified. The areas affected by earthquakes are generally large, but they are restricted to well known regions (plate contacts). Typical recurrence periods vary from decades to centuries. Observable associated features include fault rupture, damage due to ground shaking, liquefaction, landslides, fires and floods. The following aspects play an important role: distance from active faults, geological structure, soil types, and depth of the water table, topography, and construction types of buildings. In earthquake hazard mapping two different approaches are to be distinguished, each with a characteristic order of magnitude of map scale (Hays, 1980): small scale (regional) seismic macro zonation at scales 1: 5,000,000 to 1: 50,000, and large scale (local) seismic micro zonation at scales of 1:50-25,000 to 1: 10,000. The most important data for seismic hazard zonation is derived from seismic networks. In seismic micro zonation, the data is derived from accelerometers, geotechnical mapping, ground water modeling, and topographic modeling, at large scales.

Satellite remote sensing does not play a major operational role in earthquake disaster management. In the phase of disaster prevention satellite remote sensing can play a role in the mapping of lineaments and faults, the study of the tectonic setting of an area, and neo tectonic studies (Drury, 1987). Visible and infra -red imagery with spatial resolutions of 5-20 meters is generally used. Satellite Laser Ranging (SLR) and Very Long Base Baseline Interferometry (VLBI) have been used for the monitoring of crustal movement near active faults. In the measurement of fault displacements Global Positioning System (GPS) have become very important. An increasingly popular remote sensing application is the mapping of earthquake deformation fields using SAR interferometry (InSAR) (Massonet et al., 1994, 1996). It allows for a better understanding of fault mechanisms and strain. However, although some spectacular results have been reported, the technique still has a number of problems which does not make it possible to apply it on a routine basis.

There are no generally accepted operational methods for predicting earthquakes. Although there is some mentioning of observable precursors for earthquakes in literature, such as variations in the electric field or thermal anomalies, they are heavily disputed. In the phase of disaster relief, satellite remote sensing can at the moment only play a role in the identification of large associated features (such as landslides), which can be mapped by medium detailed imagery (SPOT, IRS etc.). Structural damage to buildings cannot be observed with the poor resolution of the current systems. The Near Real Time capability for the assessment of damage and the location of possible victims has now become more possible with the availability of the first civilian optical Very High Resolution (VHR) mission, IKONOS-2, though this will only make a difference if adequate temporal resolution, swath-coverage and ready access to the data can be achieved (CEOS, 1999).

Volcanic Eruptions:

The areas affected by volcanic eruptions are generally small, and restricted to well known regions. The distribution of volcanoes is well known, however, due to missing or very limited historical records, the distribution of active volcanoes is not (especially in developing countries). Many volcanic areas are densely populated. Volcanic eruptions can lead to a large diversity of processes, such as explosion (Krakatau, Mount St. Helens), pyroclastic flow (Mt. Pelee, Pinatubo), lahars (Nevado del Ruiz, Pinatubo), lava flows (Hawaï, Etna), and ashfall (Pinatubo, El Chincon). Volcanic ash clouds can be distributed over large areas, and may have considerable implications for air-traffic and weather conditions.

Satellite remote sensing has become operational in some of the phases of volcanic disaster management, specifically in the monitoring of ash clouds. The major applications of remote sensing in volcanic hazard assessment are: 1) monitoring volcanic activity & detecting volcanic eruptions, 2) identification of potentially dangerous volcanoes, especially in remote areas and 3) mapping volcanic landforms and deposits (Mouginis-Mark and Francis, 1992).

Earth observation satellites can be used in the phase of disaster prevention in the mapping of the distribution and type of volcanic deposits. For the

determination of the eruptive history other types of data are required, such as morphological analysis, tephra chronology, and lithological composition. Volcanic eruptions occur within minutes to hours, but are mostly preceded by clear precursors, such as fumarolic activity, seismic tremors, and surface deformation (bulging).For the (detailed to semi-detailed) mapping of volcanic landforms and deposits, the conventional interpretation of stereo aerial photography is still the most used technique. The stereo image does not only give a good view of the different lithologies and the geomorphological characteristics of the volcanic terrain, but it can also be used for delineating possible paths of different kinds of flows.

One of the most useful aspects of remote sensing is the ability of the visible and infrared radiation to discriminate between fresh rock and vegetated surfaces. This is useful because vegetation quickly develops on all areas except those disturbed by the volcano or other causes (urban development, etc). Topographic measurements and especially the change in topography are very important for the prediction of volcanic eruptions. Synthetic Aperture Radar (SAR) sensors can provide valuable data which describes the topography. Measurement of ground deformation may eventually be achieved using SAR interferometry. For the monitoring of volcanic activity a high temporal resolution is an advantage. For the identification of different volcanic deposits a high spatial resolution and, to a lesser extent, also a high spectral resolution are more important. Hot areas, e.g., lavas, fumaroles and hot pyroclastic flows can be mapped and enhanced using Thematic Mapper data. Landsat Band 6 can be used to demonstrate differences in activity which affect larger anomalies such as active block lava flows. For smaller and hotter (>100 C) anomalies the thermal infrared band can be saturated but other infrared bands can be used (Rothery et al., 1988; Frances and Rothery, 1987; Volcanic clouds may be detected by sensors that measure absorption by gases in the cloud such as TOMS (Krueger etal, 1994),by infrared sensors such as AVHRR (Wen and Rose, 1994), by comprehensive sensors on meteorological satellites, and by microwave or radar sensors. Remote sensing has become an indispensable part of the global system of detection and tracking of the airborne products of explosive volcanic eruptions via a network of Volcanic Ash Advisory Centers (VAACs) and Meteorological Watch Offices (MWOs).

Satellite data provide critical information on current ash cloud coverage, height, movement, and mass as input to aviation Significant Meteorological (SIGMET) advisories and forecast trajectory dispersion models (CEOS, 1999).

Landslides:

Individual landslides are generally small but they are very frequent in certain mountain regions. Landslides occur in a large variety, depending on the type of movement (slide, topple, flow, fall, spread), the speed of movement (mm/year - m/sec), the material involved (rock, debris, soil), and the triggering mechanism (earthquake, rainfall, human interaction).In the phase of disaster prevention satellite imagery can be used for two purposes: landslide inventory and the mapping of factors related to the occurrence of landslides, such as lithology, geomorphological setting, faults, land use, vegetation and slope. For landslide inventory mapping the size of the landslide features in relation to th e ground resolution of the remote sensing data is very important. A typical landslide of 40000 m2, for example, corresponds with 20 x 20 pixels on a SPOT Pan image and 10 x 10 pixels on SPOT multispectral images. This would be sufficient to identify a landslide that has a high contrast, with respect to its surroundings (e.g. bare scaps within vegetated terrain), but it is insufficient for a proper analysis of the elements pertaining to the failure to establish characteristics and type of landslide. Imagery with sufficient spatial resolution and stereo capability (SPOT, IRS) can be used to make a general inventory of the past landslides.

However, they are mostly not sufficiently detailed to map out all landslides. Aerial photo-interpretation still remains essential. It is believed that the best air photo-scale for the interpretation of landslides is between 1:15.000 and 1:25.000 (Rengers et al., 1992). If smaller scales are used, a landslide may only be recognized, if size and contrast are sufficiently large. It is expected that in future the Very High Resolution (VHR) imagery, such as from IKONOS-2, might be used successfully for landslide inventory. Satellite imagery can also be used to collect data on the relevant parameters involved (soils, geology, slope, geomorphology, land use, hydrology, rainfall, faults etc.). Multispectral images are used for the classification of lithology, vegetation, and land use. Stereo SPOT imagery is used in geomorphological mapping, or terrain classification (Soeters et al. 1991). Digital elevation models can be derived from SPOT or IRS images, or using airborne or space borne in SAR techniques. In

the phase of disaster preparedness use could be made of the following techniques for the monitoring of landslide movements: ground measurements, photogrammetry, GPS, Radar interferometry.

Conclusions

Remote sensing and GIS play a significant role in the Disaster management especially during warning and monitoring phase.

However, the technology is expanding significantly to cover pre-disaster mitigation, preparedness, planning activities so as to reduce the overall occurrence and vulnerability to disasters. Their role is continuously increasing in demarcating hazard zones and guiding future land use planning. They have also proved to be efficient service systems during post disaster response, recovery and rehabilitation phase by streamlining, organizing and efficiently analyzing the multi layered data. GIS provides a platform for the storage and management of all types of data that can be easily accessed for emergency decision support. GIS technology effectively improves the workflow in all phases of Emergency Management. Technology such as GIS offers the possibility of visual analysis and allows us to see political boundaries, population trends, and socioeconomic differences, all at once. It also offers us the ability to acquire and verify facts. However the appropriate type of remote sensing system, vary with different type of hazard/disaster, therefore careful selection, appropriate application of the technique remains a challenge as well as need for more efficient and reliable Disaster Management system

References:

- Alexander, D. (1993).Natural disasters. UCL Press Ltd., University College London. 632 pp.
- Campbell, J. B. (2002). Introduction to remote sensing (3rd ed.). The Guilford Press.
- Daag, A. and Van Westen, C.J. (1996).Cartographic modelling of erosion in pyroclastic flow deposits of Mount Pinatubo, Philippines. ITC Journal,1996-2: 110-124
- Fu, P., and J. Sun. (2010). Web GIS: Principles and Applications. ESRI Press. Redlands, CA
- Keefer, K. et al. (1987) Real-Time Landslide Warning During Heavy Rainfall. Science 238, pp. 921-925.
- Lillesand T. M, R. Kiefer W, Chipman J. W. (2003). Remote sensing and image interpretation (5th ed.). Wiley.http://www.cloud-journals.com/journal-of-remote-sensing-n-gis-open-access.
- http://gisgeography.com/100-earth-remote-sensing-applications-uses.
- http://www.esri.com/library/whitepapers/pdfs/disastermgmt.pdf.
- Tomaszewski Brian (2014) Geographic Information for Disaster Management, CRC Press.
- Van Westen, C.J. (1993) Application of Geographic Information Systems to Landslide Hazard Zonation. ITCPublication Number 15, ITC, Enschede, The Netherlands, 245 pp.
- Van Westen, C. J. (2000). Remote sensing for natural disaster management. International archives of photogrammetry and remote sensing, 33(B7/4; PART 7), 1609-1617.
- Tomaszewski, B. (2020). Geographic information systems (GIS) for disaster management. Routledge.
- Twumasi, Y. A., Merem, E. C., Namwamba, J. B., Okwemba, R., Ayala-Silva, T., Abdollahi, K., ... & Akinrinwoye, C. O. (2020). Use of GIS and Remote Sensing Technology as a Decision Support Tool in Flood Disaster Management: The Case of Southeast Louisiana, USA. Journal of Geographic Information System, 12(02), 141.
- Munawar, H. S. (2020). Flood disaster management: Risks, technologies, and future directions. Machine Vision Inspection Systems: Image Processing, Concepts, Methodologies and Applications, 1, 115-146.
- Paul, P., Aithal, P. S., Bhuimali, A., Kalishankar, T., Saavedra M, R., & Aremu, P. S. B. (2020). Geo informationsystems and remote sensing: applications in environmental systems and management. International Journal of Management, Technology, and Social Sciences (IJMTS), 5(2), 11-18.

Home Science: Curriculum and Career Opportunities

Dr. Prabha Bisht
Home Science Department

Home Science stands for the ideal home life for today unhampered by the traditions of the past and the utilization of all the resources of modern science to improve home life.

-Ellen Swallow Richards

Introduction:

Home Science is multidimensional and applied discipline, it is also known as Home Economics, Human Ecology or Community Science. It contributes to the improvement of quality of living of Individuals and Families which ultimately results in National Development. Interdisciplinary field of Home Science can contribute to the benefit of families and the community at Micro and Macro level to gear for change and development towards the desired direction. It takes an action oriented, empowerment approach that enables students to build capacity for critical and creative approaches to decision making and problem solving related to fundamental needs and practical concerns of individuals and families both locally and globally. Human Development, Clothing and Textiles, Foods and Nutrition, Family Resource Management and Extension and Communication are the different branches of Home Science that corresponds not only to the basic needs of human but also Family, Human Resource Development and National Development

Home Science Coming of Age:

American Association of Family and Consumer Sciences adopted the new term "Family and Consumer Science in 1994 and University level Home Economics programme renamed "Human Ecology" programmes including the Cornell University' program.

History of Home Science in India:

1. **1920- 1940**: British Administration – Introduced in Schools and Colleges as Domestic Science, Home Craft, Domestic Economy. Baroda introduced Home Science in Schools.
2. **1932:** Lady Irwin College established in Delhi.
3. **1935:** Agricultural Institute of Allahabad started Diploma in Home Science, later it grew into a University Development.
4. **1938:** Madras University introduced Home Science at Degree Level. Queen Mary' College and Women's Christian college started.
5. **1950:** Baroda became a nucleus for development of this discipline. Coimbatore, Ludhina, Mumbai, New Delhi, Udaipur and Tirupati established Home Science Institutions.
6. **1960-1970:** Agricultural Universities all over the country established, Teaching of Home Science as a subject was recognized.
7. **1980 Onwards:** Prestigious Institutions in India offering B.Sc., MSc. and PhD in Home Science.

The Home Science Association of India:

Established in 1951 with its Roots at Baroda under the guidance of Dr. Flemmie P. Kittrrell, Dr. Leela Shah and Ms. Dorothy Pearson, the association of has following broad objectives as Raise the standard of Home Science education in schools and colleges and Make homes and families healthier and happier. The First convention of Home Science Association of India took place in the year 1952; the association publishes "The Indian Journal of Home Science" quarterly and is represented at International Federation of Home Economics.

Knowldege Domain of Home Science:

1. **Foods and Nutrition:** Nutrition profiling of populations, Nutrition and Therapeutic Diets, Using traditional and underutilized foods and plants, Nutrition guidance and counseling, understanding Malnutrition and related lifestyle problems, Novel food items, Food processing and catering.
2. **Family Resource Management:** Home Management, Decreasing production cost, Resource management, Empowering consumers, Developing Ergonomically suitable implements. Optimization and conservation of Resources, Consumers Awareness, Entrepreneurial using skill in Art and Craft and farm waste, Management and marketing skills.
3. **Clothing and Textiles:** Knowledge and skills of designing and apparel manufacture, Textile Chemistry, Technology , Designing Skills, Preparing and Marketing of Handicrafts, Purchase, Care and Maintenance of Textiles, Optimizing the use of agro based resources, Utilizing minor fibers and natural dyes, Consumer Education.
4. **Human Development:** Gender Sensitization,

Empowerments of females, Knowledge/ Life Skill Empowerment of Girls/ Women/ Families/ Communities, Use of Assessment and Capacity Building Skills, Parenting Strategies, Guidance and Counseling Services, Improving the Quality of Life of Children, Adolescents and Elderly, Developing Support Systems, Geriatric Care Management, Mental Health.

5. **Extension and Communication:** Participatory Rural Appraisal to study communities, Changing Societal Scenario, Variations within communities/ Agro- Climatic zones, Skills in preparing media and developing models/ methods for dissemination of knowledge regarding agriculture and allied activities, Interaction/ collaborations with agencies and functionaries, Gender sensitive Individuals/Organizations/ Communities, Gender Analysis.

Career Opportunities in Home Science:

1. **Technical Research and Development:** Scientists, Food Quality Controllers, Research Coordinators/Project Officers, Research Assistant in Health and Nutrition Programmes / Community Health Programmes, NGO 's Agencies of National and International Repute- ICMR, ICAR, NIPCCD, CFTRI, NIN, UNICEF, WHO, WFP etc. Development Journalists, Media Researchers, Evaluative Researchers
2. **Production:** Media Production, Managers/ Supervisors in Garment Industries, Food Industries, Production Units of Hotels.
3. **Education and Administration:** Teaching in Schools, Colleges and Universities, Administration, Special Educators, Remedial Teachers in Rehabilitation Centers, Teacher Trainers, Extension officers, After School Programmes.
4. **Product Design and Development:** Food Product Development, Fashion Designer, Interior, Landscape Designer, Textile Designer, Jewelry Designer, Product Developers.
5. **Guidance and Counseling:** Schools/ Colleges/ Universities/ Technical Institutions, Child Guidance Clinics, De- addiction Centers, Child Care Centers, Family Courts, Family Life Coaches, Family and Community Resilience Building Centers, Couple and Family Therapy/ Marriage and Family Counselors, Special Education Facilities.
6. **Marketing and Sales:** Apparel Merchandisers, Advertising, Sales Promotion, 7. Service Jobs: Dieticians in Hospitals, Diet Consultations in Hotels, Industrial Canteens, Fitness Centers and Geriatric Clinics, Health Resorts, Housekeeping Personnel, Consumer Awareness Campaigners, Front office Managers.
8. **Entrepreneurship Ventures:** Food Business, Garment Manufacturing, Computer Graphic Designing, Early Childhood Care and Education, Consultancy Services for Family and Community.

The Leading Institutes in India:

1. Avinashlingam University – Tamilnadu
2. Maharaja Sayajirao University - Baroda
3. Women's Christian College (WCC) -Chennai, Tamil Nadu
4. Vimla College, Thrissur - Kerla
5. SNDT Women's University- Mumbai
6. G,B. Pant University of Agriculture and Technology - Pantnagar (Uttarakhand)
7. Mount Caramel College – Banglore
8. Lady Irwin College- New Delhi
9. Queen Mary's College- Chennai
10. Government College for Women- Kerla
11. Government Home Science College- Chandigarh
12. Fatima College- Madurai
13. Banaras Hindu University- Varanasi
14. Tamilnadu Agriculture University- Tamilnadu
15. Aligarh Muslim University- Aligarh
16. Acharya NG Ranga Agricultural University- Guntur
17. Punjab Agriculture University- Ludhiana
18. Delhi University – Delhi
19. Mumbai University- Mumbai
20. Banasthali Vidyapeeth- Jaipur
21. Amity University- Noida
22. Institutes of Home Economics – New Delhi
23. HNBGU- Srinagar (Garhwal) Uttarakhand

Special Vocational Courses Allocated by Ugc:

S.No.	Name of College/ University	Name of Course
1.	BMS College for Women, Bugle Road, Bangalore	• Information Technology • Retail Management
2.	Bishop Heber College, Trichrapally	• Accounting and Taxation • Information Technology
3.	D.K. College, Mirza, Dist Kampup	• Retail Management and IT • Banking & Financial Services
4.	DAV College, Sector 10, Chandigarh	• Food Science and Technology • Medical Lab Technology
5.	Degree College of Physical Education (Autonomous) Hanuman Vyayam Nagar, Amravati 444605, Maharashtra	• Health Care
6.	Dr. Annasaheb G.D. Bandel Mahila, Mahavidyalaya, Jalgaon	• Fashion Design • Beauty Therapy
7.	Ewing Christian College Mutthiganj, Allahabad	• Food Processing & Quality Management • IT and ITes
8.	G.H.G. Khalsa College, Ludhiana	• Food Processing & Quality Management • Medical Laboratory Technology
9.	Hindi Mahavidyalaya, O.U. Road, Nallakunta, Hyderabad	• Hospitality & Tourism Administration • Banking & Insurance
10.	Iswar Saran Degree College, University of Allahabad	• Automobile • Food Processing

Home Science Reference Books:

1. Human Development - E. B. Hurlock
2. Life Span Development- Robert S. Feldman and Nandita Babu
3. Exploring Life Span Development- Laura E Berk
4. Text Book of Human Foods and Nutrition – M.S. Bamji
5. Essentials of Human Foods and Nutrition (Vol- 1 & 2)- Swaminathan, M.S.
6. Textiles – R. Hollen and Jane Sandler
7. Textile Science- Rastogi Deepali & Chopra Sheetal
8. Management for Modern Living- Nickel and Dorsey
9. Extension and Communication- O.P. Dhama and O.P. Bhatnagar
10. Housing and Interior Design: A Guide to Planning Spaces- Maureen Mitton and Courtney Nystuen

Reference:

This article has been adapted from the Home Science Then and Now: Committed to National Development by Prof Neeru Sharma, University of Jammu.

- Achhpal, Beena & Verma, Amita (1988) Towards Better Families: An Integrated Approach to Family Life Education. Funded By FPAI
- Indian Journal Of Home Science (2009), 28(1)
- International Federation For Home Economics, World Congress 2012 , Resolution Global Wellbeing, Melbourne, Australia, 20thjuly 2012
- Pau Ludhiana (1999) Xiii Biennial Conference of Home Science Association Of India. Souvenir Home Science Education Vision 2020, 17th -19th November, 1999
- Position Paper Home Economics And The Australian Curriculum(2010) Home Economics Institute of Australia Inc
- UGC Model Curriculum(2001) Home Science Post Graduate Programs, UGC
- UG Programme Choice Based Credit Semester System (MGU-CBCSS-UG),Revised Scheme

Nutrition and Immunity

Dr. Prabha Bisht
Assistant Professor, Dept. of Home Science

In the wake of the corona virus spread and FDA announcing there are no approved drugs or vaccines to cure this pandemic, what we are left with?..... Yes it is our immune system between us and the viral attack. The present scenario made us seriously realize the importance of strong immune system. Our immune system is our body's version of the army on duty to protect and defend us from non state actors doing anything that body won't actually appreciate. It is the immune system that protects us against diseases, infections and helps us recover after an injury and this is how the population survived in the pre vaccine world.

An immune system is a system of biological structures and processes within an organism that protect against disease. Immunity protects our body from harmful external influences. In order to function properly, an immune system must detect a wide variety of agents from bacteria and viruses to parasitic worms and distinguish them from organism's own healthy tissue. Immunity is a layered response of the body; the main layers of defense are Surface factors, Innate Immunity and Acquired Immunity.

Here we have some interesting facts about our immune system.

1. It's a river of Blood and Lymph
2. It comprises of White Blood Cells.
3. It has to do with proper sleep.
4. Sun exposure has direct connection with it.
5. Stress it not good even for your immune system.
6. Laughter is best medicine for immune system too.
7. Fever and inflammation enhances the innate immune defenses.
8. Exposure to germs could result in robust immune system.
9. Sometimes the body's immune system attacks healthy cells (auto immune disorders).
10. Allergies are immune systems response to something innocuous.

Nutrition and Immunity:

Honestly diet can not directly prevent or cure infections but good nutrition can strengthen and malnutrition can weaken the body's defense mechanism against them. Diet and nutrition are important factors in the promotion and maintenance of good health and reducing risk of chronic and infectious diseases throughout the life. Diets have strong effects both positive and negative on health throughout life. Adequate nutrition is vital for a healthy immune system. Nutrient deficiencies and excesses can harm the immune system. Both innate and acquired immunity is affected in malnutrition. Malnutrition and infection aggravate each other. In fact malnutrition is the commonest cause of immunodeficiency worldwide.

Role of Different foods

The function of the immune system, like most systems in the body is dependent on proper nutrition; energy intake seems to have an important influence on immune activity. Studies have shown diets comprising of lesser calories than required can also reduce immune functions so we must avoid crash dieting. Regular consumption of fermented dairy products such as yoghurt (dahi) enhances the immune defense in the gut. Immune system maintenance requires a steady intake of all the necessary vitamins and minerals. This can be accomplished by eating a well balanced diet including plenty of fruit and vegetables, yoghurt products on a regular basis. Specific foods like fresh seasonal fruits, vegetables, foods rich in omega 3 fatty acids may foster a healthy immune system. Iron and Zinc are the minerals essential for immune competence.

Among the major nutrients Carbohydrates supply the immune system with energy so that it can work better and fight disease and Proteins make enzymes and immune globulins, which help the immune cells kill germs, viruses and bacteria.

Vegetarian diet is rich in higher level of immunity enhancer phyto chemicals available in fresh fruits and vegetables. Vitamin C boosts antibodies and white blood cells. Vitamin A also known as member of antioxidant group rich foods like Carrots,

Pumpkins and winter squashes, green vegetables rich in carotenoids. Herbs and micro greens help us fight diseases. Fiber rich diet too helps improve gut health and immunity. Alcohol consumption depresses the immune system.

It does not call much for you to build a strong immune system, adherence to basics will go long way. Fill up your plate with colorful seasonal fruits and vegetables. Don't get carried away with fancy looking, cheap and readily available food in the market, prefer quality nutrition over sales gimmicks, don't let your life style take its toll on required nutrient supply to your body. Try to avoid processed food as much as you can, appreciate home cooking, enjoy traditional meals that suit your genetic makeup most. Don't be lazy invest at least 30 minute per day in any form of physical exercise. Limit your screen time (the time spent with laptop, TV, computer, mobile etc.) and take proper sleep.

References:

1. *Brian Krans and Erica Cirino , Fun Facts about the Immune System, University of Illinois-Chicago, College of Medicine, April 8, 2016*
2. *Diet and Nutrition (Nutrition and Immunity) Slide Share PPT.*

The sacrifices made in a moment of emotional excitement when a man takes a Leap into the dark without a second's calculation or hesitation. This 'delirium of the brave', according to Eliot, constitutes the corner-stone of the dignity and progress of humanity.

- T.S. Eliot

Humanism in Rohinton Mistry's Fiction

Preeti Kakkar
M.A. IV Semester

Humanism in Rohinton Mistry's Fiction

Humanism has travelled a long way from the choice of subjects prescribed in the universities during the Renaissance period on the European mainland to our times when the postmodernists have deconstructed the term and pointed out fallacies, chiefly the notion that actually there is something called 'essential human nature'. And yet what Protagoras, the pre-Socratic Geek philosopher said, "Man is the measure of all things", remains central to all types of humanism.

There are several types of humanism which have been conceptualized by thinkers over the ages, like Renaissance Humanism, Christian Humanism, Naturalistic Humanism, Marxian Humanism, Secular Humanism,, New Humanism etc. Broadly speaking, humanism can be hitched to two poles: religious and secular. A debate has always raged around whether it is the philosopher or the religion that forms the core of humanism. Those who believe in philosophy are called Secular Humanists and those who believe in religion are called Religious Humanists. Both of them, however, share the same worldview and basic principles. This is borne out by the fact that both signed the famous Humanist Manifestos No. I and II. It is only in the definition of religion and in the practice of the philosophy that Religious and Secular Humanists effectively disagree.

Religious Humanists maintain in that most human beings have personal and social needs that can only be met by religion which is taken in a functional sense. What we mean by 'functional' here is what role religion actually plays in the live of the people, individually and collectively, rather than looking at it as something mystical. Religion is viewed as that which serves such needs of a group of people sharing the some philosophical world view. If prayer helps one to rise high in the realm of consciousness then it is welcome.

The religious humanists feel that secular humanism is so coldly logical that is rejects the full emotional experience necessary to make true humans.

For humanism, "Man is the centre of meaning and action, the world is oriented around the individual. Each individual is different, each possesses a unique subjectivity, yet also, paradoxically, each shares a common human nature. That combination of unique individuality and common human essence cohere around the idea of a sovereign self, whose essential core of being transcends the outward signs of environmental and social conditioning. Poststructuralism has sought to disrupt this man-centred view of the world, arguing that the subject, and that sense of unique subjectivity itself, is constructed in language and discourse, and rather than being fixed and unified, the subject is split, unstable or arugmented. "

Whatever the objections of the postmodernists, it is a fact that humanism has not lost its attraction. Of course, it remains a loosely defined term. More than that, the movement has innumerable votaries and it remains a disorganized one. The proof lies not only in different types of humanism, but also in the opened Humanists Manifestos which are supported by different groups of humanists. There does not appear to be any possibility of the mankind's ever forgetting humanism for the simple reason that human beings, out of selfishness at least, would always place themselves first. Even the religious personalities, all over the world, can do little without reference to human being. So, whatever is in their own interest will always attract contemplation and action.

Different thinkers have viewed humanism differently. Hence we speak of the humanism of Bertrand Russell of the humanism of Vivekananda. So far as Mistry's humanism is concerned, he seems to believe in the essential goodness of man. There is a wide cross-section of society portrayed in Mistry's novels. His humanism is amply reflected in the treatment of characters occupying lower stations in life.

In the novel A Fine Balance, apart from Om and Ishvar who come from the contyside, there are the slum dwellers doing odd jobs like the Monkey-man and the hair collector. But there is hardly any characters created by him who would embody evil only. Take for example, the characters of the

Beggarmaster or the Rent Collector in A Fine Balance. To the outside world, a person running the 'business' of beggary is invariably a devil. But after acquainting ourselves with the actions of the Beggarmaster we do not really hate him. Instead, we fine that he is helpful to harassed Dina Dalal. His human feelings come to the fore in the treatment of his step-brother Shankar who is also a beggar. Similarly, Ibrahim, the rent collector, is, at heart, a pitiable figure because he has to follow the diktat of his employer much against his wishes.

Mistry's character Gustad Noble in Such a Long Journey is, true to his name, a noble soul. His own cup of woes is full to the brim with a limited salary, son's planned entry to the IIT, daugher's constant illness and most of all, the intractable problem created by his one-time friend Bilimoria. Still, he is helpful to all around him. He discharges his duties towards the members of his family well and also says his prayers. More than that, he translates the Parsi ideals of humatea, hukatha and huvarstha (good thoughts, good words and good deeds) in action. This character surely epitomizes human nature that transcends the socio-cultural surroundings. In his struggle through life, he ennobles himself even more. "Everything in the novel happens as if some immanent will is firmly set to counter human action as in an epic or a heroic tragedy. In spite of everything it is destiny that Gustad find at the helm of affairs. Like Oedipus, he bows to the will of Providence, and not unlike Job, he finds in compassion and endurance a dignity and greatness withstanding all that fortune keeps in store for him."

But through his myriad characters, Mistry also shows the awareness of differences among human beings. He locates innate goodness, which is, at times, gets diluted or distorted by compelling circumstances, because human beings are not mysthical gods, They do err, so Gustad forgives Bilimoria. When pitted against his son, Gustad recognizes his own mistake and so fogives his son Sohrab.

In the novel A Fine Balance, we have a strong character in Dina Dalal, whose delineation would warm the cockles of any feminist. Feminism is, after all, another face of humanism. Dina is driven against the wall due to the dominating attitude of her elder brother who would not brook her attempt to be self-reliant. But she has it in her, so she struggles hard to be on her own and thus to prove herself. When she is not able to carry on the sewing work due to her failing eyesight, she hires two tailors Om and Ishvar. She treats them humanely and stands by them when they need shelter in the overcrowded space-starved city of Bombay. She is threatened y the landlord and is indeed thrown out finally but she fights till the end.

Similarly, in the novel Family Matters, we come across Mr. Kapur, who is a true humanist at heart. He is in love with not only the buildings and roads of Bombay but also with its cosmopolitan spirit. He thinks Bombay is as much his as it is of a Maharashtrian. Though a Hindu, be has Muslim and Parsi employees. He celebrated Christmas. He wishes to merge his identity with that of the common Bombayite. To achieve this end, he tries boarding the train but does not get the cooperation of the crowd of daily passengers. He does not blame the people, rather he thinks his clothes show affluence which might have set the people off! This is nothing bu liberal humanism.

Again, we find Percy as a young man in the story 'Lend Me Your Light' in Tales from Firozsha Baag. He does not go abroad like his brother Kersi or friend Jamshed. Instead, he devoted his life to the service of the poor Indians in the countryside. Along with a friend of his, he starts work on improving the lot of the poor people by providing them soft loans and thus getting them freed from the stranglehold of moneylenders. This is a task fraught with difficulties and danger. His friend is murdered but Percy is not deterred. It is the mission of his life. Kersi yearns to follow in his footsteps but is not able to muster enough courage. A critic rightly notes, "There are others like Kersi, who aspire but fail to make the sacrifices needed to have his elder brother's passion. he merely prays, "Lend me your light," but the likes of Percy have shunned the abmivalence and acquired an identity, not necessarily a Parsi one bu surely an authentic human indentity."

Religious humanism is what suffuses Rohinton Mistry's work. Religious Humanists make sure that religion is never allowed to subvert the higher purpose of meeting human needs in the here and now. Indeed, like a true religious humanists, Gustad seems to believe that " it is immoral to wait for God to act for us", as Kenneth Phifer declared. 4 Thus, in His scheme pf things, itis one human being coming to the rescue of the other, Dina Dalal continues to welcome

Om and Ishvar, now turned handicapped beggers, to her brother's home, much against the wishes of her big brother.

Like a true humanist, Mistry focusses his gaze on the scum of the earth and upholds their human rights. In A Fine Balance, he not only portrays the hapless lives of Om and Ishvar but also of their kith and kin, back in the interior rural region of north India. The reader is flabbergasted when he comes to know of the inhuman treatment of the so-called low-caste people by the upper caste people in the countryside. How they are exploited economically, sexually, socially and politically is portrayed graphically and at great lengh in this novel. One is amazed at the research done by the author. What he has shown is something which any knowledgeable Indian would corroborate. In this his compassionate heart speaks. His sensitivity is reflected in the character of Maneck Kohlah crafted by him. Disillusioned by the fate that overtook his erstwhile friends Om, Ishvar and Dina, Maneck commits suicide. This episoce shows the writer's frustration over the in human treatment of poor people. Indeed, humanitarianism is an essential feature of humanism of all denominations.

In his third novel Family Matters, Rohinton Mistry portrays the lif of Nariman Vakeel, an old Parsi who retired as professor of English literature. By taking up an old person as a protagonist ofthe novel, Mistry makes a humanist statement. Ageism is paradoxical in that it is a dehumanizing humanist ideology in so far as it rests on the unacknowledged essentialisation of the human as young, powerful, attractive and rational, particularly where the human character as protagonist is considered. Viewed from this angle, the old people are driven to the outer margins of the properly human.

Similarly, in Tales from Firozsha Baag, Mistry focusses on the pain and problems as also the oddities and eccentricities of old people through the characters of Rustomji, Najamai, and Tehmina et al. In this collection of short stories Mistry's main focus is on the lifestyle of the Parsi community living in an apartment block. It is believed that this is recollection of his own childhood days. The developments taking place in the lives of the inhabitants are viewed from the point of view of a youngster. In this work also, the humanist outlook of the author informs the portrayal of the subaltern people like Francis and Jaykaylee - the former a handyman and the latter a maid. While Mistry's mouthpiece, the youngster Kersi's sympathy for the wronged Francis is quite evident, in the case of the old maid Jaykaylee, her frustration is given a human treatment even though on the surface, she appears to be a sex-starved old woman with superstitious beliefs.

In the novel A Fine Balance, we have a strong character in Dina Dalal, whose delineation would warm the cockles of any feminist. Feminism is, after all, another face of humanism. Dina is driven against the wall due to the dominating attitude of her elder brother who would not brook her attempt to be self-reliant. but she has it an her, so she struggles hard to be on her own and thus to prove herself. When she is not able to carry on the sewing work due to her failing eyesight, she hires two tailors Om and Ishvar. She treats them humanely and stands by them when they need shelter in the overcrowded space-starved city of Bombay. She is threatened by the landlord and is indeed thrown out finally but she fights till the end.

Like a true humanist, Mistry focusses his gaze on the scum of the earth and upholds their human rights. In A Fine Balance, he not only portrays the hapless lives of Om and Ishvar but also of their kith and kin, back in the interior rural region of north India. The reader is flabbergasted when he comes to know of the inhuman treatment of the so-called low-caste people by the upper caste people in the countryside. How they are exploited economically, sexually, socially and politically is portrayed graphically and at great lengh in this novel. One is amazed at the research done by the author. What he has shown is something which any knowledgeable Indian would corroborate. In this his compassionate heart speaks. His sensitivity is reflected in the character of Maneck Kohlah crafted by him. Disillusioned by the fate that overtook his erstwhile friends Om, Ishvar and Dina, Maneck commits suicide. This episoce shows the writer's frustration over the in human treatment of poor people. Indeed, humanitarianism is an essential feature of humanism of all denominations.

In his third novel Family Matters, Rohinton Mistry portrays the lif of Nariman Vakeel, an old Parsi who retired as professor of English literature. By taking up an old person as a protagonist ofthe novel, Mistry makes a humanist statement. Ageism is paradoxical in that it is a dehumanizing humanist ideology in so far as it rests on the unacknowledged essentialisation of the human as young, powerful,

attractive and rational, particularly where the human character as protagonist is considered. Viewed from this angle, the old people are driven to the outer margins of the properly human.

Similarly, in Tales from Firozsha Baag, Mistry focusses on the pain and problems as also the oddities and eccentricities of old people through the characters of Rustomji, Najamai, and Tehmina et al. In this collection of short stories Mistry's main focus is on the lifestyle of the Parsi community living in an apartment block. It is believed that this is recollection of his own childhood days. The developments taking place in the lives of the inhabitants are viewed from the point of view of a youngster. In this work also, the humanist outlook of the author informs the portrayal of the subaltern people like Francis and Jaykaylee - the former a handyman and the latter a maid. While Mistry's mouthpiece, the youngster Kersi's sympathy for the wronged Francis is quite evident, in the case of the old maid Jaykaylee, her frustration is given a human treatment even though on the surface, she appears to be a sex-starved old woman with superstitious beliefs.

In Such a Long Journey, we come across Tehmul, a hadicapped dim-wit, who is treated humanely by the protagonist Gustad Noble where others in the Parsi enclave do not care for him. It is Gustad who saves the man-boy from the taunts of the prostitutes, glosses over his unnatural sex with the doll and attends to his last rites when he dies as result of a head injury. Similarly, Miss Kutpitia, whose name in Gujrati means 'the quarrelsome', is presented more as a pitiable character than an old crank living at the margin. Again, there is heart-rending description of Lucy, the Christian beloved of Prof. Nariman, who dies wallowing in disappointment in love, simply because the professor's father, an orthodox Parsi, did not allow inter-faith marriage.

There is no doubt that in the name of humanism, politicians have committed many anti-human activities, as Edward Said notes, " ... it has been the abuse of humanism that discredits some of humanism's practitioners without discrediting humanism itself. Mistry leaves no stone unturned to expose the Machiavellian politicians. His very first novel Such a Long Journey deals, in a major way, with their machinations which manifested in the Nagarwala episode. Mistry does not spare even the then Prime Minister Indira Gandhi and very candidly holds her responsible for framing Major Bilimoria (Nagarwala's substitute) in order to save her skin which could have been singed very badly because she diverted funds meant to help the Mukti Bahini of Bangladesh to fund her son's car project.

In A Fine Balance again, we find the Emergency era of Mrs. Gandhi under scanner. Om and Ishvar are the representatives of common Indians residing in the countryside. As they settle down in Bombay because of the compulsion of their vocation, we also get acquainted with the urban poor thronging the slums of Bombay. How the politicians make use of the poor to further their personal agendas is effectively portrayed by Mistry. They are promised food and money and thus lured to attend election rallies. The Prime Minister likes to maintains an army of sycophants. While she cares two hoots for the court judgement setting aside her election on account of malpractices, sje sermonizes to the countrymen to be disciplined in the name of removing poverty, she gets the poor removed to forced labour camps! The common people are no foods and they do observe the tricks of the politician' trade.

So far as religion is concerned, Mistry takes a functional view of it, as the religious humanists do. The religious humanists agree that most human beings have personal and social needs that can only be met by religion. There is hardly any mystique attached to religion by the humanists. They take it in functional sense in that they judge it by the role it actually plays in the lives of the people. If prayer helps one to rise high in the realm of consciousness as it did with Gustad Noble of Such a Long Journey, then it is fine. But if it worked likewise in all cases, then Mistry would be religious preacher rather than humanist. Whereas Gustad's is a noble mind and he remains helpful to everyone around him life, Yezad of Family Matters is built of a different stuff.

Thus, on the basis of thorough examination of Mistry's works, we find that Mistry's Humanism stands for essential human goodness despite individual differences, equal human rights, fundtionality of religion and end to sociopolitical exploitation of vulnerable sections of society.

Behaviour is a mirror in which everyone sees his own image.

Gender Equity and Gender Equality

Pradeep Kumar
M.A. (English) IV Semester

Concepts of Gender

An infant is born as male and female. How do we distinguish between male or female? The first thing that comes to the mind is the sex or other biological features of the new born which differentiate between male and female. Thus, sex can be defined in the biological context, and can say that much biological distinction is found between the two sexes. Thus, sex is binary system in which there are generally the two option: Man and woman. It is this picture of sex which generally emerges in the mind, and the distinct behaviour of man and woman clouds the mind. This Picture become enriched or stronger by the life's experiences and methods of bringing up, and it is conserved, preserved and transmitted from culture to culture. This picture remains deep-rooted in man's mentality somewhere, so it is often taken as for granted, and this takes the form of gender.

Concept of Gender in Indian context: In the Indian context, the present time is that of much discussion so far as gender concerned, of whom the important one is kamala Basin, Uma Chakravarty, Maitreyan Krishna raj, Sharmila range and Nivedita Manon.

Kamal basin says; "*Gender is a definition in sociocultural from given to man and woman. It is an analytical tool of measuring the truth of society*."

According to Maitreyan Krishna Raj; "All those economic and political problems that exist in the society are all related to gender. Gender-based labour is that division which has been determined by the patriarchy social disciplines, whose concept must be discovered at the family and economic basis. Besides, gender is an analytical category which attempts to find out the relations between man and woman based on social structure and their complex behaviour."

Gender Equity

Gender equity is a group of activities, attitudes and assumptions which provides opportunities to peoples and given birth to aspirations.

According to common definition of gender equity, it is never different from racial, caste, linguistic incapability, income and other differences, and all this defines us as human. Gender equity points to providing a reform structure in which both man and woman participate on equal terms whatever the subject of concern:

- They get ready for future education, service, career and civil cooperation.
- They possess high ambition for themselves and others, and fulfil them too.
- They develop as respected, productive individuals, friends, family members, workers and citizens.
- They realize equal behavioural norms and common goals in and outsides school.

Gender equity is the process of being just fair towards men and women.

Some steps have to be taken to maintain lack of prejudice by which such historical and social demerits can be eradicated which have proved and impediment in giving equal opportunities to man and woman. Equity is a means to realize gender equality.

Gender Equality

"*Gender equality is more than goal in itself. It is a precondition for meeting the challenge of reducing poverty, promoting sustainable development and building good governance*." - Kofi Annan

The minute forms of gender equality are as follows:

- Under it, different and unequal roles are assigned to man and women, and it is assigned as masculinity and femininity.
- In practice, the roles of femininity and masculinity are defined as natural differences. In this way, an unequal relation too is made to appear as natural or normal.
- Gender is formed, and not given; and if we look at the gender differences from the viewpoint of dominance, we find that gender is quite different from nature, and questions should be raised against it.
- Gender relations are not static, but keep changing with time and culture. They are dynamic, and form and transmit the attributes of masculinity and femininity according to specific reference and periods.

- Gender is a progressive concept which can be revisited and transformed. Gender relations are not sacrosanct. There is need to raise questions against the existent gender relations at present.
- Thus, education becomes a tool of re-inspecting and reviewing. When we experience gender as a form of domination, we can well analyse the fine forms of equality and the tendency to side-line actual dominance.
- Having formal concept about equality is not enough; education should possess basic and amended concept towards equality.
- Equality is related to not only treatment, but also outcome.

It entails that the education process should be so structures that both boys and girls are encouraged to capacitate girls coming from diverse backgrounds. The focus of methods of teaching, curriculum and entire educational guidance should be concentrated on girls' empowerment, and not inclined towards subordination of girls.

Youth Culture

Priya
M.A. IV Semester

Introduction:

The lifestyle of adolescents or young is called youth culture. Today it is a great phenomenon.

Description:

The youth culture means the thinking, values, belief, tradition, customs, ways of living, religious values, styles, behaviors, and interests of a particular group. On the other hand youth indicates the young or adolescent community. There are some elements by which young culture is formed. Among these elements lifestyles, behaviors beliefs, sports, music, clothes, style of speaking etc are noteworthy. Youth culture plays a vital role to form a society as young are the future leader of any society. As young are an important or basic part of any society, their culture easily impacts the whole society. Some interior or exterior facts influence young culture such as print and electric media. The electric media is now spreading songs, music, picture, lifestyle, mode of speaking, language, culture, clothes etc. all over the world. The result is that the young section of a society are greatly influenced by such programmes. Truly speaking, sometimes they discord their own culture. Today some adults are seen to be worried thinking about their youth culture as they are going in moral degradation. Researchers say that there has created a conflict between the young culture and adult culture in the whole world.

Reasons:

Youth culture is formed in many ways. Modern technology plays a great role for this. One country's people can easily watch or observe the culture on any other country. As a result, they often become exposed by the other country's culture. Besides, the changing of taste of the new generation also play a great role of forming new youth culture.

Merits of youth culture:

In spite of having a lot of disadvantages, it has some advantages too. It is true that any kind of intrusion is not always bad. There are some reasons behind this. It cannot be said that all traditions or cultures of a country may not be good at all. It may be dad culture. These bad culture may be changed by another culture through the cultural intrusion. It can be said more clearly that it may be reformed or developed by another culture through cultural intrusion. Besides, one country's people can know the other country's people culture.

Demerits of youth culture:

In spite of having a lot of advantages, it has some disadvantages too. Every society has culture of their own. Due to cultural intrusion, it may often be changed. This change is not good for any country or society. Because, cultures bear a unique entity of a nation. Besides, it helps to differ one country's people from another country's people. It is observed that some bad cultures of a country intrude easily in the name of cultural intrusion. No nation cannot stand upright without their own culture. Cultural intrusion hampers them very much. New generation can not know their countries cultures due to cultural intrusion.

Conclusion:

To inform own country's cultures of the young generations, to protect cultural intrusion is must. Young have to follow good something that are beneficial for his/her own and for his/her country. The guardians should also take care of their young.

Young have to follow good something that are beneficial for his/her own and for his/her country. The guardians should also take care of their young.

Religion And Politics in India

Sudhanshu Rayal
M.A. (English) IV Semester

On the eve of independence, India decided to establish a secular state with its own characteristics of religious tolerance, liberty and equality. Religious tolerance is a key element in the concept of Indian secularism because it has been a significant element of the country's historical tradition.

Secularism in India is a way of life. In a country where there are at least 12 religions, over 300 castes, nearly 4,000 sub-castes, over 100 major languages and more than 300 dialects, the only way to reduce internal tensions is to inculcate tolerance and co-existence. The idea of secularism in a country like India with its pluralist tradition lasting over thousands of years cannot succeed without respecting pluralist ethos.

Dilemmas of a secular state

The use of religion for political purposes was almost nonexistent at the time of independence. It is curious to note that communal politics gained strength after about 40 years of national government. If it was entirely due to the forces of traditionalism, it should have appeared at the time when forces of modernity had gained traction in Indian society and economy. Since the '60s, Indian politics has seen drastic changes in style, language, modes of behaviour, reflecting the actual cultural understanding of rural Indian society rather than the Western ideals of the elite which inherited power in the Nehru years.

There are two consequences of this amalgamation of religion, politics and public administration. First, it has given prominence in public life to religious leaders like "sants" and "mahants", "imams" and "priests". They have started playing an active role in governmental decision-making. The interference of religious leaders in administrative matters can prove dangerous to India's secular democracy.

From the early '80s, Hindu communal organisations increased the scale, aggressiveness and violence of their operations under the general direction of the militant Hindu right-wing party RSS and its mass fronts: the VHP, which coordinates religious bodies, and the BJP, its electoral wing.

Second, practices and festivals have started making serious inroads into public life. As a result, a sea change has occurred both in Hindu religious community and in its relations with others. In these changed circumstances, the Hindu community was called into action, not as one of the various Indian communities, but as "the Indian community". It was not only the religious revivalist forces but also the modernising reformists who equated the Hindu community with Indianism and patriotism. Steps were taken deliberately to create a Sanskrit-based Hindu language, Hindi, as against the earlier composite language. Further, there are two variants of this expression of Indianness. One is the overt religious concept of Hindutva; and the other is the "secular" expression of Indianness as based on ancient Indian culture. The first is a religious concept, the second a cultural one; but both together relate Indianness to the tradition of what is now identified as Hindu civilisation. According to the lines drawn above, the political parties of India may be grouped as religion-leaning and secularism-leaning.

Increasing importance of religion

In India despite partition on the basis of religion, the country resolved to be a secular state and promulgated its Constitution in 1950 accepting equal rights for all citizens irrespective of their caste, creed or race. It was undoubtedly a great step forward. But it was not easy to translate the constitutional ideals into practice in a society as complex as that of India. The Indian state was characterised as a "soft state" by Swedish economist Gunnar Myrdal in his book Asian Drama: An Inquiry into the Poverty of Nations. The Indian state remained not only soft

towards communalism but it also encouraged it, if it paid political dividends. 1970 onwards the central and different state governments started the practice of arranging iftar parties for Muslims during Ramadan. Now, political leaders compete with each other when it comes to throwing lavish parties at national and state capitals and the practice has continued even in the regime of the BJP. Wide publicity is given in the media as to who attends these parties and what is being served. It is forgotten that such politicisation of iftar is a sacrilege of a religious practice which may not be taken lightly by Muslims.

Louis Dumont, one of the most influential writers on Indian religion and society, viewed sadhus as the agent of development in Indian religion and speculation, "the creator of values" responsible for "founding of sects and their maintenance", and for the major ideas and social innovations. Under these changed circumstances, this consensus on the role of religious figures began to transform during the time of Indira Gandhi who relied on populist measures and appeal when it came to specific categories of voters. She drew Hindu religious figures into the limelight through her patronage of religious institutions and played the "Hindu card" against the minorities. The case of Sikh religious leader Bhindranwale is an example of her creation. She was systematically encroaching on the traditional vote bank of Jana Sangh. Indira Gandhi also co-opted Muslim religious figures in her attempt to hold on to the Muslim vote, pursuing her strategy of what was then called "Fatwa politics". Thus, the ideology and practice of secularism in reality were confronted with multifaceted and multi-dimensional challenges.

Use of religion in politics

Secularism in India began to face turbulent weather with the revival and strengthening of religion leaning political parties in the country. The pro-Hindu strategies of the ruling Congress reminded the Bharatiya Janata Party (BJP), Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) and Vishva Hindu Parishad (VHP) of its actual role for which they had been struggling in the previous decades. Earlier in the '70s, several proposals were made for a judicious deradicalisation of the BJP's slogans from groups inside the party itself.

The decade also witnessed communal propaganda bring in a few dividends and the irreversible decline of the Jana Sangh. At this juncture, it was felt inside the party that it should subtly shift its appeal to the middle-class. Instead of the traditional appeal to Hindu chauvinism, it should try to project itself as a substitute for the Congress, asking for support not because of its ideological differences with the Congress, but because of its similarities—offering a cleaner, more efficient, less corrupt government.

After the dramatic success of the ratha yatras (public processions in a chariot), its own agenda was rewritten in a retrograde direction, but it is remarkable how clearly the party has not rejected its other, more secular constituency.

From the early '80s, Hindu communal organisations increased the scale, aggressiveness and violence of their operations under the general direction of the militant Hindu right-wing party RSS and its mass fronts: the VHP, which coordinates religious bodies, and the BJP, its electoral wing. Again in the mid-1980s, elections were held to the Lok Sabha in 1984 after Indira Gandhi's assassination, and the BJP, under the presidentship of Atal Bihari Vajpayee, got only two seats. Vajpayee resigned and LK Advani, considered a hawk in the party, took over and gave BJP new hope and a decision was taken by the leadership of BJP to promote Hindu militancy to snatch the Hindu vote bank from the Congress.

Learning from Corona Virus 2020

Himani Raturi
M.A. III Year

As we all know that the Corona Virus 2020 is going on a struggle for a whole world. Corona is as dangerous epidemic, which is affecting us physically, financially, commercially, mentally etc. and spread all over the world.

Corona had an impact on children, old men and youth. The impact and fear of Corona all accepts which is very high March to August, but now gradually diminishing. The government has given many measures to protect the Corona Virus such as. It is necessary to keep social distancing, mask,

sensitizer and follow the rules of lockdown. All of us should take care .

If we look to follow the norms of lockdown at the Corona period and we get to learn a lot of things. During lockdown people have learnt new skills like cooking, dancing, writing, reading etc. During this period we have seen sacrifices of nurses, polices, doctors etc. who have stayed away from their family regardless of their self and continue to serve the people of the country.

During this Corona, we have experienced actually seen that 2020 taught people to struggle, we have also learned how important cleanliness is in the country. We learn to take care and help each other. Taught to save nature.

We have seen the need to save food. The price of food explained. It is taught to keep balance. Be taught to live without makeup. It is told that low cost marriage and funerals can be done in less people. Gave the necessary strength to stay at home and taught to do household work. It has made mental preparation to deal with any major calamities in the future. The distinction of rich and poor has lessened. We have understood the true value of life and the pandemic has made us more spiritual.

"The Year 2020 (Corona Period) has brought a change in our life, in thinking in behaviour."

Mathematics in various walks of Life

Sarthak Uniyal
B.Sc. I Year (PCM)

Introduction

In 18 century mathematics was already become of part of modern science. Mathematics began to develop very fast because of its introduction to schools. Therefore, everyone have a chance to learn the basic fundamental of mathematics in 21st century. Mathematics used in robotics, in space research, sports, biological calculation, IT etc. Even those suffering math's related anxieties or phobias can't escape its everyday present in their life from home to school to work and places in between, math is everywhere.

Whether using measurements in a recipe or deciding if half a tank of gas will enable us to reach out destination, maths is used. It is good idea, therefore for teacher and parent of reluctant math's learner to use real world example to ignite a spark of practical interest.

Mathematics in school and work – student can't avoid math. Most take it every day. However, even in History and English classes they may need to know a little math. Whether looking at time expenses of decades, centuries or eras or calculating how they'll bring that B in English to an A, they'll need some basic math's skills. Jobs in business and finance may require sophisticated knowledge of how to read profit and earning statements or how to decipher-graph analysis.

However, even hourly earners will need to know if there working hours multiplied by their rate of pay accurately reflects their pay cheque.

Mathematics in Kitchen – whatever you do in the kitchen requires math's, like counting the numbers of teaspoons of sugar that are just right for you in your tea or coffee or complicated cooking and baking, even just using the stove, microwave and kettle in basic math's skill in action.

Mathematics in Home

Some people aren't even out of bed before encountering math. When setting an alarm or hitting snooze; they may quickly need to calculate the new time they will rise or they might step on leathroom scale and decide they'll skip those extra calories at lunch .People on medication need to understand different dosages , whether in grams or milliliters. Recipes call for ounces and cup and teaspoons – all measurement all math and decorators need to know that the dimensions of furnishings or rugs will match the area of their rooms.

Mathematics in travel

Travelers after consider their miles per gallon

when fueling up for daily trips, but they might need to calculate a new when faced with obstructionist detours and consider the additional cost in miles, time and money. Air travelers need to know departure times and arrival schedules. They also need to know the weight of their luggage, unless they want to risk some hefty luggage surcharges. Once on board, they might enjoy some common aviation - related math such as speed, altitude and flying time.

Mathematics in store

Whether buying coffee or a car, basic principles of math are in play purchasing decisions require some understanding of budgets and the cost and affordability of items from groceries to houses. Short term decisions may mean only heeding to know cash on hand, but bigger purchases may require knowledge of interest rates and amortization charts. Finding a mortgage may be much different from choosing a place to have lunch, but they both cost money and require math.

Mathematics in Agriculture

Fertilizers and needed to harvest products in optimum quantity. In order to provide optimum levels to the plant of concern, you should know level of elements available in your soil. Nitrogen and phosphorus are two fertilizers that should be supplied by fertilizers. NH4 (ammonium ion) plus NO3 (citrate) increased wheat yields 7 to 47% in 14 studies. Animal manures and other types of organic waste may be important source of nitrogen for optimum plant growth. The amount of nitrogen supplied by application of manure varies with the type of livestock, handling, rate (pounds per acre) applied and method of application. Because the nitrogen form and content of manures varies notably, an analysis of manure is recommended to improve nitrogen management. Optimum levels should be known. Another application is irrigation water quantity such as Sodium Adsorption Ratio (SAR) or adjusted SAR) to compute your irrigation water quality. There are formulas developed to compute SAR or adjusted SAR.

Mathematics in Health Care

Professionals in the medical field uses math to determine proper doses for patients medicine, read results from CAT scans, MRIs and X-rays and to evaluate Body Mass Index (BMI). Physicians, nurses and other in the medical industry use mathematics on a daily basis in hospitals and offices and when performing research. Math plays a crucial role in health, as it allows for the safe administration of painkillers and antibiotics and ensures appropriate treatment and diagnoses. Medicine both doctors and nurses use math everyday while providing health care for people around the world. Doctors and nurses use math when they write prescriptions or administer medication.

Medical professionals use math when drawing up statistical graphs of epidemics or success rates of treatments. Math applies to X-rays and CAT scans. Numbers provide an abundance of information for medical professionals. It is reason for the general public to know that our doctors and nurses have been properly trained by studies mathematics and its uses for medicine.

Mathematics in Finance

Many mathematical and statistical applications are yet to be improved to take into account of the intrinsic complexities in finance and related fields. Many of the statistical tests it seems do not sufficiently discriminate.

For example, statistical tests usually fail to contradict the random walk hypothesis for prices. It is certain that more work is needed to cope with the large effects of noise in financial time series analysis. A number other aspects it seems needs work such as the assumption that participants act rationally and aim to maximize returns. The work on neural psychology and behavioural finance may help provide significant insights and advances in thinking.

Mathematics in Digital Technology

The mathematics of multimedia encompasses a wide range of research areas, which include computer vision, image, processing, speed recognition and language understanding, computer aided design and now modes of networking. The mathematical tools in multimedia may include stochastic processes, mark…… fields, statistical patterns, decision theory, PDF and many others. Computer aided design is becoming a powerful tool in many industries. The technology is a potential area

for research mathematicians. The future of the world wide web (WWW) will depend on the development of many new mathematical ideas and algorithms and mathematicians will have to develop even more secure cryptographic schemes and thus new developments from number theory, discrete mathematics, algebraic geometry and dynamical systems as well as other fields.

Mathematics in Banking

A lot of teens do not have bank, accounts but they still do banking. All they need to know is how to manage their allowance so that they can afford the best. Otherwise they may find themselves without money for the essentials like stationery. Even doing something as mundane as gardening requires a basic maths skill. If one needs to plant or sow new seeds or seedlings one needs to make a row or count them out or even make holes. Measuring skills is always needed and calculations are important when doing something.

Save the Girl Child

Krishma Sharma
M.A. (English) IV Semester

Introduction:

Beti Bachao, Beti Padhao translates to save a girl, educate a girl. The government of India launched the program on 22 January 2015. Patriarchal society has been the norm in India for centuries. It had led to the predominance of men in all spheres of life: right from family to politics. Moreover; women have faced discrimination and oppression in various forms. They are not entitled to own property and are not allowed to earn money. So they have been dependent on men for everything. Many ill practices like Sati system, dowry system were prevalent in our society.

Unfortunately, some of these practices continue even today. In many rural and orthodox households, women are still considered as a burden of the family. Crimes like rape and domestic violence against women continue to happen. With these perspective in mind the government launched the Beti Bachao, Beti Padhao Scheme.

Objectives of Beti Bachao Beti Padhao:

The first requirement is to curb the practice of female foeticide. Sex determination in pregnancy is a crime, the diagnostic centres and the family concerned should face harsher punishment. The other objectives are better health, education and equal Opportunities for girls. Massive campaigns for changing the mindset of people and addressing the criticality of the issue are being conducted. The # selfie with daughter campaign is one such effort. The

government envisages a society that celebrates the girls and doesn't shut them.

Implementations of Beti Bachao Beti Padhao:

The ministry of Women and Child Development, Health and Family Welfare and Human Resource Development coordinate and work jointly for the success of the program.

In the first phase, 100 districts having very low sex ratio were identified. The local body officials directly engage with people and sensitize them about the issues. The schools conduct quizz on health, nutrition and financial independence of women. Facilities and funds for improving the nutrition status of girl, higher enrollments in schools are provided by government. In the second phase the government

added 61 districts under the scheme and in the third phase the government has covered all the 640 districts of the country.

Conclusion:

Girls education has received some attention as a result of global advocacy. The Beti Bachao Beti Padhao campaign will only get a concrete shape if certain steps are taken. First gender studies should be included as a full fledge subject in the core curriculum. This will help children in developing egalitarian construction of masculinity and feminity. Boys and young men should be taught how to value and respect women. Education should help the girls to get empowered to speak up against any form of violence or abuse.

An Argument against Child Labour

Vandana
BA III Year

Childhood is a vital and powerful experience in each individual lifetime. It is most important and pivotal period of living. Throughout all of the high and the lows of life, childhood is remembered forever. Although children have many rights, in some cases these rights are not always protected. Older, manipulative adults are taking advantage of children to make a profit for themselves. This is known as child labour, and it happens much more than many people realize. Child labour is corrupt and there should be no place for it in our modern world today.

A large number of children in India are quite strangers to the joys and innocence of the formative years of their lines. Instead of enjoying their early steps on their life's journey, they are forced to work under conditions of slavery. Child labour persists due to the in efficiency of law.

Child labour happens in many countries. There are many reason why children are being exploited. First of all, nothing much seems to be happening to eradicate it. Child labour must be eliminated as quickly as possible, before many more children get trapped, like the millions who already have in the past. Secondly many children are too young to realize that what is happening to them is wrong and illegal. Children under the legal age to work in these developing countries, have more importantly have fun. Things they should be involved with than labour. Each child deserves a good education, as well as the opportunity to enjoy life, learn new things and most important to have fun. Hard labour at an early age can really affect a person's outcome in the future.

Children are employed illegally in various industries. But agriculture is the largest sector where children work at early ages to contribute to their family income. Rural areas employ 85 percent of the child labour in India. They are forced to work at young age due to certain factors such as poverty, unemployment, a large family size and lack of proper education.

In British India, a large number of children were forced into labour due to the increasing need of cheap labour to produce a large number of goods. The company preferred recruiting children as they would be employed for less pay, better utilized in factory work, lacked knowledge of their basic rights and, possessed higher trust levels.

The majority of children are between the ages of five to fourteen years. Children at this age in many developing countries work hard each and every day with very low pay. The work absorbs so much of their time that school attendance is impossible. School is a very important period in life. In school is where human learn almost all the information they need to know and to use in the future.

This happens because of many reasons children are more malleable they will do who they are told without asking any questions. They are much more powerless. They are also more unlikely to organize themselves against oppression & they can be physically abused without striking back. Some people think that low caste children should work rather than go to school. Some children are forced to work to support their family. The parents of these youths are mostly not employed and can't find work or are very lowly paid.

The Universal declaration of Human Rights in 1948 incorporated the basic human rights so needs of children for proper progression. Article 24 of the constitution restricts engagement of children below 14 years of age factories, mines and other hazardous employment. Article 21A, 46 promises to impart compulsory education to all children between the age 6 to 14.

Child labour is cruel and in appropriate. It infringes the children right, and it is just simply and fair. Child labour has been happening for a long time, but the majority of people tend to ignore it and shrug it off. Actions are now being taken to stop child labour. These deed will slow down, and hopefully end child labour for good. The world wide be a richer, happier places for all if child labour is stopped.

Our National Flag

Deepak Chauhan
B.A. I Year

The national flag of India is the symbol of integrity and patriotism. It is the pride of all the citizens of the country. The late Prime Minister Jawahar Lal Nehru called it a flag not only of freedom for few but a symbol of freedom to all people. On 22 July 1947, the National Flag was adopted by the National assembly of India.

The National Flag is a horizontal tricolour flag depicting three colours, saffron (Kesari) at the top. White in the middle and dark green at the bottom in equal proportion the ratio of the width of the flag to its length is two to three. The tricoloured flag with red, green and white, with a spinning wheel in the centre was created by Pingali Venkayya and was presented to Gandhiji. The Swaraj flag represents the Gandhian ideal of self help.

India will celebrate its 75th Independence Day in 2021, and like every year the Prime Minister of India will hoist the National Flag at the Red Fort to commomorate the day.

The Power of Positive Thinking

Pragati Joshi
B.A. I Year

A Positive outlook on life is one of the most powerful assets one can have. Positive people expect success, good health, happiness, wealth and good relationships and those things tend to show-up in their lives. This is not because they are already successful, or because they are more confident and thus more outgoing, it is simply the attitude. This is a basic law that attracts positive thoughts breed positive results. Your thoughts are much more powerful electric signals between synapses; they affects one's life and those around.

Life is hard but still, one has to live. Life is full of bad as well as good events. Ignore frame breaks in life and cherish good ones. Maintain a positive frame of mind. That is what will keep you moving on.

The Crime of Rape!

Rose Thapa
M.A. II (English)

Rape as the word is as small in itself, but its effect and its black, sad reality is already known by everyone and every single girl traveling alone during nights has a fear of it somewhere inside her.

Nowadays criminal minded people pretend to be helpful and then we see their inhumane aspect which shatters the humanity into pieces. Raping a girl, molesting her, touching her without her consent is the severest form of crime.

In our country in many places rape happens and no matter how much we implore culture, modernity, our society is as backward today as it was in the middle age. Even today woman is a very easy prey to a man who does objectionable acts to her without her permission. Remember the Nirbhaya in Delhi!

For how long such things would continue happening. Today in our India a stringent Chastisement is required to such a criminal. And the man must think twice about doing such a crime.

In our society, rape cases revolves around victimizing the person who has been raped and the most shameful part is that the people do not believe it unless there is any physical sign or an attested report. Rape kills the dreams of the victim, even the family gets broke. In many countries rape is the most devilish crime and they give the most violent punishment to that criminal.

Some Chastisement over a world -

- In **Saudi Arabia :** Being an Islamic country the legal system of Saudi Arabia is based on Sharia-Islamic law. The punishment for rape is of public be-heading.
- **China :** Even in China too, strict punishment is given to rapists. Rape is the brutal crime and the death penalty is declared once the rapist is convicted.
- **North Korea :** In Korea too, there is no leniency when it comes to punishing a rapist. The offender is either shoot in his head or vital organ by firing
- **China :** Even in China too, strict punishment is given to rapists. Rape is the brutal crime and the death penalty is declared once the rapist is convicted.
- **North Korea :** In Korea too, there is no leniency when it comes to punishing a rapist the offender is either shoot in his head or vital organ by firing squad.

So there are many countries give a very dire punishment to the criminal. I think India also takes more dire action towards the criminal because the crime of rape is a major problem in India. India's house of parliament passed a bill on Monday that will see the death penalty handed out to anyone convicted of raping a child under 12. Today we want the rape free India!

In Bangladesh and Afganishtan all handout the death penalty for rape and many Indians in favour of death penalty often point to these countries as those who " Do Not Tolerate Rape " .

Acc. to the National crime Records Bureau (NCRB) 2013 annual report, 24,923 rape cases were reported 2012. Out of there 24,470 were committed by someone known to the victim (98% of the cases recent incidents of rape have stirred the conscience of the nation.

The shock of the cases in Kathua (Jammu and Kashmir) and Unnao (UP) these incidents at various parts of the country have once again put the spotlight on India's poor track

So there are many countries give a very dire punishment to the criminal. I think India also takes more dire action towards the criminal because the crime of rape is a major problem in India. India's house of parliament passed a bill on Monday that will see the death penalty handed out to anyone convicted of raping a child under 12 .

Crime those on sexual violence, tend to suffer from under- reporting. Some studies have found that reported crime rates and actual crime rates could have a negative correlation due to other issues like education legal infrastructure etc.

Finally, I conclude from the above article that there in many places rape cases are registered and in some cases, it was run many years. we couldn't imagine the mental physical pain of the victim. The rape itself is so much horrible but the process of getting justice is much more painful. Sometime in between the case the victim feels defeated and steps back from case and I think in our India anywhere if the rape case is registered then it take in fast track courts for prosecution of rapes.

And before that the government should take some changes or action towards the safety of women or children so that no one else suffers from that stage.

'No other Nirbhaya or Priyanka Reddy sees that black day of their life"

The Impact of rise in oil price on Indian Economy

Reema Chamoli
B.A. V Semester

"The way petrol prices are

Increasing it shall eventually

Be cheaper to just hire people to push your car"

The price of oil once again started increasing it put disastrous effect on Indian Economy. Earlier oil price show some downturn. Geopolitical tension now created supply shortage of oil price increase.

Crude oil often called as black gold it is naturally occurring undefined combination of hydrocarbon i.e. hydrogen and carbon. It is refined to produce gasoline, diesel, kerosene etc. Petroleum derived from two word Petro-Rock alium = oil, 80% of crude oil brought from other country through water ways. It is highly flammable oil produce energy on burning.

The Organisation of the Petroleum Exporting Countries (OPEC) used to work as a cartel and fix prices in a favourable band. OPEC is led by Saudi Arabia which is the largest exporter of crude oil in the world. OPEC could bring down price by increasing oil production and raise prices by cutting production.

The global oil pricing mainly depends upon the partnership between the global oil exporters instead of a well functioning completion. Cutting oil production or completely shutting down an oil is a difficult decision because restarting it is costly and complicated.

Reason behind the rise of oil price in Indian Economy :

1. Iran is an important supplier of oil for many countries. However the political relationship between Iron and United States has deteriorated. This is the reason why America has imposed strict sanctions on Iran. As a result many nations in the world are now prohibited from buying Iranion Oil.
2. Venezuela is another very important producer of Oil however the country is in total political disarray. The economy of the nation is in tattlers. They have introduced a new currency to solve the hyperinflation problem. However this problem in the country has not been solved. Venezuela increased oil price to increase revenue of the country.
3. Other opportunistic nation like Russia and Saudi Arabia have been reeling with the problem of low oil prices for very long. As increase in oil price implies a drastic increase in the revenue of these states. Hence they aren't likely to increase supply either.

"As days progress, Oil prices have started

to dominat trade and led to weakness in the market."

Impact of Increasing oil on Indian Economy :

1. If we want 100%of oil (petrol, diseal) etc. so 80% we are exporting from the outside of country. Only 20% we are getting from domestic use. So it impact our bill so much.
2. Increasing oil price will also increase transport cost within country. As now we have to pay more money in taking our product here and their across the country.
3. Increasing oil prices will decrease in production of several countries including India as most factories need oil in their production.
4. Indian rupee is less than Dollar because India people exchanging their rupee into dollar if oil price rise government force to exchange rupee for dollar.
5. The increase in crude price could also further increase inflationary pressure that have been building up over the past few month. This will decrease the space for the monitory policy committee to ease policy rate further. Rise of oil price will also affect GDP.

Positive – Outcome :

The value of Indian oil and gas companies could be positively impacted. The government could get greater value from disinvestment in Bharat Petroleum Corporation Limited. Remittances from Persian Gulf could increase.

Way Forward :

1. Building Strategic Petroleum Reserves

Storing oil at low price will enhance the country's energy security given India's high import democracy dependency. Therefore India must seize this opportunity to built on its Strategic Petroleum Reserves (SPR). India should be working on IEA

protocol, where each member country has to hold emergency oil stocks equivalent to at least 90 days of imports.

2. Need for Energy Sector Reforms

With the world largest expansion in energy markets imminent in the country India must become the nerve center for innovation in technologies such as clean coal underground gasification gas hydrates, carbon dioxide sequestration, non-conventional extraction and renewable. In order to reduce import dependency there is a need to promote private sector engagement in fuel extraction domestically.

Application of Science and Technology for Rural Development

Ayush Jaiswal
B.Sc. V Semester

Introduction :

Developing countries face the challenge of improving living standards of rural people for their sustainable livelihoods. Majority of developing nations are agrarian economics characterized by low productivity operating on small holdings with inadequate and poor infrastructure. There are several interventions for development and one such potential instrument is the "application of science and technology in rural areas (ASTRA)" which intends to transform rural areas towards development for sustainable and profitable livelihood. It is evident that science and technology has to be adopted to increase efficiency in production, productivity and marketing phases of rural sector. The importance of science and technology (S&T) in rural societies have been recognized since long. Though enormous strides have been made in the area of S&T in India since 1947, there is an urgent need to deliver them to the most needy so that they are able to meet the challenges of a technologically sophisticated world. Though science has a universal character, it is supported or constrained by practices, which are influenced by local customs and values.

There are several reasons why focusing on Science & Technology is the most important means for empowering the poor. It is now on imperative for the governments to invest in these technologies or risk widening of the gap between the urban and the rural areas. It is this realisation that should make S&T work for development, and take the country's rural development agenda to the top. In order to appreciate the rate of S&T in the process of development, it is necessary to understand that S&T is the means of enhancing productivity and the physical and mental capabilities of human beings. It is the instrument for transforming natural recourses into useful goods. It is also the means for effecting social change.

As you know, women have been a disadvantaged group in many ways. The situation is further complicated by the fact that women are heading an increasing number of households in the villages due to the migration of men to cities. It is therefore essential to strive for introducing and applying technology in spheres directly affecting the well-being of rural women.

Removal of poverty and generation of employment are major objectives of our development plans. The achievement of these objectives is possible by drawing up scientific strategies for rural development based on a comprehensive survey of resources, their planned utilization and management based on technological appropriateness to the local environment and mass mobilization of people through education, and equitable sharing of the benefits of development.

Rural development is determined by the efficient, scientific and optimum assessment, conversation, utilization and distribution of rural resources. Science & technology and rural development are thus inter-related and inter-dependent. Various programmes linking S&T are rural development have been launched in recent times. The major ones are as follows :

- Science and society programme of the Department of Science and Technology (DST), the government of India, It includes S&T Application for Rural Development (STARD).
- S&T Application for Rural Development

(STAWS)

- S&T for women.
- Empowering Tribal Groups through S&T.
- Hill Area Development Programme.
- Tribal Development Programme. (TDP)
- Draught Prone Area Programme. (DPAP)

Conclusion :

The use of S&T is a crucial determinant for the realisation of the objectives of rural development. Although the beneficial effects of S&T are many, the rural masses in out country have by and large, shown resistance to the adoption and utilization of S&T inputs. This has been due to many reasons – complexity, cultural incompatibility and capital – intensive nature of the innovations coupled with the lack of information, low income and the risks indeed, among others.

This unit covered the broad aspects of the use of S&T for rural development. First, the significance, role and contribution of scientific and technological inputs, including those of spatial technologies like Geographic Information System (GIS), Global Positioning System (GPS) and Remote Sensing (RS), in the various facts of rural development planning and management were discussed in brief.

Mathematics in Everyday Life

Ayush Kandwal
B.Sc. V Semester

Every mobile phone has a password. Is it not? Don't be puzzled as I am not asking for your password.

I welcome you to the world of mathematics. I will put my views on how "maths is used in everyday life". "Without mathematics there's nothing you can do. Everything around you is mathematics. Everything around you is numbers" Shakuntala Devi.

Mathematics is the science of structure, order, and relation that has evolved from elemental practices of counting, measuring, and describing the shapes of objects. It deals with logical reasoning and quantitative calculation. Maths seems difficult because it takes time and energy. Many people don't have sufficient time to 'get maths lessons and they fall behind as the teacher moves on. Mathematics makes our life orderly and prevents chaos. Certain qualities that are nurtured by mathematics are power of reasoning, creativity, abstract or spatial thinking, critical thinking, problem solving ability and even effective communication skills. Mathematics is the cradle of all creation without which the world cannot move an inch. Be it a cook or a farmer, a carpenter or an engineer or a sciences everyone needs mathematics in their day to day life .

These are some examples where maths is used :-

Chatting or making call using mobile phone all we need is the basic knowledge about numbers, signs and digits before using it, maths in the kitchen is used to measure the ingredients in their quantity. Banking is probably the one place where math is used more than anywhere else. Going to a bank means that one wants to withdraw, deposit, etc. All we have to know digit, calculation, shopping etc. It is probably the most common use of math in which we make list of things we need to buy as well as make payment in the end. Math has become an inseparable part of our lives and whether we work in an office or spend most of our time at home, each one of us use maths as a part of our everyday life.

At last I want to conclude that math is a tool in our hands to make our life smoother. The more mathematical we are in our approach, the more rational would be our thoughts. No matter where we are as well as whatever we are doing, math is always there whether one notices it or not. It is time to understand the important of the subject and enjoy the beauty of it. Maths is a medium that should be embraced by everyone in all walks of life. Here I want to end my words by a quote –

"the essence of mathematics is not to make simple things complicated things simple".
S.Gudder

Essay on Swami Vivekananda

(First Prize Winner)

Vivek Singh Thapa
M.A. (Geography) II Year

We are what our thoughts have made us; So take care about what you think, words are secondary. Thoughts lives, they travel far.

Swami Vivekananda

Swami Vivekananda born as Narendranath Dutta on 12th January 1863 in the holy and divine place of Kolkata. Swami Vivekananda was a Great Indian Sant. He was a figure with "High thinking and Simple living". He was a great pious leader, a philosopher and also a devout personality with great principles. His eminent philosophical works comprise of "Modern Vendanta" and "Raj Yoga". He was a principal dispile of "Ram Krishna Paramhansa" and was an initiator of Ramkrishna Math and Ramkrishna Mission. He thus spent his whole life in the dispersion of the values embedded in the great Indian author.

Swami Vivekananda, the son of Shri Vishwanath and Mother Bhuveneshwari Devi was called by the name "Narendra Nath Dutta. In the early days Narendra was child of unquestioned expertise and intellectual capability who used to take grasp of all his school teachings at first sight.

The excellence was recognized by his Gurus and thus was named "Shrutidhar" by them. He possessed Manijola talents and skills comprising of swimming, wrestling which were a part of his schedules. Influenced by the teaching of Ramayana and Mahabharata, he had bottom less respect for religion "Pavan Putra Hanuman" was his ideal for life.

"The great secret of live success, of leave happiness, is this : the man or woman who asks for no return the perfectly unselfish person is the most successful.

Swami Vivekananda

Narendra was a lover of heroism and mystical by nature. Despite his upbringing in a spirituals family. He owned on argumentative personality in his infancy. His entire belongs was assisted by an art rationals and judgement behind them such a quality made him even put a question on the existence of the almighty. He thus visited "Have you seen God? " His quest yet on answered until he met "Ramkrishna Paramhansa."

Swami Vivekananda met Ramkrishna Paramhansa put the first time when the latter visited his primal residence in Kolkata conscious of te super natural powers of Swami Vivekanada called him to Dakshineshwar. He had a deep insight that Swamiji's birth was a boon to mankind for the upliftment of the universe. fulfillment of his spiritual inquisitiveness made he finally acknowledge Ramkrishna in the figure of his "Guru". He was moved from darkness to illumination by his "Guru". As his deep gratitude and reverence for his Guru made him ..... all the power directions for the diffusion of jis Guru's teachings.

"Anything that makes you weak, physically, intellectually and spiritually reject as poison."

Swami Vivekananda

Swamiji also won the hearts of everyone by his incredible speech at Chicago by addressing the audience as "Sisters and Brothers of America."

Vivekananda quoted these words -"I am proud to belong to a religion which has taught the world both tolerance and universal acceptance . We believe not only in universal tolerance but we accept all religions as true." Thus he set forward the Indian religion exhibiting the values of universal acceptance, oneness and harmony, despite multiplicity.

"It is a privilege to serve mankind for this is the worship of God.

God is here, in all these human souls."

Swami Vivekananda

Netaji Subhash Chandra Bose once said - "Swamiji hamonized the East and the West religion, and science, past and the present. And that is why he is Great." He played a prominent role in ending India's cultural remoteness from the rust of the world."

His establishments of "Ramkrishna Mission" was a sign of "Guru Bhakta". His sacrifies, austerity, and service of the poor and the downtrodden people of India. He was also a founder of 'Belur Math.'

He spread the message of divinity and the aims of scriptural, This great patriotic monk of the mother earth took his last breath on 4th July 1902 at Belur Math.

An Essay Swamy Vivekanand

(Second Prize Winner)

Bhumika Bisht
B.Sc. III Year

Introduction

Swami Vivekanand was born on 12 January 1863 in Calcutta, Bengal. His name was Narendra Nath Datta.He was the chief discipt of Guru Ramakrishna, from whom he learnt that all living beings was an embodiment of the divine self, therefore service to God could be rendered by service to humankind.

He also found Ramakrishna Mission in 1897 and Ramaksrishna Math. He was died on 4 July 1902. Even though he died early in his life. He teaches many lesson to the would which can provide a path to many people. He was a nationalist and serve humankind throughout his life time. We can learn may things from his life and we apply to it in our life, we can surely get success.

"Arise awake and stop not until the goal is achieved."

Uttarakhand was founded on 9 November 2000. Almost 86% of area is mountainous and 65% is covered by forest. Despite the geographical condition, we continuously trying to develop Uttarakhand. Our state face many national calamities, problem due to geographical condition etc, even after than we never stop from trying and one day we surely make our state as developed one.

Our new generation always put their best despite many hurdles like, lack of connectivity, health facilities, job opportunity etc and made the new of our state shine brighter.

"See for the highest, aim to the highest

any you shall reach the highest."

Until we do not think high we never achieve/reach to highest. For that we need to does that even we lose our everything we will start walking on our path despite of numbers of hurdles.

In the some way, our state face many problem and also have many solutions like, our state ia s Himalaya state, we have to face many geographical difficulties but we have forest too, that are rich in resources that other states do not have. Many medicinal plants that are only found in higher altitude and no where as. If we are able to use these resources sustainable, we can also able to includes our state in the list of developed state. Just we need to do a little hardwork.

"Like fire in a piece of flints, knowledge exists in a mind. Suggestion is the fiction which brings it our."

With the literacy rate of 78.82% accordingly tp 2011 census, our stat is filled with talented and hardworking youngster. Just a simple little help to them can made them successful. That help is of mentor. A mentor that can bring them into right path of development. And when one person develop a whole society will be slowly. Many new opportunity in mountainous region arise just due to a few people like Swami Vivekanand, who guide youngsters, culture even more he embrace it and spread it through out the world. He believe that we should adopt good things from the others but do not forget our identity in the process.

Today, our stat is also in the some condition. Today's generation is busy in adopting the belief and practices, life style etc of outer world and forgetting its own which is not good in any way. We can freely adopt others lifestyle but we should not forget that about what our country gives us.

"The fire that warms us can also consume us, it is not the fault of the fire."

Today we hear many time about natural calamities occurring in our stat. Phenomenas like forest fire, floods, landslide, avalanches etc are common fore us now. But in reality, its common now but was not inn the past. In past times natural calamities were not that much frequent, but due to our direction less development lead us no where but to destruction. The development which is meant to help us and make our life easy lead to destruction of our nature thus causing natural calamities. Its not the fault of rivers when it flood, somewhere we are also responsible behind it as river gives us life. Its not the fault of hills that cause landslide its our fault that we are cutting trees and using that many dynamites to explode the hills and cuts trees to make roods etc.

"Educate our people, so that they may be able to solve their own problems. Until that is done all these ideal reforms will remain ideals only."

In Uttarakhand, we face many day-to-day problems just due to our geographical and climate condition. But today we are even able to live in remote area due to good connectivity and modern facilities because our people developed it. In the same manners educated. Even today many students travels and walk miles just to search their schools. Still many small towns don not have colleges. In many schools there are many other problems, like not having teachers, proper drinking water facilities etc. Even though our youth struggled with it and become more strong.

Without schools, colleges, universities a nation never able to achieve any of its goal. Educated people is the biggest power of any nation. Education is a tool for those who have nothing just brain. These brains can not only able to change our state or country but is able to change the whole world.

"Learn everything that is good from others, but bring it in and in your own way absorb it; do not become others."

Swami Vivekanand was a key figure in the introduction of the Indian darsanas (teaching practices) of Vedanta and Yoga to the western world. Though he was born in an aristocratic family and got many opportunities to adopt the western life but he didn't forget his Indian cultural roots.

If we want to progress, we must use them in that way that we are able to make balance between development and nature.

Conclusion

"Don't look back - forward infinite energy, infinite enthusiasms, infinite daring and infinite patience - then along can great deeds be accomplished."

We travailed a lot of distance from our past in the search of a brighter future for our state, country and world. We have to go even much more further without stopping resting with infinite energy, infinite enthusiasms, infinite daring and infinite patience that our youth have just we have to unseal it. Then one day fore sure our country become the leader of the world again. Despite number of problem, we travelled a long distance and we have to more than hold of it now. With our faith and belief in one another nothing is impossible for our country.

Finally,

"You are the maker of your own destiny."

Literature reflects the spirit of the Age

Sheetal Kaushal
B.A. VI Semester

It is often said that history is the biography of a nation, while literature is its autobiography. We can say thus that the literature is the shadow of our life. Another is as much a product of society as art is product of one's own reaction to the life. Literature reflects life or the time - spirit. Literature as a whole grows and changes from generation to generation. If we notice this we can see it is a continuous process of rise and growth and contains ideas, precepts and morals. Thus, literature becomes a sort of sociological approach, a supplementary and commentary on history. Literature is the product of the society. Literature is a process of expressing its or our own thoughts about life or anything which we had suffered in past.

A literary man is as much a product of his society as his art is a product of his own reaction towards life. Even the greatest of artists is sometimes a conscious, sometimes an unconscious period of his time spirit. The time spirit is the total outcome.

A nation's life has its moods of exhalation & depression, it epochs a strong faith and strenuous idealism.

Both ancient and modern literatures are based on society. It reflects the life of age from generation to generation. Both ancient and modern critics who directly relate the literature to the life and manners of the society. the ancient Greek philosopher says that the nature of the universe is imitation and Plato compares poets to bad man, and calls them an imitator of an imitation.

The best possible option of understanding the relationship between literature and society is the study of works of literature as social documents and as assumed pictures of social reality.

Conclusion

It is true that "literature reflects the spirit of the age." The poets and writers of a certain period give expression to the prevailing attitudes, preferences and inclination and the way of thinking. Actually literature is the mirror of society. It enables the society to see itself. Just like a person is able to see his or her face in a mirror. This means that people can recognize themselves in the literature of their times, in the some way as on individual can recognize himself or herself in a mirror. That's why it is said that literature reflects the spirit of the times or age.

The issue of Triple Talaq

Ayushi Uniyal
B.Sc. (PCM) I Semester

Triple Talaq in the Islamic law is based upon the belief that the husband reserves the right to reject or dismiss his wife with good ground. The theory and practice of divorce in the Islamic world varies according to time and place. The rules of divorce are governed by Sharia.

Ila is an oath whereby the husband vows to refrain from sexual relations with his wife for at least four months. The use and status of Triple Talaq in India has been a subject of controversy and debate. Those questioning the practice have raised issues of justice, gender, equality, human rigths and secularism. The debate has involved the Government of India and the Supreme Court of India, and is connected to the debate about Article 44 in India.

In April 1978, a 62 years old Muslim woman Shah Bano was divorced by her husband Mohammad Ahmad Khan. A bill to ban the practice of Triple Talaq has been passed by Lok Sabha. The Muslim women (Protection of Rights on Marrige) Bill got President Ram Nath Kovind's & assent on 1st August 2019.

Great uses for an old android devices

Hardik Garg
B.Sc. (PCM) I Semester

If one has a shiny new smartphone and is wondering what to do with the old one, there are many who would be worried for their old phone.

There are many creative uses for an old android smartphone that can make your life easier.

IP Security cam -

There are quite a lot of apps that allows one to use your android device as remote security cam.

IP Webcam is a very simple app that does exactly what it's called. You don't need to run a server on your computer, just download the app, start it and enter the IP address (shown on screen) into any browser and see what your phone is seeing. With IP Webcam you can stream and record both audio and video.

Effect of Cybersport on Today's Generation

Nikita Negi
Semester

When we hear the word "Cybersport", our mind instantly starts thinking about the harmfulness of playing cybersport. It is one of the fastest growing trend in today's generation. But as we know a thing can't be totally good or bad. Everything has its own advantages or disadvantages equally.

Playing online game or cybersport makes mind sharper and mentally more active. While playing cybersport the mind of kids coordinates with the body. While playing this their mental strength develops.

But as we know too much use or attention on everything is also not good so like everything cybersport also have some demerits. Like too much playing cybersport can bring several health risks in children's mind which includes eyestrain due to focusing very much on the computer or handset screen which results in wrist problems because of overuse of these gadgets. The main problem which we face due to this is obesity which is a biggest problem of our country due to lack of exercise.

While discussing both point of views about cybersport one question always arises that if cybersport is better than field sport or physical games.

But while answering we knows that all things have its own properties or work. So we can't say that cybersport is totally bad for today's generation. It also requires tremendous skill & strategy as we need in any physical sport but still we dismiss that cybersport is not really a sport due to the absence of physical activity in it.

Unity in Diversity : a salient feature of Indian Society

Gauri Chauhan
M.A. (Eng. Lit.) IV Semester

Unity in Diversity is used as an expression of harmony and unity between dissimilar individuals or groups. It is a concept that focuses on unity based on a mere tolerance of physical, cultural, linguistic, social, religious, political, ideological and psychological differences. It helps in strengthening multiplicity based on an understanding that differences enrich human interaction.

The idea and related phrase is very old and dates back to ancient times in both Western and Eastern old world cultures. It has application in many fields including ecology, cosmology, philosophy, religion and politics. The concept of unity in diversity was used by both the indigenous people of North America and the societies in 400-500 B.C. It is a premodern western culture. It has existed in its implicity the organic conceptions of the universe that developed in the civilizations of ancient Greece and Rome.

The phrase is a deliberate oxymoron the rhetorical combination of two antonyms unitas "Unity oncess" and varietas "Variety, Variousness". When used in a political context, it is often used to advocate federalism and multiculturalism.

What is the importance of unity in diversity? Working with diverse people provides more exposureand makes one a better person. It also teaches individual to respect the opinion of others. Unity in diversity is responsible for enhancing the quality of the teamwork and completion of the projects within a stipulated time fame.

India is a best example for unity in diversity from the very beginning India where travelers from the whole world could freely travel into Civilizations like Harappa, Mohanjodaro.

I am quoting the example from about 15th-16th century the era of Sant Kabir, who is one of the most influential of Muslim Julahas or weavers settled in or near the city of Banaras (Varanasi). We get to know about him from his vast collection of verses called as "Sakhis" and "Pads"said to have been composed by him and sung by wandering Bhajan singers.

One of the famous compositions of the Kabir'

"O Allah Ram present in all living beings

Have mercy on your servants, O Lord."

Thoughts to remember!

Surabhi Pundir
B.Sc. (PCM) II Semester

1. Don't judge each day by the harvest you reap, but by the seeds that you plant.
2. Your life is your message to the world so make it inspiring.
3. The best preparation for tomorrow is, to do today's work to the best of your ability.
4. Life is an art of drawing, without an eraser.
5. Thousands of the candles can be lighted from a single candle, the life of the candle will not be shortened the same way.
6. The bad news is time flies, but the good news is you are the pilot.
7. We can't help everyone, but surely everyone can help someone.
8. Education is the most powerful weapon which you can use to change the world.
9. Practice like you never won and perform like you never lost.
10. Education is the key to unlock the golden door of freedom.
11. The struggle you are doing in today, is developing the strength you need for tomorrow. Patience is bitter, but its fruits are sweet.

Have You Ever Imagined?

Mrinalini Pant
B.Sc. III Semester

Do you ever imagine yourself in a place where you find yourself very close to Nature?

Where you want to do nothing but appreciate the alluring beauty of Nature.

Where you want to close your eyes and take a long sigh of relief.

Where you love to be alone.

Where you want to breathe on unpolluted air and smell a scent of greenery.

Where you want to listen nothing but mellow with Nature.

Where you want to find yourself serve, at a poise and at peace.

Do you ever imagine finding the place where everyone would have a high opinion of beauty not only of development?

Importance of Time

Ayushi Jaiswal
B.Sc. (PCM) II Semester

The wheel of life is running always towards future. It never peeps in our past . We see the flow of the river which runs towards the sea instead of moving backwords. Similarly, the period of life that has passed does not return. So we should not waste valuable moments of life.

Pointing to the clock a poet said -
"Ticking the clock says tick tick tick
What you have to do, do quick.
Time is running fast away.
We must work & work today.
Wait not for another day,
The clock says tick, tick, tick."

Time is freely bid yet it is priceless.
You can't own it,
But you can use it,
Once you've lost it,
You can never get it back.

Moral Thoughts

Suruchi Nautiyal
B.Sc. (PCM) II Semester

1. Don't see that someone is doing better than you. Break your own records everyday because success is a fight between you and yourself.
2. Don't be too sweet, left you be eaten up. Don't be too bitter, left you be spewed out.
3. Do good once forget, Do bad and Remember.
4. Think like a man of Action and Act like a man of thought.
5. A man who dares to waste one hour of time hasn't discovered the value of life.
6. Ability is what you are capable of motivation. Determine what you do, Attitude determine how will you do it.
7. Dream as if you'll live forever, Live as if you'll die today.
8. Dreams are your soul when you have them inside you. Only then you can feel something else you are nothing just a statue without virtue and ambition.

Lives of Greatmen

Ashu Lodhi
B.Sc. (PCM) II Semester

1. "Education gives you wings to fly."

   - APJ Abdul Kalm

2. "Education is not received. It is achieved."

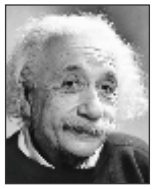

   - Albert Einstein

3. "Tell me and I forget.
   Teach me and I remember.
   Involve me and I learn."

   - Benjamin Franklin

4. "Education is not the learning of facts, but the training of the mind to think."

   - Albert Einstein

5. "Learning is a treasure that will follow its Owner Everywhere."

   - Chinese Proverb

6. "Education is the most powerful weapon which you can use to change the world."

   - Nelson Mandela

7. "Education is a gift that none can take away."

   - American Proverb

8. "Live as if you were to die tomorrow.
   Learn as if you were to live forever."

   - Mahatma Gandhi

9. "The Reading of All Good Books is like a conversation with the finest minds past centuries."

   - Rene Descartes

10. "Education is a progressive discovery of our ignorance."

    - Will Durant

11. "Education is the movement from Darkness to Light."

    - Allan Bloom

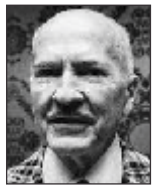

12. "Where one teaches, two learn."

    - Robert Heinlein

11. "Forget all the reasons it won't work and believe the one reason that it will and start working on it."

2. "Good things come to people who wait, but better things come to those who go out and get them."

3. "The place where success comes before work is in the dictionary. In reality, hard work turns into success."

4. "Be confident when you choose your path, because their are many who can mislead you."

5. "Don't try to react the top directly bud climb step by step to experience the happiness of success."

6. Powerful dreams inspire powerful action and powerful actions if taken makes all the dreams come true."

7. "Goals are not only necessary to motivate us, they one essential to really keep us alive."

8. "Hard work without latent is just doing the labour, but talent without hardwork is a tragedy."

9. "Treat your dreams as glass object so that neither break it nor allow it to loose its shining.:

10. "Human brain has many interesting elements but requires grooming with knowledge for development."

Life is a struggle at every step

Anjali Painuli
M.A . (4semester) English

But I have to move ahead.
Sometimes happy and sometimes sad
Too much good and very few bad.
Life is struggle at every step.
Why a man plans too much?
Why a man is not true to his words?
Why a man foals at every moments?
I thought too much better before saying that,
Life is struggle at every step.
Think twice before speaking anything.
Spend few days before saying nice.
Don't waste the time,
For it is the greatest treasure.
The greatest pleasure of life
Is achieved by utilizing time.
Life is a struggle at every step,
But we have to go move ahead in life.

Aryabhatta

Jyoti Farshwan
B.Sc. 1st year (PCM)

- The inventor of the most important invention in Maths – '0'
- Calculated the value of 'pi'at '3.1416'
- Gave the formula (a+b)2 = a2+b2 + 2 ab
- Gave the area of a Δ as perpendicular with the half side is the area.
- The first person to say that earth is spherical & it revolves around the sun.
- Gave theory that earth rotates on its axis.
- Also discussed the concept of sine in his work by the name of ardh-jya which literally means 'Half Chord.'
- Provided elegant results for the summation of series of squares & cubes.

Numbers

Gaurav Binjola
B.Sc. 2nd year (PCM)

Squaring Two Digit Number

- Take any number and add or subtract the number to make it to its nearest multiple of 10. Example – Eats take 77 & 3 to the number to reach the nearest 10, 77+3 =80
- Now, (77+3) X(77-3) = 80 X74 = 5920
- And then, square of number 3 and add it to the above product.

  Square of 3 = 9, 5920 + 9 = 5929

Multiplication of any 3 Digit Numbers

- Take any numbers like 208 and 206 now subtract the number at units place 208 -8 = 200 and 206-6=200
- Now select any number and add the unit digit of another number 208+6 = 214
- Now multiply, 214 X 200= 42800
- Now, multiply the units digist of both numbers, 8X6 = 48, and add them. 42800+48 = 42848

Multiplication of 2 digit numbers from 11 to 20

- Take two numbers like 17 and 19 place the larger number at the top and the 2nd digit of the smaller number at the bottom

  19 (larger number)

  7 (2nd digit of smaller number)
- Add 19+7=26, then multiply 26X10= 260
- Now multiply the unit digit of both numbers, 7X9=63
- Add the two numbers, 260+63 = 323

Squaring Two Digit Number that end with 5

- Take number like 65 and multiply last two digit, 5X5 = 25
- Now, add 1 to the first digit, 6+1=7
- Now multiply 7 with the first digit, 7X6=42 Hence, the answer is 4225.

Strength

Surabhi Pundir
Semester

One who wants to create history
Knows the way to victory
One is aware of weaknesses,
And also of one's strength,
So, how can you give victory to you weakness?
About your dream,
The depth of imagination is the way
Towards success.
Yes, the attitude of I can do anything
Can bring a lot of change.
Yet again, it is not to be repeated.

Never Quit

Sneha Farheen
B.Com II year

When things go away as they sometimes will,

When the road you're traveling seems all up and down.

When the funds are low and the debts are high

And you want to smile, but you have to sign,

When care is pressing you down a bit,

Rest if you must but don't you quit

Success is failure turned inside out –

The silver tint of the clouds of doubt

And you never can't tell how close you are ;

It may be near when it seems so far

So stick to the fight when you're hardest hit –

Its when things seem shortest that you must not quit.

Departments' Report

Department of English
Curriculum & Career Opportunities

Importance & Object of Literature:

Literature is the expression of life in words of truth and beauty; it is the written record of man's spirit, of his thoughts, emotions, aspirations; it is the history, and the only history, of the human soul. Its object, aside from the delight it gives by being artistic, suggestive and thereby permanent ; is to know man, that is, the soul of man rather than his actions, since it preserves the ideals upon which all our civilization is founded. Literature preserves the ideals of a people; and ideals-love, faith, duty, friendship, freedom, reverence- are the part of human life most worthy of preservation. The Greeks were a marvelous people; yet of all their mighty works only a few of their ideals is cherished- ideals of beauty in perishable stone, and ideals of truth in imperishable prose and poetry. It was simply the ideals of the Greeks and Hebrews and Romans, preserved in their literature, which made them what they were, and which determined their value to future generations. Nothing but an ideal ever endures upon earth. Our civilization, progress, homes rest solidly upon ideals for their foundation.

The study of literature has one definite object, and that is to know men. Also, man is ever a dual creature; he has an outward and an inner nature; he is not only a doer of deeds, but a dreamer of dreams; and to know him, the man of any age, we must search deeper than his history. History records his deeds, his outward acts largely; but every great act springs from an ideal, and to understand that, literature needs to be read, here his ideals are recorded. Aristotle was profoundly right when he said that, "poetry is more serious and philosophical than history" and Goethe, when he explains literature as "the humanization of the whole world."

Course Outcome:

The learning outcome for B.A. in English is designed to help learners to analyze, appreciate, understand and critically engage with literary texts written in English. The programmes are devoted to classroom learning, group and individual learning and library and field research projects. The key component in the program is developing the ability to communicate at different levels, ranging from basic to critical communication. Students become familiar with representative literary and cultural texts within a significant number of historical, geographical and cultural contexts.

Students are able to apply critical and theoretical approaches to the reading and analysis of literary and cultural texts in multiple genres once they complete Masters in English Literature. They are able to identify, analyze, interpret and describe the critical ideas, values and themes that appear in literary and cultural texts and understand the way these ideas, values and themes inform and impact culture and society, both now and in the past.

After completing the PG Course in English Literature, the students are able to write analytically in a variety of formats, including essay, research papers, reflective writing and critical reviews of secondary sources. A paper on Dissertation-Submission & Viva- Voce enables them to have an idea on research-writing skills, reviewing, collecting and citing references etc. They are able to gather, understand, evaluate and synthesize information from a variety of written and electronic sources.

After the completion of graduation, they can teach English at junior high or high-school levels or work in the private sector for insurance companies, research –institutions, corporations and real estate firms in the public sector or for non-profit organizations or can pursue Higher education in Literature or Linguistics. After the completion of Post-Graduation course, they can get enrolled in research, prepare for Lectureship examinations.

Books/References Suggested:

1. Arthur Compton-Rickett, "*A History of English Literature*" Universal Book Stall, New Delhi.
2. David Daiches, "*A Critical History of English*" Literature" Allied Publishers Limited (Four Volumes).
3. William J. Long, " *English Literature- Its History And its Significance*"
4. S.P.Sengupta, S.C.Mundra, S.C.Agarwal, "*Advanced Literary Essays*" Rama Brothers, Educational Publishers, Karol Bagh, New Delhi.
5. K.R.Srinivasa Iyengar, "*Indian Writing in English*" Sterling Publishers Private Limited, New Delhi

6. David Lodge & Nigel wood, "*Modern Criticism and Theory A Reader*" Pearson Education Ltd, Delhi.
7. Bijay Kumar Das, "*Twentieth Century Literary Criticism*" Atlantic Publishers& Distributors, New Delhi.
8. Francis Turner Palgrave, " *The Golden Treasury of the Best Songs and the Lyrical Poems in the English Language*" , Rupa& Co, Daryaganj, New Delhi.
9. W.E. Williams, "*A Book of English Essays*" Penguin Books Ltd.
10. Sharon Ruston, "*Romanticism*" , Continnum International Publishing Group.
11. A C Bradley, "*Shakespearean Tragedy*" Surjeet Publications, Delhi.
12. Pramod. K. Nayar, "*Contemporary Literary and Cultural Theory From Structuralism to Ecocriticism*" Pearson , 2012
13. Pramod K. Nayar, "*Postcolonial literature An Introduction*" Pearson, 2012.
14. M.H.Abhrams, "A Glossary of Literary Terms".

A Report on the Academic-Activities of Department of English during the Years 2017-18, 2018-19, 2019-20, 2020-2021

- On 17th of Nov 2017, the Dept of English held a general meeting with thes tudents of the department for constituting the "Students' Council" for the Session 2017-2018.

1. Swati Kothiyal- President 2. Himanshu Thapaliyal– Vice-President 3. Deeksha Mamgain– Secretary 4. Vaibhav Panwar- Jt. Secretary 5. Class-representatives- Makani Negi, Gaurav Negi, Ganesh Singh. Treasurer- Sonali Kala. The Student- Council decided that it would participate and help in the smooth conduct of academic - activities in the department.

- On 24th of Nov 2017, the Department of English organized an Essay-Competition on the topic, "The Cultural heritage of Uttarakhand." The Students who secured positions are 1) Deeksha Mamgain, 2) Ganesh Singh, 3) MonikaTiwari.
- On 28th of Nov 2017, the Department organized a Poster-Competition on the theme "British Poets & Writers". The Students participated in the Poster-competition enthusiastically. The Students who secured positions are 1) Uttam Singh Rawat, 2) Deeksha Mamgain, 3) MonikaTiwari.
- On 10th of April 2018, the Department organized a "Spell-CheckCompetition" in whicha total of 21 students participated. The following students got the respective positions: 1) Monika Bisht, 2) Parmeet Kaur, 3) Rahul Negi.
- On 2nd of Nov 2018, the Dept of English held a general meeting with the students of the Department for constituting the "Students Council" for the Session 2018-2019. The following students were selected for various posts: 1) Krishma Sharma-President, 2) Parmeet Kaur - Vice-President, 3) Anjali Painuly-Secretary, 4) SurekhaRana - Jt.Secretary, 5) Class-representatives - Mohammad Adil, Ritik Narang, Deeksha mamgain, Swati Kothiyal.
- On 1st of April 2019, anEssay- Competition was organized on the topic, "Literature reflects the spirit of the age" The following students secured positions in it. 1) Jyotisana, 2) Gouri Chauhan, 3) Krishma Sharma.
- On 2nd of April 2019, the Dept of English organizeda Poster-Competition on the topic, "Poetryanditsform". A large number of students participated in it. The following students were placed in I, II and III :1) Deeksha Mamgain, 2) Sheetal Kaushal, 3) MonikaTiwari.
- A Speech- Competition was organized on 6th of May 2019 on the topic, "NaturalDisasters and Human Awareness" in which a total of 12 students participated. The Students who secured the first, second and third position srespectively are: 1)Swati Kothiyal, 2) Krishma Sharma, 3) Anjali Painuly.

- On 19th August 2020, an online "Essay-Competition" was held on the topic "Save the Girl-Child". Students submitted their essay online through e-mail. The following students secured positions- 1) Rose Thapa, 2) Nidhi Pant, 3) KanchanKhatri.
- On12-13 Oct 2020, a 2-Day National webinar was organized on the topic,"The Dynamics of Folklore & Orature in Culture". A total number of 1050 registrations were made for the webinar. The Guest-Speakers in the webinar were: 1) Prof Dhananjay Singh, Dept.of English JNU, 2) Prof Joly Puthussery, Dept of Folklore Studies, Hyderabad University, 3) Prof Hoibam Vokendro, Dept of Anthropology, Folklore Studies, Rajiv Gandhi University, Arunachal Pradesh, 4) Dr Arunima Das, Gargi College, University of Delhi, 5) Dr Sachin Tiwary, Dept of Ancient History Banaras Hindu University, 6) Prof Onkar Nath Upadhyay, Dept of English Lucknow University, 7) Prof M. Elangovan, Dept of Tamil RKM Vivekananda College, Mylapore Chennai, 8) Prof D R Purohit, Dept of Culture, HNB Garhwal University, 9) Prof K C Mishra, Dept of English, Rajiv Gandhi University, ArunachalPradesh, 10) Prof Manish Sharma, Dept of Economics Institute for Excellence in Higher Education Bhopal, Madhya Pradesh.
- On 19th of March 2021, the Department organized the following threee vents: 1. Essay-Writing on the topic, "Prevention & Cure of the Pandemic Covid-19" in which the following students secured positions: 1) Anuradha Uniyal, 2) Mahima Gunsola & Vandana Koushal, 3) Darakshan Bi.
- The students of the PG Course were given the topic, "Shakespearean Drama" for Essay-writing in which the students who secured positions are:1) Shruti Uniyal, 2) Charulata Uniyal, 3) Rose Thapa.

2. Chart-Making on the topic, "Nineteenth Century England." The following students got the respective First, Second and Third positions: 1), Vandana Koushal, 2) Mahima Gunsola, 3)Vidisha.

3. Speech-Competitiononthetopic,"TheBook/Film that inspires me most." The tudents who secured position sare: 1) Vanshika Saklani, 2) Sucheta, 3) Mahima Gunsola.

Hon. Principal Dr D C Nainwal presided over the Prize-distributed ceremony which was graced by Dr DN Tiwari, Dr Santosh Verma, Dr Valleri Kukreti, Dr Deepa Sharmaas guests.

गृह विज्ञान विभाग
वार्षिक गतिविधियाँ/ प्रगति आख्या सत्र 2019-20

1. गृह विज्ञान विभाग विषय सत्र 2019–2020, परीक्षा परिणाम 93.75 प्रतिशत।
2. विभाग प्रभारी डा० प्रभा बिष्ट द्वारा 3 राष्ट्रीय कान्फ्रेंस में प्रतिभाग कर शोध पत्रों का प्रस्तुतिकरण ।
3. विभाग प्रभारी डा० प्रभा बिष्ट को इंडियन एसोसियेशन ऑफ पेरेनटरल एवं ऐनटेरल न्यूट्रीशन (पूणे, महाराष्ट्र) द्वारा रीजनल ऑफिसर – देहरादून उत्तराखंड नियुक्त।
4. विभाग प्रभारी डा० प्रभा बिष्ट द्वारा ''पोषण स्थिति का मूल्यॉकन' विषय पर पुस्तक लेखन।
5. विभाग प्रभारी डा० प्रभा बिष्ट द्वारा माय गर्व० तथा विभिन्न विभागों के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित , ईट राइट क्विज, फिट इंडिया क्विज, फिट इंडिया क्विज 2.0, पदम अर्वाड 2020, एक भारत श्रेष्ठ भारत क्विज, नारी शक्ति क्विज, वैक्सीन सेवस लाइफ क्विज में प्रतिभाग।
6. गृह विज्ञान विभाग एवं प्रख्यात एन० जी० ओ० गूँज के संयुक्त तत्वावधान में दिनॉक 17 से 20 दिसम्बर तक महाविद्यालय में निर्धन एवं असहाय वर्ग में वितरण हेतु गर्म वस्त्रों का संग्रहण।
7. गृह विज्ञान विभाग एवं राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा पोषण अभियान –पोषण माह के अर्न्तगत अक्टूबर माह में पोषण जागरूकता कार्यक्रम ।
8. गृह विज्ञान विभाग में आई० सी० एस० एस० आर० वित्त पोषित लघु शोध परियोजना पर विभाग प्रभारी डा० प्रभा बिष्ट के निर्देशन में शोध कार्य।

संस्कृत - विभाग
(विभागीय परिषद की आख्या)

क्रं0	पद का नाम	वर्ष / सत्र		
		2018–19	2019–20	2020–21
1.	अध्यक्ष	आशा	स्नेहा नेगी	वृहस्पति
2.	उपाध्यक्ष	सविता	शालिनी गुसाईं	अनीता
3.	सचिव	स्नेहा नेगी	वृहस्पति	सिमरन
4.	सहसचिव	मोनिका	अनीता	रोहित कुमार
5.	कोषाध्यक्ष	अनीता	सिमरन	शिखा
कक्षा प्रतिनिधि				
1.	स्नातक प्रथम वर्ष / सेमेस्टर	वृहस्पति	काजल	शिवानी
2.	स्नातक द्वितीय वर्ष / सेमेस्टर	वंदना नेगी	करिश्मा	रोहित
3.	स्नातक तृतीय वर्ष / सेमेस्टर	ज्योति नेगी	मोनिका रावत	शिवानी

संस्कृत विभाग द्वारा निबन्ध, सामान्य ज्ञान, वाद–विवाद, क्विज, पोस्टर आदि प्रतियोगिताएं प्रतिवर्ष आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त समय–समय पर छात्र–छात्राओं को व्यवहारिक तथा सामाजिक जागरूकता के विभिन्न कार्यों से परिचित करवाया गया। सत्र 2020–21 में निबन्ध प्रतियोगिता (संस्कृत) में सिमरन प्रथम, कु0 वृहस्पति द्वितीय तथा शिवानी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में शिखा प्रथम, कु0 प्रियंका द्वितीय तथा काजल ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाषण प्रतियोगिता में प्रिंयका शाह प्रथम, कु0 सिमरन द्वितीय तथा शिखा और गगन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। क्विज प्रतियोगिता में सिमरन प्रथम, कु0 वृहस्पति तथ विक्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

डॉ0 रेखा नौटियाल

विभाग प्रभारी

रोवर्स एवं रेंजर्स - सत्र 2019-20

महाविद्यालय के 'रोवर्स एवं रेंजर्स' क्लब द्वारा सत्र 2019– 20 में संचालित गतिविधियाँ

1. रोवर्स एंड रेंजर्स अभिविन्यास कार्यक्रम।
2. रक्त दान शिविर।
3. ''रन फॉर यूनिटि'' कार्यक्रम।
4. ''रोड सेफटी सेमिनार'' में प्रतिभाग।
5. रोवर्स एंड रेंजर्स द्वारा चार दिवसीय ''आपदा प्रबन्धन प्रशिक्षण'' में प्रतिभाग।
6. रोवर्स एंड रेंजर्स द्वारा ''हिमालय के वीर कार्यक्रम ''में प्रतिभाग।
7. पुलवामा आतंकी हमलों में घायल वीर सैनिकों हेतु स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन।
8. रोवर्स एंड रेंजर्स द्वारा युवा महोत्सव कार्यक्रम में प्रतिभाग।
9. ''पोषण माह जागरूकता ''कार्यक्रम।
10. ''एक भारत श्रेष्ठ भारत '' के अर्न्तगत आयोजित विभिन्न गतिविधियों में प्रतिभाग।

रोवर्स एण्ड रेंजर्स

प्रगति आख्या 2018-2019 से 2020-2021 तक

1. 2018–2019 पंजीकृत रोवर्स की संख्या – 09 एवं रेंजर्स की संख्या – 24 है।
2. 2019–2020 पंजीकृत रोवर्स की संख्या – 54 एवं रेंजर्स की संख्या – 47 है।
3. शैक्षणिक सत्र 2020–2021 पंजीकृत रोवर्स की संख्या–35 एवं रेंजर्स की संख्या–34 है।
4. रोवर्स एवं रेंजर्स शिविर का सफल आयोजन महाविद्यालय परिसर के एडुसेट कक्ष में दिनांक 13.03. 2018 से 16.03.2018 तक आयोजित किया गया।
5. 27 मार्च 2018 भारत तिब्बत सीमा पुलिस द्वारा आयोजित हिमालय के वीर कार्यक्रम पुलिस लाईन रेसकोर्स, देहरादून में रोवर्स रेंजर्स ने प्रतिभाग किया।
6. भारत स्काउटस एवं गाईडस उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित विगिनर्स कोर्स दिनांक 10.08.2020 से 12.08. 2020 ऑनलाईन में टीम लीडर द्वारा प्रतिभाग किया गया।
7. ब्लड डोनेशन कैंम्प 'हिमालयन हॉस्पिटल जौलीग्राण्ट'' में होमेज टू पुलवामा ब्रावे सोल्जर्स के तहत इसमें 50 रोवर्स एण्ड रेंजर्स ने प्रतिभाग किया।
8. युवा महोत्सव 2019 के तहत स्कीम्प फॉर युथ सेल्फ इम्पल्ईमेंट एण्ड इन्टरपिनशिप आयोजक टैक्निकल एजुकेशन एण्ड स्कील डेवलनमेंट डिपार्टमेन्ट उत्तराखण्ड, उच्च शिक्षा, सेवायोजन विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 50 रोवर्स रेंजर्स ने प्रतिभाग किया।
9. ऑनलाईन विगनर्स कोर्स आयोजक भारत स्काउट एवं गाइडस उत्तराखण्ड 2020 में 55 रोवर्स रेंजर्स ने प्रतिभाग किया।
10. एक्योप्रेशर वर्कशॉप आयोजक भारत स्काउटस एवं गाइडस उत्तराखण्ड देहरादून 2020 में 50 रोवर्स रेंजर्स ने प्रतिभाग किया।
11. भारत एवं स्काउट गाइडस उत्तराखण्ड, देहरादून द्वारा प्रोगाम फॉर रेंजर्स 2020 के कार्यक्रम में 24 र्स रेंजर्स ने प्रतिभाग किया।
12. राष्ट्रीय मुख्यालय एवं भारत स्काउटस एवं गाइडस उत्तराखण्ड के तत्वाधान 2020 फिट इण्डिया कम्पेन के विभिन्न कार्यक्रमों – फिटनेस, योगा, मोनो अभिनव, प्रतिज्ञा स्वास्थ्य से सम्बन्धी पोस्टर प्रतियोगिता प्रभातफेरी, जिम में 50 रोवर्स रेंजर्स ने ऑन लाईन प्रतिभाग किया गया।

चित्रकला - विभाग
(विभागीय परिषद की आख्या)

क्रं0	पद का नाम	वर्ष / सत्र		
		2018–19	2019–20	2020–21
1.	अध्यक्ष	सौरभ	अनम	पिंकी
2.	उपाध्यक्ष	अनम	मनीषा	शिवानी
3.	सचिव	आँचल आर्य	अमृता चौहान	अंजलि
4.	सहसचिव	मोनिका	अनीता	सविता
5.	कोषाध्यक्ष	पिंकि	अदिति राणा	आकांक्षा
कक्षा प्रतिनिधि				
1.	स्नातक प्रथम वर्ष / सेमेस्टर	अमृता	अंजलि बेलवाल	अभिषेक
2.	स्नातक द्वितीय वर्ष / सेमेस्टर	मनीषा	पिंकि	अदिति
3.	स्नातक तृतीय वर्ष / सेमेस्टर	प्रिया रतूड़ी	तसब्बुर अली	अनीता

चित्रकला विभाग द्वारा निबन्ध, सामान्य ज्ञान, वाद–विवाद, क्विज, पोस्टर आदि प्रतियोगिताएं प्रतिवर्ष आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त समय–समय पर छात्र–छात्राओं को व्यवहारिक तथा सामाजिक जागरूकता के विभिन्न कार्यों से परिचित करवाया गया।

डॉ0 रेखा नौटियाल

विभाग प्रभारी

Department of Pcychology

Dr. Vallary Kukreti
Incharge of the Department

Department of Psychology forms an association of Psychology for the efficient functioning and active participation of the students. Association of Psychology for Session 2020-21 was formed 13 February, 2021 with the following members :

1. Himani Raturi (MA III sem) - President
2. Surekha Rana (MA I sem) - Vice President
3. Dhananjay Gaur (BA Vsem) Secretary
4. Sachin Danwal (BA II year) - Joint Secretary
5. Siddhant Bahuguna (BA I year) - Treasurer

The schedule of the activities to be conducted for the academic year 2020-21 was forwarded by the association. The activities approved to be conducted were as follows :

1. Essay Competition held on 08 March, 2021
2. Expert Lecture held on 09 March, 2021
3. Poster Competition held on 13 March, 2021
4. Debate Competition held on 12 March, 2021

The Felicitation Ceremony was conducted on 10 April, 2021. Dr. Vandana Gaur, Assistant Prof., Dept. of the Psychology, S.D.M. Govt. P.G. College, Doiwala conducted the event. Dr. Vallari Kukreti, Incharch of the department, Dept. of the Psychology, S.D.M. Govt. P.G. College, Doiwala read the annual report of the department. Dr. Poonam Pandey, Assistant Prof., Dept. of the Psychology, S.D.M. Govt. P.G. College, Doiwala co-ordinated the smooth functioning of the event. The winners of the various activities and association members were awarded by Dr. D.C. Nainwal, Head of the Institution, S.D.M. Govt. P.G. College, Doiwala and Dr. R.S. Rawat, Head & Examination Incharge, Dept. of the Sociology, S.D.M. Govt. P.G. College, Doiwala.

During the lockdown phase the Association of Psychology formed a whatsapp group 'Abhivyakti' for all the classes of Psychology so that a platform for self expression is available to them during the lockdown phase, where, weekly topics were introduced and the students were encouraged to express themselves on those topics.

Mr. Manoj Bhushan ans Mrs. Shobha, Dept. of the Psychology, S.D.M. Govt. P.G. College, Doiwala were always available to help in the conduction of all the events in the department of Psychology.

खेलकूद रिपोर्ट

2019 – 20

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला का वार्षिक क्रीड़ा समारोह दिनांक 4.3.2010 एवं 5. 3.2020 को सम्पन्न हुआ। क्रीड़ा समारोह का उद्घाटन प्रो. एम.एस.एम. रावत, पूर्व कुलपति एवं सलाहकार रूसा, देहरादून थे। क्रीड़ा समारोह में मार्च पास्ट के अतिरिक्त विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजयी प्रतिभागियों की सूची निम्नवत् हैः–

1. 100 मी. दौड़

श्रेणी	**छात्र वर्ग**	**छात्रा वर्ग**
प्रथम	आयुष भिल्सवाल	सुषमा
द्वितीय	मेहरबान अली	प्रिया
तृतीय	विजेन्दर चौहान	मोनिका ग्वाल

2. 200 मी. दौड़

प्रथम	मेहरबान अली	काजल लोधी
द्वितीय	विष्णु चौहान	प्रिया
तृतीय	सौरभ	सोनम राणा

3. 400 मी. दौड़

प्रथम	सौरभ लोधी	मानसी
द्वितीय	अंशुल शर्मा	सोनम राणा
तृतीय	विष्णु चौहान	अंजली एवं मनीषा पंवार

4. 800 मी. दौड़

प्रथम	आकाश कश्यप	काजल लोधी
द्वितीय	विजेन्दर	देवकी
तृतीय	सौरभ सिंह रावत	पूजा पुण्डीर

5. 1500 मी. दौड़

प्रथम	विजेन्दर	काजल लोधी
द्वितीय	आकाश कश्यप	सोनम राणा
तृतीय	मौ. आरिफ	अंजली कोठारी
चतुर्थ		अमनदीप

6. भाला फेंक

प्रथम	अनूप सिंह	तानिया थापा
द्वितीय	अमन देव	गौरी
तृतीय	अमित	रीना

7. गोला फेंक

प्रथम	अमन देव	मानसी
द्वितीय	पंकज	सुरभि
तृतीय	शिवम कोहली	सुषमा

8. चक्का फेंक

प्रथम	अमनदेव	सुषमा
द्वितीय	पंकज	मानसी
तृतीय	अभिषेक कुमार	देवकी

9. शतरंज प्रतियोगिता

विजेता	आयुष शर्मा	प्रज्ञा भट्ट
उपविजेता		मोहित जोशी, श्रेया भट्ट

10. कैरम प्रतियोगिता

विजेता	विकास नौटियाल	पूनम
उपविजेता		अंशुल शर्मा, नीतू नेगी

11. रिले दौड़ (4 x 100 मी.)

I : Team B (Red) –	सौरभ सिंह रावत
	रितिक राणा
	अंशुल शर्मा
	आयुष भिलसवाल
II : Team A (Green) –	विष्णु चौहान
	आकाश मिश्रा
	तुषार पंवार
	विजेन्द्र
III : Team D (Orange) –	मेहरबान अली
	सौरभ लोधी
	मौ. आरिफ
	सौरभ रणली

12. बालीवाल (छात्र वर्ग)

विजेता	उपविजेता
हिमांशु बिष्ट	तुषार पंवार
कुनाल शिल्सवाल	आकाश कश्यप
विवेक सिंह	मोहित जोशी
हेमन्त रावत	सागर कोहली
शिवम कोहली	संजय पयाल
विजेन्द्र आयुष वर्मा	
धीरज विष्णु चौहान	
सौरभ रौथाण	विवेक राणा
	अरविन्द पंवार

बालीवाल (छात्रा वर्ग)

विजेता	उपविजेता
तानिया काला	संध्या
रितु	गुंजन
रीना	सुषमा
साक्षी	लता सैनी
मीनाक्षा	सोनम राणा
मानसी	अंजली कोठारी
मनीषा	निधि रावत
संगीता	कविता

13. कबड्डी (छात्र वर्ग)

विजेता	उपविजेता
मेहरबान अली	पंकज
शिवम कोहली	आकाश कुमार
गौरव चमोली	आशीष
नवनीत रावत	मोहित जोशी
विज्जू चौहान	अनुज
शौहिब	अंशुल
स्वप्निल	विजय सिंह रावत
भूपेन्द्र	

कबड्डी (छात्रा वर्ग)

विजेता	उपविजेता
सोनम	पूजा पुण्डीर
अंजली कोठारी	सोनाली देवशाली
श्वेता	रोनिता
भाविका	सुरभि
रवीना	निधि रावत
सुषमा	तन्नू

2020 – 21

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला में इस वर्ष कोरोना के कारण कोविड नियम का पालन करते हुए निम्न प्रतियोगिताएं की गयी हैं :–

शतरंज (छात्र वर्ग)

प्रथम	–	मोहित जोशी (B.A. II)
द्वितीय	–	आशु (B.Sc. I)
तृतीय	–	शुभम (B.A. I)

शतरंज (छात्रा वर्ग)

प्रथम	–	अंशिका रावत (B.Com.II)
द्वितीय	–	पूर्वा (B.Com. I)

कैरम (छात्र वर्ग)

प्रथम	–	मोहित
द्वितीय	–	आशु
तृतीय	–	विनय पटवाल

कैरम (छात्रा वर्ग)

प्रथम	–	सुरेखा राणा
द्वितीय	–	सोनम
तृतीय	–	स्वीटी

2021 – 22

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला देहरादून में राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएं की गयी हैं :–

शतरंज (छात्र वर्ग)

प्रथम	–	आशु (B.Sc. II)
द्वितीय	–	शुभम (B.A. II)
तृतीय	–	शिवम (M.A. II)
	–	मोहित जोशी (B.A.III)

शतरंज (छात्रा वर्ग)

प्रथम – निधि रावत (B.A.II)
द्वितीय – श्रेया भट्ट (B.Sc.II)
तृतीय – गीतांजलि गदेरा (B.A.I)

कैरम (छात्र वर्ग)

प्रथम – आशु (B.Sc. II)
द्वितीय – शशांक (B.A)
तृतीय – विनय पटवाल (M.A. II)

कैरम (छात्रा वर्ग)

प्रथम – अन्जुम निशा (B.A.I)
द्वितीय – शबाना खातून (B.A. I)
तृतीय – साक्षी नेगी (B.A. I)
प्रिया सूद (B.A. II)
अंजलि (B.Sc.)

वॉलीबाल (छात्र वर्ग)

विजेता – (SDM Bule Team)
शिवम कोहली (M.A.III)
मोहित जोशी (B.A.III)
अमन गुसाईं (B.Com. II)
आकाश कश्यप (B.A. I)
संचित थपलियाल (B.A. III)
वासु (B.A.I)

बास्केट बॉल (छात्र वर्ग)

विजेता – प्रशिक्षित कुमार (B.A.I)
रवि कोहली (B.A.I)
अश्विनी (B.A. I)
मोहित जोशी (B.A.III)
यशवन्त सिंह (B.A. I)
परांजल (B.A.I)
संजय (B.A.I)

फुटबॉल (छात्र वर्ग)

विजेता – SD Blue
अजय पंवार (B.Com.I)
विपिन गुनसोला (B.Com.I)
अनुज वर्मा (B.A. I)
हिमांशु टोपवाल (B.A.I)
अभिषेक वर्मा (B.A. I)
सचिन डंगवाल (B.A.III)
मोइन अंसारी (B.A. II)
शिवम रौतेला (B.A. III)
सूरज नेगी (B.A. II)

क्रिकेट (छात्र वर्ग)

विजेता – सुहैब अली
विशाल यादव
शिवम असवाल
आर्यन वर्मा
गौरव
अजय पंवार
राहुल चौहान
विपिन

बैडमिंटन (छात्र वर्ग)

प्रथम – दीपक
अनुज कृषाली
द्वितीय – शिवम रौतेला
आशु
तृतीय – नितिन सकलानी
शशांक

बैडमिंटन (छात्रा वर्ग)

प्रथम – सोनाली नेगी
शबाना
द्वितीय – सूरमन
खुशनुमा
तृतीय – रशिका
श्वेता

800 मी. दौड़ (छात्र वर्ग)

प्रथम – मोहित (B.A. I)
द्वितीय – सिद्धार्थ (B.Sc. I)
तृतीय – आसिफ (B.A. III)

400 मी. दौड़ (छात्र वर्ग)

प्रथम – सिद्धार्थ
द्वितीय – शिवम
तृतीय – राहुल
नमन

200 मी. दौड़ (छात्र वर्ग)

प्रथम – मेहरबान अली
द्वितीय – शिवम
तृतीय – आसिफ

800 मी. दौड़ (छात्रा वर्ग)

प्रथम – काजल लोधी
द्वितीय – कविता पुण्डीर
तृतीय – शालिनी

400 मी. दौड़ (छात्रा वर्ग)

प्रथम – काजल लोधी
द्वितीय – कविता पुण्डीर
तृतीय – सोनम

200 मी. दौड़ (छात्रा वर्ग)

प्रथम – मनीषा
द्वितीय – हिना वर्मा
तृतीय – सोनम

कबड्डी (छात्र वर्ग)

विजेता – SDB Blue
आयुष
कुनाल
मानव खत्री
शौकत अली
मौ. याकूब
विष्णु
राहुल चौहान
विशाल राठौर
सौरव
मोहित

कबड्डी (छात्रा वर्ग)

विजेता – SDM Green
निधि रावत
पूजा पुण्डीर
स्वाति रावत
आरती सेमवाल
गार्गी शर्मा
कविता पुण्डीर
अक्षिता राना
श्वेता पुण्डीर

गणित विभाग रिपोर्ट

दिनांक 12 अक्टूबर 2018 को गणित विभाग के समस्त छात्र–छात्राओं के साथ एक बैठक आयोजित की गयी, जिसमें सत्र 2018–19 की गणित विभागीय परिषद हेतु सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया –

पद	नाम (छात्र / छात्रा)	कक्षा
अध्यक्ष	दिव्या नेगी	बी.एससी. V Sem
उपाध्यक्ष	आयुष नेगी	बी.एससी. V Sem
सचिव	मुकुल	बी.एससी. III Sem
सह सचिव	अभिनय सेमल्टी	बी.एससी. III Sem
कोषाध्यक्ष	अखिलेश	बी.एससी. I Sem
कक्षा प्रतिनिधि	संजीव कुमार	बी.एससी. V Sem
	मीनाक्षी नेगी	बी.एससी. III Sem
	आयुषी जायसवाल	बी.एससी. I Sem

विभागीय परिषद के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं – जैसे पोस्टर प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता एवं तत्कालीन भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान शिवम बीएससी VI Sem, द्वितीय स्थान कु. सुरूचि बीएसएसी II Sem, तृतीय स्थान कु. कंचन बीएसएसी II Sem ने प्राप्त किया। तत्कालीन भाषण प्रतियोगिता में शिवम बीएसएसी VI Sem,मीनाक्षी नेगी बीएसएसी IV Sem, सोनाली बीएसएसी VI Sem क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में बीएसएसी VI Sem प्रथम, बीएसएसी IV Sem द्वितीय, बीएसएसी III Sem तृतीय स्थान पर रहे। सभी विजेताओं को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. एम.सीत्र नैनवाल जी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

सत्र 2019 – 20 हेतु दिनांक 3 जनवरी 2020 को गणित विभागीय परिषद हेतु सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया –

पद	नाम (छात्र / छात्रा)	कक्षा
अध्यक्ष	मीनाक्षी नेगी	बी.एससी. V Sem
उपाध्यक्ष	मुकुल	बी.एससी. V Sem
सचिव	रश्मि	बी.एससी. III Sem
सह सचिव	हर्ष	बी.एससी. III Sem
कोषाध्यक्ष	गौरव बिंजोला	बी.एससी. I Sem
कक्षा प्रतिनिधि	अभिनव	बी.एससी. V Sem
	ज्योति कुमारी	बी.एससी. III Sem
	विष्णु छेत्री	बी.एससी. I Sem

विभागीय परिषद के अंतर्गत विश्व पृथ्वी दिवस पर ऑनलाइन पोस्टर का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम स्थान श्रुति नौटियाल बीएससी प्रथम वर्ष, द्वितीय स्थान अभिनय सेमल्टी बीएससी VI Sem एवं तृतीय स्थान ज्योति मुकुल बीएससी IV Sem ने प्राप्त किया। इसी क्रम में निबंध लेखन प्रतियोगिता, जिसका विषय 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका' था, का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में छात्र–छात्राओं द्वारा बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया गया। सर्वश्रेष्ठ निबंध सुरूचि नौटियाल द्वारा लिखा गया।

सत्र 2020 – 21 हेतु दिनांक 8 दिसम्बर 2021 को गणित विभागीय परिषद हेतु सर्वसम्मति से निम्न पदाधिकारियों का चयन किया गया –

पद	नाम (छात्र / छात्रा)	कक्षा
अध्यक्ष	तमन्ना	बी.एससी. V Sem
उपाध्यक्ष	आयुष कंडवाल	बी.एससी. V Sem
सचिव	हार्दिक	बी.एससी. I Sem
सह सचिव	आयुष राणाकोटी	बी.एससी. II Sem
कोषाध्यक्ष	निकिता रावत	बी.एससी. I Sem
कक्षा प्रतिनिधि	इशपाल सिंह	बी.एससी. V Sem
	खुशबू मियां	बी.एससी. II Sem
	प्रेरणा	बी.एससी. I Sem

विभागीय परिषद के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता, तत्कालीन भाषण प्रतियोगिता एवं पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान निकिता रावत बीएसएसी प्रथम वर्ष, द्वितीय स्थान आयुष कंडवाल बीएससी V Sem एवं तृतीय स्थान सार्थक उनियाल प्रथम वर्ष ने प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में श्रुति नौटियाल बीएसएसी द्वितीय वर्ष, सुरूचि नौटियाल बीएससी V Sem, ज्योति कुमारी बीएससी V Sem क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर रहे।

तत्कालीन भाषण प्रतियोगिता में सुरूचि नौटियाल बीएससी V Sem, मृणालिनी बीएससी V Sem, हार्दिक बीएसएसी द्वितीय वर्ष क्रमशः प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान एवं तृतीय स्थान पर रहे। प्रतियोगिता में विजित प्रतिभागियों को महाविद्यालय के प्राचार्य डा. डी.सी. नैनवाल जी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

गणित विभाग की बीएससी द्वितीयवर्ष की छात्रा साक्षी त्यागी द्वारा गणित विभागीय परिषद हेतु एक गणितीय मॉडल बनाया गया, जिसमें गणित के कुछ सूत्र एक बोर्ड में अंकित किये गये थे।

मॉडल निर्माण में एलईडी बल्ब, एक बैटरी और तार का प्रयोग किया गया। सूत्रों को उनके उत्तर के साथ तार द्वारा जोड़ा गया और दो कम्पास नीडल लेकर बैटरी और बल्ब से उन्हें जोड़ दिया गया। सूत्रों के पास ड्राइंग पिन लगे थे। दोनों मिडिल को सही पिन पर रखने से बल्ब जलता था एवं गलत जुड़ा होने पर बल्ब नहीं जलता था। उपरोक्त छात्रा को इस मॉडल के लिये विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किया गया।

विद्यार्थियों में गणित के इतिहास के प्रति रूचि जागृत करने हेतु शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालिय डोईवाला के गणित विभाग एवं पं. ललितमोहन शर्मा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ऋषिकेश के गणित विभाग के संयुक्त तत्वाधान में दिनांक 18 सितम्बर 2020 को एक राष्ट्रीय सेमिनार (विषय – History of Complete Mathematics) का आयोजन किया गया। सेमिनार में खालसा कॉलेज पटियाला के गणित विभागाध्यक्ष प्रो. गुरमीत कौर जी द्वारा गणित विभागाध्यक्ष प्रो. गुरमीत कौर जी द्वारा गणित के आदिकाल से वर्तमान तक के सम्पूर्ण इतिहास को बहुत ही रोचक तरीके से समझाया गया। उपरोक्त सेमिनार में विभिन्न राज्यों के लगभग 350 प्रतिभागियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। सभी प्रतियोगिता को कार्यक्रम के अंत में प्रमाण पत्र वितरीत किये गये।

22 दिसम्बर 2020 को रामानुजन के पुण्यतिथि पर गणित विभाग द्वारा गोष्ठी का भी आयोजन किया गया, जिसमें गणित विभागाध्यक्ष डॉ. दीपा शर्मा द्वारा रामानुजन के जीवन के विभिन्न पहलुओं और उनके गणति के क्षेत्र में दिये गये योगदान विद्यार्थियों ने विस्तारपूर्वक बताया। गोष्ठी के प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी.सी. नैनवाल जी द्वारा समस्त छात्र–छात्राओं का सम्बेधित किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर महाविद्यालय एवं यूकोस्ट एवं लक्ष्य सोसायटी के संयुक्त तत्वाधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें गणित विभाग के छात्र–छात्राओं द्वारा पोस्टर एवं भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया गया। पोस्टर प्रतियोगिता में ज्योति बीएससी V Sem प्रथम स्थान, आयुष द्वितीय स्थान पर एवं सुरभि तथा कंचन बीएससी V Sem संयुक्त रूप से तृतीय स्थान पर रहे। भाषण प्रतियोगिता (विषय – विज्ञान और तकनीक का महत्व) में श्रुति नौटियाल बीएससी द्वितीय वर्ष प्रथम स्थान एवं अक्षय नेगी बीएससी V Sem द्वितीय स्थान पर रहे। सभी विजेताओं को इस कार्यक्रम में आये हुए मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कृत भी किया गया।

राजनीति विज्ञान रिपोर्ट

2017–18

इस सत्र में विभाग द्वारा अनेक कार्यक्रमों का संयोजन किया। इस सत्र में विभागीय परिषद के अध्यक्ष पद पर कु. आराधना तिवाड़ी, उपाध्यक्ष कु. सोनिया, सचिव कु. शिल्पा, सहसचिव कु. संजना, कोषाध्यक्ष अजय पांचाल व सांस्कृतिक सचिव प्रियकला नेगी रही। का गठन किया गया तथा विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया गया, जिनका विवरण निम्नवत् है –

- इस सत्र में विभाग के स्नातकोत्तर एम.ए. द्वितीय वष्र के छात्र–छात्राओं द्वारा प्रथम वर्ष के (एम.ए.रा.वि.) के लिये स्वागत समारोह आयोजित किया गया।
- एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र–छात्राओं को शैक्षणिक भ्रमण के लिये जनपद उत्तरकाशी ले जाया गया। जहां पर्वतीय सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों का उनके द्वारा धरातलीय अध्ययन किया गया। हर्षिल घाटी एवं गंगोत्री मंदिर परिसर में दर्शन किये गये। जनपद उत्तरकाशी के तत्कालीन जिला जज श्री दिनेश प्रसाद गैरोला ने छात्र–छात्राओं को सम्बोधित किया तथा एक रात्रि भोज के लिये छात्र–छात्राओं को अपने आवास पर आमंत्रित किया। तत्कालीन प्राचार्य डॉ. एम.सी. नैवाल ने छात्र–छात्राओं को बधाई दी।
- विभाग द्वारा शैक्षणिक व्याखान आयोजित किया गया – 'लोकतंत्रीय जागरूकता एवं विधिक साक्षरता'। जिसमें डोईवाला के प्रतिष्ठित वकील श्री सैनी ने छात्र–छात्राओं को आवश्यक जानकारी प्रदान की।
- विभाग द्वारा निबन्ध प्रतियोगिता, भाषण, प्रतियोगिता, देशगीत प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की गयी। विजयी छात्र–छात्राओं को प्राचार्य जी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

2018–19

इस सत्र में भी विभागीय परिषद का गठन किया गया तथा विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया गया, जिनका विवरण निम्नवत् है –

- विभाग में दिनांक 8.8.2019 को अनुच्छेद 370 और इसकी प्रासंगिकता पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें महाविद्यालय के सैन्य विज्ञान विभाग के विभाग प्रभारी डॉ. नर्मदेश्वर शुक्ला मुख्य वक्ता रहे। अंग्रेजी विभाग की विभाग प्रभारी डॉ. पल्लवी मिश्रा सह वक्ता रहीं। डॉ. अंजलि वर्मा एवं विभाग प्रभारी डॉ. राखी पंचाला द्वारा कार्यक्रम का संयोजन किया गया।
- विभाग द्वारा 26 नवम्बर 2019 को संविधान दिवस के अवसर पर एक विचार गोष्ठी एवं निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. नूरहसन असि. प्रो. इतिहास विभाग ने संविधान के ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में छात्र–छात्राओं को को जानकारी दी। इस अवसर पर प्रभारी प्राचार्य डॉ. डी.एन. तिवारी, विभाग प्रभारी डॉ. राखी पंचाला, डॉ. आर.एस. रावत मुख्य शास्त्रा, मीडिया प्रभारी डॉ. एस.के. कुड़ियाल आदि उपस्थित रहे।
- इस सत्र में भी विभाग द्वारा परिषदीय कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। जिसमें निबन्ध, भाषण, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता एवं देशभक्ति गीत आदि का आयोजन किया गया तथा विजयी छात्र–छात्राओं को प्राचार्य जी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

विभाग द्वारा दिनांक 26.8.2021 से 27.8.2021 को दो दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार "Success Challenges and Possibility of Democratic Values in India" स्वामी विवेकानन्द राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय लोहाघाट चम्पावत के संयोजन से दिनांक 27.8.2021 को एक वेबीनार काएक तकनीकी सत्र आयोजित किया गया, जिसका विषय था "जन गण मंत्रणा एवं भारतीय सन्दर्भ" रहा। तकनीकी सत्र के संरक्षक प्राचार्य डॉ. डी.सी. नैनवाल जी रहे। अध्यक्ष राखी पंचोजा सहअध्यक्ष डॉ. अंजलि वर्मा रहीं। तकनीकी सत्र में डॉ. ललितमोहन सिंह नेगी (गोपेश्वर चमोली), डॉ. दय सुमन प्रकाश राजनीति विज्ञान विभाग (ब्रह्मखाल–उत्तरकाशी), डॉ. दयाप्रसाद हिन्दी विभाग बड़कोट महाविद्यालय (उत्तरकाशी), डॉ. मधु जुवांठा रा.वि. विभाग, नैनबाग महाविद्यालय टिहरी ने सम्बोधित किया। छात्र–छात्राओं का प्रतिभाग उत्साहजनक रहा।

विभाग द्वारा छात्र–छात्राओं के लिये 'स्थानीय स्वशासन एवं लोकतन्त्र' पर व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. मनीष मिश्रा असि. प्रो. राजनीति विज्ञान (गोपेश्वर महाविद्यालय) ने व्याख्यान दिया।

डॉ. राखी पंचोला द्वारा सम्पादित पुस्तक 'वैश्विक महामारी कोविड 19 : प्रभाव एवं सीख' पुस्तक का माननीय उच्चशिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत द्वारा विमोचन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. डी.सी. नैनवाल, कुलपति महोदया दून विश्वविद्यालय, प्रो. सुरेखा डंगवाल, कुलपति महोदय श्री देवसुमन विश्वविद्यालय डॉ. पी.पी. ध्यानी, रूसा सलाहकार डॉ. के.डी. पुरोहित की गरिमायी उपस्थिति रही।

विभाग द्वारा छात्र–छात्राओं के लिये अनेक प्रतियोगिता, कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

2020–21

- इस सत्र में कोविड महामारी का प्रकोप शुरू हो चुका था। धीरे–धीरे शिक्षण ऑनलाइन गतिविधियों में परिवर्तित हुआ।
- विभागीय परिषद का गठन किया गया तथा छात्र–छात्राओं को ऑनलाइन गतिविधियों से परिचित करवाया गया।
- स्वतंत्रता दिवस समारोह पर ऑनलाइन देशभक्ति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. अंजलि वर्मा ने कार्यक्रम का संयोजन किया। जिसमें सलोनी प्रथम, किरण सेमवाल द्वितीय एवं प्राची रावत तृतीय स्थान पर रहे।
- जनू 2020 में विभाग द्वारा एक राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'वैश्विक महामारी कोविड–19 : प्रभाव एवं सीख' था। जिसका वर्चुअल उद्घाटन मा. उच्चशिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत जी के द्वारा किया गया। आदरणीय कुलपति डॉ. पी.पी. ध्यानी श्री देव सुमन विश्वविद्यालय तथा प्रो. एम.एम. सेमवाल विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान विभाग ने अपना वक्तव्य प्रदन किया। पांच राज्यों से विषय विशेषज्ञों तथा देशभर से लगभग 700 लोगों ने प्रतिभाग किया।
- विभाग में मानवाधिकार दिवस मनाया गया, जिसमें मुख्य वक्ता एडवोकेट सांझी अग्रवाल रहीं।
- विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया 8 मार्च 2020।
- विभाग द्वारा 'आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत अनेक कार्यक्रमों का आयोजन ऑफलाइन व ऑनलाइन मोड पर किया गया। दिनांक 11.8.2021 को हुई संगोष्ठी में मात्र उच्चशिक्षा निदेशक डॉ. पी.के. पाठक मुख्य संरक्षक थे। मुख्य वक्ता के रूप में पद्मश्री प्रो. शेखर पाठक (वरिष्ठ इतिहासकार उत्तराखण्ड) रहे।

अनुसूचित जाति अनुशिक्षण इकाई
(प्रगति आख्या 2021)

महाविद्यालय में वर्ष 2017 से अनु. जाति अनुशिक्षण इकाई संचालित है, जिसमें अनु. जाति/जनजाति एवं कमजोर वर्ग के छात्र–छात्राओं को निःशुल्क प्रतियोगितात्मक कोचिंग प्रदान की जाती है। जिसके लिये प्रतिवर्ष शासन से महाविद्यालय को अनुदान प्राप्त होता है, जिससे आंतरिक एवं बाह्य विषय विशेषों के द्वारा महाविद्यालय की कक्षाओं के बाद अध्ययन किया जाता है। इसमें सिविल सेवा, बैंकिंग, समूह ग, रेलवे अधीनस्थ सेवा आयोग उत्तराखण्ड द्वारा संचालित विभिन्न प्रतियोगिताओं की तैयारी करवायी जाती है। कोचिंग इकाई में प्रतियोगिता पुस्तकों का संकलन किया गया है ताकि कक्षावकाश के समय सम्बंधित छात्र अध्ययन कर सकें। सत्र 2020–2021 में 'अग्रणी कोचिंग' क्लोसेस के सौजन्य से इन कक्षाओं का संचालन किया गया। 'कोविड काल' में तथा शीतकालीन अवकाश में छात्र–छात्राओं द्वारा ऑनलाइन अध्ययन किया गया।

महाविद्यालय में सत्रवार पंजीकृत एस.सी./एस.टी. के छात्र–छात्राओं का विवरण –

S.No.	Year		SC			ST	
		Male	Female	Total	Male	Female	Total
1	2017-2018	80	140	220	36	101	137
2	2018-2019	92	136	228	13	16	29
3	2019-2020	86	171	257	6	18	24
4	2020-2021	100	139	239	3	7	10

कैरियर काउंसिलिंग इकाई

उपरोक्त इकाई प्राचार्य डॉ. डी.सी. नैवाल के निर्देशन मे संयोजक डॉ. राखी पंचोला सदस्य डॉ. प्रियंका कुमारी, श्री महेश कुमार एवं श्री बृजमोहन कार्य करते हैं। शिक्षा का उद्देश्य अन्तोतगत्वा आत्मनिर्भरता प्राप्त करना है। महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं के दिशा–निर्देशन के लिय कैरियर काउंसिलिंग इकाई की स्थापना की गयी है, जिसमें छात्र–छात्राओं की रूचि के अनुसार विभिन्न कैरियर क्षेत्रों की जानकारी बाह्य विशेषज्ञों की सहायता से दी जाती है। महीने के अंतिम शनिवार को संकायानुसार यह एक घंटीय कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

उपरोक्त इकाई में छात्र–छात्राएं अपनी रूचि के अनुसार कोचिंग कक्षाओं का लाभ लेते हैं। महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग के एसो. प्रो. डॉ. अफरोज इकबाल द्वारा ऑनलाइन सीरीज प्रतियोगिता भी शुरू की गयी है तथा राज्य स्तर पर विभिन्न महाविद्यालयों के छात्र–छात्राएं उसको सुनते हैं। जिसमें संयोजक डॉ. राखी पंचोला तथा अन्य सदस्यों के रूप में डॉ. कंचनलता सिन्हा, डॉ. दीपा शर्मा एवं डॉ. अनिल भट्ट कार्य कर रहे हैं।

आख्या: भौतिक विज्ञान विभागीय परिषद

सत्र 2018–19

महाविद्यालय में भौतिक विज्ञान विभागीय परिषद का गठन दिनांक 12.10.2018 को किया गया जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से किया गया.

अध्यक्ष : संजीव कुमार (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
उपाध्यक्ष : कपिल कुमार (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
सचिव : सत्यम (बी.एस–सी. III सेमेस्टर)
सहसचिव : अभिनव काला (बी.एस–सी. III सेमेस्टर)
कोषाध्यक्ष : हर्ष(बी.एस–सी.I सेमेस्टर)
कक्षा प्रतिनिधि 1 : शिवानी(बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
कक्षा प्रतिनिधि 2 : शिवानी(बी.एस–सी. III सेमेस्टर)
कक्षा प्रतिनिधि 3 : शिवानी(बी.एस–सी. I सेमेस्टर)

परिषद द्वारा दिनांक 11.3.2019 को विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया .इन प्रतियोगिताओं में निम्नलिखित विद्यार्थी विजेता रहेः

भाषण प्रतियोगिता

प्रथम : शिवम (बी.एस–सी. VI सेमेस्टर)
द्वितीय : दिव्या नेगी(बी.एस–सी. VI सेमेस्टर)
तृतीय : कल्पना(बी.एस–सी. IV सेमेस्टर)

निबन्ध प्रतियोगिता

प्रथम : रश्मि नेगी(बी.एस–सी. II सेमेस्टर)
द्वितीय : कल्पना(बी.एस–सी. IV सेमेस्टर)
तृतीय : सुरुची नौटियाल(बी.एस–सी. II सेमेस्टर)

क्विज़(QUIZ) प्रतियोगिता

प्रथम : बी.एस–सी. II सेमेस्टर (रश्मि, कल्पना, सुरुची)
द्वितीय : बी.एस–सी. VI सेमेस्टर (कपिल, शिवम, आकांक्षा)
तृतीय : बी.एस–सी. IV सेमेस्टर (मीनाक्षी, पूनम, कल्पना)

सत्र 2019–20

दिनांक 3.1.2019 को विभागीय परिषद का गठन किया गया जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गयेरू

अध्यक्ष : सत्यम (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
उपाध्यक्ष : पूनम नेगी (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
सचिव : सुरुची (बी.एस–सी. ぃ सेमेस्टर)
सहसचिव : मोहित व्यास (बी.एस–सी. III सेमेस्टर)
कोषाध्यक्ष : शार्दिक गर्ग (बी.एस–सी. प्रथम वर्ष)
कक्षा प्रतिनिधि 1 : कल्पना (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
कक्षा प्रतिनिधि 2 : आशु लोधी (बी.एस–सी. III सेमेस्टर)
कक्षा प्रतिनिधि 3 : श्रुति नौटियाल (बी.एस–सी. प्रथम वर्ष)

कोविड के कारण प्रस्तावित विभागीय प्रतियोगितायें स्थगित करनी पड़ी.

सत्र 2020–21

दिनांक 8.2.2021 को विभागीय परिषद गठित की गयी जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्वसम्मति से किया गया.

अध्यक्ष : सौरभ कुमार (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
उपाध्यक्ष : मोनिका उनाल (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
सचिव : गौरव बिंजोला (बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष)
सहसचिव : आयुष कोठारी (बी.एस–सी द्वितीय वर्ष)
कोषाध्यक्ष : आशीष कृशाली(बी.एस–सी. प्रथम वर्ष)
कक्षा प्रतिनिधि 1 : रश्मि (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
कक्षा प्रतिनिधि 2 : प्रियंका जुगरान (बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष)
कक्षा प्रतिनिधि 3 : निकिता रावत (बी.एस–सी. प्रथम वर्ष)

28 फरवरी 2021को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर परिषद द्वारा विशेष व्यख्यान आयोजित किये गये जिसमें महाविद्यालय के प्रबुद्ध प्रध्यापकों द्वारा वैज्ञानिकता एवं वैज्ञानिक सोच पर प्रकाश डाला गया.

दिनांक 17.3.2021 को गणित विभाग के साथ मिलकर एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया .यह प्रतियोगिता स्वतःस्फूर्त तात्कालिक उद्बोधन पर आधारित थी.इस प्रतियोगिता में निम्नलिखित विषय रखे गये

1. नयी शिक्षा नीति
2. आन लाइन शिक्षण के प्रभाव
3. सोशल मीडिया की भूमिका
4. योग एवं ध्यान का महत्व
5. राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका
6. वैज्ञानिक सोच का महत्व

इस प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों के नाम निम्नलिखित हैं:

प्रथम : रश्मि (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
द्वितीय : सुमन (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)
तृतीय : सुरभि (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)

Role of science in Personality development विषय पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विजेताओं के नाम निम्नलिखित हैं

प्रथम : नितिका नेगी (बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष)
द्वितीय : श्रुति नौटियाल (बी.एस–सी. द्वितीय वर्ष)
तृतीय : सुरुची नौटियाल (बी.एस–सी. V सेमेस्टर)

राष्ट्रीय सेवा योजना की मुख्य गतिविधियाँ

डॉ० अंजली वर्मा
कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

डॉ० एस०के० कुड़ियाल
कार्यक्रम अधिकारी
राष्ट्रीय सेवा योजना

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई का प्रारम्भ सत्र 2004–05 में किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की स्थापना का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं को राष्ट्रीय सेवा के प्रति जागरूक करने के साथ ही समाज सेवा, स्वच्छता अभियान व कौशल विकास के साथ जोड़ना भी है।

इसी उद्देश्य से सत्र 2016–17 व 2017–18 के दौरान कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अंजली वर्मा व डॉ० के०एन० बरमोला व पुनः कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अंजली वर्मा व डॉ० एस०के० कुड़ियाल के मार्ग निर्देशन में शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाईयों द्वारा नियमित शिविरों के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गये :–

- **वृक्षारोपण कार्यक्रम** – सत्र के दौरान पर्यावरण संरक्षण और संवर्द्धन की दृष्टि से परिसर में वृक्षारोपण किया गया।

- **एड्स जागरूकता अभियान** – 1 दिसम्बर को महाविद्यालय में एड्स जागरूकता अभियान चलाया गया, जिसके तहत चार्ट एवं निबंध प्रतियोगिता तथा जनजागरण रैली का आयोजन किया गया। पोस्टर एवं बिल्स की सहायता से सार्वजनिक स्थानों – जैसे बैंक, पोस्ट ऑफिस व हॉस्पिटल के बाहर जनजागरण अभियान चलाया गया। जनजागरण रैली डोईवाला व केशव बस्ती में निकाली गयी, जिसका उद्देश्य स्वयंसेवियों के माध्यम से आम लोगों को एड्स के विषय में जागरूक करना था।

- **स्पर्श गंगा दिवस** – 17 दिसम्बर को 'स्पर्श गंगा दिवस' के अवसर पर जनजागरण रैली का आयोजन किया गया। सौंग नदी तट पर स्वच्छता अभियान चलाकर नदियों और जलधाराओं को प्रदूषण मुक्त रखने का संकल्प लिया गया।

- **महाविद्यालय सौन्दर्यीकरण** – राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवियों द्वारा महाविद्यालय सौन्दर्यीकरण भी किया गया, जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर में झाड़ियों का कटान कर क्यारियाँ बोई गयीं। महाविद्यालय में साफ–सफाई कर घास, कूड़े को निरस्त कर पत्थरों को व्यवस्थित करके रखा गया। एन०एस०एस० स्थापना दिवस पर भी परिसर स्वच्छता अभियान व सौन्दर्यीकरण किया गया व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

- **रक्तदान** – महाविद्यालय में 31 मार्च, 2017 व कारगिल दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन प्राचार्य डॉ० हर्षवन्ती बिष्ट, डॉ० जानकी पँवार, गुरूद्वारे के प्रबन्धक श्री जसवीर सिंह, ग्राम प्रधान श्री शेर सिंह, कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अंजली वर्मा व डॉ० के०एन० बरमोला द्वारा दीप प्रज्ज्वलन किया गया। उद्घाटन सत्र गुरूद्वारे के बाबा जोराव सिंह व बाबा फतेह सिंह जी के दीवान हॉल में हुआ। शिविर स्थल शहीदा सिंघा गुरूद्वारा/प्राथमिक विद्यालय था।

इस विशेष शिविर का कार्यक्षेत्र 'सपेरा बस्ती' भानियावाला था। इस विशेष शिविर में स्वयंसेवियों द्वारा अधिगृहीत ग्राम 'सपेरा बस्ती' में जागरूकता अभियान, स्वच्छत, साक्षरता, स्वास्थ्य एवं टीकाकरण, प्रौढ़ शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, जल प्रदूषण आदि विषयों पर जागरूकता अभियान चला गया। साथ ही, श्रमदान कर शिविर स्थल परिसर का स्वच्छता व सौन्दर्यीकरण भी किया गया। शिविर के दौरान आयोजित बौद्धिक सत्र के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों/विषयों के विशेषज्ञों द्वारा स्वयंसेवियों को विविध विषयों पर व्याख्यान व जानकारी दी गयी। शिविर का विस्तृत विवरण निम्ननुसार है –

दिनांक	विषय	वक्ता का नाम
28.02.2017	उद्घाटन समारोह	मुख्य अतिथि – डॉ० हर्षवन्ती बिष्ट, प्राचार्य श्रीमती जानकी पँवार, ग्राम प्रधान शेर सिंह
01.03.2017	कैशलैस बैंकिंग	डॉ० आर०एम० पटेल
02.03.2017	एन०एस०एस० का महत्व	डॉ० के०एल० तलवाड़
03.03.2017	समाज सेवा का हमारे जीवन में महत्व	डॉ० आर०सी० जोशी, डॉ० सविता गैरोला़
03.03.2017	गज़ल एवं गायकी	डॉ० नूर हसन, डॉ० अफरोज़ इकबाल, सरदार रंजीत सिंह
04.03.2017	Floriculture	डॉ० एस०के० कुड़ियाल
05.03.2017	योग का जीवन में महत्व, होम्योपैथ : एक प्रभावी चिकित्सा	श्रीमती शिवरानी सिंह, डॉ० विनय कुड़ियाल
06.03.2017	समापन सत्र	डॉ० हर्षवन्ती बिष्ट

शिविर अवधि में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर सर्वश्रेष्ठ ऑलराउण्डर अंकित टम्टा को चुना गया। सांस्कृतिक कलाकार प्रशांत बेलवाल, सर्वेश्रेष्ठ छात्र गौतम व सर्वश्रेष्ठ छात्रा हिमानी को चुना गया। सर्वश्रेष्ठ ग्रुप लीडर अंकित टम्टा चुने गये। मेहंदी प्रतियोगिता में प्रशांत प्रथम, सोनिया द्वितीय व नीलम रौथाण तृतीय स्थान पर रहे।

पोस्टर प्रतियोगिता – प्रथम उत्तम, द्वितीय अंकित टम्टा, तृतीय प्रशांत।

गीत प्रतियोगिता – प्रथम सानिया, द्वितीय अंकित टम्टा, तृतीय शिवानी।

नृत्य प्रतियोगिता – प्रथम हिमानी, द्वितीय प्रदीप, तृतीय शिवानी सैनी।

प्राचार्य द्वारा कैम्प कमांडर नीतेश, शिवानी कोहली, ऋषभ शुक्ला व दिव्या को सम्मानित किया गया।

• सात दिवसीय शिविर – सत्र 2017–18 में सात दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन डॉ० एम०सी० नैनवाल द्वारा हुआ। उद्घाटन सत्र में डॉ० के०एल० तलवाड़, डॉ० नेगी, डॉ० एम०एस० रावत, डॉ० राखी पंचोला, डॉ० अरूण सूत्रधार, डॉ० सविता के० तिवारी, डॉ० स्मृति कुकशाल, कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अंजली वर्मा व डॉ० एस०के० कुड़ियाल उपस्थित थे। प्राचार्य डॉ० एम०सी० नैनवाल ने गुरूद्वारे की गरिमा, शुचिता व अनुशासन बनाये रखने को कहा। डॉ० के०एल० तलवाड़ ने भी शिविर के सफल संचालन हेतु शुभकामनाएँ दीं।

इस शिविर में राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा अधिगृहित ग्राम 'सपेरा बस्ती' में स्वच्छता, साक्षरता, स्वास्थ्य, टीकाकरण, प्रौढ़ शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण एवं जल प्रदूषण आदि विषयों पर जागरूकता अभियान चलाया गया तथा श्रमदान किया गया। साथ ही, शिविर स्थल परिसर का सौन्दर्यीकरण भी किया गया। शिविर के दौरान बौद्धिक सत्र के अन्तर्गत विभिनन क्षेत्रों/विषयों के विशेषज्ञों द्वारा स्वयंसेवियों को विविध व्याख्यान व जानकारी दी गयी, जिसका विवरण इस प्रकार है –

दिनांक	विषय	वक्ता का नाम
22.02.2018	उद्घाटन समारोह	मुख्य अतिथि – डॉ० एम०एस० नैनवाल प्राचार्य, डॉ० के०एल० तलवाड़ एसो० प्रो० व विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र श्रीमती जानकी पँवार, ग्राम प्रधान शेर सिंह
23.02.2018	राष्ट्रीय सेवा योजना का महत्व	डॉ० के०एल० तलवाड़ (विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र) डॉ० एम०एस० रावत (एसो०प्रो० जन्तु विज्ञान)
24.02.2018	GST	डॉ० आर०एम० पटेल (एसो०प्रो० वाणिज्य विभाग)
25.02.2018	योग शिविर का महत्व, व्यक्तित्व का विकास	श्रीमती शिवरानी सिंह, डॉ० राखी पंचोला (विभागाध्यक्ष, राज०वि०), श्री नरेन्द्र सिंह नेगी (ग्राम प्रधान कान्हरवाला)
26.02.2018	Stress Management through Naad Yoga	डॉ० सविता के० तिवारी (विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान), डॉ० नौटियाल (एसो०प्रो० मनोविज्ञान)
27.02.2018	आयुर्वेद चिकित्सा,	श्री वी० विज्लवाण
	Career Counseling	श्री जतिन कुमार (डायरेक्टर, चाणक्य संस्था)
	होम्योपैथी का जीवन में उपयोग	डॉ० विनय कुड़ियाल
	पर्यावरण संरक्षण	श्री शार्दुल व सुश्री पल्लवी (प्रतिनिधि संस्था MAD देहरादून)
28.02.2018	समापन / पुरस्कार वितरण	डॉ० एस०सी० नैनवाल, प्राचार्य

उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये आकाश थापा को ऑलराउण्डर चुना गया। सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी छात्र तनुज कोहली चुने गये। सर्वश्रेष्ठ स्वयंसेवी छात्रा नीलम को चुना गया। सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक छात्रा रश्मि व सर्वश्रेष्ठ सांस्कृतिक छात्र जगमोहन सिंह चुने गये। यहाँ पाँच पुरस्कार डॉ० के०एल० तलवाड़ द्वारा अपने स्व० पिताजी साई दास तलवाड़ की स्मृति में प्रायोजित किये गये।

चार्ट प्रतियोगिता : प्रथम पारूल पांचल, द्वितीय लोकेश असवाल, तृतीय रिया बिष्ट।

मेहंदी : प्रथम रोशनी, द्वितीय रश्मि, तृतीय आशा शर्मा।

एकल गायन : प्रथम जगमोहन सिंह, द्वितीय शिल्पा जयाड़ा, तृतीय आशा मंडल।

एकल नृत्य : प्रथम आकाश थापा, द्वितीय प्रियंका राजा, तृतीय आशा मंडल।

सर्वश्रेष्ठ कुकिंग : नीलम

सर्वश्रेष्ठ टीम : मनीष

– प्राचार्य द्वारा कैम्प कमांडर अंकित टमटा, शिल्पा कोहली, मीनल शर्मा व ऋषभ राणा को सम्मानित किया गया।

इसी उद्देश्य से सत्र 2017–18, 2018–19, 2019–20, 2020–21 के दौरान कार्यक्रम अधिकारी डॉ० अंजली वर्मा व डॉ० एस०के० कुड़ियाल के मार्गदर्शन में शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला की राष्ट्रीय

सेवा योजना इकाईयों द्वारा निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किये गये –

- **वृक्षारोपण** – सत्र के दौरान पर्यावरण संरक्षण और संवर्द्धन की दृष्टि से परिसर में वृक्षारोपण किया गया 115 वृक्षारोण।
- **एड्स जागरूकता अभियान** – 1 दिसम्बर को महाविद्यालय में एड्स जागरूकता अभियान चलाया गया, जिसके तहत चार्ट एवं निबंध प्रतियोगिता तथा जनजागरण रैली का आयोजन किया गया। पोस्टर एवं हैंडबिल्स की सहायता से सार्वजनिक स्थानों – जैसे पोस्ट ऑफिस व हॉस्पिटल के बाहर जनजागरण अभियान चलाया गया। जनजागरण रैली डोईवाला व केशव बस्ती में निकाली गयी, जिसका उद्देश्य स्वयंसेवियों के माध्यम से आम लोगों को एड्स के विषय में जागरूक करना था।
- **स्पर्श गंगा दिवस** – 17 दिसम्बर को 'स्पर्श गंगा दिवस' के अवसर पर जनजागरण रैली का आयोजन किया गया। सौंग नदी तट पर स्वच्छता अभियान चलाकर नदियों और जलधाराओं को प्रदूषण मुक्त रखने का संकल्प लिया गया।
- **महाविद्यालय सौन्दर्यीकरण** – राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवियों द्वारा महाविद्यालय का सौन्दर्यीकरण भी किया गया, जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर में झाड़ियों का कटान कर क्यारियाँ बनाई गयीं। महाविद्यालय में साफ–सफाई कर घास, कूड़े को निरस्त पत्थरों को व्यवस्थित करके रखा गया।
- **एन०एस०एस० स्थापना दिवस व राज्य स्थापना दिवस** – एन०एस०एस० स्थापना दिवस व राज्य स्थापना दिवस पर भी परिसर में स्वच्छता अभियान व सौन्दर्यीकरण किया गया व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।
- **रक्तदान** – महाविद्यालय में 31 मार्च, 2017 व कारगिल दिवस 26.07.2017 पर रक्तदान का विशेष शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें दोनों ही दिवसों पर छात्र–छात्राओं द्वारा 36–36 यूनिट रक्तदान किया गया।
- **युवा दिवस** पर 12.01.2019 को राज्य स्तरीय कार्यक्रम में स्वयंसेवियों तथा रेड रिबन क्लब एजुकेटर्स द्वारा सहभागिता।
- 27.01.2019 को यूथ पार्लियामेंट में सहभागिता।
- 1 अगस्त 2019 से 15 अगस्त 2019 तक स्वच्छता पखवाड़ा।
- 10.08.2019 को लॉयंस क्लब, डोईवाला के सौजन्य से फलदार वृक्षों का रोपण।
- सितम्बर माह में पोषण माह के अन्तर्गत व्याख्यान का आयोजन।
- स्पेक्स संस्था द्वारा पर्यावरण संरक्षण व संवर्द्धन पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन।
- 24.01.2020 को रेड रिबन क्लब द्वारा बालिका दिवस का आयोजन।
- 11.01.2020 व 12.01.2020 को व्छळ६ में स्वामी विवेकानन्द जयंती के उपलक्ष में ल्न्ज्भ ब्च्छब्स्।टम् का आयोजन।
- राष्ट्रीय सेवा योजना स्वर्ण जयंती समारोह में विविध आयोजन।
- दिनांक 20 सितम्बर 2020 को एक वेबिनार का आयोजन, जिसमें डॉ० डी०सी० नैनवाल, प्राचार्य अध्यक्ष रहे। मौ० असलम State Co-Ordination मनरेगा मुख्य वक्ता डॉ० सुशील ैक्प्ट के राष्ट्रीय सेवा योजना प्रकोष्ठ के कार्यक्रम समन्वयक मुख्य अतिथि रहे।
- दिनांक 23 सितम्बर 2020 देशभक्ति गीत प्रतियोगिता।
- 24 सितम्बर 2020 पोस्टर प्रतियोगिता।
- 24 सितम्बर 2020 वृक्षारोपण कार्यक्रम फतेहपुर टांडा में किया गया।
- 01.10.2020 महात्मा गाँधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में एक पोस्टर प्रतियोगिता व निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन।
- 02.10.2020 को FIT INDIA कार्यक्रम का समापन।
- धारकोट ग्राम में ग्लोबल इंडिया फॉर भारत विकास ळप्ठट के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कार्यक्रम अधिकारी व स्वयंसेवियों का Covid-19 के नियमानुसार प्रतिभाग।
- राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के आंतरिक सैल के कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवियों द्वारा सहभागिता।
- भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय युवा महोत्सव कार्यक्रम में सहभागिता।
- स्वामी विवेकानंद जी के विचारों की उत्तराखण्ड राज्य के संदर्भ में प्रतियोगिता राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में सहभागिता 12.01.2020।
- विज्ञान दिवस पर U-Cost द्वारा कार्यक्रम में सहभागिता।
- 22.03.2021 को फतेहपुर टांडा में ग्राम प्रधान, वार्ड सदस्य स्थानीय ग्रामीणों द्वारा पर्यावरण पर व्याख्यान में

सहभागिता।

2020–21 का सात दिवसीय शिविर Day Camp का आयोजन

दिनांक 15.03.2021 से 21.03.2021 तक आर्यनगर (भानियावाला) में किया गया, जिसमें स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अमृत उत्सव के मुख्य कार्यक्रम इस प्रकार रहे –

क्र०सं०	दिनांक	गतिविधि	प्रतियोगिता	वक्ता का नाम	विषय
1	15.03.2021	उद्घाटन	–––	डॉ० डी०एन० तिवारी प्राचार्य, डॉ० राखी पंचोला	राष्ट्रीय सेवायोजन व अमृत महोत्सव के कार्यक्रम
2	16.03.2021	टीमों का गठन स्वतंत्रता सेनानियों के नाम पर	आशु–भाषण स्वतंत्रता सेनानी	डॉ० अफरोज इकबाल	बौद्धिक विकास
3	17.03.2021	परियोजना व रैली साक्षरता	आशु भाषण व स्वतंत्रता सेनानी व पोस्टर प्रतियोगिता	डॉ० राकेश जोशी	Digilock NCS
4	18.03.2021	परियोजना पर्यावरण साक्षरता रैली	देशभक्ति गीत प्रतियोगिता	डॉ० आशा रोंगाली सुयाल	How to Prepare for Armed Force
5	19.03.2021	परियोजना पर्यावरण रैली	रंगोली/मेहंदी प्रतियोगिता	डॉ० पूनम पांडे	व्यक्तित्व विकास
6	20.03.2021	परियोजना रक्तदान/AIDS	नृत्य प्रतियोगिता	डॉ० दीपा शर्मा	वैदिक गणित की उपयोगिता
7	21.03.2021	समापन सत्र	पुरस्कार वितरण	डॉ० संतोष वर्मा, प्रभारी प्राचार्य द्वारा समापन भाषण	

आशु भाषण प्रतियोगिता परिणाम – 16.0302021

कौशल कुमार	–	स0 भगत सिंह टीम	–	प्रथम
दिव्यांशु	–	छत्रपति शिवाजी टीम	–	द्वितीय
आकांक्षा	–	महात्मा गाँधी टीम	–	तृतीय

पोस्टर प्रतियोगिता परिणाम – 1703.2021

शिवाजी टीम	–	दिव्यांशु जोशी, अंजली	–	प्रथम
महारानी लक्ष्मीबाई टीम	–	मधुसूदन भट्ट, स्वाति पुंडीर	–	द्वितीय
स्वामी विवेकानंद टीम	–	राखी	–	तृतीय

रंगोली प्रतियोगिता –

शिवाजी टीम	–	दिव्यांशु जोशी, अंजली, कल्पना	–	प्रथम
स्वामी विवेकानंद टीम	–	संजू ठाकुर, राखी, अमीशा	–	द्वितीय
सुभाषचंद्र बोस टीम	–	आयुषी, समीक्षा, खुशबू, करन सिंह, विनीता	–	तृतीय

एकल नृत्य प्रतियोगिता –

अंजली रावत	–	प्रथम
सोनम / महिमा	–	द्वितीय
सिया	–	तृतीय

गीत प्रतियोगिता –

गौरव भट्ट	–	प्रथम
कंचन	–	द्वितीय
प्रियंका	–	तृतीय

मेहंदी प्रतियोगिता –

प्रिया	–	प्रथम
साक्षी	–	द्वितीय
आरती	–	तृतीय

गीत प्रतियोगिता समूह –

दिव्यांशु, अंजली, कंचन, रिया, नेहा, साक्षी	–	प्रथम
चाँदनी, अस्मिता पांडे प्रिया पंवार, सिमरन, शिवानी	–	द्वितीय
कंचन, आयुषी, समीक्षा, विनीता, खुशनुमा, नेहा, शालिनी, खुशबू	–	तृतीय

छात्रसंघ निर्वाचन परिणाम 2019-20

दिनांक 09.09.2019 को घोषित शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला के छात्रसंघ निर्वाचन 2019–20 के चुनाव परिणामों के आधार पर निम्नांकित छात्रों को उनके सम्मुख अंकित पदाधिकारी पद / कार्यकारिणी सदस्य हेतु निर्वाचित किया जाता है :–

क्रमांक	पद	निर्वाचित पदाधिकारी / सदस्य का नाम
1	अध्यक्ष	अभिषेक पुरी
2	उपाध्यक्ष	कुनाल सिल्सवाल
3	महासचिव	विशाल
4	सहसचिव	शिवम कोहली
5	कोषाध्यक्ष	अम्बिका चौहान
6	विश्वविद्यालय प्रतिनिधि (U.R.)	आरती चौहान

प्राचार्य **मुख्य निर्वाचन अधिकारी**

छात्रसंघ निर्वाचन परिणाम 2017–18

दिनांक 31.08.2017 को घोषित शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला के छात्रसंघ निर्वाचन 2017–18 के चुनाव परिणामों के आधार पर निम्नांकित छात्रों को उनके सम्मुख अंकित पदाधिकारी पद / कार्यकारिणी सदस्य हेतु निर्वाचित किया जाता है :–

क्रमांक	पद	निर्वाचित पदाधिकारी / सदस्य का नाम
1	अध्यक्ष	अंशुल कठैत
2	उपाध्यक्ष	कु० मीनाक्षी
3	सचिव	गौतम नेगी
4	सहसचिव	दिलीप मध्देशियॉ
5	कोषाध्यक्ष	कु० रश्मि
6	विश्वविद्यालय प्रतिनिधि (U.R.)	हरविन्दर सिंह
7	छात्रा प्रतिनिधि (G.R.)	कु० पूजा
8	सदस्य कार्यकारिणी	1. विनय सिंह पटवाल 2. अजय चौहान 3. अभिषेक पाठक 4. कु० बोबी 5. देवेश सिंह 6. मोहित कक्कड़

प्राचार्य

मुख्य निर्वाचन अधिकारी

छात्रसंघ निर्वाचन परिणाम 2018–19

दिनांक 08.09.2018 को घोषित शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला के छात्रसंघ निर्वाचन 2018–19 के चुनाव परिणामों के आधार पर निम्नांकित छात्रों को उनके सम्मुख अंकित पदाधिकारी पद / कार्यकारिणी सदस्य हेतु निर्वाचित किया जाता है :–

क्रमांक	पद	निर्वाचित पदाधिकारी / सदस्य का नाम	
1	अध्यक्ष	निशान्त मिश्रा	8476863526
2	उपाध्यक्ष	सुरेखा राणा	7409391812
3	सचिव	पंकज कुमार	7895133897
4	सहसचिव	मोहित कक्कड़	8057025808
5	कोषाध्यक्ष	निधि शर्मा	7895133058
6	विश्वविद्यालय प्रतिनिधि (U.R.)	विक्रांत	8755187036
7	छात्रा प्रतिनिधि (G.R.)	कु० सिमरन	7906918057
8	सदस्य कार्यकारिणी	1. आकाश नेगी 2. आशीष पाल 3. आरविन्द सोलंकी 4. राहुल 5. सौरभ कुमार 6. शहबाज	7983695308 8077972039 7088842886 9536635124 8909751604 7055325038

प्राचार्य

मुख्य निर्वाचन अधिकारी

मातृभाषा दिवस

–धीरेन्द्र नाथ तिवारी
हिन्दी विभाग

यह विश्व संवाद–विहीन नहीं रह सकता

मातृभाषा दिवस की पूर्व–संध्या पर राजकीय महाविद्यालय डोईवाला में एक संगोष्ठी आयोजित हुई । प्राचार्य डॉ.डी.सी. नैनवाल ने मातृभाषा को विचारों की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम बताया । डॉ. नैनवाल ने कहा कि हमारे देश की महान ज्ञान–संपदा हमारी भाषाओं में संचित है। लेकिन ज्ञान–विज्ञान की माध्यम भाषा अंग्रेजी होने के कारण हमारी जनता उससे वंचित रह गई है। 'इक्कीस फ़रवरी' को संयुक्त–राष्ट्रसंघ द्वारा अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस घोषित किए जाने को, उन्होंने बांग्लादेशियों द्वारा अपनी मातृभाषा के लिए किए गए असाधारण संघर्ष का परिणाम बताया । प्राचार्य डॉ. नैनवाल ने एक बहुभाषिक–विश्व के निर्माण के लिए मातृभाषा दिवस के महत्व को रेखांकित किया । कार्यक्रम के संयोजक धीरेन्द्र नाथ तिवारी ने कहा कि चिंतन के बिना भाषा का अस्तित्व संभव नहीं । जो भाषाएँ आज हमारे सामने मौजूद हैं वे अपने समय और समाज की ज्ञानात्मक गतिविधि का उपकरण और स्रोत रहीं हैं । दुनियाभर में मातृभाषाओं और बोलियों के संकट ग्रस्त होने का कारण औद्योगिकीकरण के बाद तेजी से हुए शहरीकरण को बताया । साथ ही यूरोप द्वारा दुनियाभर में किए गए औपनिवेशीकरण को भी इसके लिए ज़िम्मेदार ठहराया । शहरों की ओर जा कर लोग प्रायरू किसी हीनभावना के शिकार हो अपनी बोली भाषा भूल जाते रहे हैं । जबकि बोलियों में एक ओर हमारी सांस्कृतिक परंपरा प्रवाहित होती है तो दूसरी ओर उसमें सुदीर्घ काल से अर्जित लोक विज्ञान के खजाने हैं। उन्होंने मौलिक ज्ञान और उच्चतर चिंतन के लिए भी मनुष्य की नैसर्गिक भाषा को ज़रूरी माना। हिंदी के अध्यापक डॉ. दिनेश प्रताप सिंह ने दुनिया भर में छोटे–छोटे समुदायों द्वारा बोली जाने भाषाओं के तेजी से ख़त्म होने को चिंताजनक बताया । डा सिंह ने मारीशस सूरीनाम ट्रिनीडाड, फ़ीजी आदि देशों में आज भी भोजपुरी का बोलबाला है । अंग्रेजी की विभागाध्यक्ष डॉ. पल्लवी मिश्रा ने मातृभाषा को माँ से ग्रहण की हुई भाषा कहा। उन्होंने भाषा –वैज्ञानिक नज़रिए से बताया कि अपनी मातृभाषा के ज्ञान के लिए हमें उसके व्याकरण के अध्ययन की ज़रूरत नहीं । दूसरी भाषाओं को जानने के लिए ही उनके व्याकरण को जानना ज़रूरी होता है। डॉ. पल्लवी मिश्रा ने बताया कि मातृभाषा हमारे स्वाभिमान की भाषा है । मातृभाषा के ज़रिए ही स्वाभाविक रूप से ज्ञान और सौंदर्यबोध अर्जित और अभिव्यक्त किया जा सकता है ।आलोचनात्मक–चिंतन किया जा सकता है। और इसके ज़रिए ही मानवीय–संबंधों का स्वाभाविक निर्वहन हो सकता है। हिंदी के प्रख्यात कथाकार और भौतिक विज्ञान के प्रोफ़ेसर नवीन नैथानी भाषा को मनुष्य के समूचे अस्तित्व की अभिव्यक्ति कहा । प्रो. नैथानी के अनुसार भाषा ही मनुष्य को पशुजगत से अलग करती है। पशु प्रकृति के अनुरूप जीवन बिताता है, मनुष्य प्रकृति को अपने अनूकूल मोड़ता है ।

इस भाषा में उसके अतीत की स्मृतियाँ हैं। हमारा सोचना–समझना, विचार–चिंतन, हमारे हर्ष और विषाद की अभिव्यक्ति का स्वाभाविक माध्यम मातृभाषा ही है। उन्होंने बताया कि शब्द की उत्पत्ति उनके लिए हमेशा एक कौतूहल का विषय रहा है । वह मनुष्य की क्रियाओं से उत्पन्न हुए होंगे या पदार्थों और संज्ञाओं से ? उन्होंने भाषा और मनोविज्ञान के संबंध का उल्लेख किया । भाषाओं पर छाए संकट के प्रश्न पर उन्होंने कहा कि यह विश्व कभी संवाद विहीन नहीं रह सकता । भाषाएँ खोएंगी तो दूसरी उत्पन्न होगी । रसायन विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. एस.पी. सती ने अपनी भाषा के प्रति लगाव रखने की ज़रूरत पर बल देते हुए कहा कि देश की भाषाओं के विकास से ही देश का समुचित विकास संभव है। उन्होंने ज्ञान–विज्ञान की अभिव्यक्ति का माध्यम देश की भाषाओं को बनाया जाना बेहद ज़रूरी बताया। इस संगोष्ठी में इतिहास के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रमोद पंत, गणित की विभागाध्यक्ष डॉ. दीपा शर्मा और मनोविज्ञान की प्रोफ़ेसर डॉ.पूनम पांडेय उपस्थित रहीं।

'विलोल वीचि वल्लरी' कविता पुस्तक का लाकार्पण

–धीरेन्द्र नाथ तिवारी
हिन्दी विभाग

शहीद दुर्गामल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून के तत्वाधान में आज हिन्दी विभाग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के अंतर्गत एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी के मुख्य अथिति पद्मश्री कवि श्री लीलाधर जगूड़ी, विशिष्ट अतिथि उत्तराखंड के सुप्रसिद्ध कवि श्री राजेश सकलानी एवं लेखिका एवम् समाज– सेविका गीता गैरोला थीं। कार्यक्रम के अध्यक्षता प्राचार्य डॉ डी सी नैनवाल ने की । 'हिंदी भाषा और उसकी लिपि' विषय पर विचार गोष्ठी तथा पुस्तक लोकार्पण का आयोजन हिन्दी विभाग प्रभारी डॉ डी एन तिवारी के संरक्षण में हुआ। अतिथियों का परिचय डॉ. नवीन नैथानी ने कराया ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कविश्रेष्ठ लीला धर जगूड़ी ने हिन्दी भाषा और लिपि से जुड़ी अनेक विशिष्ट बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, समृद्ध थाती एवं भविष्य में उसके उपयोग की संभावनाओं पर प्रकाश डालते हुए, लिपि से सम्बंधित विसंगतियों पर भी प्रकाश डाला, जिनमें वर्णों के लिखे जाने में कुछ बदलाव होने पर उसके और सटीक और सुदृढ़ होने की बात कही। 'देवनागरी लिपि की समस्याओं पर बात करते हुए जगूड़ी जी ने 'ख' की खराबी और 'झ' का झगड़ा की ओर श्रोताओं का ध्यान आकृष्ट करते हुए देवनागरी लिपि को सुधारने का प्रस्ताव दिया ।

हिन्दी पखवाड़े के अंतर्गत संपन्न हुए इस आयोजन में शहीद दुर्गमल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला, देहरादून में अंग्रेजी विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ पल्लवी मिश्र के काव्य–संग्रह 'विलोल वीचि वल्लरी' का लोकार्पण हुआ।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ डी पी सिंह, हिन्दी विभाग ने काव्य–संग्रह की उत्कृष्ट समालोचना की। डॉ. सिंह ने कविताओं के नएपन को रेखांकित किया। संगोष्ठी का कुशल संचालन राजनीति विज्ञान की डॉ राखी पंचोला ने किया।

कवि राजेश सकलानी ने कविताओं में पोएटिक डिक्शन की ताज़गी का उल्लेख किया ।

नवीन कुमार नैथानी ने समकालीन रचनासंसार से संवादरत होने के बावजूद समकालीन कविताओं के दबाव से मुक्त होना इस संग्रह की कविताओं की विशेषता बताई ।

लीलाधर जगूड़ी जी ने शविलोल वीचि वल्लरीश की कविताओं को हिंदी कविता के लिए आश्वस्तिकर कहा ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्राचार्य डॉ डी सी नैनवाल ने संगोष्ठी में हुई चर्चाओं की सराहना की एवं इस तरह के अकादमिक गतिविधियों के आगे भी होते रहने की बात कही, जिससे छात्र–छात्राओं का बौद्धिक विकास होता रहे।

'विलोल वीचि वल्लरी' डॉ पल्लवी मिश्रा का पहला हिंदी काव्य संग्रह है। उनके अध्ययन अध्यापन और लेखन का क्षेत्र अंग्रेजी रहा है । उन्होने अपने जीवनानुभवों, साहित्यिक यात्रा और रचना प्रक्रिया के बारे में बताया । डॉ. पल्लवी मिश्रा ने अतिथि वक्ताओं का आभार जताते हुए कहा कि 'यह मेरे लिए बहुत सौभाग्य का विषय है कि पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी और राजेश सकलानी जी ने मेरी कविताओं को पढ़ कर उन पर अपनी वक्तव्य दिया है । यह मेरे लिए कभी न भूलने वाला क्षण है ।

कार्यकम में डॉ नर्वदेश्वर शुक्ल, डॉ रवि रावत,डॉ नीलू, डॉ सूरत सिंह बलूनी, डॉ पूनम पांडेय, डॉ प्रियंका डॉ पल्लवी उप्रेती, डॉ सुनीता रावत,डॉ आशा रोंगाली की गरिमामयी उपस्थिति रही। छात्र–छात्राओं में संदीप झा, महिमा गुनसोला, वंदना, बुशरा, आसिफ़ हसन, शीतल खोलिया आदि मौजूद रहे। पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी एवम् प्राचार्य ने NCC कैडेट्स को 'C' सर्टिफिकेट वितरित किया । महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने पूरे कार्यक्रम को मनोयोग से सुना।

घरोहर

संयुक्तांक : ४

सत्र: २०१६-१७ से २०२०-२१

छायाचित्र : सुनील उमराव

श्री प्रमोद सहाय
डॉ. सुनील उमराव
डॉ. नन्द किशोर हटवाल
श्री पवन तिवारी
को
रेखांकन/फ़ोटोग्राफ़ के लिए
आभार!

College Staff

प्रथम पंक्ति (बायें से दायें)

श्रीमती स्नेहलता, कु. सपना, कु. रंजना जोशी, श्री विनोद कुमार, श्री डी.एन. तिवारी, डॉ. दिनेश चन्द नैनवाल (प्राचार्य), श्री गजे सिंह कण्डारी, श्रीमती सुनीता देवी, श्रीमती सीमा गुंसाई, श्री महेश कुमार, श्री रामेश्वर प्रसाद।

द्वितीय पंक्ति (बायें से दायें)

श्रीमती सविता देवी, श्रीमती शोभा देवी, श्री सुनील कुमार नेगी, श्री रामलाल, श्री नवीन कुमार आर्य, श्री सोमेश्वर प्रसाद, श्री बृजमोहन, श्री मुकेश राज, श्री कृष्णानन्द गोस्वामी।

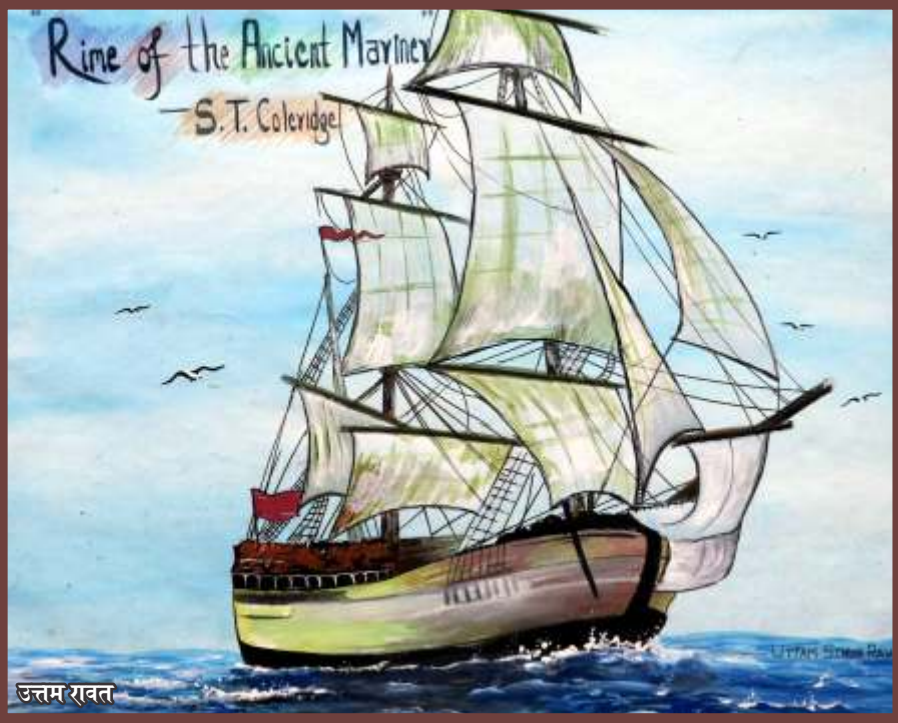

उत्तम रावत

उत्तम रावत

विद्यार्थी सम्पादक

सृष्टि रावत

संदीप कुमार

शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

डोईवाला (देहरादून), उत्तराखण्ड

प्रकाशक डॉ. डी.सी. नैनवाल, प्राचार्य शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड द्वारा महाविद्यालयी और विभागीय वितरण हेतु सरस्वती प्रैस, 2- ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड. मो. 9358865676 से मुद्रित और शहीद दुर्गा मल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोईवाला, देहरादून, उत्तराखण्ड से प्रकाशित